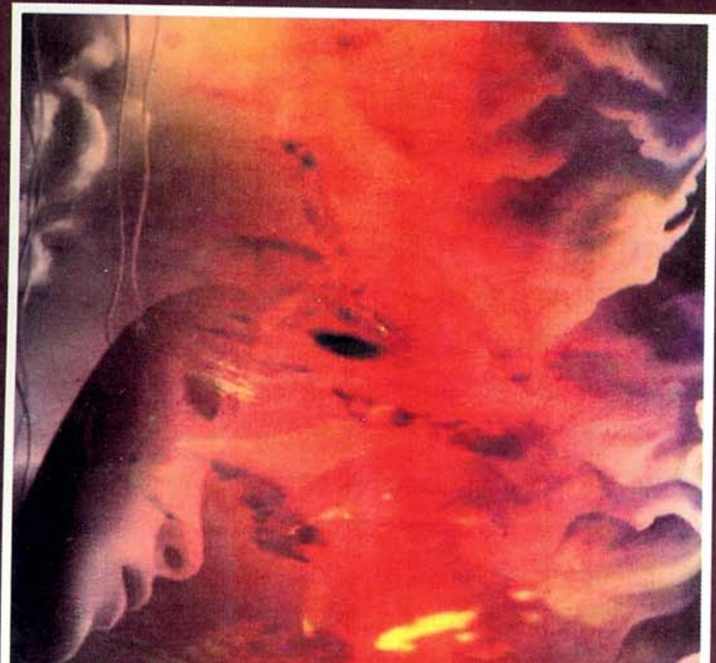
# हिन्दी भाषा और कुँड़ुख भाषा

(क्रियाओं का प्रकारात्मक अध्ययन)



डॉ० हरि उराँव

के.के. पब्लिकेशन्स

# हिन्दी भाषा और कुड़ुख भाषा

## क्रियाओं का प्रकारात्मक अध्ययन


लेखक

**डॉ० हरि उराँव**

सह. प्रोफेसर

जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)



**के० के० पब्लिकेशन्स**

प्रथम संस्करण : 2010

द्वितीय संस्करण : 2015

मूल्य : रु० 150.00 छात्र संस्करण
रु० 300.00 पुस्तकालय संस्करण

ISBN : 978-81-87568-64-3

प्रकाशक : के० के० पब्लिकेशन्स
618, कटरा, इलाहाबाद-211002 फोन : 0532-320227, 6452973

कम्प्यूटर यूनिट : GLOBELTECH GROUP
9196105027

मुद्रक : एकेडेमी प्रेस, इलाहाबाद

जिन्होंने भाषा दिया, जीवन में कुछ करके दिखा देने के लिए मुझे तैयार किया उन्हीं-

**पिता स्व. मनचरण उराँव**

एवं

**माता स्व. बिलिया**

को सादर समर्पित

-हरि उराँव

# द्वितीय संस्करण की प्रस्तावना

**''हिन्दी भाषा और कुँड़ुख भाषा : क्रियाओं का प्रकारात्मक अध्ययन''** का द्वितीय संस्करण आपके हाथों में हैं। प्रथम संस्करण में कुछ छपाई की गलतियाँ रह गई थीं जिन्हें ठीक कर दिया गया है।

आशा है ''कुड़ुख'' भाषा के प्रेमी उराँवजन एवं छात्र पुस्तक से अवश्य लाभ उठाऐंगे।

पुस्तक के बारे में सुझाव अवश्य दें, जिससे भविष्य में इसकी गुणवत्ता बढ़े।

13-01-15

**डॉ. हरि उराँव**

# प्राक्कथन

यह सहज मानवीय वृत्ति है कि जब कोई चिर अभिलषित कार्य पूर्ण होता है तो कृतार्थ भाव से वह आत्मसात आन्तरिक भावविभोरता में अपने भीतर अवगाहन करता है—संतुष्ट होता है, समाज के प्रति कृतज्ञ होता है। मैं जनजातीय समुदाय का हूँ, अभिलाषा थी कि अपनी भाषा की आन्तरिक ऊर्जा का भास्वर पक्ष विश्व के सम्मुख रखूँ, एक भाषिक दायित्व का निर्वहन करूँ।

"**हिन्दी भाषा और कुड़ुख भाषा, क्रियाओं का प्रकारात्मक अध्ययन**" एक गवेषणात्मक समुच्चय पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है।

सर्वप्रथम आद्य देवी माँ चा-ला और सरना की प्रणति निवेदन करता हूँ तत्पश्चात अपनी जननी तथा बाबा को, जिनके कारण मुझे यह नर देह प्राप्त हुआ और समाज तथा शिक्षा जगत की सेवा दत्तचित्त से कर रहा हूँ।

विषय नूतन का आज तक इस पक्ष पर व्याकरणिक दृष्टि से ध्यान नहीं दिया गया था किन्तु मेरे शोध निर्देशक डॉ. विंध्यवासिनी नन्दन पाण्डेय ने कुड़ुख भाषा-भाषियों से स्वयं भी रुचि लेकर कई क्रियात्मक पदों की प्रयोगात्मक स्थिति की ओर ध्यान दिलाया। हिन्दी तथा अन्य भाषाओं के साथ तुलना साम्य-वैसम्य मूलक रूप स्पष्ट करके मुझे इस कार्य को पूर्ण करने के लिए प्रोत्साहित भी किया। अतः मैं उनके प्रति शुद्ध सात्विक कृतज्ञ भाव का प्रदर्शन करता हूँ।

साथ ही जनजातीय भाषा विभाग की अग्रजावत अध्यक्षा डॉ. कुमारी वासन्ती के स्नेह एवं मार्गदर्शन के लिए स्मरण करता हूॅ। जनजातीय जीवन की संबद्धना, उन्नयन तथा महत्व स्थापना में गुरूवर डॉ. रामदयाल मुण्डा को मैं शत्-शत् प्रणाम निवेदित करता हूँ। डॉ. बलदेव यादव का सहयोग मेरुदण्ड के समान काम आया है। मैं उन्हें आजीवन कृतज्ञता के साथ स्मरण रखूँगा। डॉ. करमा उराँव का सान्निध्य, स्नेह मुझे प्रेरणा देते रहे हैं जिसके लिए मैं हमेशा कृतज्ञ रहूँगा। भाषाविद् साहित्यकार डॉ. निर्मल भिन्ज को कृतज्ञ भाव से स्मरण करता हूँ।

अन्त में अपनी सहधर्मिणी श्रीमती पुष्पा कुजूर का सहयोग स्मरण करता हूँ जिन्होंने मेरी व्यस्तताओं में कभी गृह-प्रपंचों को आड़े नहीं आने दिया। बच्चे अनय सैलानी और संचित की उत्सुकता कि पापा कब 'डॉ. बनेंगे' उत्साह को और बढ़ा देती थी। अतः मुझे गौरव होता है अपने परिवार पर।

क्रिया का प्रकारात्मक अध्ययन अवश्य ही एक निश्चित ध्येय तय करेगा। जिसके बल पर आगे बढ़कर हम कुड़ुख भाषा की अति प्राचीन गौरवपूर्ण स्थिति का अनुसंधान प्राप्त कर सकेंगे, पता लगा सकेंगे।

पुस्तक के बारे में पाठकों के सुझाव आमांत्रित है।

**डॉ. हरि उराँव**

# विषय-सूची

## अध्याय : एक

# क्रिया : स्वरूप विवेचन

धरती पर मानव ही नहीं, अन्य सभी जीवधारियों के अवतरण के साथ ही मनोविकारों की अभिव्यक्ति की प्रवृत्ति सक्रिय रही होगी। कालक्रम से यही प्रवृत्ति अपनी सक्रियता के कारण विकसित होती गयी होगी। वाचिक से पूर्व आंगिक और आवयविक अभिव्यक्ति प्रणाली पैदा हुई होगी जिसका चरम विकास वाचिक अभिव्यक्ति प्रणाली में प्राप्त होता है। भाषा विज्ञान इन तथ्यों पर गहन चिन्तन प्रस्तुत करता है।

आत्माभिव्यक्ति की वाचिक प्रणालियों में भाषा का महत्व सर्वाधिक है अर्थात् भाषा सर्वाधिक सशक्त प्रणाली है। आत्माभिव्यक्ति की सभ्यता और संस्कृति के विकास के अनुरूप मनोविकारों के प्रकारों में बढ़ोत्तरी होती गयी और उनकी अभिव्यक्ति हेतु भाषा की मात्रात्मक और गुणात्मक प्रगति होती गयी। बोली प्रसविनी बनी और भाषा रूपी संतान का जन्म हुआ। बोली को संयमित और शक्ति सम्पन्न बनाने के लिए कुछ मानदंड और कसौटियों के प्रावधान हुए। भाषा का व्याकरण इसी प्रावधान का फलित रूप है। नदी की कलकल छलछल करती अविरल प्रवाहित धारा की तरह निर्बन्ध बोली-विकासधारा को व्याकरण के बाँध ने वोली की सीमा का परिसीमन कर दिया। बोली ही भाषा बन गयी और व्याकरण सम्मत होकर भाषा झील की सीमा में सिमट गयी। सतत प्रवहमान बोली धारा अपनी क्षैतिक व्याप्ति को छोड़कर गहन और गहनतर होती चली गयी। इस गहराई का प्रावधान कराने वाली शक्ति ही तो व्याकरण है। ध्वनि, वर्णमाला, वर्त्तनी, विराम-चिन्ह, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण, सन्धि, समास, तद्धित, कृदन्त आदि के मानदण्डों में सीमित होकर भाषा भी शास्त्रीय रूप में बंध गयी। इन वंधनों ने भाषा को गाम्भीर्य और शालीनता प्रदान की।

व्याकरण के वर्ण शब्द, वाक्य चिन्ह और अर्थ विचारों 'शब्द विचार' के अन्तर्गत आती है। क्रिया व्याकरण का सर्वाधिक शक्ति-सम्पन्न व्यापक अंग है। क्रिया हिन्दी और कुड़ुख़ दोनों का केन्द्रीय शव्द भेद है। नामवर सिंह के अनुसार- 'क्रिया' हिन्दी का केन्द्रीय शव्द-भेद है, इसे हिन्दी व्याकरण का सबसे प्रमुख अंग भी कह सकते हैं। रूप-निर्माण और अर्थ भेद की विविधताओं को देखते हुए 'क्रिया' को हिन्दी व्याकरण का सबसे जटिल शव्द-भेद भी कहा जा सकता है। इसके साथ ही यह भी उल्लेखनीय है कि हिन्दी में सवसे अधिक विकासशील भी यही व्याकरणिक कोटि है। वर्णन और विश्लेषण को लेकर भाषाविदों और वैयाकरणों के बीच विवाद और मतभेद भी सबसे ज्यादा 'क्रिया' के ही क्षेत्र में है।[1]

डॉ० नामवर सिंह का उपर्युक्त कथन यद्यपि हिन्दी भाषा के अन्तर्गत क्रिया प्रकरण से सम्बन्धित है किन्तु, कुड़ुख़ भाषा के अन्तर्गत क्रिया प्रकरण के संदर्भ में भी शतप्रतिशत सही है। दोनों भाषाओं की क्रिया व्याप्ति प्रायः समान ही है। लिंग, वचन, पुरूष और काल आदि का प्रभाव जिस प्रकार हिन्दी क्रिया पर है, वैसा सारा प्रभाव कुड़ुख़ क्रिया पर भी है।

निम्नांकित उदाहरण इस तथ्य को सम्पुष्ट करते हैं-

| हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|
| 1. लाया हूँ | ओन्दोरका र'अदन। |
| 2. लाया था | ओन्दोरका रहचकन। |
| 3. आये हो | बरचका र'अदय। |
| 4. आये थे (तुम) | बरचका रहचकय (नीन)। |
| 5. (वह) आया है | (आस) बरचका र'अदस। |
| 6. (वह) आया था | (आस) बरचका रहचस। |
| 7. (मैं) आयी हूँ | (एन) बरचकी र'अएन। |
| 8. (मैं) आयी थी | (एन) बरचकी रहचअन। |
| 9. (तुम) आयी हो | (नीन) बरचकी र'अदिन। |
| 10. (तुम) आयी थी | (नीन) बरचकी रहचकिन। |
| 11. (वह) आयी है | (आद) बरचकी र'ई। |
| 12. (वह) आयी थी | (आद) बरचकी रहचा। आदि।[2] |

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि हिन्दी क्रिया और कुड़ुख़ क्रिया के पुरूष लिंग और काल में साम्य है। वचन के सम्बन्ध में कुड़ुख़ क्रिया ज्यादा उदार है अर्थात् एक वचन और बहुवचन में ज्यादा भेद नहीं है।

जैसे-

| | | | |
|---|---|---|---|
| वह आयी है | बरचकी र'ई | वे आयी हैं | बरचकी र'अनर |

**क्रिया के स्वरूप**-विवेचन क्रम में यह उल्लेख करना अत्युक्ति नहीं होगी कि हिन्दी क्रिया की तरह कुड़ुख़ क्रिया के भी पाँच रूप होते हैं।

| हिन्दी क्रिया | कुड़ुख़ क्रिया |
|---|---|
| 1. क्रिया का साधारण रूप | सोरठा अर्ज'अना मुठन |
| 2. धातु | मूली |
| 3. विधिरूप | पेसना मुठन |
| 4. भूतकालिक रूप | केरका बेड़ा तिंगु मुठन |
| 5. पूर्णकालिक रूप | पुरकस बेड़ा तिंगु मुठन।[3] |

**1. क्रिया का साधारण रूप** (सोरठा अर्जआना मुठन)-क्रिया का वह रूप जिसके अन्त में सर्वदा 'ना' जुड़ा रहता है। जैसे-

| | | | |
|---|---|---|---|
| हँसना | अलखना | रोना | चींख़ना |
| उठना | चो'ओना | बैठना | ओक्क़ना |
| चलना | एकना | रहना | र'अना आदि। |

**2. धातु (मूली)**-साधारण क्रिया के अन्त के 'ना' को हटा देने के बाद उसके रूप को धातु (मूली) कहते हैं। जैसे-

| | | | |
|---|---|---|---|
| चींख़ना का | चींख़ | मोख़ना | मोख़ |
| बरना | बर | रअना | र'अ |
| खेएना | खे'ए | बिइना | बि'इ |
| चोओंना | चो'ओ | एकना | एक आदि। |

**3. पेंसना मुठन (विधि रूप)**- जिस क्रिया से आज्ञा देने, आग्रह करने, मना करने, प्रार्थना करने के भाव का बोध हो वह विधि क्रिया कहलाती है। इसका स्वरूप पुल्लिंग विधि रूप का है।

**जैसे** -

| | | | |
|---|---|---|---|
| बअना- | ब'आ (बोलो) | एरना | एरा (देखा) |
| चिइना- | चि'इआ चि'आ (दो) | बरना | बरा, बर'आ (आओ) |
| चींख़ना | चींख़ा (रोओ) | ओन्ना | ओना (पीयो) |
| चो'ओना | चो'आ (उठो) | खे़'एना | खे'आ (मरो) |
| काना- | काला या कला (जाओ) | | |

**4. भूतकालिक रूप (केरका बेड़ा तिंग्गु मुठन)**- क्रिया का वह रूप जिससे भूतकाल की क्रियाओं का निर्माण होता है। इसका स्वरूप स्त्रीलिंग, एकवचन सामान्य भूतकाल का होता है जो आधार है। जैसे-

| | | | |
|---|---|---|---|
| बरना | बरचा (आयी) | काना | केरा (गयी) |
| ब'अना | बाचा (बोली) | मोख़ना | मोक्ख़ा (खायी) |
| एकना | इक्कया (चली) | चो'ओना | चोचा (उठी) |
| एरना | इरिया (देखी) | र'अना | रअचा, रहचा (थी) |
| चाजना | चाजिया, चज्जिया (छाँटी) | चींख़ना | चींख़िया (रोयी) |
| चि'इना | चिच्चा (दिई, दी) | खे'एना | केच्चा (मरी) |

**5. पुरकस बेड़ा तिंग्गू (पूर्णकालिक रूप)**– क्रिया के इस रूप से क्रिया की पूर्णता का बोध होता है। प्रकारान्तर से यह विशेषण का रूप ग्रहण कर लेता है। क्रिया के इस रूप के साथ 'रअना' क्रिया अन्त में सदा जुड़ी रहती है जैसे-

'ओन्दोरना' क्रिया का पूर्णकालिक रूप 'ओन्दो'का' होता है। 'ओन्दोरका' के साथ 'रअना' क्रिया लगाने से 'ओन्दोरका रअदन'- रूप बनता है जिसका हिन्दी अर्थ होता है- लाया हूँ।

कुछ अन्य उदाहरण दर्शनीय है-

| | |
|---|---|
| ओन्दोरका रअचकन (रहचकन) | लाया था |
| ओन्दोरका र'ओन | लाया रहूँगा, लाया हुआ रहूँगा |
| बरचका र'अदस | आया है, आया हुआ है। |
| बरचका र'अचस(रहचस) | आया था, आया हुआ था। |
| बरचका र'ओस- | आया रहेगा, आया हुआ रहेगा। |
| बरचका र'अदय- | आये हो, आये हुए हो (तुम)। |
| बरचका रहचकय | (तुम) आये थे, (तुम) आये हुए थे। |
| बरचका र'ओय- | (तुम) आये रहोगे, (तुम) आये हुए रहोगे। |

क्रिया के सभी पूर्णकालिक रूप के स्त्रीलिंग रूप भी बनते हैं। जैसे -

| | |
|---|---|
| बरचकी र'एन | मैं आयी हूँ, आयी हुई हूँ। |
| बरचकी रहच'अन | मैं आयी थी, मैं आयी हुई थी। |
| बरचकी र'ओन | मैं आयी रहूँगी, मैं आई हुई रहूँगी। |
| बरचकी र'अदिन | तुम आयी हो, तुम आयी हुई हो। |
| बरचकी रहचकिन | तुम आयी थी, आयी हुई थी। |
| बरचकी र'ओय | तुम आयी रहोगी, तुम आयी हुई रहोगी। |

| | |
|---|---|
| बरचकी र'ई | वह आयी है, वह आयी हुई है। |
| बरचकी र'अचा (रहचा) | (वह) आयी थी, (वह) आयी हुई थी। |
| बरचकी र'ओ | (वह) आयी रहेगी, (वह) आयी हुई रहेगी। |

उपर्युक्त पुल्लिग और स्त्रीलिंग पूर्णकालिक क्रिया रूपों (पुरकस बेड़ा तिंग्गू रूपों) से स्पष्ट होता है कि पुल्लिग 'आकारान्त' क्रिया रूपों को 'ईकारान्त' कर देने से स्त्रीलिंग रूप बन जाता है।

हिन्दी के साथ कुड़ुख़ में भी क्रिया और क्रिया पदबन्धों का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है। क्रिया पदबंधों को सरल वाक्य संघटन का मूल तत्व (न्यूक्लियस) कह सकते हैं।[4]

रचना की दृष्टि से क्रिया शब्द के पाँच रूप होते हैं-

1. धातु (खा) 2. क्रियार्थक (खाना)

3. पूर्ण (खाया) 4. अपूर्ण (खाता) संभाव्य भविष्यत् (खाये/खाएगा)।

इन पाँच तत्वों के अतिरिक्त दो और तत्व हो सकते हैं जो साधारणतः स्थान मुक्त होते हैं। ये दो तत्व हैं-

| | |
|---|---|
| 1. निषेधक (न, नहीं, मत) और | 2. अवधारक (भर, मात्र, ही, तो, भी, तक)[5] |
| न, नहीं, मत | मा, मला, अम्बा |
| भर, मात्र, ही, तो, भी, तक | ईंवरम, इंवदम, गहि, अन्ति, हूँ, आ गूटि। |

विभिन्न क्रियाओं के संयोग से क्रिया पदबन्धों का सृजन होता है। ये पदबन्ध ही मनोविकारों, मनोविचारों को सही-सही अभिव्यक्ति देने में सहकार प्रदान करते हैं। कोशीय, रंजक, वाच्य सूचक, सक-वर्ग, तथा ह-वर्ग की क्रियाओं से ये क्रिया पदबन्ध बनते हैं। जैसे-

| **हिन्दी** | कोशीय क्रिया | रंजक क्रिया | वाच्य सूचक | सक-वर्ग | ह-वर्ग |
|---|---|---|---|---|---|
| | खोल | दिया | जा | सकता | है। |
| **कुड़ुख़** | तिस | ग'आ | चि'आ | ओंगत'आ | र'ओ। |

वाच्य सूचक क्रिया (जाना या इसका कोई अन्य रूप जैसे- 'जा') के ठीक पहले आनेवाली क्रिया (जैसे रंजक क्रिया 'दिया') पूर्ण कृदन्तीय रूप में ही हो सकती है। उपर्युक्त उदाहरण में 'देना' क्रिया 'क्रिया का रंजक रूप' 'दिया' पूर्ण कृदन्तीय है। कुड़ुख़ में इसका रूप 'चिच्चा' जिसका कोशीय रूप में चि'इना है रंजक रूप हुआ। प्रकारान्तर से यह भी कहा जा सकता है कि चौथे स्थान एक 'सक वर्ग में' सकता, सका, चुकता, चुका या रहा हो तो उसके ठीक पहले अर्थात् तीसरे स्थान (वाच्य सूचक) में आनेवाली क्रिया 'धातु' के रूप में ही हो सकती है। जैसे-

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **हिन्दी** | खा | लिया | जा | सकता | है। |
| **कुड़ुख़** | मोखा | चि'आ | ओंग | त'आ | र'ओ। |

कोशीय क्रिया 'काना' (जाना) का धातु रूप 'का' है। क्रिया पदबन्ध में कोशीय क्रिया का प्रथम स्थान होता है। इस स्थान पर हिन्दी/कुड़ुख़ भाषा की कोई भी क्रिया आ सकती है। कहा जा सकता है कि ऐसी क्रियायें खुली-सूची (ओपेन सेट) बनाती है।[6]

क्रिया पदबन्ध में दूसरे स्थान पर रंजक क्रिया आती है। 'लेना, देना, जाना, पड़ना, बैठना, आना, दिखाना, लाना, उठना, गुजरना, मरना, पाना, डूबना, रखना, चलना, निकलना, करना, जलना, मिलना, बनना' हिन्दी की रंजक क्रियायें हैं।[7]

**कुड़ुख़ में इनका रूप क्रमशः है**-हो'अना, चि'अना, काना, ......., ओक्कना, बरना, एदना, ओन्दरना, चो'अना, कट्टना, खे'अना, ख़क्खना, मुलख़ना, उयना, एकना, उरूखना, ननूना, ओलना, ख़क्खरना, कमरना, लेखआ।

हिन्दी की कुछ क्रियाओं के प्रयोग मुहावरेदार होते हैं। ऐसी क्रियाओं में 'दिखाना, गुजरना, मरना, डूबना आदि क्रियायें हैं। निम्नांकित मुहावरेदार क्रियायें दर्शनीय हैं- 'कर दिखाना, कर गुजरना, ले मरना, आ मरना, ले डूबना' आदि।

कुड़ुख़ में भी क्रिया के ये स्वरूप स्पष्ट परिलक्षित होते हैं।[8]

जैसे : नन्ज एदना, नन्ज कट्टना, पिटा ख़च्चना, अड़सर खे'अना, होच्च मुलुख़ना, लेखआ।

**वाच्य**- सूचक अर्थात् तृतीय स्थान में 'जाना' क्रिया का प्रयोग होता है। 'जाना' क्रिया के दो प्रकार हैं- 'जाना 1' और जाना 02 ।

वाच्य सूचक (तृतीय स्थान वाली क्रिया) के ठीक पहले आनेवाली क्रिया हमेशा अपने पूर्ण कृदंतीय रूप में होती है। जैसे- खाया जाता है। जाना (वाच्य-सूचक) का पूर्ण रूप 'गया' और , किन्तु वाच्यसूचक 'जाना' के पहले आनेवाली क्रिया का पूर्ण रूप 'जाया' ही होता है। जैसे-'जाया जाता है।'[9]

**कुड़ुख़ क्रिया का उपर्युक्त रूप निम्नवत् है-**

'काना' अरा 'केरस' वाच्य सूचक काना के पहले आने वाली क्रिया का पूर्ण रूप केरस ही होता है। जैसे- 'कालतार'ई।'

'सक-वर्ग' (चतुर्थ स्थान) : इस वर्ग की क्रियाओं में 'सकता, सका, चुकता, चुका, रहा और चाहिए' क्रियायें हैं। इनमें प्रथम पाँच क्रियाओं के पहले अपनेवाली क्रिया हमेशा धातु के रूप में ही रहती है। जैसे- जा सकता है, खा चुका है, खा रहा है आदि। ध्यान देने की बात यह है कि 'सकना' और 'चुकना' बद्ध क्रियायें हैं और ये कोशीय क्रिया के स्थान पर कार्य कर सकती है।[10] **कुड़ुख़** के कुछ उदाहरण दर्शनीय हैं। काला ओंगदस, मोक्का रअस, ओना लगदस लेखअ।

कोशीय क्रिया का स्वरूप संघटना 1. धातु 2. प्रत्यय से होता है। धातु के दो रूप हो सकते हैं-1. क्रियार्थक और 2. अक्रियार्थक। बोल-बोलकर, तोड़-तोड़कर, खा-पीकर, आदि क्रियार्थक धातु के तथा क्षमाकर, दिखाई पड़, आदि अक्रियार्थक धातु के उदाहरण है।

क्रियार्थक धातु दो क्रिया रूपों के संयोग से बनती है तथा अक्रियार्थक धातु का प्रथम अंश संज्ञा, विशेषण या कोई अन्य रूप में होता है।[11]

**अक्रियार्थक**- स्वीकार कर, क्षमा कर, दिखाई पड़, पूराकर, स्वतंत्र कर, अच्छा कर, दूर कर, पीछा कर, आगे कर, चार हो, एक हो, अपना बन आदि।

**क्रियार्थक**- पुनरूक्तिः मार-मूरकर, देख-भाल कर, खा-पीकर, चल फिर कर, बोल-बोल कर

**सामान्य**- बोलकर आदि।

उपर्युक्त रूप (धातु के) **कुड़ुख़** में भी देखे जा सकते हैं।

**अक्रियार्थक**- इंजर'अर, एथर'अर, पुराब'आ, दव नना, कूटी नना, कुदा ब'आ, मुन्धनना, नाख़ मना

**क्रियार्थक**- पुनरूक्तिः ल'आ-ल'ई नना, एरा-ख़ोजा, ओना-मोख़र, कुद्दा नुंगर, ब'आ-बअर की,

**सामान्य**- ब'अर लेखआ।

क्रिया व्याकरण का एक ऐसा अंग है जो न सिर्फ व्याकरणिक कोटियों में सर्वाधिक शक्ति सम्पन्न है प्रत्युत सर्वाधिक व्याप्तियुक्त है। कभी यह संज्ञा बन सकता है, कभी विशेषण और कभी क्रिया विशेषण भी। इसके स्थान के पूर्व जुड़ने वाले शब्द भी इसकी कोटि वदल देते हैं। शब्द कोशीय धातु के विस्तार में यदि हम किसी विशेषक (मॉडीफायर) को रख दें तो उस विशेषक के ठीक वाद आनेवाला शब्द क्रिया नहीं रह जायेगा। जैसे-

मैंने उसे अपनी राय दी।

एन आसगे घोख चिच्चकन।

हिन्दी के इस वाक्य में 'राय' शब्द क्रिया का अंग नहीं है क्योंकि इसके पहले विशेषक 'अपनी' ने इसे संज्ञा का रूप दे दिया। इसी प्रकार कुड़ुख़ के उपर्युक्त वाक्य में भी घोख़ शब्द क्रिया का अंग नहीं है क्योंकि इसके पहले विशेषक शब्द 'आसगे' जुड़ा है।

**क्रिया का 'ना- रूप' (Infinitable form)** – क्रिया के इस रूप का विचार उपवाक्य के स्तर पर होना चाहिए। निम्न वाक्यों को देखें।

| | |
|---|---|
| मुझे खाना पड़ता है। | एंगा ओन्ना मनी। |
| मुझे खाना खाना है। | एंगा मँण्डी ओन्ना र'ई। |
| मुझे जाना चाहिए। | एंगा काना चाही। |

इनवर्टेड कोमा के अन्दर के क्रिया पदबन्धों को देखने से पता चलता है कि 'पड़ना' 'होना' तथा 'चाहिए' के साथ 'ना रूप' क्रिया कोशीय क्रिया के स्थान पर आती है और इनसे बने क्रिया पदवन्ध उपवाक्य के स्तर पर उद्देश्य + 'को' की आकांक्षा रखते हैं। इसी प्रकार कुड़ुख़ के उपर्युक्त वाक्यों में भी क्रिया की स्थिति भी जानी जा सकती है।

वाव्य और काल के अनुरूप क्रिया के रूप और गुण में जो परिवर्तन होते हैं वे क्रिया की बहुरूपता और उसकी असीम शक्ति का परिचय देते हैं।

व्यापार (क्रिया) के कर्त्ता से होनेवाले सम्बन्ध के कारण आधुनिक हिन्दी और कुड़ुख़ की क्रियाओं के प्रकार और स्वरूप निम्नवत् हो सकता है। जैसे-

**1. मौलिक क्रियायें** – वैसी क्रियायें जिनमें व्यापार का कर्ता स्वयं ही इसका करनेवाला हो। जैसे-

| | |
|---|---|
| मैंने पानी पिया। | एन अम्म ओण्डकन। |
| वह आया। | आस बरचस। |

**2. प्रथम प्रेरणार्थक क्रियाएँ** – वैसी क्रियाएँ जिनमें व्यापार का कर्त्ता इसका प्रेरक होता है और गौण कर्त्ता के साथ इस व्यापार में भाग लेता है, जैसे : राम को दूध पिलाकर उसकी मां उससे रोटी खाने को कह रही थी।

**3. द्वितीय प्रेरणार्थक क्रियाएँ** – जिनमें कर्त्ता व्यापार के प्रत्यक्ष प्रेरक के रूप में नहीं आते बल्कि दूसरे कर्त्ता के जरिये यह प्रेरणा होता है और परोक्ष रूप से इस व्यापार में भाग लेता है। जैसे : राम ने श्याम के द्वारा मोहन से पुछवाया यानी राम ने कहा कि श्याम मोहन से पूछे।

**4. भाववाच्य क्रियाएँ** : वैसी क्रियाएँ जहाँ व्यापार बिना कर्त्ता के ही होता है। जैसे - बंधी महावर से नौका थी।

अपने अर्थ और प्रयोग के अनुसार भी हिन्दी की क्रियाएँ होती है और उन्हें निरपेक्ष और सापेक्ष विभक्त किया जाता है। निरपेक्ष क्रियाएँ अर्थपूर्ण होती है तथा सापेक्ष क्रियाएँ आंशिक रूप से अर्थवान होती है जिनका शब्दगत अर्थ निश्चित विश्लेषणात्मक रचनाओं में पूरी तरह या आंशिक रूप से लुप्त हो जाता है।

अर्थ लोप की आवश्यकता के आधार पर भी हिन्दी की सापेक्ष क्रियाओं के भेद किए गए हैं-

**1. सहायक क्रियाएँ** – जिनका अर्थ पूरी तरह से नष्ट हुआ और जो अर्थ और वाच्य के विश्लेषणात्मक रूपों के बनाने में भाग लेती है।

**2. संयोजक क्रियाएँ** – जो नामिक विधेय के संयुक्त रूपों को बनाने में लगती है जिनका शाब्दिक अर्थ पूरी तरह से नष्ट हुआ हो और जो काल और अर्थ के सूचक के समान होती है।

**3. सहकारी क्रियाएँ** – जो नामबोधक संयुक्त क्रियाओं को बनाती हैं, जिनका शाब्दिक अर्थ पूरी तरह से नष्ट होता है और प्रक्रिया (व्यापार या स्थिति) के शुद्ध सूचक के समान आती है। इनमें करना,

देना, रखना, होना, पड़ना, तथा रहना क्रियाएँ आती हैं। काल, अर्थ तथा वाच्य के रूपों को बनाते समय सहकारी क्रियाओं का प्रयोग सहायक क्रियाओं के साथ हो सकता है, जिससे उनकी निश्चित व्याकरणिक स्वतंत्रता अधिक स्पष्ट होती है।

**4. रंजक क्रियाएँ** – वैसी क्रियाएँ जो पक्ष सम्बन्धी विश्लेषणात्मक रूपों को तथा आवश्यकता बोधक विश्लेषणात्मक रूपों को बनाने में लगती है, जिनका शाब्दिक अर्थ कुछ रचनाओं में पूरी तरह नष्ट तो कुछ रचनाओं में आंशिक रूप से सुरक्षित रहा हो। इनके अन्तर्गत आना, उठना, करना, चलना, चला आना, चला जाना, चाहना, चाहिए आदि क्रियाएँ आती हैं।

**5. अर्द्धसंयोजक क्रियाएँ** – जो नामिक विधेय के संयुक्त तथा जटिल रूपों को बनाने में लगती हैं जिनका शाब्दिक अर्थ न्यूनाधिक सुरक्षित रहता है, जिसके कारण वे काल तथा अर्थ के विश्लेषणात्मक रूपों को बना सकती है। इनमें बनना, निकलना, रहना, खड़ा होना, दिखना, लगना, मालूम पड़ना, या मालूम होना, ठहरना, जान पड़ना, दिखाई देना या दिखाई पड़ना, नजर आना, प्रतीत होना, जैसे सरल तथा विश्लेषणात्मक क्रियाएँ आती हैं।

संक्षेप में हिन्दी क्रियाओं की निम्नलिखित विशेषताएँ इस प्रकार देखी जा सकती है-

1. धातुओं में गणों के तुल्य कोई श्रेणी विभाग नहीं रह गया है, सब भ्वादि की भांति ही हो गए हैं।

2. तीन पुरूष और एक वचन तथा बहुवचन यानी दो वचन रह गए हैं तथा एक अन्य वचन द्विवचन का लोप हो गया। अत्मनेपद परस्मैपद का कोई भी चिन्ह अवशिष्ट नहीं है, सबका रूप एक ही प्रकार से चलता है।

3. संस्कृत कालों से विकसित काल हिन्दी में दो तीन ही हैं। कालों में अब प्रत्यक्ष-परोक्ष और अद्यतन अनद्यतन का नहीं बल्कि पूर्ण-अपूर्ण, तात्कालिक आदि का अन्तर रखा जाता है।

4. प्रयोगों के भावों को प्रकट करने का तरीका भी हिन्दी का अपना नया है, जिससे सभी भाव पूरी स्पष्टता तथा अधिक सरलता से प्रकट हो जाते हैं। जैसे-

सः पिपठिषति की जगह वह पढ़ना चाहता है।

सः पापठ्यते की जगह वह अधिक या बार-बार पढ़ना चाहता है।

5. क्रिया रूपों की बनावट प्रायः पूर्णत वियोगात्मक हो गयी है।

6. संयुक्त क्रिया में हिन्दी की समृद्धि यहाँ तक बढ़ चुकी है कि वह संस्कृत को तो इस क्षेत्र में बहुत पीछे छोड़ आयी है, अंग्रेजी आदि आधुनिक सुविकसित भाषाओं को भी चुनौती दे रही है। जैसे वह कह डालता है, कह देता है, कह लेता है, पढ़ा, पढ़ता था, पढ़ रहा था, पढ़ जाता था, पढ़ जाया करता था आदि प्रयोगों में अर्थ की छायाएँ अतीव सुन्दरता व सूक्ष्मता से अभिव्यक्त की जाती है।

इस प्रकार संस्कृत से प्राकृत अपभ्रंश के रास्ते सरल व विकसित होती हुई हिंन्दी तक पहुँची क्रिया के बारे में हम कह सकते हैं कि क्रिया किसी व्यापार व स्थिति जैसी उस प्रक्रिया का बोध कराती है जो पुरूष, वचन, काल, अर्थ, प्रकार की व्याकरणिक कोटियों में व्यक्त होती है।

ऊपर वर्णन कर चुके कि हिन्दी विश्लेषात्मक और वियोगात्मक हुई।

अतः आधुनिक हिन्दी की क्रिया रूप प्रक्रियात्मक सूचकों तथा वाक्य विन्यासात्मक प्रयोगों के कारण अनेक तथा विभिन्न रूपों की एक प्रणाली है जिनके भेद इस प्रकार हैं-

1. मूल या प्रारम्भिक रूप - क्रिया के धातु
2. अनिश्चित विकारी रूप - तुमर्थ
3. अनिश्चित अविकारी रूप - सुपाईन (अविकारी तुमर्थ)
4. विश्लेषणात्मक रूप - कृदन्त

5. क्रिया विशेषणात्मक रूप - क्रिया विशेषणात्मक कृदन्त

6. विधेयवाचक रूप (संश्लेषणात्मक तथा विश्लेषणात्मक) - जो सूचित करते हैं कि

1. एक निश्चित कर्ता कोई व्यापार करता है या यह व्यापार किसी निश्चित कर्ता द्वारा किया जाता है या व्यापार बिना किसी कर्ता के चलता है जैसे- तुम आओगे? मैंने कहा, रमेश उसे एक नौकर से पिटवा रहा था, कहीं ऐसी बात कही जाती होगी।

2. व्यापार नियम काल में हो रहा है। जैसे- वह आया, वह आ रहा है, वह आयेगा।

3. व्यापार वास्तविक या अवास्तविक है। जैसे- आओ, मैं आऊँ, अगर मैं आता, मैं आ रहा हूँ।

4. व्यापार के विभिन्न पक्ष हैं। जैसे- देर तक बहस होती रही, जज साहब की स्थिति बिगड़ती चली गयी।

क्रिया के उपरोक्त रूपों में दो वर्ग है- अकर्मक और सकर्मक। अर्थात् क्रियाएँ दो प्रकार की होती है। अकर्मक क्रिया और सकर्मक क्रिया।

**सकर्मक क्रियाएँ** - जो सरल द्विघटकीय शब्द - समुदाय के स्तर पर प्रधान कर्म ले सकते हैं तथा वाक्य के स्तर पर कर्मणि रचना बना सकते हैं या योजक कर्म उपवाक्य जोड़ सकते हैं।

आधुनिक हिन्दी में सब संश्लेषणात्मक, अकर्मक क्रियाएँ मूल धातु वाली है जबकि सकर्मक क्रियाएँ मूल धातु वाली, साधित धातु वाली तथा साधित प्रेरणार्थक धातुवाली होती है। साधित धातुवाली क्रियाओं की रूप की प्रक्रियात्मक विशेषता यह है कि उनके धातु मूल अकर्मक और सकर्मक धातुओं से बने हैं। साधित सकर्मक प्रथम प्रेरणार्थक धातु 'आ' व 'ला' प्रत्यय जुड़ने से तथा सकर्मक द्वितीय प्रेरणार्थक साधित धातु 'वा' (लवा) प्रत्यय जुड़ने से बनते हैं।

अपने रूप प्रक्रियात्मक लक्षणों के अनुसार अकर्मक क्रियाओं में तथाकथित भाववाचक क्रियाएँ आ जाती हैं, जिनके धातु अन्त्यलुप्त प्रथम प्रेरणार्थक धातु के समाकार हैं।

कभी-कभी मूल क्रियाओं की सकर्मकता या अकर्मकता प्रयोग मात्र के आधार पर निश्चित किया जाता है क्योंकि एक ही क्रिया वाक्य विन्यास के स्थान के आधार पर सकर्मक या अकर्मक हो सकती है। जैसे- किसानों के बेटों ने आतंकवादियों से युद्ध लड़ा था, दोनों अपनी भाइयों से लड़ती थी।

मूल धातु वाली अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं के अतिरिक्त मौलिक क्रियाओं में वे साधित धातुवाली सकर्मक क्रियाएँ भी आती हैं जिनको परम्परागत रूप से प्रथम प्रेरणार्थक क्रियाओं में सम्मिलित किया जाता है। उदाहरणार्थ- उठाना, बनाना, दबाना, लटकाना आदि। ऐसी क्रियाएँ इनका कर्ता व्यापार का प्रत्यक्ष करने वाला होता है।

## क्रिया : महत्व और वर्गीकरण

आधुनिक हिन्दी और कुड़ुख़ में क्रिया एक मुख्य शब्द भेद है। यह एक विविध और विकासमूलक व्याकरणिक कोटि है। 'व्यापार प्रक्रियाओं को सूचित करते हुए वह प्रारंभिक शब्द के समंज्जन से संज्ञा और विशेषण के बाद निकलती है और कृदन्त व तुमर्थ (क्रिया का साधारण रूप, जो कि संज्ञा और क्रिया के मध्य का रूप है) की अवस्था से होते हुए एक पुरूष, प्रकार, काल, अर्थ तथा वाच्य की कोटियों को अपना लेती है।'[12]

कोप्यूला वाक्यों में कर्त्ता तथा पूरक दोनों वाक्य के प्रमुख नियंत्रक तत्व होते हैं, क्रिया केवल दो अस्तित्वों के बीच संयोजन का काम करती है। जैसे- 'रफी मेरा ड्राइवर है' - 'को- वाक्यों' (ऐसे सभी वाक्यों को, जिसमें पूरक अथवा कोशीय क्रिया की आकांक्षा के कारण (लौकिक) कर्त्ता के साथ 'को' परसर्ग का प्रयोग अनिवार्य हो, 'को-वाक्य' कहा जा सकता है) में 'को -भाव' (जिसमें 'को-पूरक' तथा 'को-क्रिया' शामिल है) वाक्यों के प्रमुख नियंत्रक तत्व होते हैं। क्रिया प्रधान वाक्यों में क्रिया ही वाक्य

का प्रमुख नियंत्रक तत्व होती है। अतः कोशीय क्रिया युक्त ऐसे सभी वाक्यों को जो कोप्यूला या को-वाक्य नहीं है। क्रिया प्रधान वाक्य कहा जा सकता है। क्रिया प्रधान वाक्यों में क्रिया की आकांक्षा के अनुसार ही वाक्य के अन्य घटकों की संख्या या उसके स्वरूप का निर्धारण होता है।[13]

| | |
|---|---|
| 1. राधा नाच रही है। (कर्ता) | राधा नला लगी। |
| 2. मैं आपकी बात नहीं समझा। (कर्ता, कर्म) | एन निंग्हय कत्थन मा बुझ्रुरकन। |
| 3. मोहन गाड़ी गैरेज में रखता है। (कर्ता, कर्म, अव्यय) | मोहनस गड़िन गैरेज नू उइदस। |
| 4. मैं चम्पा को नर्स समझता था। (कर्ता, कर्म, कर्मपूरक) | एन चम्पन नर्स बुझर'आ लइक्कन। |

वाक्य 2 और 4 में प्रयुक्त 'समझना' क्रिया भिन्नार्थक है, इसलिए इस क्रिया को अर्थानुसार अलग-अलग साँचों में रखा जायेगा।

ऊपर वर्णित 'को-वाक्य' के उदाहरण –

| | |
|---|---|
| 1. सुधीर को बुखार है। | सुधीरसगे नड़ी र'ई। |
| 2. बच्चों को नींद आ रही है। | ख़द्दर गे ख़ंदर'आ उरखा लगी। |
| 3. मुझे इस बात का दुःख है। | एंगा ई कत्थागे दुक्खे र'ई। |
| 4. मोहन को जल्दी है। | मोहनसगे चाँड़े र'ई। |

उपर्युक्त वाक्यों में पूरक (बुखार, नींद, दुःख, जल्दी) कर्ता के बाद 'को' परसर्ग की आकांक्षा करते हैं।

**हिन्दी और कुड़ुख़** – दोनों में विधेय स्थान पर क्रिया अनिवार्य संरचक के रूप में होती है। उपवाक्य में क्रियाएँ प्रयोग विशेष के आधार पर दो वर्गों– समापिका और असमापिका में विभक्त की जाती है। जब क्रिया (अर्ज'आना) उपवाक्य में विधेय स्थान की पूरक बनकर आती है तो समापिका प्रकार की होती है और जब क्रिया स्थान से हटकर संज्ञा या विशेषण या क्रिया विशेषण के स्थान पर पहुँच कर तद्रूश्य प्रकार्य करने लगती है, तो वह असमापिका प्रकार की क्रिया बन जाती है।[14]

हिन्दी की शब्द साधक व्यवस्था में प्रकार्य के आधार पर क्रिया रूपों को संज्ञा, विशेषण और क्रिया विशेषण शब्द वर्गों के अन्तर्गत विभाजित किया जा सकता है। रूप साधक व्यवस्था में प्राप्त क्रिया रूप उपवाक्य में विधेय स्थान पर आते हैं। जबकि संज्ञा, विशेषण और क्रिया विशेषण शब्दों की भाँति प्रकार्य करने वाले क्रिया रूप कुछ दूसरे प्रकार की रचनात्मक प्रवृत्तियों से प्रभावित है।

अब उपवाक्य के निश्चित स्थानों के आधार पर क्रियाओं का प्रकार्य सोदाहरण स्पष्ट किया जा सकता है।[15]

**कर्त्ता-स्थान पर संज्ञा रूप में** – धातु में 'ना' के योग से संरचित कृदन्त क्रिया रूप उपवाक्य में कर्ता स्थान पर संज्ञा रूप में प्रयुक्त होने के कारण अपने प्रकार्य के आधार पर कृदन्ती संज्ञा कहलाता है। यथा-

| | |
|---|---|
| 1. सोना स्वस्थ्य के लिए अच्छा है। | ख़ँदरना दव जिया गे कोड़े तली। |
| 2. (बहुत) सोना लाभकारी नहीं होता। | (बग्गे) ख़ँदरना मल्ली कोड़े। |
| 3. घूमना लाभकारी होता है। | कुद्दना अकय दव मनी। |
| 4. (उसका) चलना बन्द हुआ। | (आस घी) कुद्दना अम्बरा। |
| 5. (अधिक) सोचना उचित नहीं है। | (बग्गे) घोखना दव मल्ली। |
| 6. (तुम्हारा) रोना शुरू हुआ। | (निग्हय) चींख़ना ओरे मन्जा। |
| 7. (हमारा) पढ़ना सार्थक हुआ। | (एंग्हय) बचना कोड़े मन्जा। |

**2. विधेय-स्थान पर क्रिया रूप में** – वस्तुतः विधेय-स्थान पर प्रयुक्त होने वाली क्रियायें ही समापिका प्रकार की क्रियायें मानी जाती है। उपवाक्य में यही एक ऐसा स्थान है जहाँ केवल क्रियायें ही

आ सकती है। इस स्थान पर या तो एक क्रिया रूप आता है या एक क्रिया पदबन्ध (Verb phrase)। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है-

| | |
|---|---|
| 1. अनिल काम करे। | अनिलस नलख़ नन्ना नेक'आ। |
| 2. प्रदीप ने पुस्तक पढ़ी। | प्रदीपस पोथी बचचस। |
| 3. सुधा बाजार जायेगी। | सुधा पेठ का-लो। |
| 4. कमला चतुर है। | कमला चेटगर र'ई। |
| 5. वह कलकत्ते से आया। | आसँ कलकत्ता ती बरचस। |
| 6. हम कॉलेज गए। | एन मेच्छा लुरकुड़िया केरकन। |
| 7. बच्चा रो रहा है। | ख़द्दस चींख़ा लगदस। |
| 8. प्रभा पत्र लिखती है। | प्रभद् चिट्ठी टूड़ी। |
| 9. लड़का स्कूल से भाग गया। | ख़द्दस लुरकुड़िया ती बोंगस। |

**3. कर्म स्थान पर संज्ञा रूप में** – प्रायः 'करना' तथा 'चाहना' सकर्मक क्रियाओं के साथ कर्म-स्थान पर क्रियाओं के साथ ही कर्म स्थान पर क्रियाएँ कृदन्ती संज्ञा के रूप में मिलती है। यहाँ उनका मूल रूप ही रहता है। यथा-

| | |
|---|---|
| 1. नेता ने बोलना शुरू किया। | नेतस ब'अना ओरे नन्जस। |
| 2. मरीज ने चलना बन्द किया। | नड़ीयरकस एकना अम्बियस। |
| 3. वह घूमना बन्द करेगा। | आस कुद्दना अम्बोस। |
| 4. वह आना शुरू करेगा। | आस बरना ओरे ननोस। |
| 5. लड़कों ने हँसना बन्द किया। | कुक्कोर अलखना अम्बियर। |
| 6. मैं जाना चाहता हूँ। | एन का-ला बेद्दन। |

स्पष्ट है कि कर्म स्थान पर क्रियाओं का केवल कृदन्ती संज्ञा रूप ही प्रयुक्त हो सकता है।

**4. कर्तृ पूरक-स्थान पर विशेषण रूप में** – कर्ता स्थान पर प्रयुक्त संज्ञा (या सर्वनाम) से सम्बन्धित अतिरिक्त सूचना देने के लिए क्रियाओं के कृदन्ती रूप विशेषणवत् प्रकार्य करते हुए देखे जाते हैं। यथा-

| | |
|---|---|
| 1. साँप मरा हुआ पड़ा है। | नेर्र असन किच्चकी मड़रकी र'ई। |
| 2. नदी बहती हुई दिखाई पड़ती है। | ख़ाड़ बहनुम एथर'ई। |
| 3. लड़का पढ़ा हुआ है। | कुक्कोस बचचका र'अदस। |
| 4. लड़के बोलते हुए चले गए। | कुक्कोर अनुम चइल केरर। |
| 5. कमल भागता(हुआ) आता है। | कमलस बोंगनुम बरदस। |
| 6. झाड़ियाँ कटी पड़ी है। | झड़पो खन्डरका मड़रकी र'ई। |
| 7. बच्चा रोता जाता है। | ख़द्दस चींख़नुम कादस। |

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि असमापिका प्रकार की क्रियायें विशेषणों की भाँति प्रकार्य करती हुई कर्तृपूरक का स्थान ग्रहण कर रही है। यहाँ इन कृदन्ती विशेषणों का विधेयात्मक प्रयोग है, जो पूरक रूप में है।

**5. कर्म पूरक स्थान पर विशेषण रूप में** – कर्म पूरक स्थान पर भी क्रियाओं का विशेषण रूप में प्रकार्य देखा जाता है। यथा-

| | |
|---|---|
| 1. मैंने रूपया पड़ा देखा। | एन ढीबन मड़चका ईरकन। |

| | |
|---|---|
| 2. मैंने अठन्नी पड़ी देखी। | एन अठन्निन मड़ारका ईरकन। |
| 3. उसने मकान बना देखा। | आस एड़पा कमरका ईरयस। |
| 4. उसने इमारत बनी देखी। | आस बखड़े कमरका ईरयस। |
| 5. हमने सांप मरा पाया। | एन केच्चका नेर्रन हइक्कन। |
| 6. हमने चिड़िया मरी पायी। | एन केच्चका ओ-ड़न हइक्कन। |

स्पष्ट है कि असमापिका क्रियाओं का विधेयात्मक विशेषणों की भाँति प्रकार्य है और इसलिए ये कर्म पूरक बनकर कर्म के बाद में आ रही है।

**6. विशेषक स्थान पर विशेषण रूप में** – उपवाक्य में क्रिया विशेषक स्थान पर विशेषण रूप में कर्ता या कर्म के पूर्व आ सकती है। ऐसी स्थिति में वह वैकल्पिक संरचक के रूप में आती है। निम्नांकित उदाहरण द्रष्टव्य है-

**1. कर्ता के पूर्व :**

| | |
|---|---|
| 1. सोता लड़का जाग पड़ा। | ख़ँदर'ऊ कुक्कोस एजेर ख़च्चियस। |
| 2. सोती लड़की जाग पड़ी। | ख़ँदर'ऊ कुकोय एजेर ख़च्चिया। |
| 3. सोते लड़के जाग पड़े। | ख़ँदर'ऊ कुक्कोर एजेर ख़च्चियर। |
| 4. भागा लड़का लौट आया। | बोंका कुक्कोस किर्र बरचस। |
| 5. भागी लड़की लौट आयी। | बोंका कुकोय किर्र बरचा। |
| 6. भागे लड़के लौट आये। | बोंका कुक्कोर किर्र बरचर। |

**2. कर्म के पूर्व :**

| | |
|---|---|
| 1. मैंने सोता लड़का देखा। | एन ख़ँदर'ऊ कुक्को ईरकन। |
| 2. मैंने सोती लड़की देखी। | एन ख़ँदर'ऊ कुकेन ईरकन। |
| 3. मैंने सोते लड़के देखे। | एन ख़ँदर'ऊ कुक्कोरिन ईरकन। |
| 4. उसने मरा साँप देखा। | आस केच्चका नेर्रन ईरियस। |
| 5. उसने मरी चिड़िया देखी। | आस केच्चका ओ-ड़ा ईरियस। |
| 6. उसने भागते घोड़े को पकड़ा। | आस बोंगना घोड़ोन धरचस। |
| 7. तुमने भागती भैंस को पकड़ा। | नीन बोंगना भैंसन धरचकय। |

**7. क्रिया-विशेषक स्थान पर क्रिया-विशेषण रूप में** – उपवाक्य में क्रिया क्रिया-विशेषक स्थान पर क्रिया-विशेषण रूप में भी समापिका क्रिया के पूर्व आ सकती है। क्रिया विशेषक स्थान पर आने वाली क्रियाओं के निरपेक्ष रूप (लिंग, वचन, कारक से अप्रभावित) मिलते हैं। हम उन्हें कार्य/क्रिया के कालत्व तथा पूर्णत्व अथवा अपूर्णत्व को ध्यान में रखते हुए निम्न वर्गों में व्यवस्थित कर सकते हैं-

**(i) पूर्वकालत्व बोधक :**

| | |
|---|---|
| 1. वह बाजार जाकर आया। | आस पेठ कालर बरचस। |
| 2. वह खाना खा आया। | आस मन्डी ओण्ड बरचस। |
| 3. मैंने पत्र लिखकर भेजा। | एन चिठी टड़र तइकन। |
| 4. मैंने पत्र फाड़कर फेंका। | एन चिठिन चर्रकन हिबड़कन। |
| 5. हम सोकर जागे। | एन ख़ँदर'अर एजेरकन। |

उपर्युक्त पूर्वकालिक क्रियाओं से मुख्य क्रिया सम्पादन के पूर्व किसी अन्य क्रिया के संपादन की सूचना मिलती है। इन्हें क्रियाविशेषण रूप में स्वीकार कर लिया गया है।

**(ii) तात्कालिक बोधक : उदाहरण**

| | |
|---|---|
| 1. वह बैठते ही बोला। | आस ओक्कतेम बाचस। |
| 2. वह सुनते ही चौंका। | आस मेनतेम छड़कारस। |
| 3. तुम आते ही बैठ गये। | नीन बरतेम उक्कय चिच्चकय। |
| 4. हम चलते ही थक गये। | एन एकतेम ख़ड़िदकन केरकन। |
| 5. वह उठते ही गिर पड़ा। | आस चो'अतेम खतर ख़च्चियस। |

**(ii) अपूर्ण कार्यत्व बोधक : उदाहरण द्रष्टव्य**

| | |
|---|---|
| 1. वह बैठते-बैठते रूक गया। | आस ओक्कते-ओक्कते मल उक्कियस। |
| 2. वह सुनते-सुनते भाग पड़ा। | आस मेनते-मेनते बोंगा ख़च्चियस। |
| 3. मैं लिखते-लिखते चौंक पड़ा। | एन टूड़नुम-टूड़नुम छड़कर ख़इच्चकन। |
| 4. हम पढ़ते-पढ़ते उठ पड़े। | एन बचनुम-बचनुम इज्ज ख़इच्चकन। |

**(iii) पूर्ण कार्यत्वबोधक**

| | |
|---|---|
| 1. वह बैठे-बैठे सो गया। | आस उक्का-उक्का खँदरस केरस। |
| 2. तुम पड़े-पड़े देखते रहते हो। | नीन बेडरा-बेडरा एरते र'अदय। |
| 3. मैं खोय-खोये चलता रहा। | एन एबसेरका-एबसेरका एकते रहचकन। |
| 4. वह रेल पर लटका-लटका वहाँ पहुँचा। | आस रेल नु झुलुरते-झुलुरते असन अड़िसियस। |

इस प्रकार क्रियाओं की व्याप्ति उपवाक्य में अनिवार्य और वैकल्पिक दोनों प्रकार के स्थानों तक है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वाक्य या उपवाक्य निर्माण में क्रिया की महती भूमिका है। क्रिया के बिना वाक्य-उपवाक्य की संरचना असम्भव है। उपवाक्य का प्रारूप क्रिया ही निश्चित करती है।

## उपवाक्य प्ररूप

**प्रस्तुत विषय** – क्रम में समापिका क्रियाओं के आधार पर आंतरिक संरचना की दृष्टि से उपवाक्यों के प्ररूप निर्धारित किये जा रहे हैं।

"उपवाक्य में समापिका क्रियाओं के नियमन के अनुरूप आंतरिक संरचना मिलती है। अकर्मक क्रियाओं के साथ केवल दो अनिवार्य संरचक मिलते हैं, जबकि सकर्मक क्रियाओं के साथ तीन और द्वि-कर्मक के साथ चार। प्रथम प्रेरणार्थक क्रियाओं के साथ तीन अनिवार्य संरचक आते हैं तो द्वितीय प्रेरणार्थक क्रियाओं के साथ चार। कहीं वाच्य बोध के लिए लिंग वचन अन्विति कर्म-कर्तृ कर्ता के साथ होती है तो कहीं निरपेक्ष क्रियायें मिलती है। कभी उपवाक्य में विधि क्रियाओं के प्रभाव से यथार्थ कर्ता कर्म कारकीय परसर्ग लेकर तिर्यक रूप में आता है।"[16]

इस प्रकार उपवाक्यों के अनेकानेक प्ररूप प्राप्त होते हैं। निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत हम उन्हें व्यवस्थित कर सकते हैं।

**1. अकर्मक प्ररूप** – इस प्ररूप में अकर्मक क्रियाओं का प्रयोग होता है और अनिवार्य संरचक दो कर्ता तथा क्रिया होते हैं। अकर्मक क्रियाओं के साथ आने वाले कर्ता को ध्यान में रखकर इस प्ररूप के दो भेद किये जा सकते हैं।

**1. कर्तृ निरपेक्ष** – ऐसे उपवाक्यों में यथार्थ कर्ता न आकर कर्म कर्तृ-कर्ता आता है। यथा–

| | |
|---|---|
| 1. पेड़ कटता है। | मन्न खन्डर'ई। |
| 2. बिस्तर बँध रहा है। | अट्टना हेर'आ लगी। |
| 3. आटा पिसा। | गुन्डा कस्सरा। |

| | |
|---|---|
| 4. खाई पटेगी। | गड्डी भठर'ओ। |
| 5. पत्ते गिरते हैं। | अतख़ा खतर'ई। |
| 6. पानी बरसा था। | चेंप पुंइकी रहचा। |
| 7. घास उग आई। | घांसी कुन्द बरचा। |

**2. कर्तृ-सापेक्ष :-** इस प्रकार के उपवाक्यों में यथार्थ कर्ता ही आता है, व्याकरणिक कर्ता नहीं। यथा-

| | |
|---|---|
| 1. लड़का भागता है। | कुक्कोस बोंगदस। |
| 2. मोहन खेला। | मोहनस बिच्चियस। |
| 3. किशन चला था। | किशनस चलरका रहचस। |
| 4. रीता बैठेगी। | रीता ओक्को। |
| 5. बच्चा सोया। | ख़द्दस खँदरस। |
| 6. लड़के हँस पड़े। | कुक्कोर अलखा ख़च्चियर। |
| 7. गोविन्द रो दिया। | गोविन्दस चींख़ा ख़च्चियस। |

किन्तु गत्यार्थक क्रियाओं के साथ जब गन्तव्य कर्म आ जाता है तो संरचक तीन हो जाते हैं। उदाहरण-

| | |
|---|---|
| 1. दिनेश घर जाता है। | दिनेसस एड़पा कादस। |
| 2. रमेश विद्यालय आता है। | रमेसस लुरकुड़िया बरदस। |
| 3. किशन बाजार चलेगा। | किशनस पेठ कालोस। |

**3. सकर्मक प्ररूप**[17] - इस प्रकर के उपवाक्यों में सकर्मक क्रियाओं का प्रयोग मिलता है और अनिवार्य संरचक तीन कर्ता, कर्म और क्रिया मिलते हैं। यदि कर्म स्थान पर प्राणिवाचक संज्ञा शब्द आते हैं तो प्रायः 'को' परसर्ग सहित अपने तिर्यक रूप में रहते हैं और अप्राणिवाचक संज्ञा शब्द अपने मूल रूप में। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं-

| | |
|---|---|
| 1. श्याम ने लड़के को पीटा। | श्यामस कुक्कोरिन लवचस। |
| 2. गोविन्द घोड़े को बाँधता है। | गोविन्दस घोड़ोन खुटदस। |
| 3. रीता ने रमेश को देखा। | रीता रमेससिन ईरिया। |
| 4. लक्ष्मी ने चाय पी। | लक्ष्मी चाह ओण्डा। |
| 5. घोड़ा घास खाता है। | घोड़ो घांसी मूख़ी। |
| 6. मजदूर खाई पाटेगा। | नलख़ ननुर गड्डिन भठ'ओर। |

**4. द्विकर्मक प्ररूप**[18] - इस प्रकार के उपवाक्यों में द्विकर्मक क्रियायें आती है और अनिवार्य संरचक चार- कर्ता, कर्म (गौण), कर्म (मुख्य) और क्रिया होते हैं।

कर्म (गौण) सदैव 'को' परसर्ग सहित अपने तिर्यक रूप में रहता है और सम्प्रदान कारक (नेक'इम गे खतरी) संबंध स्पष्ट करता है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है-

| | |
|---|---|
| 1. मोहन दिनेश को पुस्तक देता है। | मोहनस दिनेसस गे पोथी चि'अदस। |
| 2. गोविन्द ने लड़के को कलम दी। | गोविन्दस कुक्कोसगे कलम चिच्चस। |
| 3. राम शंकर को पुस्तक भेजता है। | रामस शंकरसगे पोथी तइदस। |
| 4. लड़के ने मित्र को रूपये भेजे। | कुक्कोस संगियस गे ढिबा तइय्यस। |

**5. पूर्णभूत कृदन्ती प्ररूप**[19] –

**पूर्णभूत कृदन्ती क्रियायें** – (अकर्मक क्रियाओं को छोड़कर) उपवाक्य में प्रायः अपना संबंध कर्ता से छोड़कर कर्म से जोड़ लेती है और कर्म के लिंग वचन के अनुसार विभक्ति प्रत्यय ग्रहण करती है। किन्तु जब प्राणिवाचक संज्ञा शब्द कर्म स्थान पर 'को' परसर्ग सहित प्रयुक्त होते हैं, तो क्रिया का पूर्ण भूत कृदन्ती रूप सदैव पुल्लिंग एकवचन में रहता है। निम्नांकित उदाहरण द्रष्टव्य है-

| | |
|---|---|
| 1. लड़के ने बाजार देखा। | कुक्कोस पेठ ईरयस। |
| 2. लड़के ने दुकान देखी। | कुक्कोस दोकान ईरयस। |
| 3. लड़के ने मोहन को देखा। | कुक्कोस मोहनसिन ईरयस। |
| 4. लड़के ने रीता को देखा। | कुक्कोस रितन ईरयस। |
| 5. लड़के ने बच्चों को देखा। | कुक्कोस ख़द्दारिन ईरयस। |
| 6. लड़के ने लड़कियों को देखा। | कुक्कोस कुकेरिन ईरयस। |

**6. प्रेरणार्थक प्ररूप**[20]– प्रेरणार्थक क्रियायें कोशीय क्रियाओं से भिन्न आकृति ग्रहण कर वाक्य या उपवाक्य में अर्थों की अभिव्यक्तियों में विशिष्टता ला देती है। प्रेरणार्थक क्रिया वाले उपवाक्यों को दो वर्गों-प्रथम प्रेरणार्थक प्ररूप तथा द्वितीय प्रेरणार्थक प्ररूप।

**i. प्रथम प्रेरणार्थक** :– कर्म और कर्ता के आधार पर उपवाक्य संरचना के अन्तर्गत तीन और चार अनिवार्य संरचक के आधार पर प्रथम प्रेरणार्थक के दो प्ररूप होते हैं- 1. कर्म लेकर तथा 2. यथार्थ कर्त्ता लेकर।

**1. कर्म लेकर** :– उदाहरण द्रष्टव्य

| | |
|---|---|
| 1. रमेश ने पत्थर गिराया। | रमेशस पखना टिड्डस। |
| 2. किशन घास उगाता है। | किशनस घाँसी परद'आदस। |
| 3. दिनेश बच्चे को उठाता है। | दिनेशस ख़द्दासिन चो–दस। |
| 4. गोविन्द चक्की चलाता है। | गोविन्दस चक्किन किन्दर'आदस। |
| 5. उसने बच्चे को भगाया। | आस ख़द्दासिन कुदाबाचस। |

इन उदाहरणों में 'गिराया, उगाता है, उठाता है, भगाया' क्रियायें प्रेरणार्थक तथा कर्म को लेकर संरचित है तथा इनमें तीन-तीन संरचक (रमेश, पत्थर, गिराया) हैं। इसी प्रकार **कुड़ुख क्रियायें** भी प्रथम प्रेरणार्थक के अन्तर्गत कर्म को लेकर संरचित है।

**ii. यथार्थ कर्ता लेकर**– द्रष्टव्य उदाहरण निम्नवत् हैं-

| | |
|---|---|
| 1. मैंने गोविन्द से बिस्तर बँधाया। | एन गोविन्दसती अट्टनन हेंताचकन। |
| 2. वह नौकर से पेड़ कटाता है। | आस जोंख़सती मन्नन खंडत'आदस। |
| 3. रमेश सुरेश से पत्र लिखायेगा। | रमेशस सुरेश ती चिठी टुड़तो'ओस। |
| 4. दिनेश लड़के से आटा पिसाता है। | दिनेसस कुक्कोसती गुन्डा कसत'आदस। |

हिन्दी में कुछ सकर्मक क्रियायें इस प्रकर है कि उनके प्रथम प्रेरणार्थक रूप से प्रेरणार्थकता तो गौण हो जाती है और उनकी द्विकर्मकता उभर आती है। ऐसी स्थिति में उपवाक्य में दो कर्म मिलते हैं। मुख्य कर्म मूल रूप में और गौण कर्म 'को' परसर्ग लेकर तिर्यक् रूप में। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं-

| | |
|---|---|
| राम लड़के को पानी पिलाता है। | रामस कुक्कोसिन अम्म ओन्तआदस। |
| हमने रमेश को शर्बत पिलाया। | एन रमेससिन पना ओन्ताचकन। |
| उसने बच्चे को पुस्तक पढ़ायी। | आस ख़द्दासिन पोथी बचताचस। |

| | |
|---|---|
| लड़के ने किशन को चित्र दिखाया। | कुक्कोस किशनसिन छपा एदाचस। |
| सुरेश महेश को गाना सुनाता है। | सुरेशस महेशसिन डंडी मेनत'आदस। |

प्रथम उदाहरण में 'लड़के को' और 'पानी' द्विकर्मकता उभर आयी है। मुख्य कर्म 'पानी' मूल रूप में है और 'गौण कर्म' लड़के को 'तिर्यक' रूप में क्रिया 'पिलाया' की प्रेरणार्थकता गौण हो गयी है। इसी प्रकार अन्य उदाहरणों में भी हुआ है। कुड़ुख के उदाहरण भी इसी परिप्रेक्ष्य में द्रष्टव्य है-

**2. द्वितीय प्रेरणार्थक रूप**- इस प्रकार के वाक्य में/उपवाक्य में अनिवार्य संरचक चार- 1. व्याकरणिक कर्ता (प्रेरणा कर्ता), 2. यथार्थ कर्ता (प्रेरित कर्ता), 3. कर्म और 4. क्रिया मिलते हैं। उदाहरण द्रष्टव्य -

| | |
|---|---|
| 1. राम प्रकाश से विस्तर बँधवाता है। | रमेशस प्रकाशती अट्टनन हेंत'आदस। |
| 2. किशन नौकर से पेड़ कटवायेगा। | किशनस नलख़ ननुर ती मन्न खण्डतो'ओस। |
| 3. हम नौकर से मसाला कुटवायेंगे। | एन जोंख़सती मसाला चुंजतो'ओन। |
| 4. उसने लड़के से कलम तुड़वाई। | आस कुक्कोस ती कलमन एसताचस। |
| 5. रमेश ने लड़के से घोड़े को बँधवाया। | रमेशस तन्गहय संगियस ती! घोड़ोन हेताचस। |

प्रथम उदाहरण में 'राम' व्याकरणिक (प्रेरणा कर्ता) है, प्रकाश यथार्थ कर्ता प्रेरित कर्ता : 'बिस्तर' कर्म तथा 'बँधवाता है' क्रिया संरचक है जिनकी संख्या चार है। इसी प्रकार चार उदाहरणों तथा कुँड़ुख के पाँचों उदाहरणों में चार-चार संरचक हैं।

कुछ द्विकर्मक क्रियाओं के द्वितीय प्रेरणार्थक रूप के साथ क्रिया को लेकर कुल पाँच संरचक होते हैं- दो व्याकरणिक तथा यथार्थ कर्ता के संरचक, दो कर्म (मुख्य तथा गौण कर्म) के संरचक तथा एक क्रिया संरचक।

"इस प्रकार उपवाक्य में पाँच अनिवार्य संरचक प्राप्त होते हैं। व्याकरणिक कर्ता, यथार्थ कर्ता, कर्म (गौण) कर्म (मुख्य) और क्रिया।"[21]

| | |
|---|---|
| 1. मैंने मित्र से रमेश को रूपये दिलवाये। | एन् संगियस ती रमेशसगे ढीबा चिताचकन। |
| 2. राम रमेश से किशन को किताब दिलवाता है। | रामस रमेशसती किशनसगे पोथी चित'आदस। |
| 3. उसने किशन से सुरेश को पानी पिलवाया। | आस किशनस ती सुरेशसीन अम्म ओन्ताचस। |
| 4. सुरेश ने गोविन्द से दिनेश को चाय पिलवाई। | सुरेशस गोविन्दसती दिनेशसीन चाय ओन्ताचस। |
| 5. तुमने सत्येन्द्र से महेन्द्र को पाठ पढ़वाया। | नीन सत्येन्दरस ती महेन्द्रसिन पाठ बचताचकय। |
| 6. रीता रमेश से महेश को गाना सुनवाती है। | रीतद रमेससती महेशसिन डंडी मिन्त'ई। |
| 7. हमने मित्र से विजय को सामान भिजवाया। | एन संगियस ती विजयसगे आलो तइतःचकन। |

**6. वाच्चीय प्ररूप[22]-**

इसके अन्तर्गत आन्तरिक संरचना भिन्नता के आधार पर उपवाक्यों के दो प्ररूप निर्धारित किये जा सकते हैं- कर्मवाच्चीय तथा भाव वाच्चीय।

**1. कर्मवाच्चीय प्ररूप**- इस प्रकार के प्ररूप में अनिवार्य संरचक तीन रहते हैं- कर्ता, कर्म और क्रिया। कर्म अपने मूल रूप में रहता है तथा क्रिया सकर्मक रहती है जिसके साथ 'जाना' सहायक क्रिया के रूप में प्रयुक्त होती है। कुछ उदाहरण-

| | |
|---|---|
| 1. मसाला कूटा जाता है। | मसाला चुँजतार'ई। |
| 2. छत कूटी गई। | मेसगा चुन्जतारा। |

| | |
|---|---|
| 3. साँप मारा जाता हैं। | नेर्र लवतार'ई। |
| 4. चील मारी जाती है। | चीलन ला'ओनर। |
| 5. पेड़ उखाड़ा गया। | मन्न चड़तारा केरा। |
| 6. बेल उखाड़ी गयी। | ख़ोट्टा चड़तारा केरा। |

इन उदाहरणों में कर्ता का लोप है : कर्म अपने मूल रूप में है और सभी क्रियायें सकर्मक हैं जिनके साथ 'जाना' क्रिया अपने भिन्न कालों में भिन्न-भिन्न रूप में आयी है और सहायक क्रिया बन गयी है।

**2. भाव वाच्चीय प्ररूप-** इस प्रकार के प्ररूप में अनिवार्य संरचक दो होते हैं- कर्ता और क्रिया। क्रिया अकर्मक होती है जिसके साथ 'जाना' या 'बनना' सहायक क्रिया के रूप में आते हैं। दोनों प्रकार की क्रियाओं के रूप में निरपेक्ष रहते हैं। काल चिन्हक सहायक क्रिया भी निरपेक्ष रूप में रहती है। यथा-

| | |
|---|---|
| 1. राम से चला जाता है। | रामसती एकातार'ई। |
| 2. रीता से चला जाता है। | रीताती एकतार'ई। |
| 3. रोगियों से चला जाता है। | नड़ीयारऊर ती एकतार। |
| 4. बसन्त से उठा नहीं गया। | बसन्तस ती मल चोतारा'ई। |
| 5. किरण से उठा नहीं गया। | किरणती मल चोतरआर। |
| 6. बच्चों से उठा नहीं गया। | ख़द्दरती मल चोतारा'ई। |
| 7. किशन से चलते नहीं बनता है। | किशनस ती एकम पोलतार'ई। |
| 8. विमला से चलते नहीं बना। | विमला ती मल एकतारा। |
| 9. लड़कों से उठते नहीं बनेगा। | कुक्कोरती चो'ओना मल मनो। |
| 10. हमसे उठते नहीं बनेगा। | एमनती चो'ओना मल बन'ओ। |
| 11. स्त्रियों से बैठते नहीं बना। | मुक्करती ओक्कना मल बन्चा। |

उपर्युक्त दोनों प्रकार के उदाहरणों से स्पष्ट है कि क्रिय लिंग, वचन, पुरूष से निरपेक्ष है। कर्ताओं के साथ 'से' परसर्ग जुड़ा है। यथार्थ और "बनना' क्रिया भी निरपेक्ष रूप में व्यवहृत है।

**7. विधि प्ररूप[23]-**

इस प्रकार के प्ररूप में विधि क्रियाओं का प्रयोग होता है। 'क्रिया-स्थान' पर संरचना की दृष्टि से, मुख्य क्रिया '.......ना'+है या '......ना+' चाहिए रूप में प्राप्त होती है। अकर्मक क्रियाओं के साथ दो और सकर्मक क्रियाओं के साथ तीन संरचक आते हैं। यथार्थ कर्ता 'को' परसर्ग सहित अपने तिर्यक रूप में आता है। कुछ उदाहरण प्रस्तुत है-

| | |
|---|---|
| 1. लड़के को सोना है/चाहिए। | कुक्कोर गे ख़ँदरना र'ई/चाड़ र'ई। |
| 2. हमको जाना है/चाहिए। | नमन काना र'ई/चाड़ र'ई। |
| 3. दिनेश को आना है/चाहिए। | दिनेशसगे बरना र'ई/चाड़ र'ई। |
| 4. लड़को को आना है/चाहिए। | कुक्कोरगे बरना र'ई/चाड़ र'ई। |
| 5. किशन को दूध पीना है/चाहिए। | किशनसगे दूदही ओन्ना र'ई/चाड़ र'ई। |
| 6. मुझको पुस्तक पढ़ना है/चाहिए। | एंगागे पुथि बचना र'ई/चाड़ र'ई। |
| 7. तुमको बिस्तर बाँधना है/चाहिए। | निंगा अट्टनन हेअना र'ई/चाड़ र'ई। |

उपर्युक्त सभी वाक्यों की क्रियायें अपने 'ना' वाले मूल रूप में हैं। अकर्मक क्रियाओं (आना, जाना, उठना आदि) के साथ दो अनिवार्य संरचक और सकर्मक क्रियाओं (पीना, पढ़ना, बाँधना आदि) के साथ तीन अनिवार्य संरचक आये हैं।

**8. प्रवृत्ति प्ररूप :-**[24] इस प्रकार के प्ररूप में प्रवृत्ति सूचक क्रियाओं का प्रयोग होता है। क्रिया स्थान पर संरचना की दृष्टि से, मुख्य क्रिया भूत कृदन्ती (निरपेक्ष रूप)+ करना (वर्त्तमान/भूत/भविष्य के रूप+है/था (पुरूष-वचन/लिंग-वचन से प्रभावित) पदवन्ध रूप में प्राप्त होती है। अकर्मक मुख्य क्रिया के साथ दो और सकर्मक क्रिया के साथ तीन अनिवार्य संरचक मिलते हैं। यथा-

| | |
|---|---|
| 1. किशन सोया करता है। | किशनस खँदर'आ कुद्दस। |
| 2. हम चला करते हैं। | एन एका कुद्दन। |
| 3. वह जाया करता है। | आँस काला कुद्दस। |
| 4. लड़का पुस्तक पढ़ा करता है। | कुक्कोस पुथि बच'या कुद्दस। |
| 5. छात्र खेला करते थे। | बच'उर बे-चा कुद्दा लगियर। |
| 6. बच्चे दूध पिया करते थे। | ख़द्दर दुदही ओना कुद्दा लगियर। |
| 7. तुम पेड़ काटा करते थे। | नीन मन्नन खण्डा कुद्दा लइक्कय। |
| 8. वह चला करेगा। | आस एका कुद्दोस। |
| 9. वे पत्र लिखा करेंगे। | आर चिठी टुड़ा कुद्दोर। |
| 10. हम व्यवस्था देखा करेंगे। | एन सरा-जमा एरा कुद्दोन। |
| 11. कमला चाय पिया करेगी। | कमला चाह ओना कुद्दो। |
| 12. लड़कियाँ स्वेटरे बुना करेंगी। | कुकेर स्वेटरन गथ'ओर। |

सभी क्रियाओं सोया से लेकर दिया तक भूत कृदन्ती तथा निरपेक्ष रूप में है। सोया, चला, जाया, आदि अकर्मक क्रियाओं के उपवाक्य में केवल दो-दो अनिवार्य संरचक तत्व आये हैं तथा सकर्मक के साथ तीन-तीन अनिवार्य संरचक तत्व आये हैं।

उपर्युक्त वर्णित क्रिया के प्रकार्य (कार्य) प्रकारात्मक कार्य तथा वाक्य/उपवाक्य स्तर पर इसके वहुरूप ही इसकी (क्रिया) की शक्ति, वृत्ति और महत्व को उजागर करते हैं। दरअसल महत्ता होती है कार्य में बहुरूप धारण कर विशिष्ट कार्य करने की क्षमता में। इस मानदण्ड पर क्रिया व्याकरण के अन्तर्गत शब्द विचार के अधीन सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग बन जाती है। इसके रूप वैविध्य इसकी व्याप्ति और शक्ति में बढ़ोत्तरी लाते हैं। सच कहा जाय तो क्रिया व्याकरण की सर्वाधिक शक्ति सम्पन्न अवयव ही नहीं प्रत्युत् भाषा की जान है। क्रिया के बिना व्याकरण और भाषा दोनों निष्प्राण है। भावाभिव्यक्ति में, सहजता  सरसता और शालीनता लाती है क्रिया ही और ये सारी विशेषताएँ क्रिया के महत्व की सम्पुष्टि करती है।

## क्रिया का वर्गीकरण

आधुनिक हिन्दी में क्रिया एक मुख्य शब्द भेद है,यह एक विविध और विकासमूलक कोटि है। ''व्यापार, प्रक्रिया को सूचित करते हुए वह प्रारम्भिक शब्द के समंज्जन से संज्ञा और विशेषण के बाद निकलती है और कृदन्त व तुमर्थ (क्रिया का साधारण रूप जो कि संज्ञा और क्रिया के मध्य का रूप है) की अवस्था से होते हुए पुरूष, प्रकार, काल अर्थ तथा वाच्य की कोटियों को अपना लेती है।''[25]

आधुनिक हिन्दी की क्रिया अपने अधिकांश प्रयोगों में विश्लेषणात्मक बहुधा कृदन्तपरक होती है। क्रिया का एक ही कृदन्ती रूप सहायक क्रिया के साथ जुड़ने के कारण क्रिया की प्रायः सभी व्याकरणिक और शाब्दिक व्याकरणिक कोटियों को सूचित कर सकता है। क्रिया के ये सब रूप या तो शुद्ध विकारी या विकारी तिङन्ती होते हैं। आधुनिक हिन्दी में वाच्य तथा व्यापार के पक्ष की कोटि में भी केवल विश्लेषणात्मक रूप आते हैं। सम्भावनार्थ और संकेतार्थ के आठ रूपों में से केवल एक ही रूप तिङन्ती है और एक संश्लेषणात्मक विकारी है, बाकी सब रूप विकारी या विकारी तिङन्ती है।

**1. आधुनिक हिन्दी की क्रिया रूप** – प्रक्रियात्मक सूचकों तथा वाक्य विन्यासात्मक प्रयोगों के कारण अनेक तथा विभिन्न रूपों की एक प्रणाली हैं जिनके नीचे दिये भेद हैं–[26]

1. मूल (प्रारम्भिक) रूप क्रिया के धातु ;
2. अनिश्चित विकारी रूप – तुमर्थ ;
3. अनिश्चित अविकारी रूप – सुपाईन (अविकारी तुमर्थ) ;
4. विश्लेषणात्मक रूप- कृदन्त ;
5. क्रिया विशेषणात्मक रूप- क्रियाविशेषणात्मक, कृदन्त तथा
6. विधेयात्मक रूप- (संश्लेषणात्मक तथा विश्लेषणात्मक), जो सूचित करते हैं कि (क) एक निश्चित कर्ता (व्यक्ति) कोई व्यापार करता है या वह व्यापार किसी निश्चित कर्त्ता (व्यक्ति) द्वारा किया जाता है या यह व्यापार बिना किसी कर्त्ता (व्यक्ति) के चलता है। यथा- हिन्दी के उदाहरण- तुम आओगे? मैंने कहा, सूसन उसे एक नौकर से पिटवा रही थी, दिल्ली सल्तनत गद्दारों से घिर गया है, कहीं ऐसी बात कही जाती होगी, वह आया, वह आ रहा है, वह आयेगा, बैठने की जगह मैं अभी बनाये देती हूँ, पानी आया ही चाहता है तथा नीलों से कुछ बोलते नहीं बना आदि।

**कुड़ुख़ के उदाहरण**- नीन बरए? एन बाचकन, सूसन आसिन ओंटा जोख़स ति लवतआ लगिया? दिल्ली सलतनत दोकहर ति निंदकी रई, एकसआनु एन्ने कत्था बअनर होतंग, आस बरचस, आस बरआ लगदस, आस बरओस, ओक्कना अड्डा अक्कुनिम एन कमएन चिएन, चेंप बरअम बिद्दी अरा निलोन इंदरिम बआगे मल बनचा; अन्नेम।

क्रिया के उपर्युक्त सभी रूप सकर्मक क्रिया और अकर्मक क्रिया में विभक्त होते हैं।

**क्रिया का सकर्मक रूप**- सरल द्विघटकीय शब्द समुदा के स्तर पर प्रधान कर्म ले सकने वाला रूप तथा वाक्य स्तर पर कर्मणि रचना बना सकने वाला या योजक कर्म उपवाक्य जोड़ सकने वाला रूप सकर्मक क्रियायें मूल धातु वाली, साधित धातु वाली तथा साधित प्रेरणार्थक धातु वाली होती है। इनकी धातु मूल अकर्मक और सकर्मक धातुओं से बनी हैं।

**क्रिया का अकर्मक रूप**- आधुनिक हिन्दी में सब संश्लेषणात्मक अकर्मक क्रियायें मूल धातु वाली है। अपने रूप प्रक्रियात्मक लक्षणों के अनुसार अकर्मक क्रियाओं में तथा कथित भाव वाच्य क्रियायें आ जाती है, जिनकी धातुएँ अंत्यलुप्त प्रथम प्रेरणार्थक धातु के समाकार हैं।

कभी-कभी मूल क्रियाओं की सकर्मकता या अकर्मकता प्रयोग मात्र के आधार पर निश्चित की जाती है क्योंकि एक ही क्रिया वाक्य विन्यासात्मक स्थान के आधार पर सकर्मक या अकर्मक हो सकती है। वैसी क्रियाओं के अन्तर्गत हिन्दी और कुड़ुख़ की निम्नांकित क्रियायें आती है-

| | |
|---|---|
| ऐंठना, उलटना, खेलना, खोना, घबराना, | आँईठारना, उलटारना, बे-चना, एबसरना, |
| उगना, पलटना, बदलना, भूलना, मसोसना, | एलचना, कुन्दना, पलटारना, बदल‘अना, |
| सहना जैसी प्रचलित क्रियायें तथा कुछ | मोधोरना, सस्तीसारना, लेखआ, अरज‘अना। |
| अनुकरण वाचक क्रियायें जैसे-कड़कड़ाना, | |
| घबराना, छनछनाना, ठनठनाना आदि। | |

अधिकांश उपर्युक्त क्रियायें मूल रूप में अकर्मक हैं। उदाहरण वाक्यों में-

1. किसानों के बेटों ने जापानियों और नाजियों से युद्ध लड़ा था। खेतीहर घी तंगदाबगर जापानीर अरा नाजिर संगे जुझुरक्का रहचर।

2. दोनों अपने भाइयों से लड़ती थी। एड़ो बहिनर तंग भय्योर गने बिच्छा लग्गा लगियर।

व्यापार के कर्ता होने वाले सम्बन्ध के कारण आधुनिक हिन्दी की सब क्रियाओं के नीचे दिये भेद होते हैं।[27]

1. मौलिक क्रियायें 2. प्रथम प्रेरणार्थक क्रियायें 3. द्वितीय प्रेरणार्थक क्रियायें 4. भाव वाच्य क्रियायें

**1. मौलिक क्रियायें** – जिन क्रियाओं का कर्त्ता स्वयं ही क्रिया करने वाला है। जैसे-

| | |
|---|---|
| 1. मैंने पानी पिया। | एन अम्म ओंडकन। |
| 2. वह आया। | आस बरचस। |
| 3. बढ़ई ने मेज बनाई। | बढ़ीस मेज कमचस। |

मूल धातु वाली अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं के अतिरिक्त मौलिक क्रियाओं में वे साधित धातु वाली सकर्मक क्रियायें भी आती हैं जिनको परम्परागत रूप से प्रथम प्रेरणार्थक क्रियाओं में सम्मिलित किया जाता है उनमें निम्नांकित क्रियायें आती हैं-

उठाना, बनाना, दबाना, लटकाना, चोद'अना, कमना, अरबना, लटख़'अना, ओथोरना; लेखआ निकालना; आदि।

**वाक्य** – 1. स्त्री ने रामशरण के हाथ थाली में धुला दिये और बरतन उठाकर चली गयी।

2. वे सोने चाँदी का कोई जेवर बनाते होते।

कुड़ुख़- 1. मुक्का रामसरणस गहि ख़ेक्खन थरा नु नोड़ताचा अरा संजगीन चोदाकी चइल केरा।

2. आर सोना चाँदी गहि इन्दर'इम सिंगर पतर कम'ओर पँहके।

इन वाक्यों के कर्ता व्यापार के प्रत्यक्ष करने वाले हैं।

**2. प्रथम प्रेरणार्थक क्रियायें** – जिन क्रियाओं में व्यापार का कर्त्ता इसका प्रेरक और गौण कर्त्ता के साथ इस व्यापार में भाग लेता है। जैसे-

| | |
|---|---|
| 1. स्त्री ने रामशरण के हाथ थाली में धुला दिये। | मुक्का रामशरणसी ख़ेक्खन थरा नु नोड़ताचा चिच्वा। |

मतलब कि रामशरण के हाथ धुलाने में 'स्त्री' प्रेरक हुई और रामशरण प्रेरित (गौण कर्ता)

**3. द्वितीय प्रेरणार्थक क्रियायें** – जिन क्रियाओं में कर्त्ता व्यापार के प्रत्यक्ष प्रेरक के रूप में नहीं आते बल्कि दूसरे कर्त्ता के जरिये यह प्रेरणा देता है और परोक्ष रूप से इस व्यापार में भाग लेता है। जैसे-

| | |
|---|---|
| 1. उसने चेतन द्वारा दादा से पुछ्वाया। | आस चेतनसती अज्जोस गुसते मेनताचस। |
| 2. शोभा अपनी सेविका से नाखून रंगवा रही थी। | शोभा तंगहय नलख ननू कुके ती ओरख़न रंगतआ लगिया। |

यानी उसने कहा कि चेतन दादा से पूछे और शोभा ने सेविका से कहा कि वह (तूली से) उसके नाखून रंगे।.

**4. भाव वाच्य क्रियायें** – जिस क्रिया में व्यापार बिना किसी कर्त्ता के भाग लेने से चलता है। व्यापार का फल कर्म पर पड़ता है; जो वाक्य में उद्देश्य के कार्य में आता है। इनमें अप्राणिवाचक संज्ञाएँ व्यापार के कर्त्ता के समान आ सकती है। जैसे-

1. तालाब बड़े-बड़े पहाड़ों से घिरा हुआ था। पोखरा कोंहा-कोंहा परताति घिर्रकी रहचा।

प्राणिवाचक (व्यक्तिवाचक) संज्ञा व्यापार के कर्त्ता के रूप में बहुत कम आती है।

जैसे- वह अपने क्रूर पिता के हाथों बुरी तरह पिटा था।

आस कुंइकुयूँ तम्बस घी ख़ेक्खा ति अजम जोड़ लवरस।

3. अपने अर्थ और प्रयोग के अनुसार हिन्दी और कुड़ुख़ दोनों की क्रियायें दो भागों में वर्गीकृत होती हैं।

1. निरपेक्ष क्रिया तथा 2. सापेक्ष क्रिया।

**1. निरपेक्ष क्रियायें** अर्थपूर्ण होती है।

**2. सापेक्ष क्रिया**– सापेक्ष क्रियायें आंशिक रूप से अर्थवान होती है। इनका शब्दगत अर्थ निश्चित विश्लेषणात्मक रचनाओं में पूरी तरह या आंशिक रूप से ख़ो जाता है। अपने अर्थ की पूर्णता के लिए इन्हें दूसरी क्रिया पर आश्रित रहना पड़ता है। विश्लेशणात्मक रचनाओं से बाहर ये क्रियायें अर्थपूर्ण के समान आ सकती है।

अर्थलोप की अवस्था के कारण आधुनिक हिन्दी की सापेक्ष क्रियाओं का वर्गीकरण निम्नवत् किया जा सकता है–[28]

1. सहायक क्रियायें 2. संयोजक क्रियायें 3. सहकारी क्रियायें 4. रंजक क्रियायें 5. अर्द्ध संयोजक क्रियायें

**1. सहायक क्रियायें** – जिनका अर्थ पूरी तरह से नष्ट हुआ होता है और जो काल, अर्थ और वाच्य के विश्लेषणात्मक रूपों के बनाने में भाग लेती हैं, उदाहरण–

'है', 'था' और 'जाना'। र'ई, रहचा, अरा का–ना।

(क) 'है' तिङन्त क्रिया जो 'होता है' के अपने यौगिक रूप में 'हुआ है' के आसन्न भूत के रूप में तथा 'होगा' के भविष्यत काल के रूप में तिङन्ती विकारी और 'होता' संकेतार्थक के रूप में विकारी बन जाती है।

(ख) 'था' विकारी क्रिया जिसके 'होता था' यौगिक रूप तथा 'हुआ था' के पूर्ण भूत के रूप भी विकारी होते हैं और

(ग) 'जाना' की विकारी तिङन्ती क्रिया।

**2. संयोजक क्रियायें** – ऐसी क्रियायें जो नामिक विधेय के संयुक्त रूपों को बनाने में लगती है। जिनका शाब्दिक अर्थ पूरी तरह से नष्ट हुआ रहता है और जो काल और अर्थ के सूचक के समान आती है। जैसे–

क. 'है' तिङन्त क्रिया जो 'होता है' के अपने यौगिक रूप में, 'हुआ है' के आसन्न भूत के रूप में तथा 'होगा' के भविष्यत् काल के रूप में तिङन्ती विकारी और 'होता' संकेतार्थ के रूप में विकारी बन जाती है।

ख. 'था' विकारी क्रिया जिसके 'होता था' यौगिक रूप तथा 'हुआ था' के पूर्ण भूत के रूप भी विकारी होते हैं।

**3. सहकारी क्रियायें** – जो नामबोधक संयुक्त क्रियाओं को बनाने में लगी है जिनका शाब्दिक अर्थ पूरी तरह से नष्ट है और जो प्रक्रिया (व्यापार या स्थिति) के शुद्ध सूचक के समान आती हैं। उदाहरण–

करना, देना, रखना, होना, पड़ना तथा रहना। नन्ना, चि'अना, उइना, मन्ना, ...र'अना

काल, अर्थ तथा वाच्य के रूपों को बनाते वक्त सहकारी क्रियाओं का प्रयोग सहायक क्रियाओं के साथ हो सकता है जिससे उनकी निश्चित व्याकरणिक स्वतंत्रता अधिक स्पष्ट होती है।

**4. रंजक क्रियायें** – वैसी क्रियायें जो पक्ष सम्बन्धी विश्लेषणात्मक रूपों को तथा आवश्यकता बोधक विश्लेषणात्मक रूपों को बनाने में लगती है, जिनका शाब्दिक अर्थ कुछ रचनाओं में पूरी तरह नष्ट हुआ तथा कुछ रचनाओं में आंशिक रूप से सुरक्षित रहा। उदाहरण–

| | |
|---|---|
| आना, उठना, करना, चलना, चला आना, | बरना, चो'अना, नन्ना, एकना, चईल बरना, |
| चला जाना, चाहना, चाहिए, चुकना, छोड़ना | चइल का-ना,...अम्बना, का-ना, तुन्दना, चि'अना |
| जाना, डालना, देना, निकालना, पड़ना, पाना, | ओथोरना, ख़क्खना, कमरना, ओक्कना, लव'ओना, र'अना, |
| बनना, बैठना, मारना, रखना, रहना, ले जाना, | ले हो'अना, ओंगना। |

लेना, सकना तथा होना क्रियायें आती हैं।

**5. अर्द्धसंयोजक क्रियायें** – वैसी क्रियायें जो नामिक विधेय के संयुक्त तथा जटिल रूपों को बनाने में लगती है, जिनका शाब्दिक अर्थ न्यूनाधिक सुरक्षित रहता है, जिसके कारण वे काल तथा अर्थ के विश्लेषणात्मक रूपों को बना सकती है। उदाहरण-

| | |
|---|---|
| बनना, निकलना, रहना, खड़ा होना, | कमरना, उरखना, र'अना, इजना, |
| दिखना, लगना, मालूम पड़ना (होना), | एथेरना, लग्गना, अख़ना, एथेरना, |
| ठहरना, जान पड़ना, दिखाई देना (पड़ना), | नजर बरना, इजना, अख़ना का-ना, |
| देख पड़ना, नजर आना, प्रतीत होना आदि | एथेर का-ना, एथेर बरना, एथेर'आ वेद्दना, एन्नेम। |

**6. क्रिया पदबन्ध** – निर्माण में किसी के योग के आधार पर क्रिया का वर्गीकरण मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया के किया जा सकता है। सामान्य स्थितियों में क्रिया पदबन्ध या क्रिया वाक्य के अन्त में प्रयुक्त होती है। जैसे- पढ़ सकता है। लिखा जा चुका है, चला गया, दिखाई दे रहा था आदि। क्रिया-पदबन्ध के सभी घटक अनिवार्य घटक होते हैं, ऐच्छिक नहीं।

**(क) मुख्य क्रिया** – क्रिया पदबन्ध का वह अंश जो कोशीय अर्थ वहन करता है, मुख्य क्रिया कहलाता है। जैसे-

पढ़, चल, मना कर, भूल जा आदि। बच'अ, एका, मनाब'अर, मोंधर'आ कला अन्नेम

**(ख) सहायक क्रिया** – क्रिया पदबंध का वह अंश जो व्याकरणिक सूचना वहन करता है, सहायक क्रिया कहलाता है। जैसे-

ता है, था -एगा, -या, -जा आदि। नन्दस, रहचस, र'ए, कला अन्नेम

सहायक क्रियाओं के अन्तर्गत वाच्य, पक्ष तथा काल सम्बन्धी प्रत्यय या चिन्हक शामिल है। ये सभी वाक्य स्तरीय व्याकरणिक कोटियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

आर्येन्द्र शर्मा ने 'आधुनिक हिन्दी का प्रारम्भिक व्याकरण' नामक अपनी रचना में पहली बार क्रिया में व्यापार के पक्ष व्याकरणिक श्रेणी को भिन्न किया तथा व्यापार (क्रिया) के दो मुख्य पक्ष भिन्न किये गये। समापिका पक्ष तथा अपूर्णकालिक पक्ष। इसके अलावा सहायक क्रियाओं के भी दो भेदों को भिन्न किया गया। काल तथा वाच्य के रूपों की रचना करने वाली सहायक क्रिया। जैसे-

होना, था तथा जाना मन्ना, रहचा अरा काना

क्रिया के पक्ष सम्बन्धी रूपों की निर्माता-क्रिया। जैसे-

चाहिए आदि चही अन्नेम

'प्रारम्भिक व्याकरण' के अनुसार हिन्दी में तीन अर्थ है-

1. आज्ञार्थ
2. निश्चयार्थ तथा
3. सम्भावनार्थ

सम्भावनार्थ (क्रिया) के भी निम्नांकित वर्ग हैं-

**1. इच्छार्थक वृत्ति। जैसे-**

| | |
|---|---|
| मैं चाहता हूँ कि वह आए। | एन घोखदन का आस वर'अन। |

**2. विध्यर्थक वृत्ति। जैसे-**

| | |
|---|---|
| सम्भव हो, वह आया हो। | मना उंगी, आस बरचका र'अस। |

सम्भव है तथा 'आया हो' के रूप आते हैं।

**3. संकेतार्थ। जैसे-**

| | |
|---|---|
| यदि मेरा भाई यहाँ होता, तो तुम ऐसा न कहते। | अगर एंग भइयोस इसन र'अना होले नीन एन्ने मल ब'ओय पहें। |

**4. संदेहार्थ। जैसे-**

| | |
|---|---|
| वह आता होगा। | आस बरदस होतंग। |

जिसमें 'आता होगा' तथा 'आया होगा' के रूप आते हैं।

9. हिन्दी में क्रिया की व्यापक भूमिका समझते हुए और क्रियार्थक रचनाओं के भिन्न प्रकारों की विशेषताओं तथा क्रियार्थक काल रूपों की बहुतायत समझते हुए किशोरी दास वाजपेयी ने अपनी पुस्तक का दूसरा भाग क्रिया के ऊपर लिखा है।[29] 'प्रारम्भिक व्याकरण' की अपनी पुस्तक के उत्तरार्द्ध में उन्होंने विधेय अंश अर्थात् क्रिया अंश पर प्रकाश डाला है। उन्होंने 'सिद्ध' और 'साध्य' की संकल्पना दी है। 'सिद्ध' तथा 'साध्य' की संकल्पना समापक कृदन्त तथा शुद्ध क्रिया अर्थात् कृदन्त तथा तिङन्त के विभिन्न रूपों के लिए लागू होता है। श्री किशोरी दास वाजपेयी ने प्रेरणार्थक क्रिया की व्याख्या के क्रम में इसे (क्रिया को) द्विकर्मक बताया। जैसे-

| | |
|---|---|
| माँ बच्चे को दूध पिलाती है। | तंगियो ख़द्दासिन दूदही उन्त'ई। |

इस वाक्य में मुख्य कर्ता दूध पीने वाला बच्चा है और माँ गौण कर्त्ता है। अतः प्रेरणार्थक क्रियायें द्विकर्मक हैं। श्री वाजपेयी के अनुसार असली कर्म 'दूध' है तथा गौण कर्म 'बच्चा' इन्होंने त्रिकर्मक वाक्य की संकल्पना की है। जैसे-

| | |
|---|---|
| माँ नौकर से बच्चे को दूध पिलवाती है। | अयंग नौकरस ति ख़द्दासिन दुदही ओन्तति'ई। |

**10. यौगिक क्रिया** – यौगिक क्रिया दो क्रियाओं का ऐसा निकट संयोग है। पहली क्रिया धातु के रूप में होती है और दूसरी में पक्ष, काल तथा वृत्ति प्रत्यय लगते हैं। उदाहरण के लिए-

| | |
|---|---|
| वह किताब ले गया।[30] | आस पुथिन ले होच्चस। |

इस वाक्य में 'ले जाना' एक यौगिक क्रिया है परन्तु 'वह आ गया' वाक्य में 'आ जाना' संयुक्त क्रिया है क्योंकि 'ले जाना' में 'लेना' और 'जाना' दोनों का कोशीय अर्थ सुरक्षित है। अतः 'ले जाना' में दो स्वतंत्र कार्य- व्यापार, शामिल हैं। इसके विपरीत 'संयुक्त क्रिया' 'आ जाना' में केवल 'आना' का कोशीय अर्थ व्यक्त होता है।

श्री भोलानाथ तिवारी अपनी रचना 'हिन्दी भाषा' में हिन्दी की यौगिक क्रियों को निम्नांकित भागों में वर्गीकृत किया है[31] :-

| | |
|---|---|
| 1. संख्या वाचक (दर्शन होना) | एथेरना |
| 2. विशेषणात्मक (अच्छा होना) | कोड़े मन्ना |
| 3. संख्या वाचक (एक होना) | ओन्टे मन्ना |
| 4. सार्वनामिक (अपना करना) | तंग'आ नन्ना |
| 5. ध्वनि अनुकरणीय (धक-धक करना) | धुकधुकरना |

| | |
|---|---|
| 6. हृदयात्मक (जगमग करना) | जगमगरना |
| 7. क्रिया विशेषणात्मक (आगे करना) | मुन्धारे नन्ना |
| 8. क्रियार्थक | |
| (क) धातु से बनी (गिर पड़ना) | खतर ख़च्चना |
| (ख) कृदन्तपरक (लिखा करना) | टूड़ा कुद्दना |
| (ग) तुमर्थ से बनी (गाने लगना) | पांड़ा- हेलेरना |

9. पुनरूक्त जिनमें निम्न शब्दों की द्विरूक्ति होती है-

| | |
|---|---|
| क. संज्ञाओं की (मरहम पट्टी करना) | दवई बिरो हे'अना |
| ख. विशेषणों की (साफ-सुथरा होना) | सफा सुथरा मन्ना |
| ग. क्रिया विशेषणों की (आगे-पीछे करना) | मुन्ध ख़ोख़ा नन्ना |
| घ. क्रियाओं की (मारना-पीटना) | पसना-पिटना |

अर्थ के अनुसार तिवारी जी ने यौगिक क्रियाओं को निम्नांकित मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया है।[32]

| | |
|---|---|
| 1. अवधारणासूचक (गिर पड़ना) | खतर ख़च्चना |
| 2. पूर्णता सूचक (कर चुकना) | नन्ज ख़च्चना |
| 3. संभावना सूचक (कर पाना) | नना ओंगना |
| 4. इच्छा बोधक (किया चाहना) | नना बेद्दना |
| 5. पौन : पुन्य सूचक (किया करता है) | नना कुद्दस |
| 6. सातत्यता बोधक (किये जाना, करते रहना) | नन्ते काना, नन्ते र'अना |
| 7. नित्यता घटमान बोधक (दाम बढ़ता चला जा रहा है) | मुल्ली बढ़रते चइल का लगी |
| 8. प्रक्रियात्मक (वह जा रहा है) | आस काला लगदस |
| 9. पूर्ण प्रायताबोधक (पाठ याद हो चला है) | टीप याद मन्नुम का लगी |
| 10. स्थैतिक (पकड़े रहना, बैठे रहना) | धरचका र'अना, उक्का र'अना। |
| 11. यत्रतत्रता बोधक (करते फिरना) | नना कुद्दना |
| 12. अनुषंगिकता बोधक (उससे मिलते जाना) | आसति ख़क्खरते कालके |
| 13. बाध्यता बोधक (उधार लिये बिना नहीं चलता) | उधरा मल होच्चका ति मल चलर'ई |
| 14. असमर्थता बोधक (करते नहीं बनता) | नन्ते मल बन'ई |
| 15. अल्पता बोधक (प्रोफेसर बनना चाहते थे, मास्टर बनकर रह गये) | प्रोफेसर बनआ बेद्दा लगियस, मास्टर रइह केरस |
| 16. प्रयोग बोधक (खाकर देखिये, पूछ देखिये) | मोख़र एरा, मेन्ज एरा |

10. चतुर्भुज सहाय अपने निबंध हिन्दी भाषा की सभी क्रियाओं को इस तरह वर्गीकृत करते हैं-[33]
1. साधारण 2. संयुक्त 3. काल बोधक 4. वृत्ति बोधक क्रियायें।

11. चतुर्भुज सहाय [34] क्रिया के छः काल रूपों को भिन्न कर क्रिया का वर्गीकरण करते हैं-

| | |
|---|---|
| 1. वर्तमान अभ्यास (जाता है) | कादस |
| 2. वर्तमान अपूर्ण (जा रहा है) | काला लगदस |
| 3. वर्तमान पूर्ण (गया है) | केरका र'अदस |

| | |
|---|---|
| 4. भूत अभ्यास (जाता था) | का लगियस |
| 5. भूत अपूर्ण (जा रहा था) | काला लगियस |
| 6. भूत पूर्ण (गया था) | केरका रहचस |

**12. संयुक्त क्रियायें** – संयुक्त क्रिया की रचना दो क्रियाओं के योग से होती है जिनमें से पहली क्रिया धातु रूप में होती है और दूसरी में पक्ष, वृत्ति तथा काल रूप प्रत्यय जुड़ते हैं। पहली क्रिया कोशीय अर्थ व्यक्त करती है और कोशीय क्रिया कहलाती है। दूसरी क्रिया जिसे रंजक क्रिया कहते हैं, कोई स्वतंत्र कोशीय अर्थ नहीं व्यक्त करती, बल्कि पहली क्रिया के ही अर्थ को मात्र विकसित, सीमित या रंजित करती है। जैसे-[35]

| | |
|---|---|
| कर लेना, भाग जाना | नन्ज लिंघना, बोंगना का'ना। |
| फेंक देना, रो पड़ना | हेबड़ना चि'अना, चींख़ा ख़च्चना। |
| उतर आना आदि | एत्त बरना, अन्नेम। |

उपर्युक्त उदाहरणों में प्रयुक्त 'लेना, जाना, देना, पड़ना, आना' का अन्यत्र अपना स्वतंत्र कोशीय अर्थ होता है, लेकिन संयुक्त क्रियाओं में रंजक क्रियाओं के रूप में प्रयुक्त होने पर ये अपने मूल कोशीय अर्थ से विहीन हो जाती है जिसे 'कोशीय रिक्तता' या 'व्याकरणीयकरण' कहा जाता है।

**13. मिश्र क्रियायें** :- हिन्दी में मिश्र क्रिया की रचना संज्ञा, विशेषण या क्रियांगी शब्दों के साथ 'कर', 'हो' आदि क्रियाकरों के संयोग से होती है। जैसे-[36]

| | |
|---|---|
| इंतजार करना, तारीफ करना/होना | असरा एरना, बड़ई कचनखरना। |
| स्पष्ट करना, ठीक करना, मना करना | सफ़ा नन्ना, ठौका नन्ना, मना नन्ना। |
| मालूम करना/ होना आदि | अख़ना/मन्ना, अन्नेम। |

मिश्र क्रिया के प्रथम घटक को 'क्रियामूल' कहा गया है, दूसरा घटक 'क्रियाकर' कहलाता है जिसका प्रकार्य क्रियामूल को (जो मूलतः संज्ञा, विशेषण या क्रियांगी शब्द होता है) क्रिया रूप प्रदान करना होता है।

(क्रियांगी शब्दों से तात्पर्य ऐसे शब्दों से है जो हमेशा मिश्र क्रियाओं के अभिन्न घटक के रूप में ही प्रयुक्त होते हैं और जिन्हें संज्ञा या विशेषण के रूप में पृथक करना सम्भव नहीं, जैसे- मालूम, मना, पेश स्वीकार, कबूल आदि।)

अर्थ के स्तर पर मिश्र क्रिया के दोनों घटक मिलकर एक आर्थी इकाई का निर्माण करते हैं।

अधिकांश विशेषणों के साथ क्रियाकरों का प्रयोग कर मिश्र क्रियाओं की रचना की जा सकती है, लेकिन संज्ञाओं में केवल अमूर्त संज्ञाओं का एक वर्ग ही मिश्र क्रियाओं का निर्माण करने की क्षमता रखता है। लोक-व्यवहार और प्रयोग-रूढ़ि ही इनके अंति आधार है। उदाहरणार्थ-

| | |
|---|---|
| तैयारी करना, ऐयाशी करना | सपड़ारना, अवादन्द नन्ना |
| बेवकूफी करना, आदि | बोको नलख नन्ना, अन्नेम |

संभव मिश्र क्रियायें हैं, लेकिन 'सचाई कहना, सौन्दर्य करना' आदि संभव मिश्र क्रियायें नहीं। मिश्र क्रियाओं के दूसरे घटक के रूप में अधिकांशतः 'करना' या 'होना' (क्रमशः सकर्मक तथा अकर्मक) क्रियाकरों का प्रयोग होता है, जैसे- मालूम करना, मालूम होना, प्रयोग करना, प्रयोग होना आदि। 'करना' तथा 'होना' दोनों क्रियाकर कोशीय अर्थ की दृष्टि से रिक्त होते हैं। कुछ मिश्र क्रियाओं के क्रियामूलों के साथ विशिष्ट क्रियाकरों का रूढ़िगत प्रयोग मिलता है। जैसे-

| | |
|---|---|
| घूस खाना, धोखा खाना | घूस मोंख़ना, दगा मोंख़ना |
| डींग मारना, धक्का मारना | थेजगर कचनखरना, धकिय'अना |
| थप्पड़ मारना/कसना, ढाढ़स बाँधाना | थपड़ा लव'अना, जिया हे'अना |

आराम बजाना, सलाम ठोकना — ख़न्न एख़ना, खेक्खा चि'अना।
भाग लेना, चकमा देना, सजा देना — मेसा मन्ना, चकमा चि'अना, जेहेल चि'अना
दिखाई पड़ना/देना — एथेरना काना।

**14. प्रेरणार्थक क्रियायें** -प्रेरणार्थक क्रियायें मुख्यतः मूल धातुओं में '-आ' तथा '-वा' प्रत्ययों के योग से बनती है और जहाँ आवश्यक हो, अन्य रूपात्मक तथा रूपस्वनिमिक परिवर्तन भी होते हैं। जैसे:-[37]

उठना - उठाना - उठवाना — चो'अना, चो-द'अना, चो-दत'अना
सोना - सुलाना - सुलवाना — खँदरना, कीदना, खँदरतत'अना।

प्रेरणार्थक क्रिया-रूप मुख्य क्रिया के अंश होते हैं, सहायक क्रिया के नहीं। प्रेरणार्थक क्रिया रूपों से यह बोध होता है कि कार्य-व्यापार को करनेवाला (सक्रिय कर्त्ता) किसी अन्य व्यक्ति (प्रेरक कर्त्ता) की प्रेरणा से कार्य कर रहा है। जैसे-

1. लड़की सो रही है। (सक्रिय कर्त्ता)कुकेय खँदर'आ लगी।
2. नौकरानी लड़की को सुला रही है (प्रेरक कर्त्ता) धंगरिन कुकेन कीद'आ लगी।
3. माँ नौकरानी से लड़की को सुलवा रही है। (मध्यस्त कर्त्ता) अयंग धंगरिन ति ख़द्दन कीदत'आ लगी।

वाक्य (2) में सक्रिय कर्त्ता पर प्रेरक कर्त्ता की प्रेरणा प्रत्यक्ष है, इसलिए इसे प्रत्यक्ष प्रेरणार्थक या प्रथम प्रेरणार्थक कहा जाता है। वाक्य (3) में सक्रिय कर्त्ता पर प्रेरक कर्त्ता की प्रेरणा मध्यस्थ के माध्यम से होने के कारण सीधी न होकर परोक्ष है, इसलिए इसे परोक्ष प्रेरणार्थक या द्वितीय प्रेरणार्थक कहा जाता है।

सभी हिन्दी या कुड़ुख़ क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप नहीं बनते। सामान्यतः सक्रिय कर्त्ता की आकांक्षा करने वाली मूल क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप संभव होते हैं, लेकिन उनमें भी सभी के नहीं। उदाहरण-

सोचना, कमाना, जानना, सौपना — घोखना, नलखना, अख़ना, सोपना
उंघना, चिल्लाना, मुस्कुराना, हिचकना — अंवल'अना, चिचयारना, मुसमुसरना, हिचकारना।

अख़रना आदि के प्रेरणार्थक रूप नहीं बनते, क्योंकि इन के द्वारा व्यक्त कार्य-व्यापार की प्रकृति में ही प्रेरणा द्वारा कार्य करवाए जा सकने की गुंजाईस नहीं यद्यपि कुछेक ऐसे व्यापारों की कृत्रिम प्रेरणार्थक अभिव्यक्ति अन्य युक्तियों द्वारा सम्भव है। जैसे-

मैंने उन्हें सोचने के लिए मजबूर किया — एन आसिन घोख'आ गे जोड़ चिच्चकन।

कुछ क्रियाओं के प्रेरणार्थक अर्थ स्वतंत्र कोशीय क्रिया शब्दों द्वारा अभिव्यक्त होते हैं। जैसे-

1. जाना-भेजना-भिजवाना — काना-तइना-तइत'अना
2. रहना-रखना-रखवाना — र'अना-उइना-उइत'अना
3. आना-लेना/बुलाना-लिवाना — बरना-हो'अना, एड़ना-होत'अना

**वाक्य** -

1. नौकर बाजार गया — धंगरस पेठ केरस।
2. शीला ने नौकर को बाजार भेजा — शिलद जोंख़ासिन पेठ तइय्या।
3. मैंने शीला से नौकर को बाजार भिजवाया। — एन शिलाति जोंख़ासिन पेठ तइतचकन।

**15. रंजक क्रिया** - संयुक्त क्रियाओं की रचना दो क्रियाओं के योग से है जिनमें से पहली क्रिया धातु रूप में होती और दूसरी क्रिया में पक्ष, वृत्ति तथा काल रूप-प्रत्यय जुड़ते हैं। यहीं दूसरी क्रिया रंजक क्रिया कहलाती है। यह क्रिया कोई स्वतंत्र कोशीय अर्थ नहीं व्यक्त करती, बल्कि पहली क्रिया के ही अर्थ को मात्र विकसित, सीमित या रंजित करती है। जैसे-

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. कर लेना | नन्ज लिंधना | 2. भाग जाना | वोंगना काना |
| 3. फेंक देना | हेबेड़ना चि'अना | 4. रो पड़ना | चींख़ा ख़च्चना |
| 5. उतर आना | एत्त बरना। | | |

हिन्दी में रंजक क्रियाओं की संख्या सीमित है, पर कुछ रंजक क्रियाओं पर वैयाकरणों में पर्याप्त मतभेद भी है।[38] प्रसाद गुरू 11 रंजक क्रियायें मानते हैं। आर्येन्द्र शर्मा 18, बहल 16, मेक्रेगार 13, वाजपेयी 12, और ऑल्फन 17 । हिन्दी की सर्वमान्य 8 प्रमुख रंजक क्रियायें नीचे दी जा रही है, जिनमें से प्रथम तीन का प्रयोग आवृत्ति सबसे अधिक है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. जाना (भाग जाना) | वोंगना काना | 2. लेना (कर लेना) | नन्ज लिंधना |
| 3. देना (फेंक देना) | हेबेड़ना चि'अना | 4. आना (उतर आना) | एत्त बरना |
| 5. पड़ना (रो पड़ना) | चींख़ा ख़च्चना | 6. उठना (काँप उठना) | असर चो'अना |
| 7. बैठना (कर बैठना) | नन्ज ओक्कना | 8. डालना (कर डालना) | नन्ज सजना |

इसके अतिरिक्त अपेक्षाकृत अधिक सीमित प्रयोगों में प्रचलित कुछ अन्य रंजक क्रियाएँ भी हैं जनमें प्रमुख हैं-

| | |
|---|---|
| 9. निकलना (बढ़ निकलना) | कुन्धारे उरखना |
| 10. मारना (छान मारना) | छपना |
| 11. मरना (जा मरना) | काल खें'अना |
| 12. छोड़ना (बना छोड़ना) | कम'अर अम्बना |

**16. तुमर्थ क्रिया**–'तुमर्थ' क्रिया साधारण रूप है। तुमर्थ एक क्रिया वाचक नामिक अविधेय रूप है जिसमें क्रिया, संज्ञा तथा कृदन्त के लक्षण सन्निहित है। 'तुमर्थ' क्रियावाचक या क्रियावाचक नामधातु से 'न' प्रत्यय तथा 'अ' विभक्ति की सहायता से बनता है तथा साधित (यौगिक) होता है जो सहायक, रंजक या सहकारी क्रिया के कार्य में आनेवाले सरल तुमर्थ तथा मुख्य क्रिया के कृदन्त या क्रिया विशेषणात्मक कृदन्त के मेल से बनता है।[39] तुमर्थ सरल होता है। यह क्रिया वाचक या क्रियावाचक नामधातु से 'न' प्रत्यय तथा 'अ' विभक्ति की सहायता से बनता है। यह साधित (यौगिक) होता है। यह सहायक क्रिया, रंजक या सहकारी क्रिया के कार्य में आनेवाले सरल तुमर्थ तथा मुख्य क्रिया के कृदन्त या क्रिया विशेषणात्मक कृदन्त के मेल से बनता है।[39] तुमर्थ के दो वर्ग हैं-

(1) सरल और (2) साधित (यौगिक) 'साधित (यौगिक) तुमर्थ' तीन वर्गों में विभक्त होता है-

(1) कर्मणि (2) पक्ष तथा (3) संयुक्त नामिक।

कर्मणि तथा संयुक्त नामिक तुमर्थ एक रूपी है क्योंकि इनके प्रधान घटक में (अर्थ की दृष्टि से) एक ही समान रूप प्रयुक्त होता है। इसके विपरीत पक्ष सम्बन्धी तुमर्थ बहुरूपी है क्योंकि यहाँ पर प्रधान घटक के कार्य में विभिन्न अविधेय रूप आते हैं। सरल और साधित (यौगिक) दोनों 'तुमर्थ' में निम्नलिखित क्रियावाचक लक्षण हैं-

**1. वाच्यकोटि** – सारे अकर्मक 'तुमर्थ' में कर्तृवाच्य दोनों के रूप हैं। सब भाववाच्य (पुरूष शून्य) तथा सारे सकर्मक 'तुमर्थों' में कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य या निजवाचक (कर्तृगामि) भाववाच्य का अर्थ निहित है। जैसे-

**हिन्दी** 1. प्रेमपत्र 'भेजना' एक बड़ी समस्या रही है।

2. उसके पैरों से **रौंदे** जाने में सेठी को सुख अनुभव हो रहा था (कर्मवाच्य)

3. बक्सा **खुलने** के समय माधो का दिल धड़क उठा। (भाववाच्य)

**कुड़ुख़** 1. चोन्हा चिठी तइना ओन्टा बेढ़ा नलख तली। (कर्तृवाच्य)

2. आसी खेड ती **तिरख़रना** सेठीस गे कोड़े लग्गा लगीया।

3. बक्सा **तिसगरना** बी'री आसी जिया धुकुर चो'चा।

उदाहरण 1. में 'भेजना', 2. में 'रौंदे जाने' और 3. में 'खुलने' क्रमशः कर्तृरि, कर्म और भाववाच्य की 'तुमर्थ' क्रियायें हैं। इसी प्रकार 2. पक्ष की कोटि 3. सापेक्ष कालसूचक अर्थ की कोटि 4. सकर्मकत्व और अकर्मकत्व की कोटि 5. अर्थ की कोटि 6. विधेयन की कोटि तथा 7. वृत्ति (प्रकारता) तथा पक्ष सम्बन्धी कोटियाँ 'तुमर्थ' की क्रियावाचक कोटियाँ हैं। विस्तृत चर्चा यहाँ अनपेक्षित है। यथा-स्थान इसकी विस्तृत चर्चा की जायेगी।

**17. द्विकर्मक क्रिया –**[40] कुछ क्रियायें एक कर्मवाली और दो कर्मवाली होती है। जैसे-

1. राम ने रोटी खायी। रामस अस्मा मोक्खस।

इस वाक्य में कर्म एक ही है- 'रोटी।' किन्तु

2. मैं लड़के को वेद पढ़ाता हूँ। एन कुक्कोसिन वेद बचत'अदन।

में दो कर्म हैं- 'लड़के को' और 'वेद'। वाक्य 1. में खाना (खायी) क्रिया का एक ही कर्म होने के कारण एक कर्मक क्रिया है तथा वाक्य 2. में 'पढ़ा' (पढ़ाता हूँ) क्रिया के दो कर्म- 'लड़के और वेद' होने के कारण पढ़ाना क्रिया द्विकर्मक कहलायेगी। इसी प्रकार अन्य उदाहरण भी लिए जा सकते हैं।

**18. नाम बोधक क्रिया (नामधातु) :–**[41] संज्ञा अथवा विशेषण के साथ क्रिया जोड़ने से जो संयुक्त क्रिया बनती है, उसे नामबोधक क्रिया कहते हैं। ध्यातव्य है कि नामबोधक क्रियायें संयुक्त क्रियायें नहीं है। संयुक्त क्रियाये दो क्रियाओं के योग से बनती है और नामबोधक क्रियायें संज्ञा अथवा विशेषण के मेल से बनती है। निम्नांकित उदाहरणों से स्पष्ट हो जायेगा-

**संयुक्त क्रिया –**

| | |
|---|---|
| 1. राम खेलने लगा। | रामस बे-चा हेल्लरस। |
| 2. वह पढ़ चुका है। | आस बचच लिंघचस। |
| 3. वह मुश्किल से सोने पाया। | आस मसकिल ति ख़ँदर'आ उंगियस। |
| 4. मुझे बोलने दो। | एंगन ब'आ चि'आ। |
| 5. तोता पढ़ता रहा। | सुगा बचनुम रहचा। |
| 6. यह काम मुझे करना पड़ता है। | इ नलखन एंगा नन्ना मनी। |
| 7. वह गिर पड़ा। | आस खतर ख़च्चियस। |
| 8. मैं खाना चाहता हूँ। | एन ओना बेद्दन। |
| 9. तुम लिखा करते हो। | नीन टूड़ा कुद्दय। |
| 10. मैं चल सकता हूँ। | एन ए-का ओंगदन। |
| 11. वह यहाँ प्रायः आया जाया करता है। | आस इसन घड़िम घड़िम कानुम बरनुम रअदस। |

**नामबोध क्रिया–**

| | |
|---|---|
| 1. हर हिन्दू शिव को पूजता है। | होरमा हिन्दुर शिवसधी पूजा नन्नर। |
| 2. वह चारा दिखाकर पशु को लुभाता है। | आस चरा एद'अर मेक्खोन लोभब'अदस। |
| 3. वह लोहे से पशु को दागता है। | आस पन्नाति मेक्खोन दगदस। |
| 4. उसने मुझे पनियाया है। | आस एंगन पनियाचस। |
| 5. उसने घर हथियाया है। | आस अंगियाचस। |
| 6. बादल गड़गड़ाता है। | बदाली मुर्री। |

नामधातु (नामबोधक क्रियाओं) में 1. पूजा से पूजना, लोभ से लुभाना, दाग से दागना, पानी से पनियाना, हाथ से हथियाना और गड़गड़ से गड़गड़ाना क्रियायें बनी हैं। ये सारी क्रियायें नामबोधक हैं।

**19. पूर्वकालिक क्रिया–** जब कर्ता एक क्रिया समाप्त कर उसी क्षण दूसरी क्रिया में प्रवृत्त होता है तब पहली क्रिया 'पूर्वकालिक' कहलाती है।[42] निम्नांकित उदाहरण इस तथ्य को पुष्ट करते हैं-

उसने **नहाकर** भोजन किया। आस एम'अर दरा मंडी ओण्डस।

इसमें 'नहाकर' पूर्वकालिक क्रिया है क्योंकि इससे 'नहाने' की क्रिया की समाप्ति के साथ ही भोजन करने की क्रिया का बोध होता है। पूर्वकालिक शब्द का विश्लेषण- पूर्व (पहले) + काल (कालिक) विशेषण को क्रिया अर्थात् जो समय बीत गया (तत्क्षण), उस काल की क्रिया।

**20. क्रियार्थक संज्ञा** – [43] जब क्रिया संज्ञा की तरह व्यवहार में आये, तब वह 'क्रियार्थक संज्ञा' कहलाती है। जैसे-

1. **टहलना** स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। कुद्दना जिया गे दव मनी।
2. देश के लिए मरना कहीं अच्छा है। बेलखा गे खे'अना इदीति दव र'ई।

**21. समापिका और असमापिका क्रिया** –उपवाक्य में क्रियायें प्रयोग विशेष के आधार पर दो वर्गों में विभक्त की जा सकती है-

1. समापिका क्रिया 2. असमापिका क्रिया

**1. समापिका क्रिया :-** जब क्रिया उपवाक्य में विधेय स्थान की पूरक बनकर आती है, तो समापिका प्रकार की होती है। जैसे-

बालक हँसता हुआ घर गया। कुक्कोस अलखते एड़पा केरस।

इस वाक्य में 'गया' समापिका क्रिया है।

**2. असमापिका क्रिया** – जब क्रिया क्रिया-स्थान से हटकर संज्ञा या विशेषण या क्रिया विशेषण के स्थान पर पहुँचकर तादृश प्रकार्य करने लगती है, तो वे असमापिका प्रकार की क्रिया बन जाती है। जैसे-

**खाया** मन ललचाता है। **मोक्का** जिया ललकार'ई।

'खाया' क्रिया मन का विशेषण बनकर आयी है, अतः असमापिका है।

**22. सुपाईन (अविकारी तुमर्थ)**

**'सुपाईन' रूप** – प्रक्रियात्मक दृष्टि से बिल्कुल क्रियामूलक कोटि है। इसमें कोई भी नामिक लक्षण नहीं है। शब्द- समुदायों के स्तर पर वाक्य स्तर पर सुपाईन क्रिया-प्रधान शब्द-समुदायों के आश्रित घटक के रूप में आता है। सुपाईन जटिल क्रियामूलक विधेय में आता है। उपर्युक्त दोनों स्तरों पर कुछ क्रियाओं के साथ सुपाईन प्रकार्यात्मक ढंग से समान तुमर्थ रचनाओं से मिलता-जुलता है मगर कुछ दूसरी क्रियाओं के साथ सुपाईन के स्थान पर तुमर्थ का प्रयोग असम्भव होता है।[44] गतिवाचक, स्थानान्तरण वाचक तथा कुछ दूसरी क्रियाओं के साथ सुपाईन और तुमर्थ एक-दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त हो सकते हैं। जैसे-

सुपाईन : गर्मी में तैरने जाता हूँ। बिड़ना नु ओगा कादन।

तुमर्थ : बीसों विद्यार्थी भाषा पढ़ने के लिए काशी गए। एन्दी बच'उर भखा बचआ गे कासी केरर।

सुपाईन : वह जलसा देखने आयेंगे। आस जतरा एरागे बरओस।

तुमर्थ : शायद जाने के पहले बच्ची को देखने के लिए आयें। मना उंगी का'ना ती मुन्ध ख़द्दन ऐरागे बरओस।

सुपाईन : उन्हें वह ... धूप में सूखने डाल देती। अदिन आद ..... बिड़ना नु ख़ाया गे सज'ई।

तुमर्थ : रंगरेज ने ... पगड़िया सूखने को डाल रखी थी। रंगरेजस ... पगन ख़ाया गे आरताचका रहचस।

सुपाईन में निम्नलिखित क्रियामूलक लक्षण निहित है -

**वाच्य की कोटि** – सब सकर्मक सुपाईनों में कर्तृवाच्य के रूप हैं। सब सकर्मक सुपाईनों में कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य के रूप हैं। जैसे-

1. सुबह धूप निकलने पर घूमने निकला। प़इरी विड़ना उरखा ख़ने कुद्दा उरखस।
2. हुकुम मिलते ही लड़कियाँ चुनी जाने लगी। आनतेम कुकेर चाजर'आ हेल्लरर।
3. खिल्ली उड़ायी जाने लगी। खिड़वइर नन्तार'आ लगी।

**2. पक्ष की कोटि** –

1. वरामदे की बत्ती मैंने जलती रहने दी। (नित्यता बोधक)
2. वह अपना सब कुछ खो देने को तैयार होती जाने लगी। (घरमान)

**3. सकर्मकत्व और अकर्मकत्व की कोटि** – सकर्मक सुपाईन के साथ न केवल प्रधान कर्म वरन् तुमर्थ का भी प्रयोग हो सकता है। जैसे-

1. मैं मूँग लेने ही तो गयी थी। एन मूंगिम ओन्दर'आ ग केरकी रहच'अन।

अकर्मक सुपाईन के साथ इससे आश्रित दूसरे सुपाईन का प्रयोग हो सकता है। जैसे-

1. कृष्ण ग्वालों के साथ गाय चराने जाने लगे। कृष्णस महरर संगे ओय ख़ापा गे का'ला हेल्लरस।
2. जब वह खेलने जाने लगते हैं। एकाबीरी आस वे'चागे काला हेलेरदस।

**4. वृत्ति तथा पक्ष की कोटियाँ** – सुपाईन कुछ क्रियाओं के सथ संयुक्त रचनायें बना सकता है जो वाक्य में संयुक्त अथवा जटिल क्रिया-मूलक विधेय के रूप में आती है। शब्द समुदाय के स्तर पर सुपाईन का प्रयोग तुमर्थ से आश्रित अंग के समान और कहीं कम अन्य अविधेय रूपों से आश्रित अंग के समान होता है। जैसे -

**हिन्दी** 1. किसी वैद्य-हकीम को बुलाने भेजना चाहते होंगे।

2. वे ही मिस 'रोजरेम' मेरी माता को पढ़ाने आने लगी।

**कुड़ुख़** 1. एक'अम मती-सोखासिन मेंख़ा तइय्या बेद्दा लगियस।

2. आ मईदिम रोजरेम इंगियोन बचतआगे बर'आ हेल्लरा।

वाक्य स्तर पर सुपाईन बहुधा जटिल क्रियामूलक विधेय में तथा अपेक्षाकृत कम क्रिया के अविधेय रूपों के वाक्यांशों में आती हैं। जैसे-[45]

**हिन्दी** 1. मैं चाय पीने चल रहा हूँ।

2. और तब धड़ाधड़ दरवाजा और खिड़कियाँ पीटी जाने लगी।

3. अगर आपको मेरा खेलने जाना पसन्द नहीं है तो कल से न जाऊँगा।

**कुड़ुख़** 1. एन चाह ओना काला लगदन।

2. आ बीरिम खटखट ना बलिन अरा जंगलन ठोक'आ हेल्लेरर।

3. अगर नीन एंगहय बेचा कानन मल पइत्तरदय होले नेला ति मल कालोन।

'पाना, देना, लगना, जाना, आना' आदि क्रिया रूपों के साथ सुपाईन के योग से व्यापार द्वारा क्रमशः सम्भव-असम्भव होने की ओर, व्यापार करने की अनुमति देने, न देने, व्यापार प्रारम्भ होने,

व्यापार को पूरा करने के इरादे की ओर संकेत करने तथा व्यापार की पूर्ति के अर्थ का बोध कराया जाता है। जैसे- [46]

**हिन्दी** 1. मर जाने के लिए सब कुछ तो करता हूँ, पर मर नहीं पाता।
2. उसने उसे नीचे से निकलने नहीं दिया।
3. दादा फिर रोने लगे।
4. हम इस रंग महल में आग लगाने जा रहे हैं।
5. मगर आज चौथा दिन होने आ रहा था।

**कुड़ुख़** 1. खेआगे हुरमिम गा नन्दन पहें खे'आ पोलदन।
2. आस आसिन कीतले उरखा मल चिच्चस।
3. अज्जोस फिन चींख़ा हेल्लरस।
4. एम ई रंग बखड़े नु चिच्च दग'आ का लगदम।
5. पहें इन्ना नाख़ उल्ला मनुम बर'आ लगिया।

**23. को क्रियाएँ** :- को वाक्यों के विधेय में दो प्रकार की क्रियाएँ होती हैं-[47]

1. सरल को-क्रियाएँ (चाहिए, आना आदि) और
2. मिश्र को-क्रियाएँ (पसन्द होना, इंतजार होना, नींद आना आदि)

मिश्र को-क्रियाओं के दो घटक होते हैं-

1. क्रियामूल (या विधेय संज्ञा) तथा
2. क्रियाकर (या विधेय साधक)।

को वाक्य की दृष्टि से क्रियामूल के तीन प्रकार सम्भव है-

1. जो क्रियामूल किसी कर्म, विषय, सहपात्र आदि की आकांक्षा नहीं करते, जैसे- नींद, बुखार (बच्चों को नींद आ रही है) कुड़ुख़- ख़द्दर, नड़ी (ख़द्दर गे खँदरआ उरखा लगी।)

2. जो क्रियामूल 'विषय+का' या 'सहपात्र+से' आदि की आकांक्षा करते हैं, जैसे- इन्तजार, प्यार (इन लोगों को डॉक्टर का इन्तजार है, राधा को शंकर से प्यार है।)

कुड़ुख़- पाब ए-रना, चोन्हा, (ईर डाकटरस घी पाब ए-रा लगनर। राधागे शंकरस ति चोन्हा र'ई।)

3. जो क्रियामूल अचिलित (परसर्ग रहित) कर्म की आकांक्षा करते हैं, जैसे- पसन्द, मालूम होना, दिखाई देना, मालूम होना/पड़ना आदि में 'होना, देना तथा पड़ना' (शर्माजी को यह गाड़ी पसन्द है।) कुड़ुख़- शर्मासगे ई गड़ी पसिन्द र'ई।

**24. क्रियाकर** :- क्रियाकर सामान्यतः संज्ञा या (या क्रियामूल) के साथ सहप्रयुक्त होकर उन्हें क्रियारूप प्रदान करते हैं। जैसे- 'पसन्द होना, दिखाई देना, मालूम होना/पड़ना' आदि में 'होना, देना तथा पड़ना।'[48]

कुछ क्रियाकर गौण रूप से कोशीय क्रिया (क्रियामूल) के अर्थ में सूक्ष्म स्वरूप भेद की भी सूचना देते हैं। जैसे-

**हिन्दी** 1. मुझे मालूम था, मुझे मालूम हुआ, मुझे मालूम पड़ा।
2. सुधीर को बुखार था, सुधीर को बुखार आया, सुधीर को बुखार हुआ।

**कुड़ुख़** 1. एन अख़आ लइक्कन, एन अख़चकन, एंगा अख़तारा।
2. सुधिरस गे नड़ी रहचा, सुधिरस गे नड़ी बरचा, सुधिरस गे नड़ी मन्जा।

**हिन्दी में** प्रयोग आवृत्ति की दृष्टि से छः प्रमुख क्रियाकर है।

**होना**, आना, रहना, लगना, पड़ना। मन्ना, बरना, र'अना, लग्गना, मड़रना।

**25. धातु (मूली)** - साधारण क्रिया के अन्त 'ना' को अलग कर देने से जो बचा रहता है, उसे धातु कहते हैं। जैसे-[49]

होना से हो मन्ना ति मनो।

साधारण क्रिया का मूल 'धातु' है। 'धातु' क्रियापद के उस अंश को कहते हैं, जो किसी क्रिया के प्रायः सभी रूपों में पाया जाता है।[50] उदाहरणार्थ-

'पढ़ना' क्रिया 'ना' प्रत्यय है जो मूल 'बचना' 'नन्ना' धातु 'पढ़' में लगा है। इस प्रकार 'पढ़ना' क्रिया की धातु 'पढ़' है। व्युत्पत्ति अथवा शब्द-निर्माण की दृष्टि से धातु दो प्रकार की होती है-

1. मूल धातु तथा,
2. यौगिक धातु

मूल धातु स्वतंत्र होती है। यह किसी दूसरे शब्द पर आश्रित नहीं होती। जैसे- 'खा, देख, पी' इत्यादि (**कुड़ुख़**- ओना, ए'रा, मोख़ा एन्नेम)।

धातुएँ अनन्त हैं- कुछ एकाक्षरी, कुछ दो अक्षरी, तीन अक्षरी और चार अक्षरी।

यौगिक धातु तीन प्रकार से बनती है-

1. धातु में प्रत्यय लगाने से अकर्मक से सकर्मक और प्रेरणार्थक धातुएँ बनती हैं।
2. कई धातुओं को संयुक्त करने से संयुक्त धातु बनती है।
3. संज्ञा या विशेषण से 'नाम धातु' बनती है।

**प्रेरणार्थक धातु (क्रिया)** - जिन क्रियाओं से इस बात का बोध हो कि कर्ता स्वयं कार्य न कर किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, वे प्रेरणार्थक धातुएँ (क्रियाएँ) कहलाती है।[52]

जैसे- काटना से कटवाना, करना से कराना आदि (**कुड़ुख़** : मोचना ति मोचत'अना, नन्ना ति नन्त'अना, लेखा)। 'गिरना से गिराना और गिरवाना'

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि 'धातु' ही क्रिया की जननी है और 'धातु' क्रिया ही है। अतः इसका अध्ययन 'क्रिया' खण्ड में ही होता है।

कृदन्त, वाच्य, पक्ष और काल का अध्ययन 'क्रिया-खण्ड' में ही होता है। अतः इन्हें भी क्रिया ही कहेंगे, हम इनपर यथा स्थान सविस्तार चर्चा करेंगे।

## क्रिया शब्द की सिद्ध : क्रिया की परिभाषा

जिस प्रकार 'संज्ञा' का अर्थ नाम है, उसी प्रकार 'क्रिया' का अर्थ काम है। हम जो काम करते हैं; उनके नाम ही व्याकरण में क्रिया कहलाते हैं।[53]

प्रकारान्तर से हम क्रिया को इस रूप में परिभाषित कर सकते हैं- जिस शब्द से किसी काम का करना या होना समझा जाय, उसे 'क्रिया' कहते हैं।[54]

जैसे-पढ़ना, खाना, पीना, जाना, लिखना, उठना, चलना, बैठना, सोना, दौड़ना, घूमना, लड़ना, माँगना, देना, बाँधना इत्यादि।

बचना, मोख़ना, ओन्ना, का'ना, टूड़ना, चोअना, एकना, ओक्कना, ख़ँदरना, बोंग्गना, कुद्दना, लड़पसना, ने'अना, चि'अना, हे'अना, एन्नेम

क्रिया विकारी शब्द है जिसके रूप लिंग, वचन और पुरूष के अनुसार बदलते हैं। यह हिन्दी और कुड़ुख़ दोनों की अपनी विशेषता है।

ऊपर हमने कामों के जो नाम दिए हैं, उन सब में एक बात समान रूप से दिखाई देती है। वह यह कि सबके अन्त में 'ना' लगा है। वैयाकरणों के अनुसार यह 'ना' प्रत्यय है जो 'पढ़ लिख, उठ, चल, बैठ, सो, दौड़, घूम, लड़, मांग, दे, बाँध' आदि धातुओं में लगा दिया गया है। कुड़ुख़ क्रियाओं के साथ भी यही हुआ है। दोनों भाषाओं की उपर्युक्त धातुओं से क्रियायें बना ली गयी है।

कुछ लोग इससे आगे बढ़कर कहते हैं कि 'पढ़ना, खाना, पीना, जाना' आदि क्रिया के रूप ही धातु हैं और उन्हीं रूपों से विकार उत्पन्न होने से क्रियाएँ बनती है।[55]

मान्यता यह भी है कि संस्कृत में बहुत से ऐसे शब्द हैं जिनके अन्त में 'न' और संस्कृत व्याकरण के नियम के अनुसार 'ना' के बदले 'ण' है। प्रायः वे सभी शब्द व्याकरण की दृष्टि से भावाचक संज्ञाओं के अन्तर्गत आते हैं। जैसे-

**हिन्दी** - कर्त्तन, वर्त्तन, पठन, लेखन, पालन, मिलन, शयन, भाषण, घर्षण, वर्षण इत्यादि।

**कुड़ुख़** - नन्ना, संजगी, बचन, टूड़न, पलन, ख़खर, ख़ँदर, बाचन, घसर, पुँइन, एन्नेम।

संस्कृत की भाँति हिन्दी और कुड़ुख़ में भी सब क्रियायें इन्हीं भाववाचक संज्ञाओं से बनी है। उनमें से कुछ तो ज्यों-की-त्यों रह गई है और कुछ के रूप बीच में होने वाले परिवर्तनों के कारण कुछ बदल गये हैं।

हिन्दी में 'कर्त्तन' से कतरना, वर्त्तन से बरतना, पठन से पढ़ना, लेखन से लिखना, पालन से पालना, मिन से मिलना, शयन से सोना, भाषण से भाखना (पुरानी हिन्दी में) घर्षण से घिसना, वर्षण से बरसना आदि क्रियायें बन गयी है।[56] इसी प्रकार कुड़ुख़ में भी भाववाचक संज्ञा शब्दों से क्रियाये बनी है। जैसे-

हिन्दी में और कुड़ुख़ में भी बने-बनाये भाववाचक संज्ञा शब्द थे और उन्हीं से हमारी, क्रियायें बनी है। यही कारण है कि हिन्दी और कुड़ुख़ में बहुत-सी क्रियायें भाववाचक संज्ञाओं के रूप में चलती हैं-

| | |
|---|---|
| 1. दिन रात खेलना अच्छा नहीं। | बिड़िम-पुत्ता बे-चना दव मल्ली। |
| 2. उस समय तुम्हारा बोलना बुरा हुआ। | आ बा-री निंगहय ब'अना मल कोड़े मन्जा। |
| 3. उन्हें नाचना नहीं आता। | आसगे नला मल बर'ई। |
| 4. तुम्हारा हमसे मिलना उन्हें अच्छा नहीं लगता। | निंगहय एंग गने ख़क्खरना आसगे मल दव लग्गी। |

**इन वाक्यों की क्रियाएँ** - खेलना, बोलना, नाचना, मिलना आदि। क्रियाओं के साधारण रूप में होने पर भी संज्ञाओं के रूप में आयी हैं। ऐसे रूपों को कुछ वैयाकरण 'क्रियार्थक संज्ञा' भी कहते हैं परन्तु है ये भाववाचक संज्ञा ही है। क्रिया का मुख्य कोटिबद्ध लक्षण यह है कि व्यापार या स्थिति जैसी उस प्रक्रिया को बोध कराती है जो पुरूष, वचन, काल, अर्थ प्रकार की व्याकरणिक कोटियों में तथा लिंग, पक्ष व वाच्य की शाब्दिक, व्याकरणिक कोटियों में व्यक्त होती है।[57]

आधुनिक हिन्दी और कुड़ुख़ में क्रिया एक मुख्य शब्द-भेद है, यह एक विविध और विकासमूलक कोटि है। क्रिया का लक्षण बताते हुए डॉ० ओ० गे० उलत्सिफेरोब कहते हैं- "व्यापार, प्रक्रिया को सूचित करते हुए वह प्रारम्भिक शब्द के समंज्जन से संज्ञा और विशेषण के बाद निकलती है और कृदन्त व तुमर्थ (क्रिया का साधारण रूप, जो कि संज्ञा और क्रिया के मध्य का रूप है) की अवस्था से होते हुए पुरूष, प्रकार, काल, अर्थ तथा वाच्य की कोटियों को अपना लेती है।"[58]

## धातु की परिभाषा

क्रिया का मूल 'धातु' है। 'धातु' क्रियापद के उस अंश को कहते हैं, जो किसी क्रिया के प्रायः सभी रूपों में पाया जाता है।[59] तात्पर्य यह कि जिन मूल अक्षरों से क्रियायें बनती है; उन्हें 'धातु' कहते

हैं। उदाहरण- 'पढ़ना' क्रिया को लें। इसमें 'ना' प्रत्यय है, जो मूल धातु 'पढ़' में लगा है। इस प्रकार 'पढ़ना' क्रिया की धातु 'पढ़' है। इसी प्रकार 'खाना' क्रिया 'खा' धातु में 'ना' प्रत्यय लगाने से बनी है। हिन्दी क्रिया का सामान्य रूप मूल धातु में 'ना' जोड़कर वनाया जाता है।

जैसे- 'चल+ना = चलना; देख+ना = देखना।

इन सामान्य रूपों में 'ना' हटाकर धातु का रूप ज्ञात किया जा सकता है। धातु की यह मोटी पहचान है।

हिन्दी और कुड़ुख़- दोनों-में क्रियायें धातुओं के अलावा संज्ञा और विशेषण से भी बनती है। जैसे-

| | |
|---|---|
| काम + आना = कमाना | नलख + अना = नलख'अना |
| चिकना + आना = चिकनाना | सुइतु + अना = सुइत'अना |
| दुहरा + आना = दुहराना आदि। | दोहड़ा + अना = दोहड़'अना। |

अधिकांश वैयाकरण यही मानते हैं कि 'धातु' में 'ना' लगाकर सामान्य क्रियायें बनायी जाती हैं। निष्कर्ष यह कि सामान्य क्रिया से 'ना' हटा देने पर जो शब्द रह जाता है, उसे 'धातु' कहते हैं।[60]

जब क्रियापद सामान्य क्रियाओं के रूप में होते हुए भी संज्ञाओं के रूप में आते हैं तो वे क्रियार्थक संज्ञा कहलाते हैं। ऐसी संज्ञायें भाववाचक ही होती है।

**धातु-भेद :** व्युत्पत्ति अथवा शब्द-निर्माण की दृष्टि से धातु दो प्रकार की होती है- 1. मूल धातु और 2. यौगिक धातु।[61]

**1. मूल धातु :-** मूल धातु स्वतंत्र होती है। यह किसी दूसरे शब्द पर आश्रित नहीं होती। जैसे-

| | |
|---|---|
| खा, देख, पी इत्यादि। | मोख़ा, ए-रा, ओना, लेंखा। |

**2. यौगिक धातु :-** यौगिक धातु किसी प्रत्यय के योग से बनती है। जैसे-

| | |
|---|---|
| 'खाना' से 'खिला'; पढ़ना से 'पढ़ा' इत्यादि। | ओन्ना ति ओन्त'आ, बचना ति बचत'आ, एन्नेम। |

इस प्रकार धातुएँ अनन्त हैं- कुछ एकाक्षरी, कुछ दो आक्षरी कुछ तीन आक्षरी और कुछ चार आक्षरी। यौगिक धातु तीन प्रकार से बनती है-

1. 'धातु' में प्रत्यय लगाने से अकर्मक से सकर्मक और प्रेरणार्थक धातुएँ बनती है।
2. कई धातुओं को संयुक्त करने से संयुक्त धातु बनती है तथा
3. संज्ञा या विशेषण से नामधातु बनती है।

आधुनिक हिन्दी में क्रिया की धातु क्रिया के सब विधेय तथा अविधेय रूपों को बनाने का मूल रूप है।[62]

**2. शब्द-रचनात्मक सम्बन्धों के आधार पर धातु भेद-**

1. क्रिया परक धातु तथा
2. नामजात धातु।

**1. क्रियापरक धातु मूल धातु-**जिससे प्रचलित उत्पादक प्रत्यय नहीं निकाले जा सकते।

साधित धातुः जो प्रचलित उत्पादक प्रत्ययों के जरिये मूल धातु से बनती है।

**2. नामधातु-मूल धातु :** जो नाम के परिवर्तन के जरिये बनी है।

**साधित धातु :** जो नामधातु से प्रचलित उत्पादक प्रत्ययों के जरिये बनी है। परिवर्तित नाम धातु और साधित नामधातु क्रिया परक धातुओं के सब क्रियावाचक लक्षण अपना लेती हैं।

**क्रियापरक धातु के उदाहरण[63]**

| मूल क्रियापरक | धातु | उत्पादक प्रत्यय | साधित धातु | मूल क्रियापरक धातु | उत्पादक साधित |
|---|---|---|---|---|---|
| कर | आ | करा | नना | त'आ | नन्त'आ |
| कर | वा | करवा | नना | बत'आ | ननाबात'आ |
| पी | ला | पिला | ओना | त'आ | ओनत'आ |
| पी | लवा | पिलवा | ओना | त'आ | ओनतत'आ |
| देख | आ | दिखा | ए-रा | त'आ | एरत'आ |
| देख | ला | दिखला | ए-रा | बत'आ | एरताबात'आ |
| देख | वा | दिखवा | ए-रा | तत'आ | एरतत'आ। |

**नामधातु के उदाहरण -**

| नामधातु | प्रत्यय | मूलक्रियापरक नामधातु | साधित क्रियापरक नामधातु | नामधातु प्रत्यय | मूलक्रियापरक नामधातु | साधित क्रियापरक नामधातु |
|---|---|---|---|---|---|---|
| डर | – | डर | – | एलचा | – | एलचा |
| खरीद | – | खरीद | – | खेंदा | आ | खेंदरा |
| बदल | – | बदल | – | बदल | आ | बदल'आ |
| शर्म | आ | – | शरमा | लज्जे | र'आ | लजर'आ |
| गहर | आ | – | गहरा | गडर | आ | गड्डरा |
| अलग | आ | – | अलगा | छिण्ड | आ | छिण्डा |
| अपन | आ | – | अपना | तंग | आ | तंग'आ |
| मोट | आ | – | मोटा | रोट्ट | आ | रोट्टा |
| झूठ | आ | – | झूठा | जुछ | आ | जुछा |
| हाथ | इया | – | हथिया | हाथ | इया | -हथिया |
| गोल | इया | – | गोलिया | गोल | इय'आ- | गुलिय'आ |
| जल्द | इया | – | जल्दिया | जल्द | इया- | जल्दिय'आ। |

ये मूल क्रियापरक नामधातुएँ साधित (सकर्मक या प्रेरणार्थक) धातु बना सकती है। जैसे-

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बदल | बदला | बदलवा | बदल | बदल'आ | बदलत'आ |
| डर | डरा | डरवा | एलचा | एलेकत'आ | एलेकताब'अ। |

### 3. रचना के अनुसार धातु-भेद

अपनी संरचना के अनुसार धातु दो प्रकार की होती है। 1. संश्लेषणात्मक (मूल या साधित) 2. विश्लेषणात्मक।

## विश्लेषणात्मक धातु[64]

**कर्मणि** (द्वितीय सरल कृदन्त और 'जाना' सहायक क्रिया के मेल से बनी है।)

**पक्ष सम्बन्धी** – (रंजक क्रियाओं के साथ प्रथम तथा द्वितीय सरल कृदन्तों प्रथम और द्वितीय सरल क्रिया विशेषणात्मक कृदन्तों, क्रियार्थक नामों तथा स्वयं धातु के मेल से बनी है।)

**संयुक्त नामिक** – (सहकारी क्रिया की धातु के साथ रूप प्रक्रियात्मक से 'नष्ट' नाम के मेल से बनी है।)

विश्लेषणात्मक धातु में दो या दो से अधिक घटक हो सकते हैं। यह धातु सम्मिश्रित हो सकती है यानी वह कर्मणि तथा पक्ष सम्बन्धी धातुओं के मेल से तथा पक्ष सम्बन्धी और नामिक धातुओं के मेल से बन सकती है।[65] जैसे–

| धातु | कर्मणि | पक्ष सम्बन्धी | संयुक्त नामिक |
|---|---|---|---|
| कर्मणि | लिखा जा | लिख़ा जा सक | शुरू किया जा |
| पक्ष सम्बन्धी | लिखा जा चुका | -लिखता जा | शुरू किया कर |
| संयुक्तनामिक- | शुरू किया जा- | शुरू किया कर- | शुरू कर |
| | टूड़ा ओंग | टूड़ा ओंगत'अ | ओरे नना ओंग |
| | टूड़ा ओंग ख़च्च | टूड़ा ओंग | ओरे ननर |
| | ओरे नना ओंग | ओरे नना | ओरे नना। |

**रंजक क्रिया धातु** – रंजक क्रिया की संख्या में हिन्दी और कुड़ुख 'दोंनो' में विवाद है। भिन्न-भिन्न वैयाकरणों ने भिन्न-भिन्न संख्याओं का उल्लेख किया है। 3-4 से शुरू होकर रंजक क्रिया की संख्या 22-24 तक चली गयी है। रंजक क्रियाओं की निम्नांकित (हिन्दी) धातुएँ हैं-'आ, उठ, कर, चल, चाह, चुक, छोड़ जा, डाल, दे, निकल, पड़, पा, बन, बैठ, मार, रख, रह, ले, सक, हो।'

**कुड़ुख** में ये धातुएँ हैं- बरा, चो'आ, नना, गुचा, तुक्की, ख़च्च, अम्बा कला, तुन्दा, चि'आ, उरखा, लग्ग, ख़क्खा, बनआ, ओ'का, ल'आ, उइय्या, र'आ, ओंदा, ओंगा अरा मनो।

कुछ क्रियापरक धातुओं से परिवर्तन के जरिए भाववाचक संज्ञायें बनती है जो भाषाई प्रयोग के अनुसार स्त्रीलिंग समझी जाती है।[66] जैसे-

मार, रोक, लूट, समझ, मांग — पस'आ, छेक'आ, बच्चा, बुझुर, ने'अना।

सरल क्रियापरक नामधातु दुबारा परिवर्तित नहीं होती, वे नामिक धातु का लिंग सुरक्षित रखती है। जैसे-

डर **(पुलिंग का शब्द)** — इलचका — खरीद (स्त्रीलिंग का शब्द) — ख़ेन्दा।

## प्रेरणार्थक धातु

**प्रेरणार्थक धातुओं की रूप रचना** – 1. प्रेरणार्थक धातुओं की रूप रचना को स्पष्ट करते हुए कामताप्रसाद गुरू जी ने लिखा है- "मूल धातु के अन्त में 'आ' जोड़ने से पहला प्रेरणार्थक और 'वा' जोड़ने से दूसरा प्रेरणार्थक बनता है। 'उठ' और 'गिर', चल पढ़, फैल तथा 'सुन' धातुओं के उदाहरण दिये गये हैं।"[67] यही लिखा गया है कि दो 'अक्षर की धातु' में 'ऐ' व 'औ' को छोड़कर आदि का अन्य दीर्घ स्वर ह्रस्व स्वर हो जाता है। जैसे-

| | |
|---|---|
| ओढ़, ओढ़ना, उढ़ाना, उढ़वाना | झपर'आ, झपरना, झपना, झपत'अना |
| जाग, जागना, जगाना, जगवाना | एजेर'आ, एजेरना, एजना, एजत'अना |
| जीत, जीतना, जिताना, जितवाना | जित, जितना, जिताब'अना, जितत'अना |
| डूब, डूबना, डुबाना, डुबवाना | मुलख़ा, मुलख़ना, मुलख़'अना, मुलुख़त'अना |
| बोल, बोलना, बुलाना, बुलवाना | ब'आ, ब'अना, मेंख़ना, मेंख़त'अना |
| भींग, भींगना, भिंगाना, भिंगवाना | चायाँ, चयँना, चयँदना, चयँद'अना। |
| लेट, लेटना, लिटाना, लिटवाना | चूता, चूतना, कीदना, कीदत'अना/चूतत'अना। |

**2. एकाक्षरी से प्रेरणार्थक धातु बनाना :-** एकाक्षरी धातु से प्रेरणार्थक धातु बनाने के लिए धातु के अन्त में 'ला' तथा 'लवा' लगाने और दीर्घ स्वर को ह्रस्व कर देने की व्यवस्था का उल्लेख गुरूजी ने किया है।[68]

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| खा | खिला | खिलवा | मोख़ा | मोख़त'आ | मोखताबात'आ |
| छू | छुला | छुलवा | ओंसर'आ | ओसोंरत'आ | ओंसोरताबात'आ |
| दे | दिला | दिलवा | चि'आ | चीत'आ | चीताबात'आ |
| धो | धुला | धुलवा | नोड़ा | नोड़त'आ | नोड़ताबात'आ |
| पी | पिला | पिलवा | ओना | ओनत'आ | ओनताबात'आ |
| सी | सिला | सिलवा | ओज्जा | ओज्जत'आ | ओज्जताबात'आ |
| सो | सुला | सुलवा | ख़ँदर'आ | ख़न्दरत'आ | ख़ँदरबातत'आ |
| जी | जिला | जिलवा | उज्जा | उज्जत'आ | उज्जताबात'आ |

आर्येन्द्र शर्मा के मतानुसार जिन एकाक्षरी धातुओं के अन्त में दीर्घ स्वर होता है, उनके प्रेरणार्थक रूपों में 'ला' तथा 'लवा' का प्रयोग होता है और दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है।[69]

उपर्युक्त सभी धातुओं में यह नियम लागू हो रहा है किन्तु 'चु, गा, खे, खो, बो तथा ले' धातुओं में 'ला' तथा 'लवा' के साथ प्रेरणार्थक रूप नहीं बनते। गुरूजी तथा आयेन्द्र शर्मा दोनों ने ही अपवाद मात्र कहकर छोड़ दिया है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रेरणार्थक में 'ला' तथा 'लवा' ग्रहण करनेवाली क्रियाओं के मूल धातु रूपों में एक अंत्य 'ल्' रहा है जिसके परिणाम स्वरूप अकर्तृवाच्य तथा प्रेरणार्थक रूपों में 'ल्' विद्यमान हैं। उपर्युक्त प्रतीति के दो आधार है-

1. कम से कम दो धातुएँ ऐसी है जिनके अकर्तृवाच्य रूपों में 'ल्' विद्यमान है। जैसे-

| | |
|---|---|
| धुल धो (धोल) धुला धुलना | नोड़र'आ नो-ड़ा नोड़त'आ नोढ़ोरना |
| सिल सी (सील) सिला सिलवा | ओजर'आ ओज्जा ओज्जत'आ। |

उपर्युक्त दोनों क्रियाओं के अकर्तृवाच्य रूप प्रचलन में है। जैसे-

| | |
|---|---|
| 1. कपड़ा साफ धुला है। | किचरी सफा नूडुरकी र'ई। |
| 2. साबुन से कपड़ा अधिक साफ धुला है। | सबुनति किचरी बग्गे सफा नूडुरकी र'ई। |
| 3. अब तक कुल चार ही कपड़े सिले हैं। | अक्कुन गूटि ठउका नाख़ किचरी उजुरकी र'ई। |

**निष्कर्षत :** 'पी'(पिल), छू, दे, धो, पी, सी तथा जी' में किसी स्तर पर एक अंत्य 'ल्' रहा है जो मूल धातु में से आज लुप्त हो चुका है पर व्युत्पन्न रूपों (अकर्तृवाच्य एवं प्रेरणार्थक में) विद्यमान है।

2. इन सभी धातुओं के प्रेरणार्थक रूप दो प्रकार के हैं- (क) एक वे जिनमें 'ल्' है और (ख) दूसरे वे जिनमें कोई श्रुति 'य्' अथवा 'व्' हैं। ये सभी रूप बोलियों में प्रयुक्त होते हैं। जैसे-

| मूलधातु | प्रथम प्रेरणार्थक | द्वितीय प्रेरणार्थक | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| खा | खवा | खबवा | मोख़ा | मोख़त'आ | मोख़ताबात'आ |
| छू | छुला, छुवा | छुबना | ओंसर'आ | ओंसत'आ | ओंसोरताब'आ |
| दे | दिवा | दिबवा | चि'आ | चीत'आ | चीतत'आ |
| धो | धुआ, धुवा | धुबवा | नोड़ा | नोड़त'आ | नोड़ताबात'आ |
| पी | पिया, पिवा | पिबवा | ओना | ओण्डस | ओन्ताबात'आ |
| सी | सिवा | विवा | ओज्जा | ओजत'आ | ओजताबात'आ |
| सो | सुबा | सुबवा | ख़ँदर'आ | ख़ँदरत'आ | ख़ँदरबात'आ |
| जी | जीवा | जीबवा | उज्जा | उज्जत'आ | उज्जताबात'आ |

ये रूप परवर्ती हो सकते हैं (क्योंकि मानकीकरण की प्रक्रिया में पिछड़े हुए हैं) और सम्भव है कि मूल धातुओं के वर्तमान (लू-विहीन) रूपों में प्रेरणार्थक प्रत्ययों 'आ' तथा 'वा' के योग से बने हों। इस दृष्टि से 'ला' अथवा 'लवा' युक्त प्रेरणार्थक रूपों को अलग मानने का कोई औचित्य नहीं है। इन समस्त धातुओं के दो संरूप माने जा सकते हैं और उन दोनों से ही 'आ' एवं 'वा' के योग से प्रेरणार्थक रूप बन जाते हैं।[70] जैसे-

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पी | (पील) | [आ<br>वा] | [पिला<br>पिलवा] | ओना | ओन | त'आ | ओन्त'आ |
| | (पी) | [आ<br>वा] | [पिवा<br>पिबवा] | ओन | आ<br>ताबा | ओनतत'आ<br>ओन्ताबात'आ |

इस दृष्टि से ये रूप अपवाद नहीं हैं जैसा कि गुरूजी ने और आयेन्द्र शर्मा ने माना है। केवल 'खा' से 'खिला', 'खिलना' का बनना सामान्य नियम का अपवाद है।

4. जयकृष्ण विद्यालंकार समझते हैं कि हिन्दी की क्रिया के ऊपर शोधकार्य क्रिया के तीन स्तरों के आधार पर करना चाहिए।[71]

1. धातु-स्तर या कोशीय स्तर, 2. पद स्तर और, 3. वाक्यांश स्तर।

जयकृष्ण विद्यालंकार धातुओं या कोशीय क्रियाओं के पाठ प्रकारों में भिन्नता बताते हैं।[72]

1. साधारण क्रियार्थक धातुएँ,
2. अपर्याप्त क्रियार्थक धातुएँ
3. प्रेरणार्थक क्रियार्थक धातुएँ
4. समस्त धातुएँ
5. संयुक्त क्रियार्थक धातुएँ
6. क्रियार्थक धातुएँ
7. पुनरूक्त क्रियार्थक धातुएँ
8. नाम धातुज क्रियार्थक धातुएँ

**1. साधारण क्रियार्थक धातुएँ** - पढ़ना, लिखना, हँसना आदि।

**2. अपर्याप्त क्रियार्थक धातुएँ** - है, था (होना इसके अन्तर्गत नहीं आयेगा) क्योंकि यह क्रियार्थक धातु है।

**3. प्रेरणार्थक क्रियार्थक धातुएँ** - पढ़ाना, पढ़वाना आदि।

**4. समस्त धातुएँ - (अ)**- 'और' संयोजक को हटाने से। जैसे-

रोगी अब उठ-बैठ लेता है। — बेमरहस अक्कु चोच-उक्क लिंग्घदस।

**(आ)**-'के लिए' परसर्ग हटाने से। जैसे

मुन्ना खेलने गया है। — मुन्नस बे-चा केरका र'अस।

**(इ)**- 'हुआ' हटाने से। जैसे-

लड़की रोती (हुई) जा रही थी। — कुकोय चींख़ते का'ला लगिया।

यहाँ 'जाना' मुख्य क्रिया के रूप में है जबकि निम्न वाक्य में मुख्य क्रिया नहीं है-

वह तो मना करने पर भी हँसता ही जा रहा था। — आस गा मला बाचकाति हुँ अखनुम काला लगियस।

**(ई)**- 'कर' पर प्रत्यय को हटाने से। जैसे-

तुम यह पत्र पढ़ (पढ़कर) देखो। — नीन इ चिठिन बचच (बच'अर) ए-रा।

**5. संयुक्त क्रियार्थक धातुएँ** - जो संज्ञा या विशेषण के साथ 'करना' लगाने से बनती है।

**6. क्रियार्थक धातुएँ** - जो दो धातुओं से बनती है। जैसे-

फड़फड़ाना, जगमगाना आदि। — फड़फड़रना, बिलचना, अन्नेम

**7. पुनरूक्त क्रियार्थक धातुएँ** – उदाहरणार्थ-

देखना-भालना, करना-धरना आदि। एरना-ख़ोजना, नन्ना-ख़ोजना, अन्नेम

**8. नाम धातुज क्रियार्थक धातुएँ** – उदाहरणार्थ-

स्वीकारना, फिल्माना आदि। इंजिरना, फिलम-अना, अन्नेम।

## धातु और क्रिया में अन्तर

साधारण क्रिया के अन्त 'ना' को अलग कर देने से जो बचा रहता है उसे धातु कहते हैं। जैसे- 'बरना' क्रिया के 'ना' को अलग कर देने से बाकी रह जाता है 'बर' जो धातु कहलाता है। ऐसी ही और क्रियाओं की भी होगी।[73]

"वाक्य (बकपून) में जिससे काम का होना पाया जाय उसे क्रिया (अर्जआना) कहते हैं। जैसे- एन टटख़ा मोख़ा लगदन- मैं आम खा रहा हूँ। नीन अम्म ओना लगदय। तुम (एक व०) पानी पी रहे हो। आस बीनको ए-रा लगदस। वह तारा देख रहा है।

ऊपर के वाक्यों में 'मोख़ा लगदन' 'ओना लगदय' और 'एरा लगदस' से वाक्यों में काम का होना पाया जाता है। वे क्रियाएँ हैं।"[74]

"क्रिया का मूल 'धातु है।' 'धातु' क्रियापद के उस अंश को कहते हैं, जो किसी क्रिया के प्रायः सभी रूपों में पाया जाता है। तात्पर्य यह है कि जिन मूल अक्षरों से क्रियायें बनती हैं, उन्हें 'धातु' कहते हैं। उदाहरणार्थ 'पढ़ना' क्रिया को लें। इसमें 'ना' प्रत्यय है जो मूल धातु 'पढ़' में लगा है। इस प्रकार 'पढ़ना'क्रिया की धातु 'पढ़' है। इसी प्रकार 'खाना' क्रिया 'खा' धातु में 'ना' प्रत्यय लगाने से बनी है। हिन्दी में क्रिया का सामान्य रूप मूल धातु में 'ना' जोड़कर बनाया जाता है। जैसे- चल + ना = चलना, देख + ना = देखना। इन सामान्य रूपों में 'ना' हटाकर धातु का रूप ज्ञात किया जा सकता है। धातु की यह एक मोटी पहचान है।"[75]

स्पष्ट है कि धातु क्रिया का मूल है; वह क्रिया की जननी है। ऐसा प्रतीत होता है कि धातु क्रिया के आज्ञार्थक, अनुज्ञार्थक रूप में होती है।

| धातु | क्रिया | धातु | क्रिया |
|---|---|---|---|
| उठ | उठना | चो'अ | चो'अना |
| उड़ | उड़ना | उढ़िया | उढ़ियारना |
| चल | चलना | एक | एकना |
| दे | देना | ची | चि'अना |
| जी | जीना | उज्ज | उज्जना |
| लिख | लिखना | टूड़ | टूड़ना |
| जग | जगना | एजेर | एजेरना |
| सो | सोना | ख़ँदर | ख़ँदरना |
| पी | पीना | ओन | ओन्ना। |

उपर्युक्त सारी धातुओं का जो क्रिया-प्ररूप बनते हैं, वे अनुज्ञार्थक (आज्ञार्थक) प्ररूप हैं। इन सारे प्ररूपों पर न तो काल का न लिंग का और न ही वचन का कोई सामान्य प्रभाव पड़ता है। ऐसा लगता है कि क्रियाओं का जो सामान्य धातु रूप है, वह अविकारी है। ठीक इसके विपरीत क्रिया विकारी शब्द है। क्रिया के अन्त में लगे प्रत्यय 'ना' को हटने के बाद काल, वचन, लिंग आदि के प्रभाव से क्रिया विकारी हो जाती है। जैसे-

'जाना' से जाता, गया, गयी, गये आदि। काना ति काला, केरस, केरा, केरकय, लेखम।
'खाना' से खाता, खाया, खायी, खाये आदि मोख़ना ति मोख़त, मोक्खस, मोक्खा, लेखम।

क्रिया की व्याप्ति धातु की अपेक्षा अधिक हो जाती है क्योंकि क्रिया का निर्माण सिर्फ धातुओं से ही नहीं, प्रत्युत संज्ञा और विशेषण से भी होता है। जैसे-

**संज्ञा :** हाथ से हथियाना। बात से बतियाना

**विशेषण :** चिकना से चिकनाना। गरम से गरमाना आदि।

यौगिक धातुओं में विकृति आती है। अतः यौगिक धातुएँ विकारी हो जाती है। जैसे-

खाना से खिला ओन्ना ति ओन्त'आ

पढ़ना से पढ़ा बचना ति बचत'आ।

उपर्युक्त उदाहरण में 'लिखा और पढ़ा' यौगिक धातु है जो 'खा, पढ़' (सामान्य धातु) के विकारी रूप हैं।

धातुओं का प्रेरणार्थक रूप भी नहीं होता किन्तु क्रिया का प्रेरणार्थक रूप होता है। जैसे-

| **धातु** | | **क्रिया का प्रेरणार्थक रूप** | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| काट | कटना | काटना | कटवाना | खण्डा | खण्डरना | खण्डना | खण्डत'अना |
| कर | करना | कराना | करवाना | नना | नन्ना | नन्तअना | ननताब'अना |
| लिख | लिखना | लिखाना | लिखवाना | टूड़ | टूड़ना | टूड़त'अना | टूड़ताब'अना |

धातु और क्रिया दोनों के अकर्मक-सकर्मक रूप होते हैं। जैसे-

| **धातु क्रिया सम्भावित कर्म** | **धातु क्रिया सम्भावित कर्म** |
|---|---|
| खा खाना (भात को खाना) सकर्मक | ओना ओन्ना (मण्डिन ओन्ना) |
| पढ़ पढ़ना (पुस्तक को पढ़ना)सकर्मक | बच'आ बचना (पुथिन बचना) |
| हँस हँसना (अकर्मक) | अलखा अलखना |
| सो सोना (अकर्मक) | ख़ँदर'अ ख़ँदर'आ |

आधुनिक हिन्दी में क्रिया की धातु क्रिया के सब विधेय तथा अविधेय रूपों को बनाने का मूल रूप है।[76] अपने शब्द-रचनात्मक सम्बन्धों के अनुसार धातु क्रिया परक और नामजात में विभक्त होती है। अपनी तरफ से क्रिया परक धातु-मूल धातु में जिससे प्रचलित उत्पादक प्रत्यय निकाले नहीं जा सकते तथा साधित (सकर्मक व प्रेरणार्थक) धातु में विभाजित है जो प्रचलित उत्पादक प्रत्ययों के जरिये मूल धातु से बनती है। नामधातु भी मूल धातु में जो नाम से परिवर्तन के जरिये बनी है तथा साधित धातु में जो नामधातु से प्रचलित उत्पादक प्रत्ययों के जरिये बनी है विभाजित है। परिवर्तित धातु और साधित नामधातु क्रियापरक धातुओं के सब क्रियावाचक लक्षण अपना लेती है। जैसे-

| मूल क्रिया-परक धातु | प्रत्यय | साधित धातु | मूल क्रिया-परक धातु | प्रत्यय | साधित धातु |
|---|---|---|---|---|---|
| कर | आ | करा | नन | आ | नना |
| कर | वा | करवा | नन | त'आ | ननत'आ |
| पी | ला | पिला | ओन | आ | ओना |
| पी | लवा | पिलवा | ओन | त'आ | ओन्त'आ |
| देख | आ | दिखा | एद | आ | एद'आ |
| देख | ला | दिखला | एद | बात'आ | एदाबात'आ |
| देख | वा | दिखवा | एद | आबात'अ | एदाबात'आ |

संयुक्त क्रियाओं की तरह धातु संयुक्त नहीं होती। जैसे-

| संयुक्त क्रिया | भ्रमात्मक संयुक्त धातु | संयुक्त क्रिया भ्रमात्मक | संयुक्त धातु |
|---|---|---|---|
| लेट जाना | लेट जा | बेडेरका-ना | बेडरा कला |
| गिर पड़ना | गिर पड़ | खतर ख़च्चना | खतर ख़च्च |
| बेच लेना | बेच ले | बीसा चि'अना | बी-सा चि'अ |
| काम करना | काम कर | नलख नना | नलख नन |
| बुला लेना | बुला ले | एड़ेच लिंघना | एड़ेच लिंघा |
| मार देना | मार दे | लव'अना चि'अना | लव'आ चि'आ |

हिन्दी के उदाहरण में 'लेट जा' से लेकर 'मार दे' तक में जा, पड़, ले, कर, ले और 'दे' धातु नहीं बल्कि क्रिया का अनुज्ञार्थक प्ररूप है। इसी प्रकार कुड़ुख़ के 'बेडरा कला' से 'लव'आ चि'आ' तक भ्रमात्मक संयुक्त धातु वस्तुतः अनुज्ञार्थक क्रिया प्ररूप है।

वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन चाहे तो कर्ता के अनुसार होते हैं अथवा कर्म के अनुसार अथवा भाव के अनुसार। परन्तु धातु पर वाच्य का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। सिर्फ काल के अनुसार धातु के रूप में बदलाव होता है, विकार उत्पन्न होता है और धातु का रूप क्रिया के भूत काल का होता है। सहायक क्रिया से धातु के बदले हुए रूप का काल ज्ञात होता है।

स्पष्ट है कि क्रिया धातु से ही (नामधातु को छोड़कर) बनती है। सच कहा जाय तो धातु के गर्भ से ही क्रिया का जन्म होता है। अतः सृजनात्मकता की शक्ति धातु में ही है। मेरी मान्यता है कि हर धातु क्रिया है; क्रिया की भी क्रिया हैं। फिर भी धातु और क्रिया के अन्तर को पारम्परिक आधार पर उल्लेखित किया जा रहा है। धातु और क्रिया पर आधारित वाच्य और काल क्रिया से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। क्रिया के पक्ष के आलोक काल की क्रिया पर निर्भरता का बोध होता है।

## क्रिया-भेद

व्युत्पत्ति अथवा शब्द निर्माण की दृष्टि से क्रिया के दो भेद हैं-

(i) मूल क्रिया अर्थात् धातु में ना जोड़कर, यह किसी दूसरे शब्द पर आश्रित नहीं होती।

(ii) यौगिक क्रिया अर्थात् क्रिया में प्रत्यय जोड़कर।

1. क्रिया की धातु में 'ना' जोड़कर जो क्रिया बनती है, वह मूल क्रिया हुई। जैसे-

**हिन्दी :** 'पढ़' से 'पढ़ना'। 'लिख' से 'लिखना'। 'जा' से 'जाना' आदि।

**कुड़ुख़ :** बच ति बचना। टूड़ ति टूड़ना। का'ला ति का-ना बेसेम।

2. क्रिया में प्रत्यय जोड़ने से क्रिया का जो रूप बनता है, वही यौगिक क्रिया है। जैसे-

**हिन्दी :** 'खाना' से 'खिला', 'पढ़ना' से 'पढ़ा' आदि।

**कुड़ुख़ :** 'मोख़ना' ति 'मोख़तआ', 'बचना' ति 'बचतआ' बेसेम।

इस प्रकार - ''दो या दो से अधिक धातुओं और दूसरे शब्दों के संयोग से या धातुओं में प्रत्यय लगाने से जो क्रिया बनती है, उसे यौगिक क्रिया कहते हैं।''[77] जैसे-

| | |
|---|---|
| 'चलना' से 'चलाना', 'हंसना' से 'हंसाना' | 'एकना' ति 'एकत'अना', 'अलखना' ति 'अलखत'अना' |
| चलना से चल देना, हंसना से हंस देना | 'एकना' ति 'एका चिअना' 'अलखना' ति 'अलखा चि'अना' |

प्रेरणार्थक क्रिया और नाम धातु को हम यौगिक क्रिया का भेद मान सकते हैं।

यौगिक क्रिया

प्रेरणार्थक-क्रिया | नामधातु-क्रिया

**(i) प्रेरणार्थक क्रिया :-** जिन क्रियाओं से इस बात का बोध हो कि कर्ता स्वयं कार्य न कर किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है वे प्रेरणार्थक क्रियायें कहलाती है।[78] जैसे- 'काटना' से 'कटवाना', 'करना' से 'कराना' आदि। खण्डना ति खण्डत'अना, नन्ना ति नन्तअना प्रेरणार्थक क्रिया के भी दो भेद होते हैं-

प्रेरणार्थक क्रिया

प्रथम प्रेरणार्थक | द्वितीय प्रेरणार्थक

जैसे-

| प्रथम प्रेरणार्थक | द्वितीय प्रेरणार्थक | प्रथम प्रेरणार्थक | द्वितीय प्रेरणार्थक |
|---|---|---|---|
| 'गिरना' 'गिराना' | गिरना गिरवाना | खतरना टिड़ना खतरना | टिड़त'अना |
| उठना उठाना | उठना उठवाना | चो'अना चो-दना | चो'अना चो-द'अना |
| पीना पिलाना | पीना पिलवाना | ओन्ना ओन्त'अना | ओन्ताबात'अना। |
| देना दिलाना | देना दिलवाना | | |

**(ii) नामधातु क्रिया :-** जो क्रिया संज्ञा या विशेषण से बनती है, उसे नामधातु क्रिया कहते हैं। जैसे-

| | |
|---|---|
| हाथ से हथियाना | ख़ेक्ख ति ख़ेक्ख नु नन्ना |
| बात से बतियाना | कत्था ति क़छनखरना |
| चिकना से चिकनाना | नुरूद ति नुरूदना |
| गरम गरमाना | सुइतु ति सुइत'अना |

**2. रचना की दृष्टि से क्रिया के भेद**-रचना की दृष्टि से क्रिया के सामान्यतः दो भेद हैं-

क्रिया (अर्जआना)

1. सकर्मक | 2. अकर्मक

**1. 'सकर्मक क्रिया'** उसे कहते हैं, जिसका कर्म हो या जिसके साथ कर्म की सम्भावना हो, अर्थात् जिस क्रिया के व्यापार का संचालन तो कर्ता से हो पर जिसका फल या प्रभाव किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु अर्थात् कर्म पर पड़े।[79] उदाहरणार्थ-

श्याम आम खाता है। श्यामस टटख़ा मोख़दस।

इस वाक्य में श्याम कर्ता है, 'खाने' के साथ उसका कर्तृरूप से सम्बन्ध है। प्रश्न होता है, क्या खाता है? उत्तर है, 'आम'। इस तरह आम का सीधा 'खाने' से संवंध है। अतः 'आम' कर्मकारक है। यहाँ श्याम के खाने का फल 'आम' पर अर्थात् कर्म पर पड़ता है। इसलिए 'खाना' क्रिया सकर्मक है। कभी-कभी सकर्मक क्रिया का कर्म छिपा रहता है। जैसे-

वह गाता है। आस पाड़दस।

वह पढ़ता है। आस बचदस।

यहाँ 'गीत' और 'पुस्तक' जैसे कर्म छिपे हैं।

**2. अकर्मक क्रिया** – जिन क्रियाओं का व्यापार और फल कर्ता पर हो, वे अकर्मक कहलाती है। अकर्मक क्रियाओं का कर्म नहीं होता, क्रिया का व्यापार और फल दूसरे पर न पड़कर कर्ता पर पड़ता है।[80] उदाहरण के लिए

श्याम सोता है। श्यामस ख़न्दरदस।

इसमें 'सोना' क्रिया अकर्मक है। 'श्याम' कर्ता है, 'सोने' की क्रिया उसी के द्वारा पूरी होती है। अतः 'साने' का फल भी उसी पर पड़ता है। इसलिए 'सोना' क्रिया अकर्मक है।

3. क्रिया पदबन्धों की संरचना में सहायक होने के आधार पर क्रिया भेद-

**(i) मुख्य क्रिया :** क्रिया पदबंध का वह अंश जो कोशीय अर्थ वहन करता है, मुख्य क्रिया कहलाता है।[81] जैसे-

पढ़, चल, मनाकर, भूलजा, आदि बच'आ, ए-का, मना नना, मोन्धरआ कला अन्नेम।

**मुख्य क्रिया के घटक**

क. सरल धातु ख. सामासिक धातु ग. मिश्र धातु घ. यौगिक क्रिया ङ. संयुक्त क्रिया

**क. सरल धातु**– इसमें धातु के अकर्मक, सकर्मक तथा प्रेरणार्थक रूप शामिल हैं। जैसे-

कट, काट, कटवा, सो, सुलवा आदि। खण्ड, खण्डा, खण्डत'आ, ख़न्दरआ, ख़न्दरतआ।

**ख. सामासिक धातु**– दो ऐसी धातुओं से मिलकर बनती है जो आर्थी दृष्टि से एक-दूसरे से सम्बद्ध होते हैं। जैसे-

पढ़-लिख, खा-पी, चल-फिर आदि। बच'आ-टूड़ा, ओना-मोख़ा, कुद्दा-नुंगा।

**ग. मिश्र क्रिया**– जो संज्ञा या विशेषण में 'कर', 'हो' आदि के योग से बनती है। जैसे-

**हिन्दी :** इंतजार कर, सिद्ध हो, मालूम कर, सुनाई पड़ आदि।

**कुड़ुख़ :** असरा ए-रा, सिद्ध नना, पता लगब'आ, मेन्दर ख़च्चय इलेक्खम।

**घ. यौगिक क्रिया** – जो दो धातुओं से मिलकर बनती है, लेकिन इनके बीच 'कर' की सत्ता निहित रहती है। जैसे-

ले जा, लेकर जा, ढूँढ़ निकाल (ढूँढ़ कर निकाल) ले हो'आ, होअर कला, बेद्दा ओथरा (बेद्दा धरा ओथर'आ) आदि।

**ङ. संयुक्त क्रिया** – जो धातु तथा रंजक क्रिया के योग से बनती है। जैसे-

कर दे, भूल जा, रो पड़ आदि। नना चिआ, मोधर'आ कला, चींख़ा ख़च्चा अन्नेम।

रंजक क्रियायें मूलतः प्रथम घटक के कोशीय अर्थ को ही रंजित या प्रभावित करती है, इसलिए वे मुख्य क्रियाओं के ही अन्तर्गत आती है।

**2. सहायक क्रिया :**– क्रिया पदबन्ध का वह अंश जो व्याकरणिक सूचना वहन करता है, सहायक क्रिया कहलाता है।[82] जैसे-

ता है, था, एगा, या, जा, आदि। दस, दय, चस, इ, लगी, दी, नर, नय, ओर, चर इन्नेम

हिन्दी में सहायक क्रियाओं के अन्तर्गत वाच्य, पक्ष, वृत्ति तथा काल सम्बन्धी प्रत्यय या चिह्नक शामिल है। ये सभी हिन्दी की वाक्य स्तरीय व्याकरणिक कोटियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

धातुओं के उभयविध प्रयोग (अकर्मक और सकर्मक दोनों रूपों में) के आधार पर क्रिया के भेद-

1. द्विकर्मक क्रिया, 2. संयुक्त क्रिया, 3. सहायक क्रिया, 4. नाम बोधक क्रिया, 5. पूर्वकालिक क्रिया, 6. क्रियार्थक संज्ञा, 7. सुपाईन क्रिया, 8. रंजक क्रिया

**1. द्विकर्मक क्रिया**–कुछ क्रियायें एक कर्मवाली होती है और कुछ दो कर्मवाली। दो कर्मवाली क्रियाओं को द्विकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे–

1. एक कर्मवाली क्रिया- राम ने रोटी खायी।
2. दो कर्मवाली क्रिया- मैं लड़के को वेद पढ़ाता हूँ।

दूसरे उदाहरण में 'पढ़ाना' क्रिया के दो कर्म 'लड़के को' और 'वेद' है। इसलिए 'पढ़ाना' क्रिया द्विकर्मक है।

**2. संयुक्त क्रिया**–जो क्रिया दो या दो से अधिक धातुओं के मेल से बनती है, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।[83] जैसे–

| | |
|---|---|
| 1. घनश्याम रो चुका। | घनश्यामस चींख़ लिंघचस। |
| 2. किशोर रोने लगा। | किशोरस चींख़ा हेल्लरस। |
| 3. वह घर पहुँच गया। | आस एड़पा अंड़सियस। |

संयुक्त क्रियायें 'होना, आना, जाना, रहना, रखना, उठाना, लेना, पाना, पड़ना, डालना, सकना, चुका, लगना, करना, भेजना, चाहना' इत्यादि क्रियाओं के योग से बनती है। उपर्युक्त क्रियाओं से अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की क्रियायें बनती हैं। जैसे–

| | | |
|---|---|---|
| अकर्मक क्रिया | लेट जाना | बड़ेरना कना |
| | गिर पड़ना | खतर ख़च्चना |
| सकर्मक क्रिया | बेच लेना | बीस निधना |
| | काम करना | नलख नन्ना |
| | बुला लेना | एड़ेच निधआ। |
| | मार देना आदि...... | लव 'अना/पिटना चि'अना |

**3. सहायक क्रिया**–वे क्रियायें, जो मुख्य क्रियाओं के अर्थ को स्पष्ट और पूरा करने में सहायक है। है, हैं, हो, हूँ, था, थी, थे, हुए थे, रहे थे, रहा था, हुआ था, होंगे, होगा, होगी आदि सहायक क्रियायें हैं। निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त सहायक क्रियाओं को देखें

| | |
|---|---|
| 1. वह खाता है। | आस मोख़दस। |
| 2. मैंने पढ़ा था। | ए–न बचचका रहचकन। |
| 3. तुम जगे हुए थे। | नीन एजेरका रहचकय। |
| 4. वे सुन रहे थे। आदि | आर मेना लगियर। अन्नेम |

इनमें खाना, पढ़ना, जगना और सुनना, मुख्य क्रियायें हैं। क्योंकि यहाँ क्रियाओं के अर्थ की प्रधानता है। शेष क्रियायें- जैसे है, था, हुए थे, रहे थे- सहायक क्रियायें हैं। ये मुख्य क्रियाओं के अर्थ को स्पष्ट तथा पूरा करती है। इनके ही प्रयोग से क्रिया के काल बदल गए हैं।

**4. नाम बोधक क्रिया (नामधातु) :**– नाम बोधक क्रिया एक संयुक्त क्रिया है। संज्ञा तथा विशेषण के साथ क्रिया जोड़ने से जो संयुक्त क्रिया बनती है, उसे नामबोधक (नामधातु) क्रिया कहते हैं–

जैसे–

| | | |
|---|---|---|
| संज्ञा क्रिया | भष्म करना | भसम नन्ना। |
| विशेषण क्रिया | दुखी होना, निराश होना। आदि | ससती मन्ना, हेन्दवाना इवड़ादिम। |

संयुक्त क्रिया और नामबोधक क्रिया में अन्तर है- संयुक्त क्रिया दो क्रियाओं के योग से बनती है और नामबोधक क्रिया संज्ञा और विशेषण के मेल बनती है। नामबोधक क्रिया शब्द में एक ही क्रिया शब्द होता है जबकि दूसरा शब्द संज्ञा या विशेषण शब्द होता है। उदाहरण द्रष्टव्य है:-

**संयुक्त क्रिया-**

| | |
|---|---|
| 1. पानी बरसने लगा। | चेंप पुंइयां हेल्लरा। |
| 2. वह मुश्किल से सोने पाया | आस मसकिल ति ख़न्दरआ उंगियस। |
| 3. मुझे जाने दो। | एंगन का-ला चि'आ। |
| 4. पेड़ बढ़ता गया। | मन्न परदनुम केरा। |
| 5. तुम्हें पढ़ना चाहिए। | निंगा बचना चाही। |
| 6. मुझे यह काम करना पड़ता है। | एंगा ई नलख नन्ना मनी। |
| 7. मैं मार बैठूँगा। | एन लवच ओक्कोन। |
| 8. वह बोल सकता है। | आस कचनखर'आ ओन्गदस। |
| 9. पड़ोसियों से मिलते जुलते रहो। | चाली बली ता आलर संगे ख़खरते र'आ। |

नामबोधक क्रिया-

| | |
|---|---|
| 1. मत दुखी हो। | अम्वा ससइत मना। |
| 2. वह तुझे भष्म करेगा। आदि | आस एंगन भसम ननोस। |

नामबोधक उपर्युक्त क्रियाओं में 'दुखी' विशेषण है तथा 'भष्म' संज्ञा शब्द है।

**5. पूर्वकालिक क्रिया-**

जब कर्ता एक क्रिया समाप्त कर उसी क्षण दूसरी क्रिया में प्रवृत्त होता है तब पहली क्रिया 'पूर्वकालिक' कहलाती है।[84] जैसे-

| | |
|---|---|
| उसने नहाकर भोजन किया। | आस एम'अर मण्डी ओण्डस। |

इसमें 'नहाकर' पूर्वकालिक क्रिया है; क्योंकि इससे 'नहाने' की क्रिया की समाप्ति के साथ भोजन करने की क्रिया का बोध होता है।

**6. क्रियार्थक संज्ञा-** जब क्रिया संज्ञा की तरह व्यवहार में आये, तब वह 'क्रियार्थक संज्ञा' कहलाती है।[85] जैसे-

| | |
|---|---|
| 1. टहलना स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। | कुद्दना जिया गे दव तली। |
| 2. देश के लिए मरना कहीं अच्छा है। | बेलखा गे खे'अना दव तली। |

इन 'टहलना' और 'मरना' क्रियार्थक संज्ञायें हैं क्योंकि 'टहलना और मरना' क्रियाओं का प्रयोग संज्ञा की तरह हुआ है।

**7. सुपाईन** – रूप प्रक्रियात्मक दृष्टि से सुपाईन विलुप्त क्रियामूलक कोटि है। इसमें कोई भी नामिक लक्षण नहीं है। शब्द समुदायों के स्तर पर क्रिया प्रधान शब्द समुदायों के आश्रित घटक के रूप में आता है और वाक्य स्तर पर जटिल क्रियामूलक विधेय में आता है। शब्द और वाक्य-दोनों स्तरों पर कुछ क्रियाओं के साथ सुपाईन प्रकार्यात्मक ढंग से समान तुमर्थ रचनाओं से मिलता जुलता है मगर कुछ दूसरी क्रियाओं के साथ सुपाईन के स्थान पर तुमर्थ का प्रयोग असम्भव होता है।

क्रिया-धातु के 'ना' प्रत्यय की जगह 'ने' प्रत्यय लगाने से सुपाईन क्रिया बनती और तुमर्थ क्रिया भी। किन्तु सुपाईन और तुमर्थ में अन्तर है। सुपाईन के बाद परसर्ग 'को' और 'के लिए' का प्रयोग नहीं होता जबकि तुमर्थ क्रिया होने पर क्रिया के 'ने' प्रत्यय के बाद 'को' और 'के लिए' का प्रयोग आवश्यक रूप से होता है।

जैसे-

| **सुपाईन** | **तुमर्थ** |
|---|---|
| 1. वह जलसा **देखने** आयेंगे। | विद्यार्थी **पढ़ने के लिए** गए। |
| 2. वे तुम्हें **बुलाने** भेजना चाहते होगा। | निर्मला **छुड़ाने के लिए** दौड़ी। |
| 3. रमानाथ खत **लिखने** बैठे। | निर्मला **छुड़ाने को** आयी। |

स्पष्ट है कि सुपाईन क्रिया परसर्ग नहीं लेती, जबकि तुमर्थ क्रिया 'को' और 'के लिए' परसर्ग लेती है।

सुपाईन भी अकर्मक और सकर्मक-दोनों प्रकार की होती है। सभी अकर्मक सुपाईनों में कृतवाच्य के रूप होते हैं और सकर्मक सुपाईनों में कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य के रूप होते हैं। जैसे-[86]

1. सुबह धूप निकलने पर **घूमने निकला।**
2. हुकुम मिलते ही लड़कियाँ **चुनी जाने लगीं।**
3. खिल्ली **उड़ाई जाने लगी।**

**1. वाच्य की कोटि**-वाक्य संख्या 01 (एक) कर्तृवाच्य का रूप है, 02 (दो) कर्मवाच्य का और 3 (तीन) भाववाच्य के रूप हैं। इस प्रकार हम देखते है कि सुपाईन में क्रियामूलक लक्षण हैं जो **'वाच्य की कोटि'** के अन्तर्गत आती हैं।

2. सुपाईन में **'पक्ष की कोटि'** सम्वन्धी क्रियामूलक लक्षण हैं-

जैसे-

**नित्यता बोधक** -बरामदे की बत्ती मैंने **जलती रहने दी।**

**घटमान** -वह अपना सब कुछ खो देने को **तैयार होती जाने लगी।**

**3. सकर्मकत्व और अकर्मकत्व की कोटि**

(i) सकर्मक सुपाईन-जब तुम गंगा जी में **तैरना सीखने जाती** हो।

(ii)अकर्मक सुपाईन-जब वह **खेलने जाने लगते** हैं।

अकर्मक सुपाईन के साथ इससे आश्रित दूसरी सुपाईन का प्रयोग हो सकता है। उपर्युक्त दूसरा उदाहरण इस तथ्य की पुष्टि करता है।

4. **वृत्ति तथा पक्ष की कोटियाँ**-'देना, पाना, लगना तथा जाना' क्रियाओं के साथ सुपाईन का संयोग क्रमशः अनुमति देना। न देना, व्यापार का पूरा होना। न होना, व्यापार का आरम्भ करना तथा व्यापार पूरा करने का इरादा- भावों को व्यक्त करता है। जैसे-[87]

**देना-** (i) लड़के-लड़की में कभी सम्पर्क नहीं **होने देना** चाहिए।
(ii) बस **रहने दो।**

**पाना-** (i) हाते के बाहर भी न **निकलने पाया था** कि जोर की वर्षा होने लगी।
(ii) नवाब उन्हें हटा देना चाहते हैं, लेकिन **हटा नहीं पाते।**

**लगना-** (i) दादा फिर **रोने लगे।**
(ii) राजकन्या **कहना चाहने लगी।**

**जाना-** (i) वह कुल्लू के किसी गाँव में **रहने जा रही** है।
(ii) वह उत्तर देने ही जा रहा था कि....।

**आना-** (i) मैं तीस वर्ष का होना आया हूँ।
(ii) मगर आज चौथा दिन होने आ रहा था।

उपर्युक्त उदाहरणों में 'देना' क्रिया के साथ सुपाईन के संयोग से व्यापार पूरा करने की अनुमति देना। न देना, 'पाना' क्रिया के साथ सुपाईन के संयोग से व्यापार को पूरा करने का अवकाश देना। न देना, 'लगना' क्रिया के साथ सुपाईन के संयोग से व्यक्त व्यापार का आरम्भ करना तथा 'जाना' क्रिया के साथ सुपाईन के संयोग से व्यक्त व्यापार को पूरा करने का इरादा व्यक्त होते हैं। स्पष्ट है कि 'सुपाइन' के साथ 'जाना, लगना, देना, पाना' क्रियाओं के प्रयोग होते हैं।

## कृदन्त

कृदन्त क्रियावाचक नाभि[redacted] रूप है। यह व्यक्ति के गौण या मुख्य व्यापार प्रकट करता है। कृदन्त में क्रिया तथा विशेषण के लक्षण निहित हैं। रूप तथा अर्थ के अनुसार। 12 कृदन्त-रूप है जिनमें छः रूप कर्तृ प्रयोग के और छः रूप कर्मणि प्रयोग के हैं। 3 (तीन) कृदन्त-रूप कर्तृवाच्य-धातु से बनते हैं, 3 (तीन) कर्मवाच्य-धातु से 2 (दो) कृदन्त-रूप कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य 'सुपाईन' से तथा 4 (चार) कृदन्त-रूप स्वयं कृदन्तों से बनते हैं। जैसे-[88]

लिखता = लिख + त + आ।

लिखा = लिख + आ।

लिखा गया = लिखा + गया।

लिख रहा = लिख + रहा।

लिखा जा रहा = लिखा जा + रहा।

लिखने वाला = लिखने + वाल + आ

लिखा जाने वाला = लिखा जाने + वाल + आ।

लिखता हुआ = लिखता + हुआ।

लिखा गया हुआ = लिखा गया + हुआ आदि।

कृदन्तों का विवरण व्यापक है। यहाँ उसका व्यापक विवरण प्रस्तुत करना अनावश्यक होगा। लेकिन इतना तो कहना ही होगा कि कृदन्त क्रियायें हैं।

## आंतरिक संरचना की दृष्टि से क्रिया-भेद[89]

क्रिया

1. साधारण    2. मिश्रित    3. संयुक्त

इन क्रियाओं का विवरण पूर्व में दिया जा चुका है।

वाक्य में क्रिया के विवरण तथा शब्द-वर्गों के साथ सह स्थिति के आधार पर क्रिया-भेद[90]-

क्रिया

| अकर्मक | सकर्मक | द्विकर्मक | विधेय क्रिया |
|---|---|---|---|
| (राम तैरता है) | (राम पुस्तक पढ़ता है) | (राम लड़के को मिठाई देता है) | (राम बुद्धिमान है) |

## समापिका और असमापिका क्रिया

हिन्दी में उपवाक्य स्तर पर क्रियाओं का सर्वप्रमुख प्रकार्य विधेय स्थान की आपूर्ति है। इसके अतिरिक्त क्रियाओं के अन्य विविध प्रकार्य भी दृष्टिगोचर होते हैं जिनसे उपवाक्य में व्याकरणिक स्थानों की आपर्ति के आधार पर उनका नामकरण किया जाता है और इस प्रकार उपवाक्य में क्रियायें कौन-कौन

से अंश बन सकती है। यह स्पष्ट होता है साथ ही क्रियाओं के प्रकार्य के आधार पर उपवाक्य प्ररूप (ब्संनेम जलचमे) भी निर्धारित किये जा सकते हैं।[91]

हिन्दी में उपवाक्य स्तर पर क्रियाओं के प्रकार्य को दो विषय क्रमों में विभाजित करके उपवाक्य स्तर पर क्रियाओं के प्रकार्य देखे जा सकते हैं-

1. उपवाक्य अंश तथा 2. उपवाक्य प्ररूप

**1. उपवाक्य अंश** – व्याकरणिक दृष्टि से उपवाक्य में कुछ निश्चित स्थान होते हैं। कुछ स्थान अनिवार्य होते हैं और कुछ वैकल्पिक अनिवार्य स्थानों पर आने वाले संरचक अनिवार्य संरचक कहलाते हैं और वैकल्पिक स्थानों पर आनेवाले संरचक वैकल्पिक संचरक उपवाक्य स्तर की संरचना में प्राप्त क्रिया संरचकों का प्रकार्य देखकर यह निश्चित करना है कि वे उपवाक्य में किस-किस व्याकरणिक स्थान पर आ सकते हैं।

हिन्दी और कुड़ुख़ के उपवाक्यों में, विस्तार क्षेत्र की दृष्टि से, कम से कम दो और अधिक से अधिक पाँच अनिवार्य स्थान हो सकते हैं जिन्हें इस प्रकार व्यवस्थित किया जा सकता है।[92]

**अनिवार्य स्थान :**

1. कर्त्ता
2. विधेय (क्रिया)
3. कर्म (विधेय स्थान पर यदि सकर्मक क्रिया है)
4. कर्त्तृपूरक (कर्त्ता के विषय में यदि आवश्यक जानकारी देना है)
5. कर्मपूरक (कर्म के विषय में यदि आवश्यक जानकारी देना है)

इसके अतिरिक्त वैकल्पिक स्थान निम्नांकित हो सकते हैं-

**वैकल्पिक स्थान :**

**1. विशेषक (Modifier)** – कर्ता, कर्म और पूरक के विषय में अतिरिक्त सूचना देने के लिए।

**2. क्रिया-विशेषक (Verb Modifier)** – विधेय स्थान पर प्रयुक्त क्रिया के संबंध में अतिरिक्त सूचना देने के लिए।

उपवाक्य में अनिवार्य स्थानों के पूरक शब्द अनिवार्य संरचक कहलाते हैं। इस दृष्टि से हिन्दी और कुड़ुख़ दोनों में सामान्यतया कर्ता स्थान पर संज्ञा शब्द (या सर्वनाम)। कर्म स्थान पर संज्ञा शब्द (या सर्वनाम), कत्तृपूरक स्थान पर संज्ञा या विशेषण, कर्मपूरक स्थान पर संज्ञा या विशेषण और विधेय स्थान पर क्रिया अनिवार्य संरचक के रूप में प्राप्त होते हैं। वैकल्पिक स्थानों के पूरक शब्द वैकल्पिक संरचक होते हैं। इस दृष्टि से विशेषक स्थान पर विशेषण और क्रिया विशेषक स्थान पर क्रियाविशेषण शब्द आते हैं।

उपवाक्य में क्रियायें, प्रयोग विशेष के आधार पर दो वर्गों- 1. समापिका 2. असमापिका- में विभक्त की जाती है।[93]

**1. समापिका क्रिया**– जब क्रियायें उपवाक्य में विधेय स्थान की पूरक बनकर आती हैं तो समापिका प्रकार की होती है।

**2. असमापिका क्रिया**– जब क्रिया स्थान से हटकर संज्ञा या विशेषण या क्रिया विशेषण के स्थान पर पहुँचकर तादृश प्रकार्य करने लगती है तो वे असमापिका प्रकार की क्रियायें बन जाती है।

दोनों भाषाओं हिन्दी और कुड़ुख़ की शब्द साधक व्यवस्था में प्रकार्य के आधार पर क्रिया रूपों का विभाजन निम्नांकित तीन वर्गों में किया जा सकता है-

1. संज्ञा वर्ग, 2. विशेषण वर्ग तथा, 3. क्रिया विशेषण वर्ग।

रूप साधक व्यवस्था में प्राप्त क्रिया रूप उपवाक्य में विधेय स्थान पर आते हैं और कुछ विशेष प्रकार की रचनात्मक प्रवृत्तियों से प्रभावित है जबकि संज्ञा, विशेषण और क्रिया विशेषण शब्दों की भाँति प्रकार्य करने वाले क्रियारूप कुछ दूसरे प्रकार की रचनात्मक प्रवृत्तियों से प्रभावित है।

उपवाक्य में निश्चित स्थानों के आधार पर क्रियाओं के प्रकार्य सोदाहरण निम्नवत स्पष्ट किये जा रहे हैं-

**1. कर्त्ता-स्थान पर संज्ञा रूप में**-कृदन्ती संज्ञा (धातु में 'ना' के योग से संरचित कृदन्त क्रिया रूप उपवाक्य में कर्त्ता स्थान पर संज्ञा रूप में प्रयुक्त होने के कारण अपने-अपने प्रकार्य के आधार पर)। यथा-

| | |
|---|---|
| 1. **सोना** स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। | **ख़न्दरना** जिया गे दव तली। |
| 2. हमारा **पढ़ना** सार्थक हुआ। | **एंग्हय** बचना सत्ते मन्जा। |
| 3. अधिक **सोचना** उचित नहीं है। | **बग्गे** घोखना दव मल्ली। |

**2. विधेय** – स्थान पर क्रिया रूप में [94] :- वस्तुतः विधेय स्थान पर प्रयुक्त होने वाली क्रियायें ही समापिका प्रकार की क्रियायें मानी जाती है। उपवाक्य में यही एक ऐसा स्थान है जहाँ केवल क्रियायें ही आ सकती है। इस स्थान पर या तो क्रिया रूप आता है या एक क्रिया पदबन्ध कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है :-

| | |
|---|---|
| 1. अनिल काम **करे**। | अनिलस नलख **ननन**। |
| 2. प्रदीप ने पुस्तक **पढ़ी**। | परदिपस पुथिन **बचचस**। |
| 3. सुधा बाजार **जायेगी**। | सुधा पेठ **कालो**। |
| 4. कमला चतुर **है**। | कमला चेटगर **र'ई**। |
| 5. बच्चा **रो रहा है**। | ख़द्दस **चींख़ा लगदस**। |
| 6. प्रभा पत्र **लिखती है**। | प्रभा चिठी **टूड़ी**। |
| 7. मैं पुस्तक **पढ़ता रहा**। | एन पुथि **बचनुम रहचकन**। |
| 8. तुम दान **देते रहते हो**। | नीन दांड़े **चि'अते र'अदय**। |
| 9. पेड़ **काटा जाता है**। | मन्न **खण्डतार'ई**। |
| 10. मोहन से खाना नहीं **खाया जाता** है। | मोहनस ति मण्डी मल **ओन्तार'ई**। |

**3. कर्म स्थान पर संज्ञा रूप में**-प्रायः 'करना' तथा 'चाहना' सकर्मक क्रियाओं के साथ ही कर्म स्थान पर क्रियायें कृदन्ती संज्ञा के रूप में मिलती है। यहाँ उनका मूल रूप ही रहता है। यथा-

| | |
|---|---|
| 1. नेता ने **बोलना** शुरू किया। | नेतस **ब'अना** ओरे नन्जस। |
| 2. मरीज ने **चलना** बंद किया। | बेमरहस **एकना** अम्बियस। |
| 3. वह **आना** शुरू करेगा। | आस **बरना** ओरे ननोस। |
| 4. मैं **जाना** चाहता हूँ। | एन **काला** बेद्दन। |
| 5. हमने **उठना** चाहा। | एन **चो'आ** बिद्दकन। |

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि 'शुरू/बंद+कर' के योग संरचित मिश्र क्रिया पदबन्धों के कर्म के रूप में असमापिका प्रकार की क्रियायें कृदन्ती संज्ञा बनकर आ सकती है। इस दृष्टि से कर्म स्थान पर केवल क्रियाओं का कृदन्ती संज्ञा रूप ही प्रयुक्त हो सकता है।

**4. कर्त्तृपूरक स्थान पर विशेषण रूप में**-कर्त्ता स्थान पर प्रयुक्त संज्ञा (या सर्वनाम) से संबंधित अतिरिक्त सूचना देने के लिए क्रियाओं के कृदन्ती रूप विशेषणवत प्रकार्य करते हुए देखे जाते हैं।[95] यथा-

| | |
|---|---|
| 1. साँप **मरा** (हुआ) पड़ा है। | नेर्र केच्चका मड़रकी र'ई। |
| 2. नदी **बहती** (हुई) दिखाई पड़ती है। | ख़ाड़ बहनुम इथर'ई। |
| 3. लड़का **पढ़ा** (हुआ) है। | कुक्कोस बचचका र'अदस। |
| 4. लड़के **बोलते** हुए चले गए। | कुक्कोर **ब'अतेम** चइल केरर। |
| 5. कमल **भागता** हुआ आता है। | कमलस **बोंगते** बरदस। |
| 6. झाड़ियाँ **कटी** हुई पड़ी है। | झड़पो **खण्डरका** मड़रकी र'ई। |

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि असमापिका प्रकार की क्रिया में विशेषणों की भाँति प्रकार्य करती हुई कर्त्तृपूरक का स्थान ग्रहण कर रही है। इस प्रकार के प्रयोगों की बहुलता है। यहाँ इन कृदन्ती विशेषणों का विधेयात्मक प्रयोग है जो पूरक रूप में है। इस प्रकार के उपवाक्यों में इन कृदन्ती विशेषणों का प्रयोग अपने विशेष्य के पूर्व सम्भव नहीं, अतएव ये विशुद्धता कर्त्तृपूरक हैं और अनिवार्य संरचक है।

**5. कर्म-पूरक स्थान पर विशेषण रूप में :-** कर्म पूरक स्थान पर भी क्रियाओं का विशेषण रूप में प्रकार्य देखा जाता है। इस प्रकार के कृदन्त विशेषणों का विधेयात्मक प्रयोग यहाँ मिलता है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है-

| | |
|---|---|
| 1. मैंने रूपया **पड़ा** देखा। | ए-न ढिबन **मड़रका** ईरकन। |
| 2. उसने मकान **बना** देखा। | आस एड़पा **कमरका** ईरियस। |
| 3. हमने साँप **मरा** पाया। | एन नेर्रन **केच्चका** ख़क्खकन। |
| 4. हमने चिड़िया **मरी** पायी। | एन ओ-ड़न **केच्चका** ख़इक्खकन। |

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि असमापिका क्रियाओं का विधेयात्मक विशेषणों की भाँति प्रकार्य है और इसलिए ये कर्मपूरक बनकर कर्म के बाद में आ रही है।

**6. विशेषक स्थान पर विशेषण रूप में :-** उपवाक्य में क्रिया विशेषक स्थान पर विशेषण रूप में आ सकती है तथा कर्ता या कर्म के पूर्व वैकल्पिक संरचक के रूप में आ सकती है। विशेषण रूप में इनके प्रकार्य पूर्व में देखा जा चुका है जहाँ क्रियायें अपने विधेयात्मक प्रयोग के कारण कर्त्तृपूरक या कर्मपूरक स्थान पर प्रयुक्त हुई है, विशेषण स्थान पर नहीं। निम्नांकित उदाहरणों में क्रिया का विशेषक स्थान पर विशेषण रूप में प्रयोग द्रष्टव्य है-

**1. कर्त्ता के पूर्व -**

| | |
|---|---|
| 1. **सोता** लड़का जाग पड़ा। | **ख़ँदर'ऊ** कुक्कोस एजेर ख़च्चियस। |
| 2. **भागा** लड़का लौट आया। | **बोंगका** कुक्कोस किर्र बरचस। |
| 3. **भागे** लड़के लौट आये। | **बोंगका** कुक्कोर किर्र बरचर। |
| 4. **सोती** लड़की जाग पड़ी। | **ख़ँदर'ऊ** कुके एजेर ख़च्चिया। |

**2. कर्म के पूर्व -**

| | |
|---|---|
| 1. मैंने **सोता** लड़का देखा। | एन **ख़ँदर'ऊ** कुक्को ईरकन। |
| 2. मैंने **सोती** लड़की देखी। | एन **ख़ँदर'ऊ** कुके ईरकन। |
| 3. मैंने **सोते** लड़के देखे। | एन **ख़ँदर'ऊ** कुक्कोरिन ईरकन। |
| 4. उसने **मरा** साँप देखा। | आस **केच्चका** नेर्र ईरियस। |
| 5. तुमने **भागते** घोड़े को पकड़ा। | नीन **बोंगना** घोड़ोन धरचकय। |

**7. क्रिया-विशेषक स्थान पर क्रियाविशेषण रूप में-** उपवाक्य में समापिका का प्रयोग क्रिया विशेषण रूप में क्रिया विशेषण स्थान पर हो सकता है। इस स्थिति में वह वैकल्पिक संरचक के रूप में होती है। ऐसी क्रियाओं का रूप निरपेक्ष होता है। क्रिया के कालत्व तथा पूर्णत्व, अपूर्णत्व की दृष्टि

से क्रिया के इन निरपेक्ष रूपों को निम्न वर्गों में व्यवस्थित किया जा सकता है-

1. पूर्वकालत्व बोधक
2. तत्कालत्व बोधक
3. अपूर्ण कार्यत्व बोधक
4. पूर्ण कार्य बोधक

**1. पूर्वकालत्व बोधक** – उदाहरण

| | |
|---|---|
| 1. वह बाजार **जाकर** आया। | आस पेठ **कालर** बरचस। |
| 2. वह खाना **खा** आया। | आस मण्डी **ओण्ड** बरचस। |
| 3. मैंने पत्र **लिखकर** भेजा। | एन चिठी **टूड़र** तइकन। |
| 4. मैंने पत्र **फाड़कर** फेंका। | एन चिठिन **चर्रर** हिबिड़कन। |
| 5. हम **सोकर** जागे। | एन **खँदर'अर** एजेरकन। |
| 6. हम **दौड़कर** पहुँचे। | एन **बोंग** अड़िसकन। |

उपर्युक्त उपवाक्यों में पूर्वकालिक क्रियायें मुख्य क्रियाओं के पूर्व आयी है और क्रिया विशेषक स्थान पर आयी है। उन्हें क्रिया विशेषण रूप में स्वीकार कर लिया गया है। इस प्रकार इन्हें असमापिका क्रियाओं के अन्तर्गत कोटिबद्ध किया जायेगा।

**2. तत्कालत्व बोधक-उदाहरण**

| | |
|---|---|
| 1. वह **बैठते ही** बोला। | आस **ओक्कतेम** बाचस। |
| 2. वह **सुनते ही** चौंका। | आस **मेन्तेम** छड़कारस। |
| 3. तुम **आते ही** बैठ गये। | नीन **बरतेम** उक्कय केरकय। |
| 4. वह **उठते ही** गिर पड़ा। | आस **चो'अतेम** खतर ख़च्चियस। |

उपर्युक्त उदाहरणों 'बैठते ही' सुनते ही, आते ही तथा उठते ही, क्रियाओं तत्कालत्व का बोध होता है।

**3. अपूर्ण कार्यत्व बोधक-उदाहरण**

| | |
|---|---|
| 1. वह **बैठते-बैठते** रूक गया। | आस **ओक्कते-ओक्कते** इज्जस केरस। |
| 2. मैं **लिखते-लिखते** चौंक पड़ा। | एन **टूड़तेम-टूड़तेम** छड़कर ख़च्चिकन। |
| 3. हम **पढ़ते-पढ़ते** उठ पड़े। | एन **बचते-बचते** चोच ख़च्चिकन। |
| 4. तुम **सोते-सोते** जग गये। | नीन **खँदरते-खँदरते** एजेरकय केरकय। |

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि कार्य अपूर्ण रह गया। उदाहरण संख्या 1 में बैठने का कार्य, 2 में लिखने का कार्य, 3 में पढ़ने का कार्य और 4 में सोने का कार्य अधूरा रह गया।

**4. पूर्ण कार्य बोधक-उदाहरण**

| | |
|---|---|
| 1. वह **बैठे-बैठे** सो गया। | आस **उक्का-उक्का** खँदरस केरस। |
| 2. तुम **पड़े-पड़े** देखते रहते हो। | नीन **बिड़िरका-बिड़िरकम** एरते र'अदय। |
| 3. हम **खोये-खोये** चलते रहे। | एन **एबसेरका-एबसेरकम** एकते रहचकन। |
| 4. वह रेल से **लटके-लटके** वहाँ पहुँचे। | आस रेल नु झुलुरते-झुलुरते असन अड़िसियस। |

उपर्युक्त उदाहरणों में 'सोने, देखने, चलने तथा पहुँचने' का कार्य पूर्णत्व को प्राप्त है तथा बैठे-बैठे, पड़े-पड़े, खोये-खोये एवं लटके-लटके क्रियायें क्रिया विशेषण का कार्य करने के कारण असमापिका प्रकार की हो गयी है।

अबतक के विश्लेषणों से स्पष्ट होता है कि क्रियायें उपवाक्य में कर्त्ता स्थान पर संज्ञा, कर्म स्थान पर संज्ञा, विधेय स्थान पर समापिका क्रिया, कर्तृपूरक-स्थान पर विशेषण, कर्म पूरक स्थान पर विशेषण, विशेषक स्थान पर विशेषण और क्रिया विशेषक स्थान पर क्रिया विशेषण अंश वन रही है। विधेय स्थान पर प्रयुक्त क्रियायें समापिका क्रियायें हैं और शेष स्थानों पर प्रयुक्त क्रियायें असमापिका प्रकार की है।

**2. उपवाक्य प्ररूप**– उपवाक्य संरचना क्रियाओं पर निर्भर है। उपवाक्य किस प्ररूप का होगा, यह क्रिया निश्चित करती है। प्रस्तुत विषय क्रम में समापिका क्रियाओं के आधार पर आंतरिक संरचना की दृष्टि से उपवाक्यों के प्ररूप निर्धारित किए जा रहे हैं। उपवाक्य में समापिका क्रियाओं के नियमन के अनुरूप आंतरिक संरचना मिलती है। अकर्मक क्रियाओं के साथ केवल दो अनिवार्य संरचक मिलते हैं, जबकि सकर्मक क्रियाओं के साथ तीन और द्विकर्मक के साथ चार। प्रथम प्रेरणार्थक क्रियाओं के साथ तीन अनिवार्य संरचक आते हैं तो द्वितीय प्रेरणार्थक क्रियाओं के साथ चार। कहीं वाच्य बोध के लिए लिंग, वचन, अन्विति कर्म- कर्तृ कर्त्ता के साथ होती है तो कहीं निरपेक्ष क्रियायें मिलती है। कभी उपवाक्य में विधि क्रियाओं के प्रभाव से यथार्थ कर्त्ता कर्म- कारकीय परसर्ग लेकर तिर्यक रूप में आता है।[27]

## सन्दर्भ-सूची


1. 'हिन्दी में क्रिया'-डॉ० ओ० गे० उलत्सिफेरोव, पराग प्रकाशन, दिल्ली-32; प्रस्तावना- डॉ० नामवर सिंह
2. कुड़ुख़ कत्था बिल्ली-टूडुस-पी०सी० बेकूस, प्रकाशक-सत्य भारती, पोस्ट बॉक्स-2, राँची-834001 द्वितीय संस्करण 1983, पृ०-105,106
3. उपरिवत्, पृ०-104
4. हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना- डॉ० भोलानाथ तिवारी, साहित्य सहकार, दिल्ली 110051 (प्रथम संस्करण-1986) पृ०-229
5. उपरिवत् पृ०-229
6. उपरिवत् पृ०-230
7. उपरिवत् पृ०-230
8. उपरिवत् पृ०-230
9. उपरिवत् पृ०-231
10. उपरिवत् पृ०-231
11. उपरिवत् पृ०-231
12. हिन्दी में क्रिया : डॉ० ओ० गे० उलत्सिफेरोव; विषय-प्रवेश, पृ०-41
13. हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण : सूरजभान सिंह
    साहित्य सहकार, दिल्ली 110051, प्रथम संस्करण, पृ०-220
14. हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना; डॉ० भोलानाथ तिवारी, साहित्य सहकार, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1986 पृ०-44
15. उपरिवत् पृ०-46
16. उपरिवत् पृ०-48
17. उपरिवत् पृ०-48-50
18. उपरिवत् पृ०-50

19. उपरिवत् पृ०-50
20. वही
21. उपरिवत् पृ०-51
22. उपरिवत् पृ०-52
23. वही पृ०-53
24. वही।
25. 'हिन्दी में क्रिया'- डॉ० ओ०गे० उलत्सिफेरोव विषय प्रवेश, पृ०-41
26. वही पृ०-42
27 A. वही पृ०-45
27 B. वही पृ०-47
28 A. हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण : सूरजभान सिंह, पृ०-48-49
28 B. हिन्दी में क्रिया; डॉ० ओ०गे० उलत्सिफेरोव, पृ०-22
29. वही पृ०-23
30. हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण : सूरजभान सिंह, पृ०-68
31. हिन्दी में क्रिया : डॉ० ओ०गे० उलत्सिफेरोव, विषय प्रवेश, पृ०-24
32. वही पृ०-24-25
33. वही पृ०-25
34. वही पृ०-26
35. हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण : सूरजभान सिंह, प०-61
36. वही पृ०-49
37. वही पृ०-7०
38. वही पृ०-61
39. हिन्दी में क्रिया : डॉ० ओ०गे० उलत्सिफेरोव, विषय प्रवेश, पृ०-58
40. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-125
41. वही, पृ०-126
42. वही, पृ०-127
43. वही।
44. हिन्दी में क्रिया : डा० आ०गे० उलत्सिफेरोव, विषय प्रवेश, पृ०-71
45. वही, पृ०-72
46. वही, पृ०-74
47. हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण : सूरजभान सिंह, पृ०-200-201
48. वही, पृ०-202
49. कुड़ुख़ कत्था बिल्ली-टूडुस - पी०सी० बेकूस, पृ०-104
50. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23 वाँ संस्करण, पृ०-122
51. वही, पृ०-122

52. वही, प०-123
53. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-76
54. वही, पृ०-122
55. वही, पृ०-76
56. उपरिवत्
57. हिन्दी में क्रिया : डॉ० ओ०गे० उलत्सिफेरोव, पृ०-41
58. उपरिवत्, पृ०-41
59. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-122
60. वही, पृ०-76
61. वही, पृ०-122
62. हिन्दी में क्रिया : डॉ० ओ०गे० उलत्सिफेरोव, पृ०-55
63. वही, पृ०-55
64. वही, पृ०-56
65. वही।
66. वही, पृ०-58
67. हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना; डॉ० भोलानाथ तिवारी साहित्य सहकार, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1986, पृ०-272
68. वही, पृ०-272-273
69. उपरिवत्, पृ०-272-273
70. वही, पृ०-274
71. हिन्दी में क्रिया : डॉ० ओ०गे० उलत्सिफेरोव, पृ०-29
72. उपरिवत्,
73. कुड़ुख़ कत्था बिल्ली-टूडुस - पी०सी० बेकूस, पृ०-104
74. वही, पृ०-1o2
75. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-122
76. हिन्दी में क्रिया : डॉ० ओ०गे० उलत्सिफेरोव, प०-55
77. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-123
78. वही, पृ०-123
79. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-124
80. वही।
81. हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण : सूरजभान सिंह, पृ०-48
82. वही, पृ०-49

83. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-125
84. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-127
85. वही।
86. हिन्दी में क्रिया : डॉ० ओ०गे० उलत्सिफेरोव, पृ०-71
87. वही, पृ०-73-74
88. वही, पृ०-74-75
89. हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना; डॉ० भोलानाथ तिवारी, साहित्य सहकार, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1986, पृ०-344
90. वही।
91. हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना; डॉ० भोलानाथ तिवारी, साहित्य सहकार, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1986, पृ०-45
92. वही।
93. वही। पृ०-44
94. वही। पृ०-44
95. वही। पृ०-45
96. वही। पृ०-46
97. वही। पृ०-48

अध्याय : दो

# हिन्दी और कुड़ुख दोनों भाषाओं की धातुओं के प्रकार

क्रिया की धातु क्रिया की सव -विधेय तथा अविधेय- रूपों को वनाने का मूल रूप है।

धातु एक रूपाश्रित सहायक तत्व है जो क्रिया के विभिन्न रूपों के निर्माण का मूल रूप है।[1] क्रिया का मूल 'धातु' है। धातु क्रियापद के उस अंश को कहते हैं, जो किसी क्रिया के प्रायः सभी रूपों में पाया जाता है। तात्पर्य यह है कि जिन मूल अक्षरों से क्रियायें बनती है, उन्हें 'धातु' कहते हैं।[2]

"साधारण क्रिया के अन्त 'ना' को अलग कर देने से जो बचा रहता है, उसे धातु कहते हैं। जैसे- 'वरना' क्रिया के 'ना' को अलग कर देने से वाकी रह जाता है 'वर' जो धातु कहलाता है।"[3]

'क्रिया पदबन्ध' का वह अंश जो कोशीय अर्थ वहन करता है, मुख्य क्रिया कहलाता है, जैसे- पढ़, चल, मना कर, भूल-जा, आदि। हिन्दी में मुख्य क्रिया के अन्तर्गत निम्नलिखित घटक शामिल है।

1. सरल धातु, जिसमें धातु के अकर्मक, सकर्मक तथा प्रेरणार्थक रूप शामिल है। जैसे- कट, काट, कटवा, सो, सुलवा आदि।

2. सामासिक धातु, जो दो ऐसी धातुओं से मिलकर वनती है जो आर्थी दृष्टि से एवं दूसरे विरूद्ध होते हैं। जैसे- पढ़-लिख, खा-पी, चल-फिर आदि।[4]

**मुख्य क्रिया**

| **सरल धातु** | **सामासिक धातु** | **सरल धातु** | **सामासिक धातु** |
|---|---|---|---|
| कट (अकर्मक) | पढ़-लिख | काट (सकर्मक) | खा-पी |
| कटवा (प्रेरणार्थक) | चल-फिर | | |

'धातु' के अन्त में 'ना' प्रत्यय जोड़ने से क्रिया शब्द की संरचना होती है। यह क्रिया का सामान्य रूप होता है। क्रिया का सामान्य रूप कोशीय क्रिया होती है। क्रिया शब्द से 'ना' प्रत्यय को हटा देने से क्रियामूल 'धातु' का पता चल जाता है। धातु की यह एक मोटी पहचान है। जब क्रिया धातुओं के अलावा संज्ञा और विशेषण शब्द से बनती है, तो वैसी क्रिया को नामधातु की क्रिया कहते हैं। दोनों प्रकार की क्रियाओं और धातुओं के उदाहरण निम्नवत् है-

| | **हिन्दी** | | | **कुड़ुख** | |
|---|---|---|---|---|---|
| **मूल धातु** | **क्रिया** | **प्रत्यय** | **मूल धातु** | **क्रिया** | **प्रत्यय** |
| पढ़ | पढ़ना | 'ना' | बच | बचना | ना |
| खा | खाना | 'ना' | ओन | ओन्ना | ना |

### 3. अपनी रचना के अनुसार धातु भेद

धातु

संश्लेषणात्मक (मूल या साधित) — विश्लेषणात्मक

कर्मणि — पक्ष सम्बन्धी — संयुक्त नामिक

(द्वितीय सरल कृदन्त तथा 'जाना' सहायक क्रिया के मेल से बनी है।) (रंजक क्रियाओं के साथ प्रथम तथा द्वितीय कृदन्तों, प्रथम और द्वितीय सरल क्रियाविशेषणात्मक कृदन्तों क्रियार्थक नामों तथा स्वयं धातु के मेल से बनती है।) (सहकारी क्रिया के धातु के साथ रूप प्रक्रियात्मक दृष्टि से 'नष्ट' नाम के मेल से बनी है)

विश्लेषणात्मक धातु सम्मिश्रित हो सकती है। यानी वह कर्मणि तथा पक्ष सम्बन्धी धातुओं के मेल से तथा पक्ष सम्बन्धी और नामिक धातुओं के मेल से बन सकती है।[5] जैसे-

| धातु/धातु | कर्मणि | पक्ष सम्बन्धी | संयुक्त नामिक |
|---|---|---|---|
| कर्मणि | लिखा जा | लिखा जा सक | शुरू किया कर |
| पक्ष सम्बन्धी | लिखा जा चुक | लिखता जा | शुरू किया कर |
| संयुक्त नामिक | शुरू किया जा | शुरू किया कर | शुरू कर |

### 4. शब्द संघटन के आधार पर धातु भेद –

धातु

क्रियार्थक — अक्रियार्थक

(बोल-बोलकर) (.......) — (क्षमा कर, दिखाई पड़) (......)

क्रियार्थक धातु दो क्रिया रूपों के संयोग से बनती है। अक्रियार्थक धातु का प्रथम अंश संज्ञा, विशेषण या कोई अन्य रूप में होता है।[6]

## क्रियार्थक धातु

| | पुनरूक्ति | सामान्य |
|---|---|---|
| (क) | बोल-बोलकर (ब'आ-ब'अर) | बोलकर (ब'अर) |
| | मार-मारकर (ल'आ-ल'अर) | मारकर (ल'अर) |
| | देख-भाल कर (एर-ख़ोजर) | देखकर (एरर) |
| | तोड़-तोड़कर (एस-एस'अर) | तोड़कर (एस'अर) |
| (ग) | खा-पीकर (ओना-मोखर) | खाकर (मोख़र) |
| | चल-फिर कर (कुद्द-नुँगर) | चलकर (कुद्दर) |

## अक्रियार्थक धातु

क. स्वीकार कर, क्षमा-कर, दिखाई-पड़। इंजर'अर, एथेर ख़च्च।

ख. पूरा कर, स्वतंत्र कर, अच्छा कर। पुराब'आ, दव नना।
ग. दूर कर, पीछा कर, आगे कर। हाड़ी नना, कुदाव'आ, मुन्ध नना।
घ. चार हो, एक हो। नाख़ मना, ओन्द मना।
ङ. अपना बन। तंग'आ मना।

अकर्मक धातुओं से सकर्मक धातुओं की व्युत्पत्ति-प्रक्रिया में अकर्मक धातुओं के पश्चात् शून्श प्रत्यय की स्थिति मानी जा सकती है तथा आन्तरिक ध्वनि परिवर्तन हुए हैं।[7]

यथा - विकार /अ झ आ।

अकर्मक धातु + ० मर (अ झ आ) +० मार

विकार/अट झ आड़ अकर्मक धातु +० फट (अ झ आ, ट झ ड़) + ० फाड़

विकार। इ झ ई : अकर्मक धातु + ० छिन (इ झ ई) + ० छीन आदि।

**धातुएँ अनन्त हैं** - कुछ एकाक्षरी, दो अक्षरी, तीन अक्षरी और चार अक्षरी धातुएँ होती है।[8]

वोली का क्रमिक विकास ही बोली को भाषा में परिणति देता है। बोली का भाषा में परिणत हो जाने के बाद दोनों बोली और भाषा की धातु में परिवर्तन आता चलता है।

## धातु के प्रकार

1. मूल क्रियापरक धातु
2. साधित धातु
3. नाम धातु
4. मूल क्रियापरक नामधातु
5. साधित क्रियापरक नामधातु
6. रंजक क्रिया धातु
7. तुमर्थ क्रिया धातु
8. कर्तृवाच्य धातु क्रिया-विशेषणात्मक धातु
   कर्मवाच्य धातु क्रिया-विशेषणात्मक धातु
9. प्रेरणार्थक क्रिया धातु -
   (क) अकर्मक क्रिया संरचित प्रेरणार्थक धातु (ख) सकर्मक क्रिया संरचित प्रेरणार्थक धातु
   (ग) प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया धातु (घ) द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया धातु
10. कर्मणि धातु
11. पक्ष सम्बन्धी धातु
12. संयुक्त नामिक धातु
13. क्रियार्थक धातु
14. अक्रियार्थक धातु
15. मूल धातु
16. यौगिक धातु
17. संश्लेषणात्मक धातु
18. विश्लेषणात्मक धातु

. मूल क्रियापरक धातु–

| हिन्दी | | कुड़ुख़ | |
|---|---|---|---|
| धातु | क्रिया | धातु | क्रिया |
| कर | करना | नन | नन्ना |
| पी | पीना | ओन | ओन्ना |
| देख | देखना | एर | एरना |
| पढ़ | पढ़ना | बच | बचना |
| खा | खाना | मोख़ | मोख़ना |
| चल | चलना | एक | एकना |
| उठ | उठना | चो'अ | चो'अना |
| उड़ | उड़ना | उढ़िया | उढ़ियारना |
| दे | देना | चि'इ | चि'ईना |
| जी | जीना | उज्ज | उज्जना |
| जग | जगना | एजेर | एजेरना |
| सो | सोना | ख़ँदर | ख़ँदरना |
| बन | बनना | कम | क़मरना |
| लाद | लादना | लद | लदना |
| खेल | खेलना | बेच | बेचना |
| खिल | खिलना | पुँइद | पुँइदना |
| बाँध | बाँधना | हे'अ | हे'अना |
| तोड़ | तोड़ना | एस | एसना |
| बेच | बेचना | बीस | बीसना |
| लेट | लेटना | बेड | बेडेरना |
| रो | रोना | चींख़ | चींख़ना |
| निकल | निकलना | उरूख | उरूखना |
| बोल | बोलना | ब'अ | ब'अना |
| सीख | सीखना | सिखिर | सिखिरना |
| छोड़ | छोड़ना | अम्ब | अम्बना |
| आ | आना | बर | बरना |
| जा | जाना | कल | काना |
| डाल | डालना | तुंद | तुंदना |
| निकल | निकलना | उरूख | उरूखना |
| पड़ | पड़ना | मड़ | मड़रना |
| पा | पाना | ख़क्ख | ख़क्खना |
| मार | मारना | ल'अ | ल'अना |

| धातु | क्रिया | धातु | क्रिया |
|---|---|---|---|
| रख | रखना | उइ | उइना |
| रह | रहना | र'अ | र'अना |
| ले | लेना | हो'अ | हो'अना |
| फट | फटना | एटेर | एटेरना |
| नहा | नहाना | एम | एमना |
| डर | डरना | एलेच | एलेचना |
| ऐंठ | ऐंठना | अंइठ | अंइठरना |
| तैर | तैरना | ओग | ओगना |
| जल | जलना | ओल | ओलना |
| छिप | छिपना | नूखुर | नूखुरना |
| सड़ | सड़ना | कित्त | कित्तना |
| घूम | घूमना | कुद्द | कुद्दना |
| लौट | लौटना | किर्र | किर्ऱना |
| उग | उगना | अरग/कुंद | अरगना/कुंदन |
| ऊँघ | ऊँघना | मसमस | मसमसरना |
| कुचल | कुचलना | केचट | केचट'अना |
| घुस | घुसना | कोर | कोरना |
| गिर | गिरना | खतर | खतरना |
| थक | थकना | ख़ड़द | ख़ड़दना |
| हट | हटना | गुच्छुर | गुच्छुरना |
| चुन | चुनना | चाज | चाजना |
| लेट | लेटना | बेड़ेर | वेड़ेरना |
| हो | होना | मन्न | मन्ना |
| थूक | थूकना | तुप्प | तुप्पना |
| नाच | नाचना | नल | नलना |
| हिल | हिलना | नुकुर | नुकुरना |
| बढ़ | बढ़ना | परद | परदना |
| बच | बचना | बच्छर | बच्छरना |
| बदल | बदलना | बदल | बदलरना |
| बस | बसना | रइह | रहइकाना |
| चमक | चमकना | विलिच | विलिचना |
| पक | पकना | बि'अ | बि'अना |
| भाग | भागना | बोंग | बोंगना |
| थम | थमना | थम्ब | थम्बना |
| डूब | डूबना | मुलुख़ | मुलुख़ना |

| धातु | क्रिया | धातु | क्रिया |
|---|---|---|---|
| रेंक | रेंकना | रेक | रेकना |
| लड़ | लड़ना | लग्ग | लग्गना |
| लटक | लटकना | लटख़ | लटख़ना |
| सट | सटना | सटर | सटरना |
| बज | बजना | सड्ड | सड्डना |
| शोभ | शोभना | शोभ | शोभना |
| जान | जानना | अख़ | अख़ना |
| पहन | पहनना | अत्त | अत्तना |
| छोड़ | छोड़ना | अम्ब | अम्बना |
| कोड़ | कोड़ना | अरख़ | अरख़ना |
| कह | कहना | ब'अ | ब'अना |
| रोप | रोपना | इद | इदना |
| भून | भूनना | इड़ | इड़ना |
| रख | रखना | उइ | उइना |
| फूँकना | फूँकना | ऊर | ऊरना |
| जगा | जगाना, जगना | एज | एजना |
| तोड़ | तोड़ना | चोख़ | चोख़ना |
| लीप | लीपना | ए-ग | ए-गना |
| दिखा | दिखाना | एद | एदना |
| निकाल | निकालना | ओथोर | ओथोरना |
| ला | लाना | ओंदोर | ओंदोरना |
| खा | खाना | मोख़ | मोख़ना |
| दब | दबाना | चिप | चिपना |
| छू | छूना | ओंसर | ओंसोरना |
| गाड़ | गाड़ना | मड़ | माड़ना |
| चख | चखना | चख | चखना |
| छाँट | छाँटना | चाज | चाजना |
| बो | बोना | चांख़ | चांख़ना |
| चूस | चूसना | चीप | चीपना |
| चुन | चुनना | पेस | पेसना |
| ढो | ढोना | चेड़ | चेड़ना |
| भिंगा | भिंगाना | चंएद | चंएदना |
| चूम | चूमना | चोंक्ख | चोंक्खना |
| तोड़ | तोड़ना | एस | एसना |
| चाट | चाटना | टाट | टाटना |
| टोक | टोकना | टोक | टोकना |

| धातु | क्रिया | धातु | क्रिया |
|---|---|---|---|
| ठान | ठानना | ठन | ठनना |
| भेज | भेजना | तइ | तइना |
| रौंद | रौंदना | तीर | तीरना |
| ढकेल | ढकेलना | तुक्क | तुक्कना |
| दाग | दागना | दग | दगना |
| पकड़ | पकड़ना | धर | धरना |
| खींच | खींचना | नतग | नतगना |
| नाप | नापना | नप | नपना |
| हिल | हिलना | नुकुर | नुकुरना |
| छिप | छिपना | नूखुर | नूखुरना |
| माँग | माँगना | ने'अ | ने'अना |
| धो | धोना | नोड़ | नोड़ना |
| बढ़ | बढ़ना | परद | परदना |
| पलट | पलटना | पलट | पलटरना |
| भाँफ | भाँफना | पूख़ | पूख़ना |
| पाल | पालना | पोस | पोसना |
| बच | बचना | बच्छर | बच्छरना |
| बदल | बदलना | बदल | बदल'अना |
| जल | जलना | लघर | लघरना |
| छान | छानना | छांड़ | छांड़ना |
| फैल | फैलना | बीड़िर | वीड़िरना |
| पका | पकाना | बीत | बीतना |
| बुझ | बुझना | तेब | तेबना |
| खोज | खोजना | बेद्द | बेद्दना |
| माँज | माँजना | मंज | मंजना |
| मान | मानना | इंजिर | इंजिरना |
| सुन | सुनना | मेन्न | मेन्ना |
| बुला | बुलाना | मेख़ | मेख़ना |
| मिटा | मिटाना | मेट | मेटाबअना |
| भूल | भूलना | मोधोर | मोधोरना |
| रंग | रंगना | रंग | रंगना |
| रेत | रेतना | एड़ेब | एड़ेबना |
| फेंक | फेंकना | हेबेड़ | हेबेड़ना |
| सेंक | सेंकना | सेक | सेकना |
| सोच | सोचना | घोख | घोखना |
| सता | सताना आदि | ख़ांड़ | ख़ांड़ना, अन्नेम |

**2. साधित धातु**

| धातु | क्रिया | धातु | क्रिया |
|---|---|---|---|
| करा | कराना | नन | ननत'अना |
| करवा | करवाना | नना | ननत'अना |
| पिला | पिलाना | ओनत | ओनत'अना |
| पिलवा | पिलवाना | ओनता | ओनताबात'अना |
| दिखा | दिखाना | एद | एदना |
| दिखला | दिखलाना | एद | एद'अना |
| दिखवा | दिखवाना | एदआ | एदत'अना |
| पढ़ा | पढ़ाना | बच | बचत'अना |
| पढ़वा | पढ़वाना | बचत'अ | बचतत'अना |
| चला | चलाना | एक | एकत'अना |
| चलवा | चलवाना | एक | एकाबात'अना |
| उठा | उठाना | चो | चो-द'अना |
| उठवा | उठवाना | चो | चो-दत'अना |
| उड़ा | उड़वाना | उढ़िया | उढ़ियात'अना |
| दिला | दिलाना | चित'आ | चित'अना |
| दिलवा | दिलवाना | चित'आ | चितत'अना |
| जगा | जगाना | एज'अ | एजना |
| जगवा | जगवाना | एजत'आ | एजतता'आ |
| सुला | सुलवाना | कीद'आ | कीदत'अना |
| सुलवा | सुलवाना | कीद'आ | कीदआना |
| बना | बनाना | कमआ | कमना |
| बनवा | बनवाना | कमत'आ | कमतत'अना |
| लदवा | लदवाना | लद | लदत'अना |
| खिलवा | खिलवाना | ओंतत'अना | ओंताबत'अना |
| बँध | बँधवाना | हेअ | हेतत'अना |
| तुड़वा | तुड़वाना | चोख'अ | चोखत'अना |
| बेचवा | बेचवाना | बीसा | बीसत'अना |
| बिकवा | बिकवाना | बीसत'अ | बीसतत'अना |
| रूला | रूलाना | चिंख़त'अ | चिंख़त'अना |
| रूलवा | रूलवाना | चिंख़त'आ | चिंख़त'अना |
| निकलवा | निकलाना | ओथोरत'अ | ओथोरत'अना |
| सिखवा | सिखवाना | सिखब'अ | सिखबत'अना |
| छुड़ा | छुड़वाना | अम्बत'अ | अम्बतत'अना |
| छुड़वा | छुड़वाना | अम्बत'अ | अम्बत'अना |

| धातु | क्रिया | धातु | क्रिया |
|---|---|---|---|
| डलवा | डलवाना | सजत'अ | सजत'अना |
| रखवा | रखवाना | उयता'अ | उयत'अना |
| नहवा | नहवाना | एमेत'अ | एमेत'अना |
| डरा | डरवाना | एलेचत'अ | एलेचत'अना |
| ऐंठना | ऐंठवाना | अंइठत'अ | अंइठतत'अना |
| तैरा, तैरवा | तैराना, तैरवाना | ओग | ओगतत'अना |
| जला | जलाना | लघर | लघरत'अना |
| जलवा | जलवाना | लघरत'अ | लघरत'अना |
| छिपा | छिपाना | नुड़ | नुड़ना |
| छिपवा | छिपवाना | नुड़'अ | नुड़त'अना |
| सड़ा | सड़ाना | कित्त | कित्तत'अना |
| सड़वा | सड़वाना | कित्त'अ | कित्तत'अना |
| लौटा | लौटवाना | किर्र | किर्रतत'अना |
| उगा | उगाना | कुन्द | कुन्दत'अना |
| उगवा | उगवाना | कुन्दत'अ | कुन्दतत'अना |
| कुचलवा | कुचलवाना | तीरत'अ | तीरत'अना |
| घुसा | घुसवाना | मंखत'अ | मंखतत'अना |
| गिरा | गिरवाना | खतर | खतरत'अना |
| थका | थकाना | ख़ड़द | ख़ड़दत'अना |
| हटा | हटाना | गुच्छा | गुच्छाब'अना |
| हटवा | हटवाना | गुच्छर'अ | गुच्छरतत'अना |
| चुनवा | चुनवाना | पेसत'अ | पेसतत'अना |
| लिटा | लेटाना, लिटाना | कीद | कीदत'अना |
| थुकवा | थुकवाना | तुप्प | तुप्पतत'अना |
| नचा | नचाना | नला | नलत'अना |
| नचवा | नचवाना | नलता | नलतत'अना |
| बढ़ा | बढ़वाना | परद | परद'अना |
| बढ़वा | बढ़वाना | परदत'अ | परदत'अना |
| बचा | बचाना | बच्छा | बच्छाब'अना |
| बचवा | बचवाना | बच्छाब | बच्छाबात'अना |
| बदलवा | बदलवाना | बदलत'अ | बदलत'अना |
| बसा | बसाना | ओक्क | ओक्कत'अना |
| बसवा | बसवाना | ओक्कत | ओक्कत'अना |
| जला | जलाना | ओल | ओलत'अना |
| जलवा | जलवाना | ओलत'अ | ओलतत'अना |

| धातु | क्रिया | धातु | क्रिया |
|---|---|---|---|
| चमका | चमकाना | बिलिच | बिलिचत'अना |
| चमकवा | चमकवाना | बिलिचत | बिलिचतत'अना |
| पका | पकाना | बीत | बीतना |
| पक्वा | पकवाना | बीतत'अ | बीतत'अना |
| भगा | भगाना | बोंगत'अ | बोंगत'अना |
| थमा | थमाना | थम्ब | थमत'अना |
| थमवा | थमवाना | थम्बत'अ | थमत'अना |
| डुबा | डुबाना | मुलुख़ | मुलुख़'अना |
| डुबवा | डुबवाना | मुलुख़त'अ | मुलुख़तत'अना |
| लड़ा | लड़ाना | लग्ग | लग्गत'अना |
| लड़वा | लड़वाना | लग्गत | लगतात'अना |
| लटका | लटकवाना | लटख़त | लटख़त'अना |
| सटा | सटाना | सटर | सटाब'अना |
| सटवा | सटवाना | सटब'अ | सटाबतत'अना |
| बजा | बजाना | ख़रख़ा | ख़रख़त'अना |
| बजवा | बजवाना | ख़रख़त | ख़रख़तत'अना |
| जनवा | जनवाना | अख़ना | अख़त'अना |
| पहना | पहनाना | अत्तन | अत्त'अना |
| पहनवा | पहनवाना | अत्तत | अत्तत'अना |
| छुड़वा | छुड़वाना | अम्ब | अम्बत'अना |
| कोड़वा | कोड़वाना | अरख़त'अ | अरख़तत'अना |
| कहवा | कहवाना | ब'अन | बातत'अना |
| रोपवा | रोपवाना | इदन | इदत'अना |
| भुनवा | भुनवाना | इड़न | इड़त'अना |
| रखवा | रखवाना | उय्यन | उइत'अना |
| फुँक्वा | फुँक्वाना | ऊरत'अ | ऊरत'अना |
| जगा | जगाना | एजन | एजना |
| जगवा | जगवाना | एजत | एजतत'अना |
| तुड़वा | तुड़वाना | एसत | एसत'अना |
| लिपवा | लिपवाना | एगत'अ | एगत'अना |
| दिखवा | दिखवाना | एद'अ | एदत'अना |
| निकलवा | निकलवाना | ओथोरत'आ | ओथोरत'अना |
| खिला | खिलाना | मोंख़त | मोंख़त'अना |
| दबवा | दबवाना | अरबत'अ | अरबत'अना |
| छुआ | छुआना | ओंसोर | ओंसोरना |

| धातु | क्रिया | धातु | क्रिया |
|---|---|---|---|
| छुलवा | छुलवाना | ओंसोरत | ओंसोरतत'अना |
| गड़वा | गड़वाना | गड़त | गड़त'अना |
| कुचलवा | कुचलवाना | केचत'अ | केचत'अना |
| चखवा | चखवाना | चखत | चखत'अना |
| छँटवा | छँटवाना | छिनग'अ | छिनग'अना |
| चुसवा | चुसवाना | चीपत'अ | चीपत'अना |
| चुनवा | चुनवाना | पेसन | पेसत'अना |
| ढुलवा | ढुलवाना | चेड़त'अ | चेड़त'अना |
| भिंगवा | भिंगवाना | चंएद | चंएदत'अना |
| चुमवा | चुमवाना | चोंक्ख | चोंक्खत'अना |
| तुड़वा | तुड़वाना | चोख़ | चोख़त'अना |
| चटवा | चटवाना | टाटत | टाटत'अना |
| भेजवा | भेजवाना | तइत | तइत'अना |
| दगवा | दगवाना | दगत'अ | दगत'अना |
| पकड़वा | पकड़वाना | धरत'अ | धरत'अना |
| खिंचवा | खिंचवाना | नतगत'अ | नतगत'अना |
| नपवा | नपवाना | खोयना/नपत'अ | खोयत'अना/नपत'अना |
| हिला | हिलाना | नुक | नुकना |
| सोचवा | सोचवाना आदि | घोखत'अ | घोखत'अना |

### 3. नामधातु[9]

| धातु | क्रिया | धातु | क्रिया |
|---|---|---|---|
| डर | डराना, डरवाना | एलेच | एलेचन, एलेकत'अना |
| खरीद | खरीदना, खरीदवाना | ख़ेंदत | ख़ेंदना, खेंदत'अना |
| बदल | बदलना, बदलवाना | बदल'अ | बदल'अना, बदलत'अना |
| शर्म | शरमाना | लज्जे | लजरना |
| गहर | गहराना | गडर | गडरना |
| अलग | अलगाना | कूटी | तरकूटी |
| अपन | अपनाना | इंजिर | इंजिरना |
| मोटा | मुटाना, | मोट | मोटोरना |
| झूठ | झूठलाना | टेट | टेटना |
| हाथ | हथियाना | ख़ेक्ख | ख़ेक्ख नु ओन्दरना |
| गोल | गोलियाना | गोल | गोल कमना |
| जल्द | जल्दियाना | चांड़े | चांड़े नन्ना |
| बात | बतियाना | कत्था | कचनखरना |

| धातु | क्रिया | धातु | क्रिया |
|---|---|---|---|
| लात | लतियाना | लइथ | लथिय'अना |
| मटकी | मटकियाना | मिटकी | मिटक'अना |
| मोट | मोटियाना | रोठ | रोठारना |
| बगल | बगलियाना | कूटी | तरकूटी नन्ना |
| खाता | खतियाना | खता | खता नु टूड़ना |
| जूता | जुतियाना | जुता | जुता ती लथना |
| कर | करना | नन | ननना |
| हरा | हरियाना | हर | हरियारना |
| अपना | अपनाना | इंज | इंजिरना |
| घत | घतियाना | घत | घतिय'अना |
| छल | छलियाना | छल | छलना |
| संकोच | संकोचना | लज्जे | लजरना |
| हर्ष | हर्षाना | खुस | खुसमारना |
| दाँत | दँतियाना | पल्ल | परमना |
| पानी | पनियाना | अम्म | अम्मे-अम्मे नन्ना |
| मल | मलना | नलब | नलबना |
| फूट | फूटना | चोड़ | चोड़ना |
| रंग | रंगना | रंग | रंगना |
| लूट | लूटना, लुटना, | बच्च | बच्चना |
| हुंकार | हुंकारना | हंकदर | हंकदारना |
| चोर | चुराना | खलब | ख़लबरना |
| पति | पतियाना | मेत | मेत नन्ना |
| पूजा | पूजना | पुजा | पुजा नन्ना |
| मन | मनाना | बरज | बरज'अना |
| उतार | उतरना, उतारना | एत्त | एत्त'अना |
| करनी | करना | ननी | नन्ना |
| कटाई | काटना | खंड | खँडना |
| खानपान | खाना पीना | ओना-मोंख़ा | ओन्ना मोंख़ना |
| खेल | खेलना | बेच | बेचना/बेचा |
| गान | गाना | पांड़ | पांड़ना |
| घटाव | घटाना | घट | घटाब'अना |
| घुमाव | घूमना | कुद्द | कुद्दना |
| चढ़ाई | चढ़ना | अरग | अरगना |
| चमक | चमकना | बिलिच | बिलिचना |
| चराई | चराना | मेन | मेनत'अना |

| धातु | क्रिया | धातु | क्रिया |
|---|---|---|---|
| चोरी | चुराना | ख़लब | ख़लबना |
| छपाई | छापना | चिप | चिपत'अना |
| छींक | छींकना | तुम्म | तुम्मना |
| जमाव | जमाना | डिल | डिलत'अना |
| जाँच | जाँचना | थिथ | थिथाब'अना |
| जोड़ | जोड़ना | जुट | जुटाब'अना |
| झगड़ा | झगड़ना | लग्ग | लग्गानखरना |
| झुंझलाहट | झुंझलाना | झौंव | झौंवरना |
| थकान | थकना | ख़ड़द | ख़ड़दना |
| दिखावट | देखना | एदका | एरना |
| दौड़ | दौड़ना | बोंग | बोंगना |
| नाच | नाचना | बेच | बेचना |
| पहनावा | पहनना | अत्त | अत्तना |
| पड़ाव | पड़ना | मड़ | मड़ना |
| पिटाई | पीटना | पस्स | पसना |
| फेरा | फेरना | भौंर | भौंरी |
| बचाव | बचाना | बछर | बछरना |
| भनभनाहट | भनभनाना | बरबर | बरबर्रना |
| भूल | भूलना | मोधोर | मोधोरना |
| मेल | मिलना | ख़खर | ख़खरना |
| रोक | रूकना | छेक | छेकेरना |
| रूलाई | रोना | चींख़ | चींख़ना |
| लेखन | लिखना | टूड़न | टूड़ना |
| लाज | लजाना | लज्जे | लजरना |
| उड़ान | उड़ना | उढ़िय | उढ़ियारना |
| कमाई | कमाना | अरजना | अरजा'अना |
| खपत | खपना | खप | खपचा |
| खिलाई | खिलाना | ओन | ओनत'अना |
| खोज | खोजना | बेद्द | बेद्दना |
| गिनती | गिनना | गण | गनयाँ |
| घबराहट | घबराना | एलेच | एलचना |
| घुड़की | घुड़कना | एलेक | एलेकत'अना |
| घेरा | घेरना | घोर | घोरना |
| चलन | चलना | एक | एकना |
| चिल्लाहट | चिल्लाना | गोहाइर | गोहरा |

| धातु | क्रिया | धातु | क्रिया |
|---|---|---|---|
| चुनाव | चुनना | चाज | चाजना |
| छिड़काव | छिड़कना | छिटकी | छिटिकना |
| छेड़ | छेड़ना | ठूड़ | ठूड़ना |
| जगमगाहट | जगमगाना | जगमग | जगमगरना |
| जीत | जीतना | राइन जीत | राइन जीतना |
| जुताई | जोतना | उयतरकी | उयना |
| झाड़ | झाड़ना | खेत्त | खेत्तना |
| टाँकी | टाँकना | ओज्जर | ओज्जना |
| तोड़ | तोड़ना | एसेर | एसना |
| देन | देना | चि'इ | चि'अना |
| देखभाल | देखना भालना | एरा ख़ोजा | एरना ख़ोजना |
| धुलाई | धोना | नोढ़ोर | नोड़ा |
| पकड़ | पकड़ना | धरन | धरना |
| पढ़ाई | पढ़ना | बचन | बचना |
| पावना | पाना | ख़ख | ख़खना |
| फाँसी | फँसना, | फँसरी | फँसरना |
| बनावट | बनाना | कमरका | कमना |
| बैठक | बैठना | ओक्कागे | ओक्कना |
| भुलावा | भुलाना | मोधरअ | मोधरना |
| मार | मारना | ल'अ | ल'अवना |
| मुस्कान | मुसकाना | मुसकरना | मुसमुसरना |
| रेती | रेतना | रेती | रेतना |
| लड़ाई | लड़ना | बिच्छा | बिच्छा लग्गना |
| लेन देन | लेना देना | चिए नेए | चि'अना ने'अना |
| समझौता | समझाना | रजि रमा | बुझाब'अना |
| हार | हारना | हर | हारना |
| सजावट | सजाना | सिंगर | सिंगर'अना |
| सिंचाई | सींचना | हल्ले चि'अना | पटब'अना |
| अंकुर | अंकुरना | कुन्दू | कुन्दना |
| अंकन | आंकना | जोक्खा | चोखना |
| खेल | खेलना | बेच | बेचना |
| खाऊ | खाना | मोखु | मोख़ना |
| त्याग | त्यागना | अम्ब | अम्बना |
| ग्रस्त | ग्रसना | | |
| घृणित | घिनाना | घिन्न | घिनरना |

| धातु | क्रिया | धातु | क्रिया |
|---|---|---|---|
| पूज्य | पूजना | | |
| पेय | पीना | ओन्न | ओन्ना |
| फलित | फलना | खंज | खंजना |
| मर्त्य | मरना | केच्च | खे'अना |
| मूर्च्छित | मुरझाना | मुरझा | मुरझारना |
| मान्य | मानना | पइत्त | पइत्त'अना |
| रंगीन | रंगना | निसिग | निसिगना |
| लज्जित | लजाना | लज्ज | लजरना |
| लिखित | लिखना | टूड़का | टूड़ना |
| लुब्ध | लुभाना | लुभी | लोभाब'अना |
| पागल | पगलाना | पुरू | पूरना |
| सुस्त | सुस्ताना | ख़न्न | ख़न्न एख़ना |
| मोटा | मोटाना | रोटठा | रोठरना |

**4. मूल क्रियापरक नामधातु**

| धातु | क्रिया | धातु | क्रिया |
|---|---|---|---|
| डर | डरना, डराना, | एलचर | एलचना |
| खरीद | खरीदना[10] | ख़ेन्द | ख़ेंदना |

**5. साधित क्रियापरक नामधातु**

| धातु | क्रिया | धातु | क्रिया |
|---|---|---|---|
| शरमा | शर्माना[11] | लज्जे | लजरना |
| गहरा | गहराना | गड्डी | गडरना |
| अलगा | अलगाना | छिण्डा | छिण्डिरना |
| अपना | अपनाना | तंगआ | तंगत'अना |
| मोटा | मोटाना | रोट्ठा | रोठरना |
| झुठला | झुठलाना | टेटु | टेटना |
| हथिया | हथियाना | ख़ेक्ख | ख़ेक्ख नु नन्ना |
| गोलिया | गोलियाना | टेम्पत | टेम्पअना |
| जल्दिया | जल्दियाना | चाँड़े | चाँड़त'अना |

**6. रंजक क्रिया धातु**

| धातु | क्रिया | धातु | क्रिया |
|---|---|---|---|
| आ | आना[12] | बरा | बरना |

| धातु | क्रिया | धातु | क्रिया |
|---|---|---|---|
| उठ | उठना | चो'अ | चो'अना |
| कर | करना | नना | नन्ना |
| चला आ | चला आना | चइल बरा | चइल बरना |
| चला जा | चला जाना | चइल कला | चइल काना |
| चाह | चाहना | शाल | शालना |
| चुक | चुकना | पोल | पोलना |
| छोड़ | छोड़ना | अम्बा | अम्बना |
| जा | जाना | कला | काना |
| डाल | डालना | तुन्दा | तुन्दना |
| दे | देना | चि'आ | चि'अना |
| निकल | निकलना | उरख़ा | उरख़ना |
| पड़ | पड़ना | मड़ | मड़ना |
| पा | पाना | ख़क्खा | ख़क्खना |
| बन | बनना | कम | कमरना |
| बैठ | बैठना | ओक्का | कोक्कना |
| ले | लेना | ले | होअना |
| दिखा | दिखाना | एद'आ | एद'अना |
| ला | लाना | ओन्दोर'आ | ओन्दोरना |
| गुजर | गुजरना | कट्ट | कट्टना |
| मर | मरना | खे'आ | खे'अना |
| डूब | डूबना | मुलख़ा | मुलुख़ना |
| रख | रखना | उय्या | उयना |
| जल | जलना | ओला | ओलना |
| मिल | मिलना | ख़क्खर'अ | ख़क्खरना |

**नोट :-** कोशीय क्रिया हिन्दी क्रिया-पदवन्ध में प्रथम स्थान पर आती है तथा रंजक क्रियायें क्रिया-पदबन्ध में दूसरे स्थान पर रहती है। जैसे-

| | | |
|---|---|---|
| खा | लिया | जा सकता है। |
| मोंख़ा | ओंगतार'आ | ऊंगी |
| खोल | दिया | जा सकता है। |
| तिसिग | तार'आ | ऊंगी |

(कोशीय क्रिया) (रंजक क्रिया)

| | | | |
|---|---|---|---|
| मार | मारना | ल'आ | ल'ओना |
| रख | रखना | उय्या | उयना |
| रह | रहना | र'अ | र'अना |
| ले जा | ले जाना | ले हो'आ | ले हो'अना |

| धातु | क्रिया | धातु | क्रिया |
|---|---|---|---|
| ले | लेना | ले | हो'अना |
| सक | सकना | ओंग | ओंगना |
| हो | होना | मन्न | मन्ना |

## 7. तुमर्थ क्रिया धातु[13]

| धातु | क्रिया | धातु | क्रिया |
|---|---|---|---|
| आ | आना | बरा | बरना |
| उठ | उठना | चो'आ | चो'अना |
| चुक | चुकना | ख़च्च | ख़च्चना |
| छोड़ | छोड़ना | अम्बा | अम्बना |
| जा | जाना | कला | काना |
| डाल | डालना | तुन्द | तुन्दना |
| दे | देना | चि | चि'अना |
| निकल | निकलना | उरूख | उरूखना |
| पड़ | पड़ना | | |
| पा | पाना | ख़क्खा | ख़क्खना |
| बैठ | बैठना | ओक्का | ओक्कना |
| मार | मारना | ल'अ | ल'अना |
| रख | रखना | उय्या | उइना |
| रह | रहना | र'आ | र'अना |
| ले | ले | ओंदा | ओंदा/हो'आ |
| सक | सकना | ओंग | ओंगना |

**नोट :** 'तुमर्थ' क्रिया का साधारण रूप होता है। यह क्रिया का अविधेय रूप है। यह क्रियावाचक नामिक (नाम धातु अर्थात् संज्ञा, विशेषण और क्रिया विशेषण का कार्य करने वाला) अविधेय रूप है। धातु के अन्त में 'न+आ- ना' लगने से तुमर्थ होता है। तुमर्थ साधित यौगिक है।

## 8. क्रिया विशेषणात्मक धातु[14]

(1) कर्तृवाच्य धातु (2) कर्मवाच्य

**हिन्दी**

| कर्तृवाच्य धातु | पर प्रत्यय | तृतीय कर्तृवाच्य धातु | कर्मवाच्य धातु | परप्रत्यय - | तृतीय कर्मवाच्य धातु |
|---|---|---|---|---|---|
| लिख | - | लिख | लिखा जा | - | लिखा जा |
| लिख | कर | लिखकर | लिखा जा | कर | लिखा जाकर |
| लिख | कर | लिख के | लिखा जा | के | लिखा जा के |
| लिख | करके | लिख करके | लिखा जा | करके | लिखा जा करके |

**कुड़ुख़**

| कर्तृवाच्य धातु | पर प्रत्यय | तृतीय कर्तृवाच्य धातु | कर्मवाच्य धातु | पर प्रत्यय | तृतीय कर्मवाच्य धातु |
|---|---|---|---|---|---|
| टूड़ | - | टूड़ | टूड़ा कला | - | टूड़ा कला |
| टूड़ | र | टूड़र | टूड़का | लर | टूड़ा कालर |
| टूड़ | र | टूड़र की | टूड़र का | लर की | टूड़ा कालर की |
| टूड़ | र की | टूड़र की | टूड़ा का | लर की | टूड़ा कालर की |

## 9. प्रेरणार्थक क्रिया धातु[15]

**हिन्दी**

| मूल क्रिया अकर्मक (+कर्त्ता) | सकर्मक (+कर्त्ता, कर्म) | प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया (+ प्रेरक कर्त्ता, सक्रिय कर्त्ता) | प्रेरणार्थक क्रिया द्वितीय प्रेरणार्थक (+प्रेरक कर्त्ता, मध्यस्थ, सक्रिय कर्त्ता) |
|---|---|---|---|
| | क | ख | ग |
| **क्रिया वर्ग-1** | सोना | सुलाना | सुलवाना |
| | बैठना | बिठाना | बिठवाना |
| | उठना | उठाना | उठवाना |
| | उड़ना | उड़ाना | उड़वाना |
| | निकलना | निकालना | निकलवाना |
| **क्रिया वर्ग-2** | खाना | खिलाना | खिलवाना |
| | पहनना | पहनाना | पहनवाना |
| | पीना | पीलाना | पिलवाना |
| | सुनना | सुनाना | सुनवाना |
| | देखना | दिखाना | दिखवाना |
| **व्युत्पन्न अकर्मक** | | | |
| **क्रिया वर्ग-3** | कटना | काटना | कटवाना/कटाना |
| | बनना | बनाना | बनवाना |
| | बिकना | बेचना | बिकवाना |
| | पिटना | पीटना | पिटवाना |
| | पकना | पकाना | पकवाना |
| | धुलना | धोना | धुलवाना/धुलाना |
| | खुलना | खोलना | खुलवाना |
| | होना | करना | करवाना/कराना |
| **क्रिया वर्ग-4** | **क** | **ख** | |
| | खरीदना | खरीदवाना | |
| | गाना | गवाना | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | लिखना | लिखाना | |
| | भेजना | भिजवाना | |
| | देना | दिलवाना/दिलाना | |
| कुड़ुख़ | | | |
| **क्रिया वर्ग–1** | **क** | **ख** | **ग** |
| | ख़ंदरना | ख़ंदरत'अना | ख़ंदरत'अना |
| | ओक्कना | ओक्कत'अना | ओक्कतत'अना |
| | चो'अना | चोद'अना | चोदतत'अना |
| **क्रिया वर्ग–2** | **क** | **ख** | **ग** |
| | मोख़ना | मोख़त'अना | मोख़तत'अना |
| | अत्तना | अत्त'अना | अत्तत'अना |
| | तिंदना | तिन्दत'अना | |
| | ओन्ना | ओनत'अना | ओनतत'अना |
| | मेन्ना | मेनत'अना | मेनतत'अना |
| | एरना | एरत'अना | एरतत'अना |
| | एदना | एदत'अना | |
| **व्युत्पन्न अकर्मक** | **क** | **ख** | **ग** |
| **क्रिया वर्ग 3** | मोचोरना | मोचना | मोचत'अना |
| | कमरना | कमना | कमत'अना |
| | बीसिरना | बीसना | बीसत'अना |
| | पसरना | पसना | पसत'अना |
| | नोड़ोरना | नोड़ना | नोड़त'अना |
| | कोलोरना | कोल्लना | कोल्लत'अना |
| | मनरना | मन्ना | मनत'अना |
| | बि'अना | बित'अना | बितत'अना |
| **क्रिया वर्ग 4** | **क** | **ख** | |
| | ख़ेंदना | ख़ेंदत'अना | |
| | पाँड़ना | पांड़त'अना | |
| | टूड़ना | टूड़त'अना | |
| | तइना | तइत'अना | |
| | चि'अना | चित'अना | |

---

स्तम्भ 01 में अकर्मक क्रियायें हैं और स्तम्भ 02 में सकर्मक क्रियाये। स्तम्भ 03 में प्रथम प्रेरणार्थक और स्तम्भ 04 में द्वितीय प्रेरणार्थक क्रियायें हैं। इन सारी क्रियाओं से 'ना (न + अ)' प्रत्यय हटाने के बाद जो क्रिया का अंश बच जाता है, वह धातु का अंश होगा अर्थात् वह धातु है।

उपर्युक्त सारिणी में अंकित धातुओं के अलावा निम्नांकित प्रेरणार्थक धातुओं का उल्लेख किया जा रहा है।

## प्रेरणार्थक क्रिया - धातु

| हिन्दी | | | कुड़ुख़ | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अकर्मक क्रियाधातु | प्रथम प्रेरणार्थक | द्वितीय प्रेरणार्थक | अकर्मक क्रियाधातु | प्रथम प्रेरणार्थक | द्वितीय प्रेरणार्थक |
| चढ़ | चढ़ाना | चढ़वाना | अरगा | अरगतअना | अरगतत'अना |
| हँस | हँसा | हँसवा | अलखा | अलखियस | अलखत'आ |
| काँप | कँपा | कँपवा | असरा | असरियस | असरत'आ |
| खाँस | खँसा | खँसवा | खोख'आ | खोखचस | खोखत'आ |
| जी | जीला | जिलवा | उज्जा | उज्जयस | उज्जत'आ |
| निकल | निकाल | निकवा | उरखा | ओथर'आ | ओथेरत'आ |
| उड़ | उड़ा | उड़वा | उढ़ियर'आ | उढ़ियत'आ | उढ़ियतत'आ |
| जाग | जगा | जगवा | एजर'आ | एजरस | एजत'आ |
| उतर | उतार | उतरवा | एत्ता | एत्त'आ | एतत'आ |
| दीख | दिखा | दिखवा | एथर'आ | एद'आ | एदत'आ |
| नहा | नहला | नहलवा | एम'आ | एमत'आ | एमतात'आ |
| टूट | तोड़ | तुड़वा/तोड़वा | एसेर | एस'आ | एसत'आ |
| बैठ | बैठा/बिठला | बिठलवा | ओक्का | ओकत'आ | ओक्कतात'आ |
| तैर | तैरा | तैरवा | ओंगा | ओंगत'आ | ओंगतात'आ |
| बन | बना | बनवा | कमर'आ | कमत'आ | कमतात'आ |
| डर | डरा | डरवा | एलचा | एलेकत'आ | एलेकतात'आ |
| घूम | घूमा | घुमवा | कुद्दा | कुद्दत'आ | कुद्दतत'आ |
| रह | रहा | रहवा | र'आ | रात'आ | रातत'आ |
| रेंक | रेंका | रेंकवा | रेक'अ | रेकत'आ | रेकतात'आ |
| लजा | | लजवा | लजर'आ | लजत'आ | लजाबात'आ |
| जला | | जलवा | ओ'ला | ओलत'आ | ओलतात'आ |
| सट | सटा | सटवा | सटर'आ | सटत'आ | सेटतात'आ |
| चल | चला | चलवा | ए-का | एकतआ | एकतातआ |
| **सकर्मक क्रिया धातु** | | | | | |
| खा | खिला | खिलवा | मोंख़ा | तिन्द'आ | तिन्दत'आ |
| पी | पिला | पिलवा | ओना | ओनत'आ | ओनतत'आ |
| पढ़ | पढ़ा | पढ़वा | बचआ | बचत'आ | बचतात'आ |
| पहन | पहना | पहनवा | अत्ता | अत्त'आ | अत्तत'आ |
| छोड़ | छुड़ा | छुड़वा | अम्बा | अम्बत'आ | अम्बतात'आ |
| भुन | भुना | भुनवा | इड़िया | इड़त'आ | इड़तात'आ |
| रख | रखा | रखवा | उय्या | उयत'आ | उयतात'आ |

| अकर्मक क्रियाधातु | प्रथम प्रेरणार्थक | द्वितीय प्रेरणार्थक | अकर्मक क्रियाधातु | प्रथम प्रेरणार्थक | द्वितीय प्रेरणार्थक |
|---|---|---|---|---|---|
| जोत | जोता | जोतवा | उया | उयत'आ | उयतात'आ |
| उठ | उठा | उठवा | चोआ | चोद'आ | चोदत'आ |
| ओढ़ | उढ़ा | उढ़वा | झपर'आ | झप'आ | झपत'आ |
| जीत | जिता | जितवा | जित'आ | जितत'आ | जिताबात'आ |
| डूब | डुबा | डुबवा | मुलख़ा | मुलुख़त'आ | मुलख़ातात'आ |
| बोल | बुला | बुलवा | ब'आ | मेख़ा | मेख़त'आ |
| भींग | भिंगा | भिंगवा | चांया | चंयद'आ | चंयदत'आ |
| लेट | लिटा | लिटवा | चू'ता | कीद'आ | कीदत'आ |
| छू | छुला | छुलवा | ओंसर'आ | ओंसरत'आ | ओंसोरतत'आ |
| धो | धुला | धुलवा | नोड़ा | नोड़त'आ | नोड़तात'आ |
| जी | जिला | जिलवा | उज्जा | उज्जत'आ | उज्जतत'आ |
| धो (धोल) | धुला | धुलवा | नोड़ा | नोड़त'आ | नोड़तत'आ |
| खा | खवा | खबवा | मोख़ा | मोख़त'आ | मोख़तात'आ |
| छू | छुवा, छुला | छुबवा | ओंसर'आ | ओंसरत'आ | ओंसरतात'आ |
| दे | दिवा | दिबवा | चिआ | चीत'आ | चीतात'आ |
| धो | धुवा | धुववा | नोड़ा | नोड़त'आ | नोड़तात'आ |
| पी | पिवा | पिबवा | ओना | ओनत'आ | ओनतात'आ |
| सी | सिवा | सिबवा | ओज्जा | ओज्जत'आ | ओज्जतात'आ |
| सो | सुवा | सुबवा | ख़ंदर'आ | ख़ंदरत'आ | ख़ंदरतत'आ |
| सीख | सिखला, | सिखवा | सिखर'आ | सिखाब'आ | सिखाबात'आ |
| दीख | दिखला, दिखा | दिखवा | एथर'आ | एद'आ | एदत'आ |
| कह | कहा, | कहला | ब'आ | बअस/बाचस | बात'आ<br>बातत'आ |
| खुज | खुजा, | खुजला | ख़ाँस | ख़ाँसर'आ | खाँसा<br>खाँसतात'आ |
| बता | बतला | बतलवा | बतवा | तेंगा | तेंगत'आ<br>तेगतात'आ |
| जता | जतला | जतलवा, | जतवा | अरबा<br>अरबत'आ | अरबतात'आ |
| पी (पील) | पिला, | पिवा | पिलवा, पिबवा | ओना<br>ओनत'आ | ओनतात'आ |
| गिर | गिरा | गिरवा | खतर'आ | खतरत'आ | खतरतात'आ |
| सूख | सुखा | सुखवा | ख़ाया | ख़यद'आ | ख़ायदत'आ |
| पकड़ | पकड़ा | पकड़वा | धर'आ | धरत'आ | धरतत'आ |

| अकर्मक क्रियाधातु | प्रथम प्रेरणार्थक | द्वितीय प्रेरणार्थक | अकर्मक क्रियाधातु | प्रथम प्रेरणार्थक | द्वितीय प्रेरणार्थक |
|---|---|---|---|---|---|
| कह | कहा | कहवा | ब'आ | बात'आ | बातत'आ |
| जाग | जगा | जगवा | एजर'आ | एज'आ | एजत'आ |
| तोड़ | तुड़ा | तुड़वा | एस'आ | एसत'आ | एसतत'आ |
| बुन | बुना | बुनवा | चांख़'आ | चांख़त'आ | चांख़तात'आ |
| लीप | लिपा | लिपवा | एगा | एगत'आ | एगतात'आ |
| देख | दिखा | दिखवा | ऐरा | एदत'आ | एदतत'आ |
| सी | सिला | सिलवा | ओज्ज | ओजत'आ | ओजतात'आ |
| निकल | निकाल | निकलवा | उरखा | ओथर'आ | ओथरत'आ |
| खा | खिला | खिलवा | ओना | ओनत'आ | ओनतात'आ |
| बन | बना | बनवा | कम'आ | कमत'आ | कमतत'आ |
| लेट | लिटा | लिटवा | चूता | कीद'आ | कीदत'आ |
| दे | दिला | दिलवा | चि'आ | चित'आ | चितात'आ |
| काट | कटा | कटवा | खंडा | खंडत'आ | खंडतात'आ |
| नाप | नपा | नपवा आदि | खो या | खोत'आ | खोचतत'आ |

### 10. संश्लेषणात्मक और विश्लेषणात्मक धातु

**क. संश्लेषणात्मक धातु :–** मूल धातु और साधित धातु संश्लेषणात्मक धातु के अन्तर्गत आते हैं।

**ख. विश्लेषणात्मक धातु–**इसमें दो या दो से ज्यादा घटक हो सकते हैं। यह धातु कर्मणि, पक्ष सम्बन्धी तथा संयुक्त नामिक हो सकती है।

(1) **कर्मणि धातु–** कर्मणि धातु द्वितीय सरल कृदन्त और 'जाना' सहायक क्रिया के मेल से बनी है।

(2) **पक्ष सम्बन्धी धातु–**पक्ष सम्बन्धी धातु रंजक क्रियाओं के साथ प्रथम तथा द्वितीय सरल कृदन्तों, प्रथम और द्वितीय सरल क्रिया-विशेषणात्मक कृदन्तों, क्रियार्थक नामों तथा स्वयं धातु के मेल से बनी है।

(3) **संयुक्त नामिक धातु–**संयुक्त नामिक धातु सहकारी क्रिया के धातु के साथ रूप-प्रक्रियात्मक दृष्टि से 'नष्ट' नाम के मेल से बनी है।

विश्लेषणात्मक धातु सम्मिश्रित हो सकती है यानी वह कर्मणि तथा पक्ष सम्बन्धी धातुओं के मेल से तथा पक्ष सम्बन्धी और नामिक धातुओं के मेल से बन सकती है। जैसे–

| **धातु** | **कर्मणि** | **पक्ष सम्बन्धी** | **संयुक्त नामिक** |
|---|---|---|---|
| कर्मणि | लिखा जा | लिखा जा सका | शुरू किया जा |
| पक्ष सम्बन्धी | लिखा जा चुक | लिखता जा | शुरू किया कर |
| संयुक्त नामिक | | शुरू किया जा | शुरू कर |

उपर्युक्त उदाहरणों के आधार पर और धातुओं को भी देखा जा सकता है। उदाहरणार्थ–

| **हिन्दी –** | **कर्मणि** | **पक्ष सम्बन्धी** | **संयुक्त नामिक** |
|---|---|---|---|
| | पढ़ा जा | पढ़ा जा सक | प्रारम्भ किया जा |
| | पढ़ा जा चुक | पढ़ता जा | प्रारम्भ किया कर |

| | | | |
|---|---|---|---|
| **कुड़ुख़ -** | बचआ ओंग | बचआ ओंगता | ओरे नना ओंग |
| | बचआ ख़च्च | बचनुम कला | ओरे नना ओंग |
| | ओरे नना ख़च्च | ओरे नन्ज | लिन्घ'आ ओरे नना |

इसी प्रकार उठ, चल, छोड़, निकल, रह, मार, बन, पा, रख, चाह, देख, पी, ले आदि क्रिया धातुओं के रूप विश्लेषणात्मक क्रिया धातु में बनाये जा सकते हैं।

'भेंट किया, धारण किये, आरम्भ की, आरम्भ की गयी, आरम्भ हुआ, याद आये, रवाना हुई, पैदा कर दी थी' आदि क्रियायें विश्लेषणात्मक क्रियायें हैं। ये सभी क्रियायें भूतकाल में हैं। 'क्रिया, किये, की, की गयी, हुआ, आये, हुई, कर-दी थी' का रूप वर्त्तमान काल में कर देने तथा

वर्तमान काल में परिणत हो गयी क्रियाओं के अन्त के 'ना' प्रत्यय को हटा देने से विश्लेषणात्मक धातु की प्राप्ति होगी जिनमें कुछ का रूप 'कर्मणि' कुछ का पक्ष सम्बन्धी और कुछ का 'संयुक्त नामिक' में होगा।

इसी प्रकार 'आरम्भ किया था, पैदा किये हैं, वयान कर दी, अस्वीकार किया था, मना करने पर भी, स्वीकार कर लिये जाने, शुरू होती है, घूम रही थी, आरम्भ होने के, अनुभव कर रहा था, स्मरण कर सकता है तथा वर्णन कर सकता है' आदि क्रियायें विश्लेषणात्मक क्रियायें हैं। इनके धातु रूप का पता ऊपर बताये गये तरीके से ही किया जा सकेगा।[17]

'होना' क्रिया से निष्पन्न 'है, हैं, हो, हूँ, था, थे और थी' तथा 'गा, गे, गी, येगा, येगी, येंगे' संश्लेषणात्मक क्रियायें हैं जिनकी एकमात्र धातु (होना से निष्पन्न) 'हो' है। ये सभी क्रियायें और धातुएँ संश्लेषणात्मक अप्राकारिक है।

'लिखना' क्रिया से निष्पन्न धातु 'लिख' से 'लिखता' संश्लेषणात्मक क्रिया है किन्तु इसकी धातु तो 'लिख' ही है। 'लिखा' क्रिया संश्लेषणात्मक पूर्ण है ओर यह भी 'लिख' धातु से ही निष्पन्न है।

'लिखंता है, लिखता था, लिखता होगा' विश्लेषणात्मक अपूर्ण है, 'लिखा है, लिखा था, लिखा होगा' विश्लेषणात्मक पूर्ण क्रिया है तथा 'लिख रहा है, लिख रहा था' तथा 'लिख रहा होगा' विश्लेषणात्मक संतत है किन्तु सभी की धातु 'लिख' ही है।

निम्नांकित चार्ट यप और काल के अन्तर्गत उपर्युक्त तथ्यों को स्पष्ट करते हैं।

### हिन्दी का चार्ट

| **रूप/काल** | **वर्तमान** | **भूत** | **भविष्यत** |
|---|---|---|---|
| संश्लेषणात्मक अप्राकारिक | है | था | लिखेगा[18] |
| संश्लेषणात्मक अपूर्ण | लिखता | लिखता | - |
| संश्लेषणात्मक पूर्ण | - | लिखा | - |
| विश्लेषणात्मक अपूर्ण | लिखता है | लिखता था | लिखता होगा |
| विश्लेषणात्मक पूर्ण | लिखा है | लिखा था | लिखा होगा |
| विश्लेषणात्मक संतत | लिख रहा है | लिख रहा था | लिख रहा होगा |

### कुँड़ुख :

| **रूप/काल** | **वर्तमान** | **भूत** | **भविष्यत** |
|---|---|---|---|
| संश्लेषणात्मक अप्राकारिक | र'ई | रहचा | र'ओ |
| संश्लेषणात्मक अपूर्ण | टूड़न | टूड़न | टूड़ोन |
| संश्लेषणात्मक पूर्ण | टूड़का रअस | टूड़का रहचस | टूड़का रअस होतन |

| | | | |
|---|---|---|---|
| विश्लेषणात्मक अपूर्ण | टूड़दस | टूड़ा लगियस | टूड़दस होतंग |
| विश्लेषणात्मक पूर्ण | टूड़का रअदस | टूड़का रहचस | टूड़कारअदस होतंग |
| विश्लेषणात्मक संतत | टूड़ा लगदस | टूड़ा लगियस | टूड़ा लगदस होतंग |

उपर्युक्त सारिणी में 'लिख' धातु का 'लिखा' रूप संश्लेषणात्मक है और शेष रूप विश्लेषणात्मक है। 'लिखा' संश्लेषणात्मक धातु का अप्राकारिक रूप है।

**11. मूल धातु :-** मूल क्रिया या कोशीय क्रिया के 'ना' प्रत्यय को हटा देने के बाद जो अंश बचा रहा जाता है, वह मूल धातु है। जैसे-

| | |
|---|---|
| कहना से कह | बअना ति ब'आ |
| देखना से देख | एरना ति एरा |
| गाना से गा | पांड़ना ति पाड़ा |
| लेना से ले | हो'अना ति हो'आ |
| बोना से बो | चांख़ना ति चांख़'आ |
| जागना से जाग | एजेरना ति एजर'आ |
| काटना से काट | खंडना ति खंडा |
| जीतना से जीत | जितना ति जित'आ |
| डूबना से डूब | मुलुख़ना ति मुलख़ा |
| सोना से सो | ख़ंदरना ति ख़ंदर'आ |
| खेलना से खेल | बेचना ति बे'चा |
| बोलना से बोल | कचनखरना ति कचनख़र'आ |
| बैठना से बैठ | ओक्कना ति ओक्का |
| खिलाना से खिला | ओनत'अना ति ओन्त'आ |
| बनाना से बना | कमना ति कम'आ |
| लगाना से लगा | सजना ति सज'आ |
| सुलाना से सुला आदि | ख़ंदरत'अना ति ख़ंदरत'आ अन्नेम |

**12. यौगिक धातु** –यौगिक धातु को जानने के लिए यौगिक क्रिया को जानना होगा। यौगिक क्रिया दो क्रियाओं का ऐसा निकट संयोग है जिसमें दोनों क्रियाओं का अपना कोशीय अर्थ होता है। पहली क्रिया धातु के रूप में होती है और दूसरी में पक्ष, काल तथा वृत्ति प्रत्यय लगते हैं। उदाहरण के लिए- 'वह किताब ले गया' वाक्य में 'ले जाना' एक यौगिक क्रिया है, लेकिन 'वह आ गया' वाक्य में 'आ जाना' संयुक्त क्रिया है, क्योंकि 'ले जाना' में 'लेना' और 'जाना' दोनों का कोशीय अर्थ सुरक्षित है।[19]

'ले जाना' द्विध्रुवीय (बाइपोलर) रचना है जिसमें दो स्वतंत्र कार्य-व्यापार शामिल है। इसके विपरीत संयुक्त क्रिया 'आ जाना' में केवल 'आना' का कोशीय अर्थ व्यक्त होता है, 'जाना' का नहीं।

कुछ यौगिक क्रियाओं को देखा जा सकता है -

| | |
|---|---|
| ले जाना ले | होअना/हो'अना काना |
| ले आना ले | ओन्दर'आ/ओन्दर'आ बरा |
| ले उड़ना | होच्च बोंगना |
| ले डूबना | होच्च मुलुख़ना |
| दे जाना | चि'अर काना |

| | |
|---|---|
| दे आना | चि'अर बरना |
| आ बैठना | बरच ओक्कना |
| आ घेरना | बरच छेकना |
| आ झपटना | बरच झपट'अना |
| आ पटकना | बरतेम पटक'अना |
| आ फँसना | बरच फंसरना |
| आ लेटना | बरच चूतना/बेड़ेरना |
| जा गिरना | खतरना काना |
| जा घुसना | कोरना काना |
| जा बसना | काल बसना |
| सोच निकालना | घोख ओथोरना |
| खींच निकालना | नतगर ओथोरना |
| ढूँढ़ निकालना | बेद्द ओथोरना |
| कर दिखाना | नंज एदना |
| लिख भेजना | टूड़ तयना |
| उखाड़ फेंकना | चड़'अर हेबेड़ना आदि |

यौगिक क्रियायें बाह्य संरचना में संयुक्त क्रियाओं के समान होती है। दोनों धातुओं से मिलकर बनती है। उदाहरणार्थ-

1. वह आ गया (आ + गया) - संयुक्त क्रिया
2. वह किताब ले गया (ले + गया) - यौगिक क्रिया

**संयुक्त क्रिया :** आ-जाना त्र (आना)

**यौगिक क्रिया :** ले-जाना त्र (लेना और जाना)

यौगिक क्रिया में दोनों क्रिया घटकों के बीच सामान्यतः संयोजक तत्व 'कर' की स्थिति निहित रहती है जो वाक्य की बाह्य संरचना में कभी व्यक्त रहती है और कभी अव्यक्त। जैसे- ले जाना (लेकर जाना), दे आना (देकर आना), कर दिखाना (करके दिखाना)। संयुक्त क्रियाओं में दो घटकों के बीच 'कर' का आरोप सम्भव नहीं। तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षित है।

1. लड़की चिट्ठी दे गयी।/देकर गई - यौगिक क्रिया
2. वह आ गया/आकर गया। - संयुक्त क्रिया।

अब हम धातुओं पर दृष्टिपात करें-

| हिन्दी | | कुड़ुख़ | |
|---|---|---|---|
| **धातु** | **क्रिया** | **धातु** | **क्रिया** |
| ले जा | ले जाना | ले हो'अ | हो'अना काना |
| ले आ | ले आना | ले ओन्दोर | ले ओन्दोरना |
| ले उड़ | ले उड़ना | हो'अ बोंग | हो'अर बोंगना |
| ले डूब | ले डूबना | हो'अ मुलुख़ | होच्च मुलुख़ना |
| दे जा | दे जाना | चि'अ कल | चि'अर कला |
| दे आ | दे आना | चि'अ बर | चि'अर बरना |

| धातु | क्रिया | धातु | क्रिया |
|---|---|---|---|
| आ बैठ | आ बैठना | वर ओक्क | बरच ओक्कना |
| आ घेर | आ घेरना | बर छेक | बरच छेकना |
| आ झपट | आ झपटना | बर झपट | बरच झपट'अना |
| आ टपक | आ टपकना | बर टोक | बरच टोकोरना |
| आ फँस | आ फँसना | बर फंस | बरच फंसरना |
| आ लेट | आ लेटना | बर बेड़र | बरच बेड़ेरना |
| जा गिर | जा गिरना | कल खतर | कालर खतरना |
| जा घुस | जा घुसना | कल कोर | काल कोरना |
| जा बस | जा बसना | कल बस | कालर बसना |
| सोच निकाल/सोच निकालना | | | |
| खींच निकाल | खींच निकालना | नतग ओथर | नतग ओथोरना |
| ढूँढ़ निकाल | ढूँढ़ निकालना | बेद्द ओथर | बेद्द ओथोरना |
| कर दिखा | कर दिखाना | नंज एद | नंज एदना |
| लिख भेज | लिख भेजना | टूड़ तइ | टूड़ तइयना |

## सन्दर्भ-सूची


1. हिन्दी में क्रिया : डॉ० ओ० गे० उलत्सिफेरोव; पृ०-58
2. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-122
3. कुड़ुख़ कत्था बिल्ली-टूडुस - पी०सी० बेकूस, पृ०-104
4. हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण : सूरजभान सिंह, साहित्य सहकार, दिल्ली 11००51, प्रथम संस्करण, पृष्ठ-48-49
5. हिन्दी में क्रिया : डॉ० ओ० गे० उलत्सिफेरोव; पृ०-56
6. हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना : डॉ० भोलानाथ तिवारी, साहित्य सहकार, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1986, पृ०-231
7. मानक हिन्दी का ऐतिहासिक व्याकरण : माताबदल जायसवाल, महामति प्रकाशन, इलाहाबाद प्रथम संस्करण, मई 1979
8. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-122
9. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-171-181
10. हिन्दी में क्रिया : डॉ० आ० गे० उलत्सिफेरोव; पृ०-56
11. वही, पृ०-56
12. वही, पृ०-57
13. वही, पृ०-59

14. वही, पृ०-112
15. हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण : सूरजभान सिंह, साहित्य सहकार, दिल्ली 110051, प्रथम संस्करण, पृष्ठ-79-81
16. हिन्दी में क्रिया : डॉ० ओ० गे० उलत्सिफेरोव; पृ०-56
17. हिन्दी में क्रिया : डॉ० ओ० गे० उलत्सिफेरोव; पृ०-55-54
18. हिन्दी में क्रिया : डॉ० ओ० गे० उलत्सिफेरोव; पृ०-154
19. हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण : सूरजभान सिंह, साहित्य सहकार, दिल्ली 110051, प्रथम संस्करण, पृष्ठ-68

## अध्याय : तीन

# सकर्मक, अकर्मक और द्विकर्मक क्रियाएँ

'सकर्मक क्रिया' उसे कहते हैं, जिसका कर्म हो या जिसके साथ कर्म की सम्भावना हो, अर्थात् जिस क्रिया के व्यापार का संचालन तो कर्त्ता से हो, पर जिसका फल या प्रभाव किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु अर्थात् कर्म पर पड़े। उदाहरणार्थ- श्याम आम खाता है। इस वाक्य में 'श्याम' कर्त्ता है, 'खाने' के साथ उसका कर्तृरूप से सम्बन्ध है। प्रश्न होता है, क्या खाता है? उत्तर है, 'आम'। इस तरह 'आम' का सीधा 'खाने' से सम्बन्ध है अतः, 'आम' कर्मकारक है। यहाँ श्याम के खाने का फल 'आम' पर अर्थात् कर्म पर पड़ता है। इसलिए, 'खाना' क्रिया सकर्मक है। कभी-कभी सकर्मक क्रिया का कर्म छिपा रहता है। जैसे- वह गाता है, वह पढ़ता है। यही 'गीत' और 'पुस्तक' जैसे कर्म छिपे हैं।[1]

अब हम उपर्युक्त उदाहरणों के परिप्रेक्ष्य में कुड़ुख़ के उदाहरणों को देखें :-

| **हिन्दी** | **कुड़ुख़** |
|---|---|
| श्याम आम खाता है। | श्यामस टटख़ा मोख़दस। |
| वह गाता है। | आस पाड़दस। |
| वह पढ़ता है। | आस बचदस। |

कर्मकर्त्ता की दृष्टि से क्रियाओं को दो वर्गों में बाँट सकते हैं -1. सकर्मक और 2. अकर्मक[2]

**सकर्मक क्रिया** : क्रिया-पदबन्ध के उस वर्ग को कहते हैं जिसमें उपवाक्य (कर्त्ता + कर्म + क्रिया) में क्रिया के स्थान पर कार्य करने की क्षमता हो। उदाहरणार्थ-

राम ने रोटी खाई है यह एक उपवाक्य है जिसे स्वरूप के आधार पर (अर्थात् कर्म की उपस्थिति के आधार पर) सकर्मक उपवाक्य कहेंगे। ऐसे उपवाक्य में जो क्रियायें आती है, उन्हें हम सकर्मक क्रिया या सकर्मक क्रिया पदबन्ध कहेंगे। कुड़ुख़ की सकर्मक क्रियाओं की यही स्थिति है। उदाहरण द्रष्टव्य है - रामस असमा मोक्का रअदस।

सकर्मक उपवाक्य के फिर से वर्ग किए जा सकते हैं-1. एक कर्मक और 2. द्विकर्मक[3]

ये दोनों संज्ञा पदबन्ध 'से-सहित' हो सकते हैं। उदाहरण :-

| | | संज्ञा पदबन्ध + से | संज्ञा पदबन्ध-से |
|---|---|---|---|
| | एक कर्मक | उसने शिक्षक से लड़के को पढ़वाया। | वह पुस्तक पढ़ता है। |
| सकर्मक | द्विकर्मक | उसने शिक्षक से लड़के को पुस्तक दिलवाई। | उसने लड़के को पुस्तक दी। |

उपर्युक्त उदाहरणों में 'पढ़वाई' और दिलवाई ऐसी क्रियायें हैं जिन्हें साधारणतः प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। प्रेरणार्थक क्रिया की सबसे बड़ी विशेषता है कि वह उपवाक्य स्तर पर कर्म की अपेक्षा करती है इस आधार पर उसे सकर्मक क्रिया का ही एक उपवर्ग माना जा सकता है। नीचे के उदाहरण परीक्षणीय है –

| | |
|---|---|
| राम ने रोटी खाई है। (सकर्मक सामान्य) | रामस असमा मोक्का रअदस। |
| राम लड़के को सुलाता है। (सकर्मक सामान्य) | रामस कुक्कोसिन कीददस। |
| राम माँ से लड़के को सुलवाता है। (सकर्मक प्रेरणार्थक) | रामस तंगियोति ख़द्दासिन ख़ँदरतअदस। |

स्पष्ट है कि हिन्दी और कुड़ुख़ दोनों में प्रेरणार्थक क्रियायें सकर्मक होती है। वाक्य में क्रिया का काम किसी कर्म पर पड़े, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।[4]

**2. 'अकर्मक' क्रिया–** जिन क्रियाओं का व्यापार और फल कर्त्ता पर हो, वे अकर्मक कहलाती है।[5]

अकर्मक क्रियाओं के 'कर्म' नहीं होते। क्रिया का व्यापार और फल दूसरे पर न पड़कर कर्त्ता पर पड़ता है। उदाहरणार्थ–

| | |
|---|---|
| श्याम सोता है। | श्यामस ख़ँदरदस। |

हिन्दी और कु० दोनों के दोनों उदाहरणों की क्रियायें क्रमशः 'सोना' और 'ख़ंदरना' क्रियायें अकर्मक है। श्याम कर्त्ता है, 'सोने' की क्रिया उसी के द्वारा पूरी होती है। अतः 'सोने' का फल भी उसी पर पड़ता है। इसलिए 'सोना' क्रिया अकर्मक है।

"वाक्य में क्रिया का काम किसी कर्म पर न पड़े उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं"[6]

अपने रूप प्रक्रियात्मक लक्षणों के अनुसार अकर्मक क्रियाओं में तथाकथित भाववाच्य क्रियायें आ जाती है, जिनकी धातु अन्त्यलुप्त प्रथम प्रेरणार्थक धातु के समाकार है।

कभी-कभी मूल क्रियाओं की सकर्मकता या अकर्मकता प्रयोग मात्र के आधार पर निश्चित की जाती है। क्योंकि एक ही क्रिया वाक्य विन्यासात्मक स्थान के आधार पर सकर्मक या अकर्मक हो सकती है। जैसे–

| | |
|---|---|
| 1. किसानों के बेटों ने जापानियों और नाजियों से युद्ध लड़ा था। | किसानर ही तंगदा बगर जपानी अरा नाजियर संगे हुही जुझुरका रहचर। |
| 2. दोनों अपने भाइयों से लड़ती थी। | एड़ो झन तंगददा बगर संगे बिच्छा लग्गा लगियर। |
| ऐंठना, उलटना, खेलना, सोना, घबराना ठगना पलटना, बदलना। | अंइठरना, ठकना, पलटरना, बदलरना। |
| भूलना, मसोसना, सहना आदि प्रचलित। | मोधोरना, खोबरारना। |

क्रियायें कड़कड़ाना घबराना, छनछनाना ठनठनाना आदि वाक्य विन्यासात्मक स्थान के आधार पर सकर्मक और अकर्मक दोनों होती है।

उल्लेखनीय है कि अधिकांश उपरोक्त क्रियायें मूल रूप से अकर्मक है। शब्दगत अर्थ के संकुचन से इनका प्रयोग सकर्मक क्रिया की तरह होने लगा।[7]

अधिकांश उपर्युक्त क्रियायें इने-गिने कर्मो से जुड़ा करती है। ये 'करना' क्रिया के समानार्थी व्यापार के सूचक के अर्थ में आती है। निम्न प्रकार की तुलना से तथ्य का स्पष्टीकरण हो जायेगा।

| **'करना' क्रिया** | **'करना' क्रिया** | **का** | **समानार्थी व्यापार** |
|---|---|---|---|
| युद्ध करना। | युद्ध लड़ना | हुही नन्ना, | हुही लग्गना। |
| नाच करना। | नाच नाचना | नलना एदना, | नलु नलना। |

इन उदाहरणों में 'लड़ना' क्रिया सकर्मक बन गयी है क्योंकि ये 'करना' क्रिया की समानार्थक है। ऐसे अकेले में 'लड़ना' क्रिया अकर्मक है। 'नाचना' क्रिया भी अकर्मक है। दोनों क्रियायें क्रमशः 'युद्ध और नाच' के साथ प्रयुक्त होकर सकर्मक बन गयी है क्योंकि इनका अर्थ संकुचन हुआ है अर्थात् 'लड़ना और नाचना' क्रियाओं की व्याप्ति घट गयी है।

'उठना' बनना खेलना, खिलना, लेटना, रोना, निकलना, सोना, छूटना, पढ़ना आदि क्रियाओं को जब साधित क्रिया का रूप दे दिया जाता है या प्रेरणार्थक रूप दे दिया जाता है, तो ये अकर्मक क्रियायें सकर्मक बन जाती है। जैसे–

| अकर्मक क्रियायें | साधित रूप | प्रेरणार्थक रूप | अकर्मक क्रयायें | साधित रूप | प्रेरणार्थक |
|---|---|---|---|---|---|
| उठना | उठाना | उठवाना | चो'अना | चो'दना | चोदत'अना |
| बनना | बनाना | बनवाना | कमरना | कमना | कमत'अना |
| छूटना | छोड़ना | छोड़वाना | अम्बरना | अम्बना | अम्बत'अना |

आदि क्रियायें।

अकर्मक क्रियायें कर्महीन क्रियायें हैं। मौलिक और साधित सकर्मक क्रियायें सबल नियंत्रण में नियम के रूप में केवल एक ही प्रधान कर्म अपना लेती है।[8]

**3. द्विकर्मक क्रियायें** – कुछ क्रियायें एक कर्मवाली और दो कर्मवाली होती है। जैसे–

राम ने रोटी खायी। — रामस असमा मोक्खस।

मैं लड़के को वेद पढ़ाता हूँ।[9] — एन कुक्कोसिन वेद बचत'अदन।

राम ने रोटी खायी – इस वाक्य में कर्म एक ही है, 'रोटी'। किन्तु 'मैं' लड़के को वेद पढ़ाता हूँ में दो कर्म है– 'लड़के को' और 'वेद'। इस प्रकार पढ़ाना क्रिया द्विकर्मक क्रिया है क्योंकि इसके दो कर्म हैं।

## सकर्मक, अकर्मक एवं द्विकर्मक क्रियाओं के उदाहरण

### सकर्मक क्रियायें

| हिन्दी | कुड़ुख़ | हिन्दी | कुड़ुख़[10] |
|---|---|---|---|
| जानना | अख़ना | पहनना | अत्तना |
| बिछाना | अट्टना | ढोलक घोरना | अड़ना |
| लड़ने को तैयार होना | बिच्छा लग्गागे एजना | छोड़ना | अम्बना |
| कोड़ना | अरख़ना | बजाना | अस्सना |
| टटोलना | आदना | कहना | आनना |
| सूचित करना | तेंगना | झगड़ा लगना | आना नखरना |
| फंदा लगाना | फंदा इचना | तीर चलाना | इंजना |
| रोपना | इदना | भूलना | इड़ना |
| दूसरे की नाक पोछना | ईझना | रखना | उइना |
| हल जोतना | उइना | उठाना | चो'दअना |
| उड़ाना | उढ़िय'अना | उसकाना | उसक'अना |
| छेद करना | उम्पना | पत्तियों को सुरकना | उर्रना |
| धान की बालों को सुरकना | उरना | दरवाजा में बेड़ा या सिटकिनी लगाना | ऊदना |

| हिन्दी | कुड़ुख़ | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| फूँकना | ऊरना | जगाना | एजना |
| कपड़ा फटाना | एटना | बुलाना | एड़ना |
| खोना | एवसना | झाड़ू करना | एर्रना |
| तोड़ना | एसना | कपड़ा बुनना | किचरी एस्सना |
| कपड़ा बुनवाना | किचरी एस्सत'अना | तोड़वाना | एसत'अना |
| सिंगार कर रूप देखना | ऐख़ एरना | ठंढा करना | एख़त'अना |
| लीपना | ए'गना | दिखाना | एदना |
| देखना | एरना | ऐंठाना | अंएठारना |
| सकना | ओंग्गना | सिलाई करना | ओज्जना |
| निकालना | ओथोरना | आग जलाना | ओदना |
| लाना | ओंदोरना | खाना खाना | मण्डी ओन्ना |
| पानी पीना | अम्म ओन्ना | भात खिलाना | ओनत'अना |
| कातना | ओ-जना | दबाना | कज्जना |
| फा॰ पजाना | उसंगी कज्जना | छूना | कप्पना |
| बनाना | कमना | पीसना | कसना |
| सख्त करना | कसना | तोड़ना | किच्चना |
| आग तेज करना | जोड़ किटना | लेटाना | कीदना |
| आग में झुरठना | भुरठ'अना | गर्म करना | कुड़त'अना |
| सिर पर ढोना | कुम्मना | साड़ी पहनना | कूरना |
| गाली देना | केबना | पौधे को सोहनी देना | कोड़ा चि'अना |
| मारना | पसना/को-ड़ना | काट देना | ख़च्चना |
| सख्त करना | खचना | भात पकाना | मण्डी खटना |
| परिश्रम करना | खटना | काटना | खंड्ना |
| ढाँपना | ढबना | भगाना | खेदना |
| गँवाना या बिताना | खेपना | उत्तेजित करना | उसक'अना |
| लगाना | ख़ोंसना | गढ़ा तथा चौड़ा करना | गड्डी अरा चकड़ नन्ना |
| तोड़ना या दाँत से काटना | पल्ल ती ख़च्चना | बाँटना | खट्टना |
| चोरी करना | ख़ड़ना | तेल लगाना | इसुंग ख़सना |
| पानी में माँज लगाना | अम्म नु मजना | घृणा करना | घिनारना |
| रखवाली करना | ख़ापना | खुजलाना | ख़ाँसना |
| गोदी करना | पाकना | खरीदना | ख़ेंदना |
| खोंचना या घुसाना | खोसना | किसी की प्रतीक्षा करना | होखना |
| जमा करना | ख़ोण्‍ना | पीठ दिखाना | ख़ोख़ना |
| फसल काटना | ख़ोयना | भात फेरना | ख़ोल्लना |
| जमा करना | ख़ोजना | गल्ला नापना | ख़ोयना |

| हिन्दी | कुड़ुख़ | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| गाड़ना | गड़ना | गिनती करना | गिनना |
| हटाना | गुछावअना | कुचलना | गेंजना |
| घेरा लगाना | घोरना | चख लेना | चख़ना |
| उखाड़ना | चड़ना | चिबाना | चबना |
| फाड़ना | चर्रना | चलाना | चलाव'अना |
| बोना | चाँख़ना | छाँटना | चाजना |
| बाँध के ऊपर से पानी का बहना | चांड़ना | आज्ञोल्लंघन करना | चाड़ना |
| पहचानना | चिन्हना | देना | चि'अना |
| दबा देना | चिपना | चूसना | चीपना |
| चुनना | पेसना | हेंगा मारना | चुगना |
| तीर गुलथा चलाना | चेंगना | ढोना | चेड़ना |
| भिंगाना | चंएदन | चूमना | चोंक्खना |
| तोड़ना (फल) | चोख़ना | उठाना | चोद'अना |
| छाँटना | छटना | झाड़ना | जव्वना |
| घात में रहना | जोहना | चाटना | टाटना |
| लिखना | टूड़ना | तेल लगाना | इसुंग नलबना |
| टोकना | टोकना | ठानना | ठन्नना |
| पता लगाना | ठोहना | अगुवाई करना | डुरियि'अना /कढ़ि'अना |
| भेजना | तइना | चाबुक या रस्सी से मारना | कोर्रा ति पसना |
| किनारे करना | ताड़ना | तागा तानना | मेर तागना |
| पेड़ काटना | मन्न खण्डना | खोलना | तिसिगना |
| एड़ी से रौंदना | तीरना | निशाना लगाना | तुकाब'अना |
| ढकेलना | तुक्कना | इच्छा लगना | तुक्कना |
| भकोसना | तुबना | भरे बोरे, टोकरी आदि को छेद करना, फाड़ना | तूरना |
| फोड़ा फोड़ना | तेखना | बताना | तेंगना |
| सिर पर बोझा उठाने में मदद करना | तेतना | साग, फूल तोड़ना | तोक्खना |
| फुनगी नोचना | तोक्खना | पैर से लात मारना | लथना |
| दाग देना | दगना | पकड़ना | धरना |
| खींचना | नतगना | करवाना | ननंत'अना |
| करना | ननना | नापना | जोखना |
| अशुभ कामना करना | नसना | हल बैल नाधना | नाड़ना |
| मधु छुड़ाना | तीनी रासी ओथरना | हिलाना | नुकना |

| हिन्दी | कुड़ुख़ | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| छिपाना | नुड़ना | हाथ अन्दर डालना | नूतना |
| माँगना | ने'अना | धोना | नोड़ना |
| शिकायत करना | पड़गना | पढ़ना | बचना |
| बढ़ाना | परद'अना | दाँत से काटना | परमना/पल्ल ति ख़च्चना |
| चक्की से दलिया बनाना | परमना | फाड़ना | पलकना |
| पलटाना | विड़िदना | मारना | लौ'अना |
| गोद में लेना . | पाकना | मार डालना | पिटना |
| तेल पेरना, रौंदना | पींख़ना | माँड़ पसाना | अमड़ी पीसना |
| बैल नाथना | पुंदना | भाँफना | पूख़ना |
| हल्की वस्तु को उठाना | पेसना | आज्ञा देना | पे-सना |
| नहीं सकना | पोलना | पालना | पो-सना |
| बोलना | ब'अना | पढ़ना | बचना |
| लूटना | बच्चना | अटाना | समत'अना |
| बदलना | बदल'अना | नहीं जानना | बलना |
| जलाना | बस्सना | कपड़ा ओढ़ाना | किचरी झपना |
| छानना | बारना | सख्त करना, जाँचना | कसना |
| गिराना[11] | बीजना/टिड़ना | फैलाना | बींड़ना |
| पकाना | वित'अना | बिक्री करना | बीसना |
| बुझना | बुझुरना | खोजना | बेद्दना |
| खेलाना | बेसत'अना | सकत करना | भिड़ाब'अना |
| अन्दर ले जाना | मंक्खना | माँजना | मंजना |
| मानना | पइत'अना | आदर करना | पइत्तारना |
| पूजा करना | पुजा नन्ना | तोपना | माड़ना |
| बन्द करना | मुच्चना | खत्म करना | मुंज्जना |
| सुनाना | मेन्नत'अना | चराना | मेनत'अना |
| सुनना | मेन्ना | घास चरना | घासी मेन्ना |
| रोटी पकाना | असमा मेक्खना | पत्ती में लपेटकर कुछ चीज पकाना | अतख़ा नु टिप'अर बित'अना |
| संग में मिलाना | मेसना | बुलाना | मेख़ना/एड़ना |
| सिर/कान फूल से सिंगारना | कुक्क/ख़ेबदा नु मेंझेरना | मिटाना | मेटना |
| तरकारो में किफायती करना | मेदना | खाना भात के सिवाय | मोख़ना |
| काटना | मोचना | भूलना | मोधोरना |
| रंगना | रंगना | रटना | रटना |
| प्रसन्न करना | रिझाब'अना | रेतना | रेतना |

| हिन्दी | कुड़ुख़ | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| पहचानना | लखना | लात मारना | लथना |
| मारना | लव'ओना | मजदूरी करना | लस्सना |
| तंग करना | खिजाव'अना | लगाना | लगाब'अना |
| जलाना | लघाब'अना | घास फूस, कीड़ों के बदन पर लगना | लाड़ना |
| हिसाव करना | गनना | फेंकना | लेभेड़ना |
| लगाना | सजना | फुर्ती करना | सराव'अना |
| तीता, मीठा, खट्टा, दुःख आनन्द महसूस करना | सारना | सेंकना | सेकना |
| सेटना | सेटना | भाला बर्छा आदि फेंकना | सेलना |
| सोचना | घोखना | रस्सी, तागा से विनना | सेरहूहना |
| निकट करना | हेद्दे नन्ना | सताना | ख़ाड़ना |
| फेंकना | हेवेड़ना | चलाना | एकत'अना |
| हँसाना | अलखत'अना | सुखाना | ख़यद'अना |
| खिलाना | तिंदना | पहनाना | अत्त'अना |
| सिखाना | सिखाव'अना/बचत 'अना | दिखना | एथेरना |
| टक्कर मारना | वजड़ा'अना | खोलना दरवाजा | तिसिगना |
| काटना | खंडना | वसाना (कोलोनी में)[13] | ओक्कत'अना/ वसाव'अना |
| भोंकना | भुकना | भेजना | तइना |
| गाड़ना | मांड़ना | लादना[14] | लदना |
| देखना | एरना | पीना | ओन्ना |
| खाना | मोख़ना | खेलना | बे-चना |
| बाँधना | हे'अना | तोड़ना | चोख़ना |
| बेचना | बीसना | बोलना | व'अना |
| वुलाना | मेख़ना | लिखना | टूड़ना |
| पढ़ना | बचना | सीखना | सिखिरना |
| छोड़ना | अम्बना | दिखाना | एदना |
| निकालना | ओथोरना | सिखाना | सिखाव'अना |
| उठाना | चो-दना | वनाना | कमना |
| पिलाना | ओन्त'अना | खिलाना | मोख़त'अना |
| सुलाना | ख़ंन्दरत'अना | छुड़ाना | अम्वत'अना |
| मरम्मत करना[15] | विगड़ारकन कमत 'अना | विश्वास करना | पइत्त'अना |

| हिन्दी | कुड़ुख़ | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| वात करना | कचनखरना | अधिकार करना | हथिय'अना/दवी |
| इरादा करना | ननना बेद्दना | ठीक करना | दव नन्ना |
| अदा करना | मुल्ली किरत'अना | मालूम करना | अख़आ बेद्दना |
| याद करना | याइद नन्ना | डाँट लगाना | केबेरना |
| फोन करना | फोन नन्ना | देख लेना | एर ख़च्चना |
| फेंक देना | हेवेड़ना चि'अना | पी जाना | ओंड ख़च्चना |
| खाना | मोख़ना | पहनना | अत्तना |
| पीना | ओन्ना | सुनना | मेन्ना |
| देखना | एरना | काटना | खण्डना |
| वनाना | कमना | बेचना | बीसना |
| पीटना | लव'ओना | पकाना | बित'अना |
| धोना | नोड़ना | खोलना | कोल्लना |
| खरीदना | ख़ेंदना | गाना | पाड़ना |
| भेजना | तइना | रखना | उयना |
| घुसाना | मंखना | डालना | तुन्दना/सजना |
| थोपना | थोपना | निकालना | ओथोरना |
| लेना | हो'अना | माँगना | ने'अना |
| छीन लेना | बच्च ख़च्चना | खरीद लेना | ख़ेंद ख़च्चना |
| ठग लेना | ठकच ख़च्चना | समझ लेना | अख़च लिंघना |
| शादी करना | बेंजेरना | भेंट करना | ख़खरना |
| परिचय करना | अक्ख़ नखरना | बहस करना | चेंचे चेबड़े नन्ना |
| झगड़ा करना | बिच्छा लग्गना | परामर्श करना | रयबड़ी नन्ना |
| बात करना | कचनखरना | सरोकार रखना | नलख़ उयना |
| प्यार करना | चोन्हा नन्ना | सहानुभूति रखना | कोड़े जिया उइना |
| ईर्ष्या करना | हिसगंहा मन्ना | दुहराना | दोहड़'अना |
| पूछना | मेन्ना | लकड़ी चीरना | कंक चीरना |
| पीटना | ल'अना | बुहारना | एर्रना |
| बात सुनना | कत्था मेन्ना | देखना | एरना |
| खुलना | तिसगिरना | पिघलना | पिघलारना |
| फूलना | फुलुरना | सूखना | ख़यना |
| वंद होना | बन्द मन्ना | टूट जाना | एसेरना काना |
| कट जाना समझना | मोचोरना | मानना | पइत्त'अना |
| पाना | ख़क्खना | बना देना | कमना चि'अना |
| घोषित करना | कत्था कोड़ना | सिद्ध करना | टिकाब'अना |
| धोना | नोड़ना | चढ़ना | अरगना |

| हिन्दी | कुड़ुख़ | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| हँसना | अलखना | जम्माई लेना | अंवल'अना |
| काँपना | असरना | खड़ा होना | इजना |
| रंजना | अंड़ना | पहुँचना | अंड़सना |
| वीज का पतला होना | आचना | नाक पोछना | ईझिरना |
| खाँसना | इंवखना | ऊवना | उच्छना |
| जीना | उज्जना | तड़पना | उफड़ारना |
| उपवास करना | उवुसना | पेशाव करना | उम्बुलना |
| निकलना | उरूख़ना | उड़ना | उढ़ियारना |
| मतवाला होना | उंख़ना | डंठ्ल से छाल निकल जाना | उर्रना |
| अंधेरा होना | ऊख़ना | जागना | एजेरना |
| फटना | एटेरना | उतरना | एत्तना |
| दिखाई देना | एथेरना | खो जाना | एबसरना काना |
| नहाना | एमना | पाखना करना | एरेख़ना |
| डरना | एलेचना | टूटना | एसेरना |
| चलना | एकना | ठंढा होना | एख़ना |
| क्षण भर आराम करना | ख़न्न् एख़ना | ऐंठाना आपसे | तंग ति अंएठारना |
| वैठना | ओक्कना | तैरना | ओगना |
| जलना | ओलना | गर्म लगना | अंवख़ना |
| दब जाना | कजरना | पार होना | कट्टना |
| बनना या श्रृंगार करना | सपड़ारना | छिपाना | नुड़ना |
| छुवाना | कप्पत'अना | जाना | काना |
| सड़ना | कित्तना | घूमना | किन्दरारना |
| लौटना | किर्रना | ठंढा लगना | कीरना |
| घूमना | कुद्दना | उगना | कुन्दना |
| जन्म लेना | कुन्दुरना | गर्म लगना | कुड़ना |
| ऊँघना | कूगना | कुचलाना | केचटारना |
| घुसना | कोरना | फलना | ख़ंजना |
| गिरना | ख़तरना | टूटना | ख़चरना |
| कटाना | मोचोरना | सूखना | ख़यना |
| क्रोधित होना | ख़िजरारना | क्रोधित होना | खिंसारना |
| थकना | ख़ड़दना | तीता होना | ख़ड़ख़ना |
| गड़ जाना | खुपनाजबरन | घुसना | वड़ियम कोरना |
| ख़ुश होना | खुसमारना | मरना | खे'अना |
| कमर झुकाना | ख़ोलख़रना | गड़वड़ाना | गड़बड़रना |
| चिल्लाना | गरजारना | हटना | गुछरना |

| हिन्दी | कुड़ुख़ | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| गंदा होना | गिजगिजरना | कम होना | घटरना |
| गंध देना | चँ'अना | गड़ जाना | जुबुख़ना |
| सुन्दर दिखाई देना | चेमचेमरना | कदम वढ़ाना | मुंध काना |
| रोना | चींख़ना | चूनना | चुरूख़ना |
| लेटना | चूतना | उठना | चो'अना |
| किनारे होना | चोक्खे मन्ना | छोटे से आगे जन्मना | चोंख़ना |
| किसी को साथ में लेना | नेक'आ नुम संगे होअना | फूटना | चोड़ना |
| पकने पर होना | गदरारना | टटाना | टटना |
| वाल का खड़ा होना | चुट्टी इजना | डूवने पर होना | डव डुवुरना |
| सिर झुकाना | कुक्कन गड़ना | लड़ने को तैयार होना | तमतमरना |
| होना, है | तइलना | मीठा लगना | तीनना |
| पीछे पड़ना | कुदाब'अना | थूकना | तुण्पना |
| जिद्द करना | जिदहा नन्ना | नाच डेग करना | नलना-तोकना |
| नाचना | नलना | हिलना | नुकुरना |
| छिपना | नूख़ुरना | हलका होना | नेव्बना |
| धोवाना | नोढ़ोरना | फल का पकना | पानना |
| गंदी हवा छोड़ना | पीतना | पानी वरसना | पुंईना |
| सूर्यास्त होना | पुत्तना | फूल जाना | पूख़ना |
| पानी पट जाना | पटरना | अच्छा मानना या खुश होना | पइत्तरना |
| बढ़ना | परदना | गीत गाना | पाड़ना |
| हाथ में फफोला होना | पोक्खना | बचना | बछरना |
| पानी का अटाना | अम्म वत्तना | वस जाना | वसरना |
| जल जाना | ओलना काना | आना | वरना |
| कपड़ा ओढ़ना | किचरी झपरना | फजर होना | विज्जना |
| चमकना | विलिचना | धूप होना | विड़ना |
| रहना | बे'एना | पकना आग से | चिच्च ति वि'इना |
| फैलना | बीड़रना | काँपना | वुदुरना |
| भागना | वोंगना | सख्त होना | भिड़ना |
| मैला होना | मड़ख़ना | थमना | मड़ना |
| होना | मनना | बादल गरजना | मुर्रना |
| डूवना | मुलुख़ना | चुप होना | चुपे मन्ना |
| रहना | र'अना | रेंकना | रेकना |
| लड़ना | जूझना | निशाने पर लगना | तिगना |
| जलना | लघरना | लज्जित होना | लजरना |

| हिन्दी | कुड़ुख़ | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| लटकना | लटख़ना | लथाना | लथरना |
| सटना | सटरना | जल्दी करना | सरना |
| बजना | सड्डना | शोभना | सोभना |
| होना | हिकना | न होना | मइलना |
| सोना | ख़न्दरना | खुजलाना | ख़ांसरना |
| भरना | निन्दना | ललचाना | लुभी नन्ना/लोभरना |
| घबराना | एलचा उरूखना | लजाना | लजरना |
| उठना | चोअना | बनना | कमरना |
| लिखना | टूड़ना | लेटना | बेड़ेरना |
| रोना | चींख़ना | निकलना | उरूखना |
| छूटना | अम्बरना | जागना | एजेरना |
| डूबना | मुनुख़ना | भींगना | चंयना |
| लेटना | बेड़ेरना | गिरना | खतरना |
| चलना | का-ना | हँसना | अलखना |
| सूखना | ख़यना | आना | बरना |
| उड़ना | उढ़ियरना | जागना | एजेरना |
| बैठना | ओक्कना | दौड़ना | बोंगना |
| डरना | एलेचना | फिसलना | नुरूदना |
| रवाना होना | चइल काना | हँसना | अलखना |
| काँपना | असरना | छींकना | तुम्मना |
| फटना | चर्रना | झुकना | नेवख़रना |
| ठहरना | मड़ना | तैरना | ओगना |
| निकलना | उरूखना | होना | मन्ना |
| बारिश होना | चेंप पुंइना | बर्फ पड़ना | आली खतरना |
| गर्मी पड़ना | औंख़ना बेड़ा | सर्दी होना | पंइया उल्ला |
| पहुँचना | अड़सना | भागना | बोंगना |
| रोना | चींख़ना | उतरना | एत्तना |
| निकालना | ओथोरना | मरना | खे'अना |
| चल देना | केर्र बि'अना | मुस्कराना | मुसमुसरना |
| सोना | ख़ंदरना | बैठना | ओक्कना |
| उठना | चो'अना | उड़ना | उढ़ियारना |
| निकलना | उरखना | काटना | खंडना |
| बिकना | बीसिरना | बनना | कमरना |
| पिटना | ल'अना | पकना | पानना |
| धुलना | नोड़ोरना | खुलना | तिसगरना |
| घूमना | कुद्दना | सूखना | ख़यना |
| रूकना | इजना | | |

## द्विकर्मक क्रियायें

| | |
|---|---|
| 1. सेठजी ने **नौकर को पैसे दिए।** | सेठस जोंख़स गे ढिबा चिच्चस। |
| 2. उसने **मुझे यह मकान बेचा।** | आस एंग्गागे ई एड़पन बीसियस। |
| 3. उन्होंने **मंत्री को एक टी-सेट भेंट/प्रदान किया।** | आस मंत्रीस गे ओन्टा टी-सेट चुमान चिच्चस। |
| 4. **मैंने पिताजी को चिट्ठी लिखी।** | एन एम्बस गे चिट्ठी टूड़कन। |
| 5. मोहन ने **राधा को सामान भेजा।** | मोहनस राधागे आलो तइय्यस। |
| 6. अशोक मुझे **सभी कागजात लौटा/सौंप देगा।** | अशोकस एंगागे हुरमी कगदन किरतोस चि'ओस। |
| 7. माँ ने **सभी को खाना परोस दिया।** | अयंग होरमरगे मंडी खुल्लिया चिच्चा। |
| 8. अध्यापक **छात्रों को गणित पढ़ाते हैं।** | मास्टरस बचउरिन गनयां बचत'अदस। |
| 9. माताजी ने **नई बहू को सभी बातें समझा दी है।** | अयंग पुना ख़ेड़ोन जमा कत्थन बुझाबाचकी र'ई। |
| 10. **मैं सिल्वी को हिन्दी सिखा रहा हूँ।** | एन सिल्वीन हिन्दी सिखाब'आ लगदन। |
| 11. गायिका ने **श्रोताओं को एक नया गाना सुनाया।** | पाड़ु पेल्लोद मिनुरगे पुना डंडी पाड़िया। |
| 12. **मैंने बच्चों को कपड़े दिए।** | एन ख़द्दरगे पुना किचरी चिच्चकन। |

उपर्युक्त बारहों वाक्यों में क्रमशः 'दिए, बेचा, भेंट/प्रदान किया, लिखी, भेजा, लौटा/सौंप देगा, परोस दिया, पढ़ाते हैं, समझा दी हैं, सिखा रहा हूँ, सुनाया, दिये और पहनाये' द्विकर्मक क्रियायें हैं। इन सभी क्रियाओं के वाक्य में दो-दो कर्म हैं। यथा-

**वाक्य संख्या व 'कर्म'**

| | | |
|---|---|---|
| 1. नौकर, पैसे। | 2. मुझे, मकान। | 3. मंत्री, टी-सेट। |
| 4. पिताजी, चिट्ठी। | 5. राधा, सामान। | 6. मुझे, कागजात। |
| 7. सभी को, खाना। | 8. छात्रों, गणित। | 9. नई बहू, सभी बातें। |
| 10. सिल्वी, हिन्दी। | 11. श्रोताओं, गाना। | 12. बच्चों, कपड़े। |

द्विकर्मक क्रियायें सकर्मक क्रियायें हैं, अकर्मक नहीं। आंतरिक संरचना के स्तर पर प्रेरणार्थक क्रियायें, स्थानवाची सकर्मक क्रियायें, संप्रदान तथा लाभग्राही क्रियायें कुछ भ्रमात्मक स्थितियाँ पैदा करती है। यथा-

| | |
|---|---|
| 1. मैंने बच्चों को कपड़े दिए। | एन ख़द्दरगे किचरी चिच्चकन। |
| 2. मैंने बच्चों को कपड़े पहनाए। | एन ख़द्दारिन किचरी अत्ताचकन। |

वाक्य संख्या 1 में 'दिए' क्रिया 'द्विकर्मक' क्रिया है किन्तु वाक्य संख्या 2 में 'पहनाए' क्रिया 'प्रेरणार्थक' क्रिया है।

| | |
|---|---|
| 3. मोहन ने राधा को सामान भेजा। | मोहनस राधागे आलो तइय्यस। |
| 4. मोहन ने राधा को बाजार भेजा। | मोहनस राधन पेठ तइय्यस। |

वाक्य संख्या 3 में 'भेजा' क्रिया के दो कर्म-राधा और सामान-होने के कारण 'द्विकर्मक' है किन्तु वाक्य संख्या 4 में 'भेजा' क्रिया स्थानवाची सकर्मक क्रिया है। वाक्य संख्या 3 में 'सामान' कर्म है किन्तु वाक्य संख्या 4 में 'बाजार' शब्द अव्यय है अतः 'भेजा' क्रिया का वह अव्यय है, कर्म नहीं है अर्थात 'बाजार' शब्द स्थानवाची अव्यय 'क्रियाविशेषण' है।

5. सेठजी ने नौकर को पैसे दिए।          सेठस जोंख़सगे ढिबा चिच्चस।

6. मैंने अपनी पत्नी को एक घड़ी खरीदी। एन एंग ख़इगे ओन्टा घड़ी ख़िन्दकन।

वाक्य 5 से सम्प्रदान 'नौकर को' को हटा देने पर वाक्य अपूर्ण हो जाता है और सम्प्रदान 'प्राप्तकर्ता' की आकांक्षा वनी रहती है, लेकिन वाक्य संख्या 6 से 'अपनी पत्नी' को को हटा देने पर भी 'मैंने एक घड़ी खरीदी' वाक्य अपने में पूर्ण है। 'अपनी पत्नी' को लाभग्राही है, सम्प्रदान नहीं। लाभग्राही के वाद 'को' के स्थान पर 'के लिए' का प्रयोग संभव है, सम्प्रदान के बाद सामान्यतः नहीं। जैसे- 'मैंने अपनी पत्नी के लिए एक घड़ी खरीदी।'

## सन्दर्भ-सूची


1. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना-डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण पृ०-124
2. हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना-डॉ० भोलानाथ तिवारी, साहित्य सहकार, दिल्ली 11००51 (प्रथम संस्करण-1986 पृ०-236
3. वही पृ०-236
4. कुड़ुख़ कत्था बिल्ली-टूडुस-पी०सी० बेकूस, प्रकाशक सत्य भारती, पोस्ट बॉक्स-2, राँची-834००1 द्वितीय संस्करण 1983, पृ०-1०3
5. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना-डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण पृ०-124
6. कुड़ुख़ कत्था बिल्ली-टूडुंस-पी०सी० वेकूस, प्रकाशक सत्य भारती, पोस्ट बॉक्स-2, राँची-834००1 द्वितीय संस्करण 1983, पृ०-103
7. 'हिन्दी में क्रिया'-डॉ० ओ० गे० उलत्सिफेरोव; विषय प्रवेश- पृ०-43
8. वही प०-46
9. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण पृ०-125
10. कुड़ुख़ कत्था बिल्ली-टूडुस-पी०सी० बेकूस प्रकाशक सत्य भारती, पोस्ट वॉक्स-2, राँची-834००1 द्वितीय संस्करण 1983, पृ०-115
11. हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना- डॉ० भोलानाथ तिवारी, साहित्य सहकार, दिल्ली 11००51 (प्रथम संस्करण-1986 पृ०-276
12. वही पृ०-330
13. वही पृ०-333
14. 'हिन्दी में क्रिया'-डॉ० ओ० गे० उलत्सिफेरोव; पृ०-45
15. हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण : सूरजभान सिंह, साहित्य सहकार, दिल्ली 11०51, प्रथम संस्करण, पृष्ठ-59-6०, 62, 79, 8०, 239, 243, 245, 247, 251

15\. कुड़ुख़ कत्था बिल्ली-टूडुस - पी०सी० बेकूस, प्रकाशक सत्य भारती, पोस्ट बॉक्स-2, राँची-834००1 द्वितीय संस्करण 1983, पृ०-115


❖❖

## अध्याय : चार

# दोनों भाषाओं की क्रियाओं की रूपगत और अर्थगत विशेषताएँ

भाषा का एक प्रवाह होता है "हर भाषा के वोलने और लिखने का अपना एक अलग और निराला ढंग होता है। कुछ वातें ऐसी हैं, जो हम हिन्दी में एक ढंग से कहते हैं। उर्दूवाले कुछ दूसरे ढंग से और अंग्रेजीवाले किसी तीसरे ढंग से। यही वात बँगला, मराठी, गुजराती इत्यादि भाषाओं में किसी और ढंग से कही जाती है। भाषा का यह ढंग ही उसका रूप शुद्ध रखता है और यही उसके अच्छे होने की सबसे अच्छी पहचान या कसौटी है।"[1]

"संसार की ऐसी कोई भी भाषा नहीं है, जिसकी अपनी कोई विशेषता न हो। उसकी यह विशेषता ही अन्य भाषा-भाषियों के लिए उलझन वन जाती है।"[2]

भाषा के अपने गुण या स्वाभाव को भाषा की प्रकृति कहते हैं। हर भाषा की अपनी प्रकृति, आन्तरिक गुण-अवगुण होते हैं। जीवन्त भाषा 'बहता नीर' की तरह सदा प्रवाहित होती रहती है। व्याकरण से परिष्कृत होने पर भाषा परिनिष्ठित हो जाती है।

हिन्दी और **कुड़ुख़** - दोनों- की अपनी-अपनी प्रकृति है। दोनों की प्रकृति में कहीं साम्य तो कहीं कुछ वैषम्य दृष्टिगोचर होता है। इस साम्य-वैषम्य का मूल आधार व्याकरणिक कोटियों के अन्तर्गत क्रिया है। हिन्दी का क्रिया प्रकरण संस्कृत के क्रिया-प्रकरण का बहुत अंश तक अनुगामी है। हालांकि हिन्दी और **कुड़ुख़** की वंशावली अलग-अलग है किन्तु क्रिया के मामले में दोनों भाषाओं में काफी साम्य है।

संस्कृत व्याकरण में क्रिया के दो प्रकार हैं- 1. तिडन्त और 2. कृदन्त। तिडन्त क्रिया में कर्त्ता या कर्म के अनुसार पुलिंग-स्त्रीलिंग के रूप भेद नहीं होते, केवल कर्त्ता या कर्म के अनुसार पुरूष बदलते हैं। यथा-

| हिन्दी | | कुड़ुख़ | |
|---|---|---|---|
| **एक वचन** | **बहु वचन** | **एक वचन** | **बहु वचन** |
| राम चतुर है। | लड़के अच्छे हैं। | रामस धेजगर र'अस। | कुक्कोर दव र'अनर। |
| सीता चतुर है। | लड़कियाँ अच्छी हैं। | सीता धेजगर रई। | कुकेर दव र'अनर। |

यहाँ 'राम है' और 'सीता है' में तिडन्त क्रिया में पुलिंग स्त्रीलिंग का कोई भेद नहीं है। हाँ एकवचन कर्त्ता के साथ वह एकवचन 'है' के रूप में है, बहुवचन में उसका बहुवचन रूप 'हैं' हो गया। कुड़ुख़ में भी यही स्थिति है। पुरूषभेद से भी तिडन्त क्रिया में रूपभेद होता है। यथा-

मैं ऐसा नहीं हूँ। तू ऐसा नहीं है। एन एन्ने मलिकन। नीन एन्ने मलिकय।

कृदन्त क्रिया में कर्त्ता के अनुसार पुलिंग-स्त्रीलिंग के भेद से रूपभेद रहता है, किन्तु 'पुरूष-भेद' का इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। जैसे-

| **संस्कृत/** | **हिन्दी** | **कुड़ुख़** |
|---|---|---|
| रामः गतः- | राम गया। | रामस केरस। |
| सीता गता- | सीता गयी। | सीतद केरा। |

यहाँ कर्त्तृवाच्य कृदन्त क्रिया है- 'त' का हिन्दी में 'य' हो गया है और उसे फिर पुलिंग व्यंजक प्रत्यय- रूप 'गया' या स्त्रीलिंग व्यंजक प्रत्यय रूप 'गयी' कर दिया गया।[3]

**हिन्दी और कुड़ुख़**-दोनों की अधिकांश क्रियायें कृदन्त है। अतः ये भाषाएँ सरल है अर्थात् इनकी सरलता का कारण इनकी कृदन्त क्रियायें ही हैं।

व्याकरणिक कोटियों के अन्तर्गत क्रिया की व्यापकता और इसकी शक्ति सर्वाधिक है। क्रिया की शक्ति सम्पन्नता का कारण है इसकी रूपगत और अर्थगत विशेषता। क्रिया लिंग, वचन, पुरूष, काल, वाच्य विधि और अन्य कोटियों के साथ अपने रूपों को वदलती चलती है तथा अपने प्रकार्य के बूते अपने अर्थ को भी बदलती चलती है। क्रिया में वदलाव का यह जो लचीलापन है, वह इसे बहुरूपी बना देता है। क्रिया की इस बहुरूपता को ही इसकी विशेषता मानी जायेगी। रूपपर आधारित क्रिय. की दिशेषता को रूपगत विशेषता तथा क्रिया के अर्थ वैभिन्य पर आधारित विशेषता इसकी अर्थगत विशेषता है। हम विस्तार से इसकी विवेचना करेंगे।

### क्रिया की रूपगत विशेषता

क्रिया की रूपगत विशेषता सर्वाधिक तौर पर काल को प्रभावित करती है या काल से प्रभावित होती है अर्थात् क्रिया के काल (अर्जआना गहि बेड़ा) इसके बहुआयामी रूप को प्रदर्शित करते हैं। क्रिया के तीन काल हैं-1. वर्त्तमान काल (रअना वेड़ा) 2. भूतकाल (केरका बेड़ा) 3. भविष्यत् काल (बरना बेड़ा)

**1. वर्त्तमान कालं** - इसके निम्नांकित भेद हैं-

| | | |
|---|---|---|
| 1. सामान्य वर्त्तमान काल | - | सोझ र'अना बेड़ा |
| 2. तात्कालिक वर्त्तमान काल | - | अखनेम र'अना बेड़ा |
| 3. पूर्ण वर्त्तमान काल | - | पुरकस र'अना बेड़ा |
| 4. सामान्य अपूर्ण वर्त्तमान काल | - | सोझ आखनेम र'अना वेड़ा[4] |
| 5. संदिग्ध वर्त्तमान | | होतंग[5] |
| 6. सम्भाव्य वर्त्तमान | | होतई |

**वाक्यात्मक उदाहरण :**

| | |
|---|---|
| 1. हमलोग भात खाते हैं। | एम मण्डी ओन्दम। |
| 2. हमलोग भात खा रहे हैं। | एम मण्डी ओना लगदम। |
| 3. हमलोगों ने भात खाया है। | एम मण्डी ओण्डका र'अदम। |
| 4. हमलोग भात खाते ही रहते हैं। | एम मण्डी ओनत र'अदम। |
| 5. राम भात खाता होगा। | रामस मण्डी ओन्दस होतै। |
| 6. शायद! वह आया है। | मना उंगी! आस बरचका र'अदस। |

**2. भूतकाल 'केरका बेड़ा''** - भूतकाल के निम्नांकित भेद हैं :-

| | |
|---|---|
| 1. सामान्य भूत काल | 1. सोझ केरका वेड़ा |

| | |
|---|---|
| हमलोगों ने भात खाया। | एम मण्डी ओण्डकम। |
| 2. अपूर्ण भूतकाल | 2. काला-त-र'अना केरका बेड़ा |
| हमलोग भात खा रहे थे। | एम मण्डी ओना लइक्कम। |
| हमलोग भात खाते रहे थे। | एम मण्डी ओनत रहचकम। |
| 3. पूर्ण भूतकाल | 3. केर्र ख़इचका केरका बेड़ा |
| हमलोगों ने भात खाया था। | एम मण्डी ओण्डका रहचकम। |
| 4. आसन्न भूतकाल | 4. ........ |
| मैंने भात खाया है। | एन मण्डी ओण्डका र'अदन। |
| 5. संदिग्ध भूतकाल[6] | 5. ...... |
| तुमने भात खाया होगा। | नीन मण्डी ओण्डका र'अदय होतै। |
| 6. हेतु-हेतु मद्भूतकाल | 6. मनहे केरका बेड़ा |
| 'अगर' हमलोग भात खाते/खाये होते। | एम मण्डी ओनोम पहें (बेड़ा केरा) |

**3. भविष्यत् काल (बरना बेड़ा) – इसके निम्नांकित भेद हैं–**

| | |
|---|---|
| 1. सामान्य भविष्यत् | 1. सोझ बरना बेड़ा |
| हमलोग भात खायेंगे। | एम मण्डी ओनोम। |
| 2. तात्कालिक या अपूर्ण भविष्यत्[7] | 2. बरअत र'अना बरना बेड़ा |
| हमलोग भात खाते रहेंगे। | एम मण्डी ओनत र'ओम। |
| हमलोग भात खाने में लगे रहेंगे। | एम मण्डी ओना लइक्का र'ओम। |
| 3. पूर्ण भविष्यत् | 3. पूरकस बरना बेड़ा |
| हमलोग भात खाये हुए रहेंगे। | एम मण्डी ओण्डका र'ओम्। |
| 4. सम्भाव्य भविष्यत् | 4. मना उड़ु बरना बेड़ा |
| ऐसा हो कि वे भात खाएँ। | आर मण्डी ओ'नर नेकआ। |
| 5. हेतु-हेतु मद भविष्यत्[8] | 5. मन्ना होले र'अना बेड़ा |
| वह आये तो मैं जाऊँ। | आस बरना होले एन कौन। |
| वह कमाये तो खाय। | आस अरजओस होले ओनोस। |

काल के संदर्भ में प्रस्तुत उपर्युक्त तथ्यों और विवरणों से स्पष्ट है कि क्रिया के रूप भिन्न-भिन्न हैं तथा भावों और विचारों की अभिव्यक्ति में उनका योगदान व्याकरण की अन्य कोटियों से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। क्रिया का यह रूप बदलना उसकी रूपगत विशिष्टता है और यही उसकी (क्रिया की) शक्ति है।

अब हम विधिक्रिया के काल के आलोक में क्रिया की रूपगत विशेषता पर थोड़ी दृष्टि डालें।

विधिक्रिया के काल भविष्यत काल के ही अंग समझे जाते हैं क्योंकि क्रिया के होने का काम भविष्य में होता है। जिससे आज्ञा देने या अर्जी करने का भाव पाया जाये, उसे विधिक्रिया कहते हैं।[9] जैसे-

| | | |
|---|---|---|
| जाना, जाइयेगा, जाइयो, | - | कालके। |
| आना, आइयेगा, आइयो, | - | बरके। |
| रहना, रहियेगा, रहियो | - | र'अके। |
| जाओ, जाइये, जायें, | - | कला (काला)। |
| आओ, आइयो, आयें (आयं) | - | बरा (बर'आ)। |
| रहो, रहियो, रहें | - | र'आ |

| | | |
|---|---|---|
| जाओ, जाइये, जायें | - | कला/कलय (किसी से किसी के द्वारा) |
| आओ, आइये, आयें, | - | बरा/वरय (एक स्त्री) |
| रहो, रहिये, रहें | - | र'अय (को कहने में) |
| जाओ, जाइये | - | कले (किसी स्त्री द्वारा) |
| आओ, आइये | - | बरे (एक से अधिक) |
| रहो, रहिये | - | र'ए, र'अय (स्त्रियों को कहने में)। |

उपर्युक्त उल्लेख से दोनों भाषाओं- हिन्दी और कुड़ुख़ क्रियाओं की रूपगत विशेषता और वैचित्र्य विधि क्रिया के काल के संदर्भ में स्पष्ट है। जब पुरूष किसी स्त्री से 'एक स्त्री' से कई स्त्रियों से कहे तो क्रिया का रूप कुछ होता है और जब स्त्री द्वारा स्त्री और कई स्त्रियों से कहा जाय, तो क्रिया का रूप कुछ और ही हो जाता है। इस मामले में कुड़ुख़ की अभिव्यक्ति हिन्दी की अभिव्यक्ति की अपेक्षा अधिक धनी प्रतीत होती है।

अब हम तीनों कालों के अलग-अलग भेदों के अन्तर्गत क्रिया के बहुआयामी रूपों एवं उनकी रूपगत विशेषताओं का लिंग, वचन, पुरूष और काल के परिप्रेक्ष्य में अवलोकन करें।

## 1. वर्त्तमान काल : क्रियाओं के व्यापार की निरन्तरता

### 1. सामान्य वर्त्तमान

क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया का वर्त्तमान काल में होना पाया जाय, 'सामान्य वर्त्तमान' कहलाता है।[10] जिससे वर्तमान समय में क्रिया का साधारण तौर पर होना पाया जाय।[11]

**पुरूष-पुरूष या पुरूष-स्त्री के बीच बातचीत में।**

**एकवचन**

| पुरूष | | हिन्दी | | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | मैं आता हूँ | पु० | एन बरदन। |
| | स्त्री० | मैं आती हूँ। | स्त्री० | एन बर'एन। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तू आता है। | पु० | नीन बरदय। |
| | स्त्री० | तू आती है। | स्त्री० | नीन बरदिन। |
| अन्य पुरूष | पु० | वह आता है। | पु० | आस बरदस। |
| | स्त्री० | वह आती है। | स्त्री० | आद बर'ई। |

**बहुवचन**

| पुरूष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | हमलोग आते हैं। | एम बरदम। |
| | स्त्री० | हमलोग आती हैं। | एम वर'एम। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तुमलोग आते हो। | नीम बरदर। |
| | स्त्री० | तुमलोग आती हो। | नीम बरदय। |
| अन्य पुरूष | पु० | वे लोग आते हैं। | आर बरनर। |
| | स्त्री० | वे लोग आती हैं। | आर बरनय। |

**स्त्रियों के बीच की बात-चीत में-**

**एक वचन**

| **पुरूष** | | **हिन्दी** | **कुड़ुख़** |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | मैं आती हूँ | एन बर'एन। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | तू आती है। | नीन वरदिन। |
| अन्य पुरूष | स्त्री० | वह आती है। | आद बर'ई। |

**बहुवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | हमलोग आती हैं। | एम वर'एम। |
| | | हमलोग आती हैं। | नाम बरदत। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | तुमलोग आती हो। | नीम बरदय। |
| अन्य पुरूष | स्त्री० | वे आते हैं। | आर (अवड़य) बरनय। |
| | स्त्री० | वे आती हैं। | आर वरनय। |
| | प्रा० | वे आती (आते) हैं। | अबड़य वरनय। |

**2. तात्कालिक वर्तमान**

तात्कालिक वर्तमान वह है जिससे क्रिया का तत्काल होना पाया जाय।[12] इससे यह पता चलता है कि क्रिया वर्तमान काल में हो रही है।[13] यथा-

| | |
|---|---|
| मैं पानी पी रहा हूँ। | एन अम्म ओना लगदन। |
| तू पानी पी रहा है। | नीन अम्म ओना लगदय। |
| वह पानी पी रहा है। | आस अम्म ओना लगदस। |
| वह पानी पी रही है। | आद अम्म ओना लगी। |

तात्कालिक वर्तमान काल के तीनों पुरूषों में 'बरना' क्रिया की रूपावली प्रस्तुत है।

**पुरूष-पुरूष या स्त्री-पुरूष की बातचीत में -**

**एक वचन**

| **पुरूष** | | **हिन्दी** | **कुड़ुख़** |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | मैं आ रहा हूँ। | एन वर'आ लगदन। |
| | | मैं आ रही हूँ। | एन वर'आ लगेन। |
| मध्यम पुरूष | | तू आ रहा है। | नीन बर'आ लगदय। |
| | | तू आ रही है। | नीन वर'आ लगदिन। |
| अन्य पुरूष | पु० | वह आ रहा है। | आस बर'आ लगदस। |
| | | वह आ रही है। | आद बर'आ लगी। |
| | | वह आ रहा/रही है। | आस/आद वर'आ लगदस/लगी। |

**बहुवचन**

| **पुरूष** | | **हिन्दी** | **कुड़ुख़** |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | हमलोग आ रहे हैं। | एम बर'आ लगदम। |
| | | हमलोग आ रही हैं। | एम वर'आ लगेम। |
| (वक्ता-श्रोता सम्मिलित) | | हमलोग आ रहे हैं। | एम वर'आ लगदम। |

| | | |
|---|---|---|
| मध्यम पुरूष | तुम लोग आ रहे हो। | नीम बर'आ लगदर। |
| | तुम लोग आ रही हो। | नीम बर'आ लगदय। |
| अन्य पुरूष | वे आ रहे हैं। | आर बर'आ लगनर। |
| | वे आ रही हैं। | आर बर'आ लगनय। |

**स्त्रियों की बातचीत में**

**एक वचन**

| **पुरूष** | **हिन्दी** | **कुड़ुख़** |
|---|---|---|
| उत्तम पुरूष स्त्री० | मैं आ रही हूँ। | एन वर'आ लगेन। |
| मध्यम पुरूष | तू आ रही है। | नीन बर'आ लगदिन। |
| अन्य पुरूष | वह आ रही है। | आद बर'आ लगी। |

**बहुवचन**

| **पुरूष** | **हिन्दी** | **कुड़ुख़** |
|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | हमलोग आ रही हैं। | एम बर'आ लगेम। |
| (वक्ता-श्रोता सम्मिलित) | हमलोग आ रही हैं। | एम बर'आ लगेम। |
| मध्यम पुरूष | तुम लोग आ रही हो। | नीम बर'आ लगदय। |
| अन्य पुरूष | वे आ रहे हैं। | आर बर'आ लगनर। |
| | वे आ रही हैं। | आर/अबड़य वर'आ लगनय। |
| | वे आ रहे 'रही हैं। | अबड़र बर'आ लगनर/लगनय। |

## 3. सामान्य तात्कालिक (सामान्य अपूर्ण)

**वर्तमान काल**–सामान्य तात्कालिक सामान्य अपूर्ण वर्तमान काल वह है जिससे सामान्यतः तात्काल में क्रिया के होने का बोध हो। इस काल के वाक्य का व्यवहार साधारणतः उस हालत में होता है जबकि क्रिया के होने के समय में किसी दूसरी घटना की क्रिया भी होने को रहती है।[14] जैसे–

| | |
|---|---|
| 1. हमलोग खाना खाते रहते हैं उसी समय वह आता है। | एम मण्डी ओना-म र'अदम, ख़ने आस वरदस। |
| मैं देखते रहता हूँ। | एन एरत र'अदन। |
| तू जाते रहता है। | नीन कालत र'अदय। |
| वह जाते रहता है। | आस कालत र'अदस। |

**पुरूष-पुरूष या स्त्री-पुरूष की बातचीत में**[15]

**एक वचन**

| **पुरूष** | **हिन्दी** | **कुड़ुख़** |
|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | मैं आता रहता हूँ। | एन बर'अत र'अदन। |
| | मैं आती रहती हूँ। | एन बर'अत र'एन। |
| मध्यम पुरूष | तू आता रहता है। | नीन बर'अत र'अदय। |
| | तू आती रहती है। | नीन बर'अत र'अदी। |

| | | |
|---|---|---|
| अन्य पुरूष | वह आता रहता है। | आस बर'अत र'अदस। |
| | वह आती रहती है। | आद बर'अत र'ई। |
| | वह आता रहता/आती रहती है। | आर/अबड़र बर'अत र'अनर। |

**बहुवचन**

| **पुरूष** | | **हिन्दी** | **कुडु़ख** |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | हमलोग आते रहते हैं। | एम बर'अत र'अदम। |
| | स्त्री० | हमलोग आती रहती हैं। | एम बर'अत र'एम। |
| (वक्ता-श्रोता सम्मिलित) | | हमलोग आते रहते हैं। | नाम बर'अत र'अदत। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तुम लोग आते रहते हो। | नीम बर'अत र'अदर। |
| | स्त्री० | तुमलोग आती रहती हो। | नीम बर'अत र'अदर। |
| अन्य पुरूष | पु० | वे आते रहते हैं। | आर/अबड़र बर'अत र'अनर। |
| | स्त्री० | वे आती रहती हैं। | आर/अवड़य बर'अत र'अनय। |
| | प्रा० | वे आते रहते/आती रहती हैं। | आर/अवड़य बर'अत र'अनय। |

**स्त्रियों की बातचीत में**[16]

**एक वचन**

| **पुरूष** | | **हिन्दी** | **कुडु़ख** |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | मैं आती रहती हूँ। | एन बर'अत र'एन। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | तू आती रहती है। | नीन बर'अत र'अदी। |
| अन्य पुरूष | पु० | वह आता रहता है। | आस बर'अत र'अदस। |
| | स्त्री० | वह आती रहती है। | आद बर'अत र'ई |
| | प्रा० | वह आता रहता है। | आस बर'अत र'अदस। |

**बहुवचन**

| **पुरूष** | | **हिन्दी** | **कुडु़ख** |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | हमलोग आती रहती हैं। | एम बर'अत र'एम। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | तुमलोग आती रहती हो। | नीम बर'अत र'अदय। |
| अन्य पुरूष | पु० | वे आते रहते हैं। | आर/अवड़य बर'अत र'अनय। |
| | स्त्री० | वे आती रहती है। | आर बर'अत र'अनय। |
| | प्रा० | वे आते रहते/आती रहती है। | आर/अबड़य बर'अत र'अनर। |

**4. पूर्णकालिक वर्तमान काल**

पूर्णकालिक वर्तमान काल वह है जिससे वर्तमान का पूर्ण रूप से हो चुकना पाया जाय।[17]

**एकवचन**

| | |
|---|---|
| उसने पानी पिया है। | आस अम्म ओण्डका र'अदस। |
| तुम घर गए हो। | नीन एड़पा केरका र'अदय। |

**पुरूष-पुरूष या स्त्री-पुरूष की बातचीत में**

**एकवचन**

| | | |
|---|---|---|
| मध्यम पुरूष | तुम लोग आ रहे हो। | नीम बर'आ लगदर। |
| | तुम लोग आ रही हो। | नीम बर'आ लगदय। |
| अन्य पुरुष | वे आ रहे हैं। | आर बर'आ लगनर। |
| | वे आ रही हैं। | आर बर'आ लगनय। |

**स्त्रियों की बातचीत में**

**एक वचन**

| **पुरूष** | | **हिन्दी** | **कुड़ुख़** |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | मैं आ रही हूँ। | एन बर'आ लगेन। |
| मध्यम पुरूष | | तू आ रही है। | नीन बर'आ लगदिन। |
| अन्य पुरुष | | वह आ रही है। | आद बर'आ लगी। |

**बहुवचन**

| **पुरूष** | **हिन्दी** | **कुड़ुख़** |
|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | हमलोग आ रही हैं। | एम बर'आ लगेम। |
| (वक्ता-श्रोता सम्मिलित) | हमलोग आ रही हैं। | एम बर'आ लगेम। |
| मध्यम पुरूष | तुम लोग आ रही हो। | नीम बर'आ लगदय। |
| अन्य पुरूष | वे आ रहे हैं। | आर बर'आ लगनर। |
| | वे आ रही हैं। | आर/अबड़य बर'आ लगनय। |
| | वे आ रहे 'रही हैं। | अबड़र बर'आ लगनर/लगनय। |

## 3. सामान्य तात्कालिक (सामान्य अपूर्ण)

**वर्तमान काल**-सामान्य तात्कालिक सामान्य अपूर्ण वर्तमान काल वह है जिससे सामान्यतः तात्काल में क्रिया के होने का बोध हो। इस काल के वाक्य का व्यवहार साधारणतः उस हालत में होता है जबकि क्रिया के होने के समय में किसी दूसरी घटना की क्रिया भी होने को रहती है।[14] जैसे-

| | |
|---|---|
| 1. हमलोग खाना खाते रहते हैं उसी समय वह आता है। | एम मण्डी ओना-म र'अदम, ख़ने आस बरदस। |
| मैं देखते रहता हूँ। | एन एरत र'अदन। |
| तू जाते रहता है। | नीन कालत र'अदय। |
| वह जाते रहता है। | आस कालत र'अदस। |

**पुरूष-पुरूष या स्त्री-पुरूष की बातचीत में**[15]

**एक वचन**

| **पुरूष** | **हिन्दी** | **कुड़ुख़** |
|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | मैं आता रहता हूँ। | एन बर'अत र'अदन। |
| | मैं आती रहती हूँ। | एन बर'अत र'एन। |
| मध्यम पुरूष | तू आता रहता है। | नीन बर'अत र'अदय। |
| | तू आती रहती है। | नीन बर'अत र'अदी। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| अन्य पुरूष | | वह आता रहता है। | आस बर'अत र'अदस। |
| | | वह आती रहती है। | आद बर'अत र'ई। |
| | | वह आता रहता/आती रहती है। | आर/अबड़र बर'अत र'अनर। |

**बहुवचन**

| पुरूष | | हिन्दी | कुड़ुख |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | हमलोग आते रहते हैं। | एम बर'अत र'अदम। |
| | स्त्री० | हमलोग आती रहती हैं। | एम बर'अत र'एम। |
| (वक्ता-श्रोता सम्मिलित) | | हमलोग आते रहते हैं। | नाम बर'अत र'अदत। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तुम लोग आते रहते हो। | नीम बर'अत र'अदर। |
| | स्त्री० | तुमलोग आती रहती हो। | नीम बर'अत र'अदर। |
| अन्य पुरूष | पु० | वे आते रहते हैं। | आर/अबड़र बर'अत र'अनर। |
| | स्त्री० | वे आती रहती हैं। | आर/अवड़य बर'अत र'अनय। |
| | प्रा० | वे आते रहते/आती रहती हैं। | आर/अवड़य बर'अत र'अनय। |

**स्त्रियों की बातचीत में**[16]

**एक वचन**

| पुरूष | | हिन्दी | कुड़ुख |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | मैं आती रहती हूँ। | एन बर'अत र'एन। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | तू आती रहती है। | नीन बर'अत र'अदी। |
| अन्य पुरूष | पु० | वह आता रहता है। | आस बर'अत र'अदस। |
| | स्त्री० | वह आती रहती है। | आद बर'अत र'ई |
| | प्रा० | वह आता रहता है। | आस बर'अत र'अदस। |

**बहुवचन**

| पुरूष | | हिन्दी | कुड़ुख |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | हमलोग आती रहती हैं। | एम बर'अत र'एम। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | तुमलोग आती रहती हो। | नीम बर'अत र'अदय। |
| अन्य पुरूष | पु० | वे आते रहते हैं। | आर/अवड़य बर'अत र'अनय। |
| | स्त्री० | वे आती रहती है। | आर बर'अत र'अनय। |
| | प्रा० | वे आते रहते/आती रहती है। | आर/अबड़य बर'अत र'अनर। |

**4. पूर्णकालिक वर्तमान काल**

पूर्णकालिक वर्तमान काल वह है जिससे वर्तमान का पूर्ण रूप से हो चुकना पाया जाय।[17]

**एकवचन**

| | |
|---|---|
| उसने पानी पिया है। | आस अम्म ओण्डका र'अदस। |
| तुम घर गए हो। | नीन एड़पा केरका र'अदय। |

**पुरूष-पुरूष या स्त्री-पुरूष की बातचीत में**

**एकवचन**

| पुरूष | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | मैं आया हूँ। | एन बरचका र'अदन। |
| | मैं आयी हूँ। | एन बरचकी र'एन। |
| मध्यम पुरूष | तू आया है। | नीन बरचका/बरचकय र'अदय। |
| | तू आयी है। | नीन बरचकी र'अदिन। |
| अन्य पुरूष | वह आया है। | आस बरचका र'अदस। |
| | वह आयी है। | आद बरचकी र'ई। |
| | वह आया/आयी है। | आस बरचका र'अदस। आद बरचकी र'ई। |

**बहुवचन**

| पुरूष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | हमलोग आये हैं। | एम बरचका र'अदम। |
| | स्त्री० | हमलोग आयी हैं। | एम बरचकी र'एम। |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) | | हमलोग आये हैं। | नाम बरचका र'अदत। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तुमलोग आये हो। | नीम बरचका र'अदर। |
| | स्त्री० | तुमलोग आयी हो। | नीम बरचकी र'अदर। |
| अन्य पुरूष | पु० | वे आये हैं। | आर बरचका र'अनर। |
| | स्त्री० | वे आयी हैं। | आर बरचका र'अनय। |
| | प्रा० | वे आये/आयी हैं। | आर बर'चका र'अनर। अबड़य बरचकी र'अनय। |

**स्त्रियों की बातचीत में**

**एकवचन**

| पुरूष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | | मैं आयी हूँ। | एन बरचकी र'एन। |
| | | तू आयी है। | नीन बरचकी र'अदिन। |
| | पु० | वह आया है। | आस बरचका र'अदस। |
| | स्त्री० | वह आयी है। | आद बरचकी र'ई। |
| | प्रा० | वह आया/आयी है। | आस बरचका र'अस। आद बरचकी र'ई। |

**बहुवचन**

| पुरूष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | हमलोग आयी हैं। | एम बरचकी र'एम। |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) | | हमलोग आयी हैं। | नाम बरचका र'अदत। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | तुमलोग आयी हो। | नीम बरचका र'अदय। |
| अन्य पुरूष | पु० | वे आये हैं। | आर बरचका र'अनय। |

| | | |
|---|---|---|
| स्त्री० | वे आयी हैं। | आर बरचका र'अनय। |
| प्रा० | वे आये/आये हैं। | आर बरचका र'अनर। |
| | | अबड़य बरचकी र'अनय। |

## 5. संदिग्ध वर्तमान

जिससे क्रिया के होने में सन्देह प्रकट हो, पर उसकी वर्तमानता में सन्देह न हो।[18] जैसे–

| | |
|---|---|
| राम खाता होगा। | रामस मोख़दस होतंग। |
| वह पढ़ता होगा। | आस बचदस होतंग। |

**पुरूष-पुरूष या स्त्री-पुरूष की बातचीत में**

**एकवचन**

| पुरूष | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | मैं खाता होऊँगा। | एन ओन्दन होतंग। |
| | मैं खाती होऊँगी। | एन ओनेन होतंग। |
| मध्यम पुरूष | तू खाता होगा। | नीन ओन्दय होतंग। |
| | तू खाती होगी। | नीन ओन्दी होतंग। |
| अन्य पुरूष | वह खाता होगा | आस ओन्दस होतंग। |
| | वह खाती होगी। | आद ओनी होतंग। |
| | वह खाता/खाती होगा/होगी। | आद ओनी होतंग। आस ओनदस होतंग। |

**बहुवचन**

| पुरूष | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | हमलोग खाते होंगे। | नाम ओन्दत होतंग। |
| | हमलोग खाती होंगी। | नाम ओनेत होतंग। |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) | हमलोग खाते होंगे। | नाम ओन्दत होतंग। |
| मध्यम पुरूष | तुमलोग खाते होगे। | नीम ओन्दर होतंग। |
| | तुमलोग खाते होगे। | नीम ओन्दय होतंग। |
| अन्य पुरूष | वे लोग खाते होंगे। | आर ओन्नर होतंग। |
| | वे लोग खाती होगी। | आर ओन्नय होतंग। |
| | वे लोग खाते/खाती होंगे/होगी। | अबड़य ओन्नय होतंग |

**स्त्रियों की बातचीत में**

**एक वचन**

| पुरूष | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | मैं खाती होऊँगी। | एम ओनेन होतंग। |
| मध्यम पुरूष | तू खाती होओगी। | नीन उन्दी होतंग। |
| अन्य पुरूष | वह खाता होवेगा। | आस ओन्दस होतंग। |
| | वह खाती होवेगी। | आद ओनी होतंग। |
| | वह खाता/खाती होगा/होगी। | आद ओनी होतंग। आस ओनदस होतंग। |

**बहुवचन**

| पुरूष | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | हमलोग खाती होऊँगी। | एम ओनेम होतंग। |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) | हमलोग खाती होंगी। | नाम ओनदत होतंग। |
| मध्यम पुरूष | तुमलोग खाती होओगी। | नीम ओनदर होतंग। |
| अन्य पुरूष | वे लोग खाती होगी। | आर ओन्नय होतंग। |
| | तुमलोग खाती होगी। | नीम ओनदय होतंग। |
| | वे लोग खाता/खाती होगा /होगी। | आर ओन्नर होतंग। |
| | | अवड़य ओन्नय होतंग। |

## 6. सम्भाव्य वर्त्तमान

इससे वर्त्तमान काल में काम के पूरा होने की सम्भावना रहती है।[19]

1. वह आया हो। आस बरचस होतंग। 2. वह लौटा हो। आस किर्रियस होतंग।

**पुरूष-पुरूष या पुरूष-स्त्री के बीच बातचीत में**

**एक वचन**

| पुरूष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु०(सम्भव है) | मैंने खाया हो। | एन ओन्डकन होतन। |
| | स्त्री० (सम्भव है) | मैंने खाया हो। | एन ओन्डअन होतन। |
| मध्यम पुरूष | पु०(सम्भव है) | तूने खाया हो। | नीन ओन्डकय होतन। |
| | स्त्री०(सम्भव है) | तूने खाया हो। | नीन ओन्डकी होतन। |
| अन्य पुरूष | पु०(सम्भव है) | उसने खाया हो। | आस ओन्डस होतन। |
| | स्त्री० (सम्भव है) | उसने खाया हो। | आद ओण्डा होतन। |
| | प्रा० (सम्भव है) | उसने खाया हो। | आद ओण्डा होतन। |

**बहुवचन**

| पुरूष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु०(सम्भव है) | हमलोगों ने खाया हो। | नाम ओण्डकत होतन। |
| | स्त्री० (सम्भवतः) | हमने/हमलोगों ने खाया हो। | एम ओण्ड'अम होतन। |
| मध्यम पुरूष | पु०(सम्भवतः) | तूने/तुमलोगों ने खाया हो। | नीम ओण्डकर होतन। |
| | स्त्री०(सम्भवतः) | तूने/तुमलोगों ने खायी हो। | नीम ओण्डकर होतन। |
| अन्य पुरूष | पु०(सम्भव है) | उसने/उनलोगों ने खाया हो। | आर ओण्डर होतन। |
| | स्त्री० (सम्भवतः) | उसने/उनलोगों ने खाया हो। | आर ओण्डर होतन। |
| | प्रा० (सम्भवतः) | उसने/उनलोगों ने खाया हो। | अबड़ा ओण्डा होतन। |

**स्त्री-स्त्री के बीच बातचीत में**

| पुरूष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री०(सम्भवतः) | मैंने खाया हो। | एन ओण्डकन हअँन। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री०(सम्भवतः) | तूने खाया हो। | नीन ओण्डकी हअँन। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| अन्य पुरूष | पु० (सम्भवतः) | वह खाया हो। | आस ओण्डस हअ़ॅन। |
| | स्त्री० (सम्भवतः) | उसने खाया हो। | आद ओण्डा हअ़ॅन। |
| | प्रा० (सम्भवतः) | वे खाये हों। | अबड़ा ओण्डा हअ़ॅन। |

**बहुवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री०(सम्भवतः) | हमने खाया हो। | एम ओण्डकम होतन। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री०(सम्भवतः) | तुमने/तुमलोगों ने खाया हो। | नीम ओण्डकय होतन। |
| अन्य पुरूष | पु०(सम्भवतः) | उनने/उनलोगों ने खाया हो। | आर ओण्डर होतन। |

## 2. भूतकाल

जिससे क्रिया के कार्य की समाप्ति का बोध हो, उसे भूतकाल की क्रिया कहते हैं। जैसे- लड़का आया था, वह खा चुका था, मैंने गाया।[20]

भूतकाल वह है जिससे बीते समय में क्रिया काम का हो चुकना पाया जाय।

**जैसे**- एम मण्डी ओण्डकम। एम मण्डी ओनत रहचकम। एम मण्डी ओण्डका र'अचकम।

एम मण्डी ओनोम पहें (बेड़ा केरा) आदि।[21]

**हिन्दी में भूतकाल के छः भेद हैं**-1. सामान्य भूतकाल, 2. आसन्न भूतकाल, 3. पूर्ण भूतकाल 4. अपूर्ण भूतकाल 5. संदिग्ध भूतकाल तथा 6. हेतुहेतु मद भूतकाल।

**कुड़ुख़ में भूतकाल के चार भेद बताये गये हैं।**

1. सोझ केरका बेड़ा
2. कालत र'अना केरका बेड़ा
3. केर्र चुकुरका केरका बेड़ा तथा
4. मनहे केरका बेड़ा

हिन्दी के आसन्न भूतकाल एवं संदिग्ध भूतकाल कुड़ुख़ व्याकरण में उल्लिखित नहीं है। मेरे ख्याल से इन दोनों भेदों का उल्लेख कुड़ुख़ में भी होना चाहिए क्योंकि हिन्दी में भूतकाल के उपर्युक्त दोनों भेदों में जैसी वाक्य संरचना होती है वैसी संरचना कुड़ुख़ में भी हो सकती है और होती भी है। आगे यथा स्थान हम इसकी चर्चा करेंगे। यहाँ हम तत्काल भूतकाल के विभिन्न भेदों में क्रिया की रूपगत विशेषताओं से युक्त रूपावली की चर्चा करेंगे।

### 1. सामान्य भूतकाल

सामान्य भूतकाल वह है जिससे क्रिया के सामान्य तौर पर बीते समय में हो चुकने का बोध हो।[22] जैसे- एन उक्ककन। आस मोक्खस आदि। जिससे भूतकाल की क्रिया के विशेष समय का ज्ञान न हो। जैसे- मोहन आया, सीता गयी आदि।[23]

अव हम पुरूष-पुरूष या स्त्री-पुरूष की बातचीत में सामान्य भूतकाल के तीनों पुरूषों आदि में 'बरना' आना क्रिया की रूपावली के माध्यम से क्रिया की रूपगत विशेषता का अध्ययन करें।

**एक वचन**

| पुरुष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | मैं आया। | एन बरचकन। |
| | स्त्री० | मैं आयी। | एन बरच'अन। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तू आया। | नीन बरचकय। |
| | स्त्री० | तू आयी। | नीन बरचकिन। |
| अन्य पुरूष | पु० | वह आया। | आस बरचस। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | स्त्री० | वह आयी। | आद बरचा। |
| | प्रा० | वह आया/आयी। | अबड़ा बरचा। |

**बहुवचन**

| पुरुष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | हमलोग आये। | एम बरचकम। |
| | स्त्री० | हमलोग आयीं। | एम बरच'अम। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तुमलोग आये। | नीम बरचकर। |
| | स्त्री० | तुमलोग आयीं। | नीम बरचकय। |
| अन्य पुरूष | पु० | वे लोग आये। | आर बरचर। |
| | स्त्री० | वे लोग आयीं। | अबड़य बरचय। |
| | प्रा० | वे लोग आये/आयीं। | अबड़ा बरचा। |

**स्त्रियों की बातचीत में**

**एक वचन**

| पुरुष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | मैं आयी। | एन बरच'अन। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | तू आयी। | नीन बरचकिन। |
| अन्य पुरूष | पु० | वह आया। | आस बरचस। |
| | स्त्री० | वह आयी। | आद बरचा। |
| | प्रा० | वह आया/आयी। | अबड़ा बरचा। |

**बहु वचन**

| पुरुष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | हमलोग आयीं। | एम बरच'अम। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | तुमलोग आयी। | नीम बरचकय। |
| अन्य पुरूष | पु० | वे आये। | आर बरचर। |
| | स्त्री० | वे आयीं। | अबड़य बरचय। |
| | प्रा० | वे आये/आयीं। | अबड़ा बरचा। |

## 2. आसन्न भूतकाल

इससे क्रिया की समाप्ति निकट भूत में या तत्काल ही सूचित होती है। जैसे- मैंने आम खाया है। मैं चला हूँ आदि।[24] अब हम इस काल भेद के वाक्यों में प्रयुक्त क्रिया की रूपगत विशेषता निम्नांकित रूपावली के आधार पर तय कर सकते हैं।

**पुरूष-पुरूष या पुरूष-स्त्री की बातचीत में**

**एक वचन**

| पुरुष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | मैंने आम खाया है। | एन टटख़ा मोक्का र'अदन। |
| | स्त्री० | मैंने आम खायी है। | एन टटख़ा मुक्की र'एन। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तूने आम खाया है। | नीन टटख़ा मोक्का र'अदय। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | स्त्री० | तूने आम खायी है। | नीन टटख़ा मुक्की र‘अदी। |
| अन्य पुरूष | पु० | उसने आम खाया है। | आस टटख़ा मोक्का र‘अदस। |
| | स्त्री० | उसने आम खाया है। | आद टटख़ा मुक्की र‘अई। |
| | प्रा० | उसने आम खाया है। | अबड़ा टटख़ा मुक्की र‘अई। |

**बहु वचन**

| पुरुष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | हमने/हमलोगों ने आम खाया है। | एन/एम टटख़ा मोक्का र‘अदन/म। |
| | स्त्री० | हमने/हमलोगों ने आम खाया है। | एन/एम टटख़ा मुक्की र‘एम। |
| | | अथवा हमने आम खाये हैं। | एन/एम टटख़ा मोक्की र‘एन/म। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तुमने/तुमलोगों ने आम खाया है। | नीन/नीम टटख़ा मोक्का र‘अदय। |
| | स्त्री० | तुमने/तुमलोगों ने आम खाया है। | नीन/नीम टटख़ा मोक्का र‘अदी/र‘अदर। |
| अन्य पुरूष | पु० | उसने/उनलोगों ने आम खाया है। | आस/आर टटख़ा मोक्का र‘अनर। |
| | स्त्री० | उसने/उनलोगों ने आम खाया है। | आद/अबड़य टटख़ा मुक्की र‘अनय। |
| | प्रा० | उसने/उनलोगों ने आम खाया है। | आर/अबड़य टटख़ा मोक्की रहचा। |

**स्त्री-स्त्री की बातचीत में**

हिन्दी व्याकरण के नियम के आधार पर-यदि कर्त्ता (चाहे संज्ञा हो या सर्वनाम) के साथ ‘ने’ विभक्ति जुड़ी हो, तो क्रिया के लिंग, वचन और पुरूष हर हाल में ‘कर्म’ के अनुसार होंगे अर्थात् यदि ‘कर्म’ स्त्री लिंग है तो क्रिया भी स्त्रीलिंग में होगी और यदि ‘कर्म’ पुल्लिंग हो तो क्रिया एकवचन पुल्लिंग होगी। जैसे-

1. मैंने आम खाया। मैंने रोटी खायी। एन टटख़ा मोक्कन। एन असमा मोक्कन।

यहाँ पहले वाक्य में कर्म ‘आम’ है जो पुल्लिंग हैं, इसलिए क्रिया एकवचन पुल्लिंग है जबकि दूसरे वाक्यों में कर्म ‘रोटी’ स्त्रीलिंग है, इसलिए क्रिया एकवचन स्त्रीलिंग में है।

अतः स्त्री-स्त्री की बातचीत में वही रूप होगा ‘क्रिया’ का जो पुरूष-पुरूष या पुरूष-स्त्री की बातचीत में होता है।

## 3. पूर्ण भूतकाल

क्रिया के उस रूप को पूर्ण भूत कहते हैं जिससे क्रिया की समाप्ति के समय का स्पष्ट बोध होता है कि क्रिया को समाप्त हुए काफी समय बीता है। जैसे- उसने मुरारी को मारा था। वह आया था।[25]

**“पी.सी. बेक्र्स के अनुसार”**- ‘पूर्ण भूतकाल वह है जिससे क्रिया के होने की पूर्णता पायी जाय। जैसे- एन उक्का रहचकन। नीन पस्सका रहचकय। आस केप्पका रहचस। आर नन्जका रहचर तथा आर ठकचका रहचर आदि।[26] अव हम क्रिया की रूपगत विशेषता देखें-

**पुरूष-पुरूष या स्त्री-पुरूष की बातचीत में**

एक वचन

| पुरुष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | मैं आया था। | एन बरचका रहचकन। |
| | स्त्री० | मैं आयी थी। | एन बरचकी रहच'अन। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तू आया था। | नीन बरचका रहचकय। |
| | स्त्री० | तू आयी थी। | नीन बरचकी रहचकिन। |
| अन्य पुरूष | पु० | वह आया था। | आस बरचका रहचस। |
| | स्त्री० | वह आयी थी। | आद बरचकी रहचा। |
| | प्रा० | वह आया/आयी थी/थी | आद बरचकी रहचा। |

बहुवचन

| पुरुष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | हमलोग आये थे। | एम बरचका रहचकम। |
| | स्त्री० | हमलोग आयी थी। | एम बरचकी रहच'अम। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तुमलोग आये थे। | नीम बरचका रहहकर। |
| | स्त्री० | तुमलोग आयी थी। | नीम बरचकी रहचकर। |
| अन्य पुरूष | पु० | वे लोग आये थे। | आर बरचका रहचर। |
| | स्त्री० | वे लोग आयी थी। | आर बरचकी रहचर। |
| | प्रा० | वे आये/आयी थे/थी। | अबड़ा बरचकी रहचा। |

**स्त्रियों की बातचीत में –**

एक वचन

| पुरुष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | मैं आ रही थी। | एन बर'आ लगियि'अन। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | तू आ रही थी। | नीन बर'आ लइक्किन। |
| अन्य पुरूष | पु० | वह आ रहा था। | आस बर'आ लगियस। |
| | स्त्री० | वह आ रही थी। | आद बर'आ लगिया। |
| | प्रा० | वह आ रहा/रही था/ थी। | अबड़ा बर'आ लगिया। |

बहुवचन

| पुरुष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | मैं आयी थी। | एन बरचकी रहच'अन। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | तू आयी थी। | नीन बरचकी रहचकी। |
| अन्य पुरूष | पु० | वह आया था। | आस बरचका रहचस। |
| | स्त्री० | वह आयी थी। | आद बरचकी रहचा। |
| | प्रा० | वह आया/आयी था/थी। | अबड़ा बरचकी रहचा। |

## 4. संदिग्ध भूतकाल

इसमें यह सन्देह बना रहता है कि भूतकाल में कार्य पूरा हुआ या नहीं। जैसे- तुमने गाया होगा, तू गाया होगा।[27] संदिग्ध भूतकाल को अब तक कुड़ुख़ व्याकरण में स्थान न मिल सका है। व्याकरण से सम्बन्धित नये-नये शोध इसका मार्ग प्रशस्त करेंगे- ऐसी हमारी आशा है। उसी प्रशस्ति की कड़ी में यहाँ कुड़ुख़ में भी इस संदिग्ध भूतकाल को स्थान दिया जा रहा है। इस काल में क्रिया की रूपावली निम्नवत है-

**पुरूष-पुरूष अथवा स्त्री-पुरुष की बातचीत में**

**एकवचन**

| | |
|---|---|
| मैंने गाया होगा। | एन पांड़िका र'अदन होतन। |
| मैंने गायी होगी। | एन पांड़िकी र'एन होतन। |
| तू ने गाया होगा। | नीन पांड़िका र'अदय होतन। |
| तू ने गायी होगी। | नीन पांड़िकी र'अदी होतन। |
| उसने गाया होगा। | आस पांड़िका र'अदस होतन। |
| उसने गायी होगी। | आद पांड़की र'अई होतन। |

**बहुवचन**

| | |
|---|---|
| हमने/हमलोगों ने गाया होगा। | एम पांड़िकम/पांड़िय'अम होतन। |
| हमने/हमलोगों ने गायी होगी। | एम पांड़िकम होतन। |
| तुमने/तुमलोगों ने गाया होगा। | नीम पांड़िकर होतन। |
| तुमने/तुमलोगों ने गाया होगा। | नीम पांड़िकर होतन |
| उसने/उनलोगों ने गाया होगा। | आर पांड़ियर होतन। |
| उनने/उन्होंने गाया होगा। | अबड़ा पांड़िया होतन। |
| उनने/उन्होंने गाया होगा। | अबड़र पांड़ियर होतन। |

**स्त्रियों की बातचीत में**

**एक वचन**

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | मैंने गाया होगा। | एन पांड़िकन होतन। |
| मध्यम पुरूष | तूने/तुमने गाया होगा। | नीन पांड़िकय होतन। |
| अन्य पुरूष | उसने गाया होगा। | अबड़ा पांड़िया होतन। |

**बहु वचन**

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | हमने/हम लोगों ने गाया होगा। | एम पांड़िकम होतन। |
| मध्यम पुरूष | तुने/तुम लोगों ने गाया होगा। | नीम पांड़िकर होतन। |
| अन्य पुरूष | उसने/उन्होंने/उन लोगों ने गाया होगा। | अबड़ा पांड़िया होतन। |

## 5. हेतुहेतुमद्‌भूत

इससे यह पता चलता है कि क्रिया भूतकाल में होने वाली थी, पर किसी कारण से न हो सकी। जैसे-मैं आता, तु जाता, वह खाता आदि।[28]

**श्री पी०सी०बेकस के अनुसार**-'हेतुहेतुमद् भूतकाल वह है जिससे समय बीत जाने पर भी काम का न हो सकना पाया जाय।' जैसे-एन कालोन पहें, नाम पढ़ओत पहें, नीन ननोय पहें, आद अलखो पहें आदि।[29] इस कालभेद की क्रिया की विशेषता इसकी निम्नांकित रूपावली से झलकती है-

**पुरूष-पुरूष या स्त्री-पुरूष की बातचीत में**

**एकवचन**

| **हिन्दी** | **कुड़ुख़** | **हिन्दी** | **कुड़ुख़** |
|---|---|---|---|
| मैं आता। | एन बर'ओन पहें। | मैं आती। | एन बरएन केंधोर। |
| तू आता। | नीन बर'ए पहें। | तू आती। | नीन वर'ए पहें। |
| वह आता। | आस बर'ओस पहें। | वह आती। | आद बर'ओ पहें। |
| वह आता/आती। | अबड़ा बर'ओ पहें। | | |

**बहुवचन**

| **हिन्दी** | **कुड़ुख़** | **हिन्दी** | **कुड़ुख़** |
|---|---|---|---|
| हमलोग आते। | एम बर'ओम पहें। | हमलोग आती। | हमलोग आते। |
| तुमलोग आते। | नीम बर'ओर पहें। | तुमलोग आतीं। | नीम बर'ओर पहें। |
| वे आते। | आर बर'ओर पहें। | वे आतीं। | अबड़र बर'ओर पहें। |
| | वे आते/आतीं। | | अवड़ा बर'ओ पहें। |

हेतुहेतुमदभूतकाल के वाक्य में स्त्रियों की बातचीत का वही रूप व्यहृत होता है, जो पुरूष-पुरूष या पुरूष-स्त्री की बातचीत का है। अन्तर सिर्फ इतना है कि अन्य पुरूष (स्त्रीलिंग-पुल्लिंग ) बहुवचन में 'आर अवड़र' के बदले में 'आर (अबड़य)'होगा तथा क्रिया के सामान्य भविष्यत काल के रूप के उपरान्त 'पहें' शब्द लगा देने से हेतुहेतुमद्भूतकाल की क्रिया बन जाती है।

## 3. भविष्यत काल

भविष्यत काल वह है जिससे भविष्य में क्रिया (काम) का होना पाया जाय। जैसे- एम मण्डी ओनोम। एम मण्डी ओनात रओम; एम मण्डी ओण्डका रओम तथा आर मण्डी ओननर नेकआ आदि।[30]

डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद सिन्हा के अनुसार- 'भविष्य में होनेवाली क्रिया को भविष्यत् काल की क्रिया कहते हैं। जैसे- वह कल घर जाएगा आदि।'[31]

हिन्दी में भविष्य काल के (3) तीन भेद हैं-

1. सामान्य भविष्यत काल 2. सम्भाव्य भविष्यत काल तथा

3. हेतुहेतुमद् भविष्यत काल।[32]

**1. सामान्य भविष्यत काल :** इस काल से यह प्रकट होता है कि क्रिया सामान्यतः भविष्य में होगी। जैसे- मैं पढ़ूँगा। वह जाएगा आदि।

**2. सम्भाव्य भविष्यत काल** से भविष्य में किसी कार्य के होने की सम्भावना हो। जैसे- सम्भव है, रमेश कल आय/आये आदि।

**3. हेतुहेतुमदभविष्यतकाल** में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर करता है। जैसे- वह आये तो मैं जाऊँ; वह कमाये तो खाय आदि।

डॉ० पी०सी० बेकूस के अनुसार कुड़ुख़ भाषा में भविष्यतकाल के निम्नांकित चार भेद है-

1. सोझ बरना बेड़ा (सामान्य भविष्यत काल) 2. बर'अत र'अना बरना बेड़ा (तात्कालिक या अपूर्ण भविष्यत काल) 3. पूरकस बरना बेड़ा (पूर्ण भविष्यत काल) तथा 4. मनाउङ्गु बरना वेड़ा (सम्भाव्य भविष्यत काल)।[33]

अब हम दोनों भाषाओं की क्रिया की विशेषता का अध्ययन करने के लिए दोनों भाषाओं की क्रिया-रूपावली को देखें-

**1. सामान्य भविष्यत काल :**

**पुरूष-पुरूष या स्त्री-पुरूष की बातचीत में**

**एकवचन**

| **पुरुष** | | **हिन्दी** | **कुड़ुख़** |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | मैं जाऊँगा। | एन कालोन। |
| | स्त्री० | मैं जाऊँगी। | एन कालोन। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तू आयेगा। | नीन बर'ओय। |
| | स्त्री० | तू आयेगी। | नीन बर'ओय। |
| अन्य पुरूष | पु० | वह आयेगा। | आस बर'ओस। |
| | स्त्री० | वह आयेगी। | आद बर'ओ। |
| | प्रा० | वह आयेगा/आयेगी। | अबड़ा बर'ओ। |

**बहुवचन**

| **पुरुष** | | **हिन्दी** | **कुड़ुख़** |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | हमलोग आयेंगे। | एम बर'ओम। |
| | स्त्री० | हमलोग आयेंगी। | एम बर'ओम। |
| (वक्ता-श्रोता सम्मिलित) | | हमलोग आयेंगे। | नाम बर'ओत। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तुमलोग आओगे। | नीम बर'ओर। |
| | स्त्री० | तुमलोग आओगी। | नीम बर'ओर। |
| अन्य पुरूष | पु० | वे आयेंगे। | आर बर'ओर। |
| | स्त्री० | वे आयेंगी। | आर बर'ओर। |
| | प्रा० | वे आयेंगे(आवेंगे)/आयेंगी /आवेंगी | अबड़ा बर'ओ। |

स्त्रियों की बातचीत का रूप भी वैसा ही होता है जैसे कि पुरूष पुरूष अथवा पुरूष स्त्री की बातचीत का रूप है।

सिर्फ अन्य पुरूष पुलिंग स्त्रीलिंग बहुवचन में 'आर(अबड़र)' के बदले से 'आर (अबड़य)' होगा।

## 2. तात्कालिक (अपूर्ण) भविष्यत् काल

अपूर्ण (तात्कालिक) भविष्यत काल वह है जिससे भविष्य में क्रिया के अपूर्ण 'करते' **रहने की दशा** प्रकट हो।[34] जैसे-

| | |
|---|---|
| एन कालत र'ओन। | मैं जाता रहूँगा। |
| नीन मण्डी ओनत र'ओय। | तू भात खाता रहेगा। |
| आद चींख़त र'ओ। | वह रोती रहेगी। |

तात्कालिक 'अपूर्ण' भविष्यत काल के तीनों पुरूषों में क्रिया की निम्नांकित रूपावली उसकी विशेषता के बारे में स्वयं बखान करती है।

अवलोकनार्थ-

**पुरूष-पुरूष अथवा स्त्री-पुरूष की बातचीत में**

**एकवचन**

| पुरुष | | हिन्दी | कुड़ुख |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | मैं आता रहूँगा। | एन बर'अत र'ओन। |
| | स्त्री० | मैं आती रहूँगी। | एन बर'अत र'ओन। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तू आता रहेगा। | नीन बर'अत र'ओय। |
| | स्त्री० | तू आती रहेगी। | नीन बर'अत र'ओय। |
| अन्य पुरूष | पु० | वह आता रहेगा। | आस बर'अत र'ओस। |
| | स्त्री० | वह आती रहेगी। | आद बर'अत र'ओ। |
| | प्रा० | वह आता/आती रहेगा/रहेगी। | अबड़ा बर'अत र'ओ। |

**बहुवचन**

| पुरुष | | हिन्दी | कुड़ुख |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | हमलोग आते रहेंगे। | एम बर'अत र'ओम। |
| | स्त्री० | हमलोग आती रहेंगी। | एम बर'अत र'ओम। |
| (वक्ता-श्रोता सम्मिलित) | | हमलोग आते रहेंगे। | नाम बर'अत र'ओत। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तुमलोग आता रहेगा। | नीम बर'अत र'ओर। |
| | स्त्री० | तुमलोग आती रहेगी। | नीम बर'अत र'ओर। |
| अन्य पुरूष | पु० | वे लोग आते रहेंगे। | आर बर'अत र'ओर। |
| | स्त्री० | वे लोग आती रहेगी। | आर बर'अत र'ओर। |
| | प्रा० | वे लोग आते/आती रहेंगे/रहेगी। | अबड़ा बर'अत र'ओ। |

इस काल में भी स्त्रियों की बातचीत का अलग रूप नहीं होता है।

**3. पूर्ण भविष्यत् काल :**

पूर्ण भविष्यत् काल वह है जिससे क्रिया का भविष्य में पूर्ण रूप से हो चुकना पाया जाय।[35] जैसे-

| | |
|---|---|
| एन ओण्डका र'ओन। | मैं खाया हुआ रहूँगा। |
| नीन अड़िसका र'ओय। | तुम पहुँचे हुए रहोगे। |
| आद मण्डी खटचकी र'ओ। | वह भात पकायी हुई रहेगी। |

अब हम देखें कि 'बरना' क्रिया का रूप पुरूष-पुरूष, स्त्री-पुरूष और स्त्रीय बातचीत में किस प्रकार बदल जाता है और यह रूप बदलाव क्रिया को कितना विशिष्ट और महत्वपूर्ण बना देता है।

**पुरूष-पुरूष या स्त्री-पुरूष के बातचीत में**

**एकवचन**

| पुरुष | | हिन्दी | कुड़ुख |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | मैं आया रहूँगा। | एन बरचका र'ओन। |
| | स्त्री० | मैं आयी रहूँगी। | एन बरचकी र'ओन। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तुम आये रहोगे। | नीन बरचका र'ओय। |
| | स्त्री० | तुम आये रहोगी। | नीन बरचकी र'ओय। |
| अन्य पुरूष | पु० | वह आये रहेंगे। | आस बरचका र'ओस। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | स्त्री० | वह आयीं रहेंगी। | आद बरचकी र'ओ। |
| | प्रा० | वह आये/आयी रहेगा/रहेगी। | अबड़ा बरचकी र'ओ। |

**बहुवचन**

| **पुरुष** | | **हिन्दी** | **कुड़ुख़** |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | हमलोग आये रहेंगे। | एम बरचका र'ओम। |
| | स्त्री० | हमलोग आयी रहेंगी। | एम बरचकी र'ओम। |
| (वक्ता-श्रोता सम्मिलित) | | हमलोग आये रहेंगे। | नाम बरचका र'ओत। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तुमलोग आये रहेगा। | नीम बरचका र'ओर। |
| | स्त्री० | तुमलोग आयी रहेगी। | नीम बरची र'ओर। |
| अन्य पुरूष | पु० | वे लोग आये रहेंगे। | आर बरचका र'ओर। |
| | स्त्री० | वे लोग आयी रहेगी। | आर बरचकी र'ओर। |
| | प्रा० | वे लोग आये/आती रहेंगे/ रहेगी। | अबड़ा बरचकी र'ओ। |

**स्त्रीय बातचीत में**

**एकवचन**

| **पुरूष** | | **हिन्दी** | **कुड़ुख़** |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | मैं आयी रहूँगी। | एन बरचकी र'ओन। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | तू आयी रहेगी। | नीन बरचकी र'ओय। |
| अन्य पुरूष | पु० | वह आया रहेगा। | आस बरचका र'ओस। |
| | स्त्री० | वह आयीं रहेगी। | आद बरचकी र'ओ। |
| | प्रा० | वह आया/आयी रहेगा/रहेगी। | अबड़ा बरचका र'ओ। |

**बहुवचन**

| **पुरूष** | | **हिन्दी** | **कुड़ुख़** |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | हमलोग आयी रहेंगी। | एम बरचकीम र'ओम। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | तुमलोग आयी रहोगी। | नीम बरचकीम र'ओर। |
| अन्य पुरूष | पु० | वे आये रहेंगे। | आर बरचका र'ओर। |
| | स्त्री० | वे आयी रहेंगी। | आर बरचकी र'ओर। |
| | प्रा० | वे आये/आयी रहेंगे/रहेंगी। | अबड़ा बरचकी र'ओ। |

**4. सम्भाव्य भविष्यत काल**

सम्भाव्य भविष्यत काल वह है जिससे क्रिया के होने की सम्भावना या इच्छा मात्र पायी जाय। जैसे- एन ओड़्गदन नेकआ (ऐसा हो कि मैं ……. सकूँ); नीन बरदय नेकआ (ऐसा हो कि तू आये); आस बिढ़ना नू पुँगदस नेकआ (ऐसा हो कि वह परीक्षा में पास हो जाय); धर्मेस नमागे आसिस दरा वराकईत चिइदस नेकआ (ऐसा हो कि भगवान हमें आशीष और कृपा दें)[36] आदि।

**सम्भाव्य भविष्य :** जिससे भविष्य में किसी कार्य के होने की संभावना हो।[37] जैसे–सम्भव है रमेश कल आय/आये/आवे। सम्भाव्य भविष्यत काल की क्रिया इच्छा बोधक भी कहला सकती है। नीचे इसी काल में एक क्रिया की रूपावली प्रस्तुत की जा रही है जिससे क्रिया की रूपगत विशेषता का पता चलता है।

**पुरूष-पुरूष या पुरूष-स्त्री की बातचीत में**

**एकवचन**

| **पुरूष** | | **हिन्दी** | **कुड़ुख़** |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | ऐसा हो कि मैं आऊँ। | एन्ने मनन का एन बर'ओन। |
| | स्त्री० | ऐसा हो कि मैं आऊँ। | एन्ने मनन का एन बर'ओन। |
| मध्यम पुरूष | पु० | ऐसा हो कि तू आवे। | एन्ने मनन का नीन बर'ओय। |
| | स्त्री० | ऐसा हो कि तू आवे। | एन्ने मनन का नीन बर'ओय। |
| अन्य पुरूष | पु० | ऐसा हो कि वह आवे। | एन्ने मनन का आस बर'ओस। |
| | स्त्री० | ऐसा हो कि वह आवे। | एन्ने मनन का आद बर'ओ। |
| | प्रा० | ऐसा हो कि वह आवे। | एन्ने मनन का आबड़ा बर'ओ। |

**बहुवचन**

| **पुरूष** | | **हिन्दी** | **कुड़ुख़** |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | ऐसा हो कि हम आवें। | एन्ने मनन का एम बर'ओम। |
| | स्त्री० | ऐसा हो कि हम आवें। | एन्ने मनन का एम वर'ओम। |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) | | ऐसा हो कि हम आवें। | एन्ने मनन का नाम बर'ओत। |
| मध्यम पुरूष | पु० | ऐसा हो कि तुम आओ। | एन्ने मनन का नीन वर'ओय। |
| | स्त्री० | ऐसा हो कि तुम आओ। | एन्ने मनन का नीन वर'ओय। |
| अन्य पुरूष | पु० | ऐसा हो कि वे आवें। | एन्ने मनन का आर वर'ओर। |
| | स्त्री० | ऐसा हो कि वे आवें। | एन्ने मनन का आद बर'ओ। |
| | प्रा० | एन्ने मनन क्रा आवड़ा बर'ओ। | |

**स्त्रियों की बातचीत में**

**एकवचन**

| **पुरूष** | | **हिन्दी** | **कुड़ुख़** |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | ऐसा हो कि मैं आऊँ। | एन्ने मनन का एन बर'एन नेक'आ। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | ऐसा हो कि तू आये। | एन्ने मनन का नीन वर'अन नेक'आ। |
| अन्य पुरूष | पु० | ऐसा हो कि वह आवे। | एन्ने मनन का आस बरदस नेक'आ। |
| | स्त्री० | ऐसा हो कि वह आवे। | एन्ने मनन का आद बर'अन नेक'आ। |
| | प्रा० | ऐसा हो कि वह आये। | एन्ने मनन का आबड़ा बर'अन नेक'आ। |

**बहुवचन**

| **पुरूष** | | **हिन्दी** | **कुड़ुख़** |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | ऐसा हो कि हम आवें। | एन्ने मनन का एम वरदम नेक'आ। |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) | | ऐसा हो कि हम आवें। | एन्ने मनन का नाम बरदत नेक'आ। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | ऐसा हो कि तुम आओ। | एन्ने मनन का नीन बरदी नेक'आ। |
| अन्य पुरूष | पु० | ऐसा हो कि वह आये। | एन्ने मनन का आस वरदस नेक'आ। |
| | स्त्री० | ऐसा हो कि वह आये। | एन्ने मनन का आद वर'ई नेक'आ। |
| | प्रा० | ऐसा हो कि वह आये। | एन्ने मनन का आबड़ा बर'अन नेक'आ। |

## 5. हेतु-हेतुमद्‌भविष्यत काल

इसमें एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर करता है। जैसे- वह आये तो मैं जाऊँ[38]। अब हम देखें कि किसी एक क्रिया द्वारा किस-किस प्रकार के वाक्य रूप बनते हैं। पुरूष-पुरूष या स्त्री-पुरूष की बातचीत में -

**एकवचन**

| पुरूष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | मैं आऊँ तो वह जाये। | एन बर'ओन होले आस कालोस। |
| | स्त्री० | मैं आऊँ तो वह जाये। | एन बर'ओन होले आद कालो। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तू आये तो मैं जाऊँ। | नीन बर'ओय होले एन कालोन। |
| | स्त्री० | तू आये तो मैं जाऊँ। | नीन बर'ओय होले एन कालोन। |
| अन्य पुरूष | पु० | वह आये तो मैं जाऊँ। | आस बर'ओस होले एन कालोन। |
| | स्त्री० | वह आये तो मैं जाऊँ। | आद बर'ओ होले एन कालोन। |
| | प्रा० | वह आये तो मैं जाऊँ। | अवड़ा बर'ओ होले इबड़ा कालो। |

**बहुवचन**

| पुरूष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | हमलोग आवें तो वे लोग जायें। | एम बर'ओम होले आर कालोर। |
| | स्त्री० | हमलोग आवें तो वे लोग जायें। | एम बर'ओम होले आर कालोर। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तुमलोग आओ तो हमलोग जाएँ। | नीम बर'ओर होले एम कालोम। |
| | स्त्री० | तुमलोग आओ तो हमलोग जाएँ। | नीम बर'ओर होले एम कालोम। |
| अन्य पुरूष | पु० | वे आयें तो हमलोग जाएँ। | आर बरनर नेक'आ होले नाम कालोत। |
| | स्त्री० | वे आयें तो हमलोग जाएँ। | आर बरनय नेक'आ होले नाम कालोत। |
| | प्रा० | वे आयें तो ये जाएँ। | अबड़ा बर'अन नेक'आ होले इबड़ा कालो। |

स्त्रीय बातचीत में उपर्युक्त क्रिया रूप ही बनते हैं।

## 4. विधि क्रिया (पेस-अर्जआना)

हिन्दी, अंग्रेजी, कुड़ुख़ और अन्य भाषाओं में भी आज्ञार्थक वाक्य होते हैं जिसमें आज्ञा पानेवाला हमेशा मध्यम पुरूष का सर्वनाम रहता है। ज्यादातर भाषाओं में मध्यम पुरूष का यह सर्वनाम गुप्त रहता है, अन्डरस्टुड रहता है। आज्ञार्थक वाक्य की क्रिया प्रायः वर्त्तमान काल में होती है किन्तु भविष्यतकाल में हो सकती है। जैसे-

| | |
|---|---|
| सावधानी से पढ़ियेगा/पढ़ोगे। | थिथाब'अर बचके। |
| असावधान मत रहियेगा/रहोगे। | बेबुता अमके र'आ। |

अब हम देखें कि पुरूष वर्ग द्वारा आज्ञा दिये जाने और स्त्री वर्ग द्वारा आज्ञा दिये जाने में क्या अन्तर है -

**पुरूष वर्ग का आज्ञा देना**

**1. पुलिंग, स्त्रीलिंग, एक वचन, बहु वचन, सबों को[39] :**

रहना — र'अना र'अके।

**2. स्त्रीलिंग एक वचन को :**

रहो, रहिये — र'अय।

**स्त्रीवर्ग का आज्ञा देना**

**1. पुलिंग, स्त्रीलिंग, एक वचन, बहुवचन, सबों को :**

रहना — र'अना, र'अके।

**2. पुलिंग दोनों वचन को छोड़कर सबों को :**

रहो, रहिये — र'आ।

**3. स्त्रीलिंग एकवचन को :**

रहो, रहिये — र'अय

**4. स्त्रीलिंग बहुवचन को :**

रहो, रहिये — र'ए।

'होना' (To be) सहायक क्रिया ('लगना') सहायक क्रिया 'होना'- 'लगना' का प्रयोग सामान्य वर्त्तमान काल, सामान्य भूतकाल में विशेष होता है। भविष्यत काल में इसका स्थान 'रअना' क्रिया ले लेती है तथा अस्तित्व और उपस्थिति- दोनों प्रकार के भावों को प्रकट करती है। यहाँ हम 'लगना' (होना) क्रिया की रूपावली प्रस्तुत कर रहे हैं। 'होना' और 'रहना'- दोनों एक ही हैं अर्थात् दोनों- में अन्तर नहीं है।

**1. सामान्य वर्तमान काल**

**पुरूष-पुरूष या पुरूष-स्त्री की बातचीत में[40] :**

**एकवचन**

| पुरूष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | मैं हूँ। | एन तलदन। |
| | स्त्री० | मैं हूँ। | एन तलेन। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तू है। | नीन तलदय। |
| | स्त्री० | तू है। | नीन तलदी। |
| अन्य पुरूष | पु० | वह है। | आस तलदस। |
| | स्त्री० | वह है। | आद तली। |
| | प्रा० | वे है। | अवड़ा तली। |

**बहुवचन**

| पुरूष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | हमलोग हैं। | नाम तलदत/एम तलदम। |
| | स्त्री० | हमलोग हैं। | एम तलेम/नाम तलदत। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तुमलोग है। | नीम तलदर। |
| | स्त्री० | तुमलोग है। | नीम तलदर। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| अन्य पुरूष | पु० | वे हैं। | आर तलनर। |
| | स्त्री० | वे हैं। | आर तलनर। |
| | प्रा० | वे हैं। | अबड़ा तली। |

**स्त्रियों की बातचीत में :**

| पुरूष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | मैं हूँ। | एन तलदन। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | तुम हो। | नीन तलदी। |
| अन्य पुरूष | पु० | वह है। | आस तलदस। |
| | स्त्री० | वह है। | आद तली। |
| | प्रा० | वह है। | अबड़ा तली। |

बहुवचन

| पुरूष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | हमलोग हैं। | एम तलदम। |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) | | हमलोग हैं। | नाम तलदत। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | तुमलोग हो। | नीम तलदर। |
| अन्य पुरूष | पु० | वे हैं। | आर तलनर। |
| | स्त्री० | वे हैं। | आर तलनर। |
| | प्रा० | वे हैं। | अबड़ा तली। |

**2. सामान्य भूतकाल**

**पुरूष-पुरूष या पुरूष-स्त्री की बातचीत में**

एकवचन

| पुरूष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | मैं रहा (था)। | एन लईक्कन। |
| | स्त्री० | मैं रही (थी)। | एन लगिय'अन। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तू रहा (था)। | नीन लईक्कय। |
| | स्त्री० | तू रही (थी)। | नीन लईक्किन। |
| अन्य पुरूष | पु० | वह रहा था। | आस लगियस। |
| | स्त्री० | वह रही थी। | आद लगिया। |
| | प्रा० | वह रहा/रही था/थी। | अबड़ा लगिया। |

बहुवचन

| पुरूष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | हमलोग रहे थे। | एम लईक्कम। |
| | स्त्री० | हमलोग रहे थे। | एम लगिय'अम। |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) | | हमलोग रहे थे। | नाम लईक्कत। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तुमलोग रहे थे। | नीम लईक्कर। |
| | स्त्री० | तुमलोग रहे थे। | नीम लईक्कर। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| अन्य पुरूष | पु० | वे रहे थे। | आर लगियर। |
| | स्त्री० | वे रहे थे। | आर लगियर। |
| | प्रा० | वे रहे/रही थे/थी। | अबड़ा लगिया। |

**स्त्रियों की बातचीत में**

**एकवचन**

| पुरूष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | मैं रही थी। | एन लगियि'अन। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तू रही थी। | नीन लईंक्किन। |
| अन्य पुरूष | पु० | वह रहा था। | आस लगियस। |
| | स्त्री० | वह रही थी। | आद लगिया। |
| | प्रा० | वह रहा/रही था/थी। | अबड़ा लगिया। |

**बहुवचन**

| पुरूष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | हमलोग रही थीं। | एम लईंक्कम या लगियि'अम। |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) | | हमलोग रहीं थी। | नाम लईंक्कत। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | तुमलोग रही थी। | नीम लईंक्कय। |
| अन्य पुरूष | पु० | वे रहे थे। | आर लगियर। |
| | स्त्री० | वे रही थी। | आर लगियर। |
| | प्रा० | वे रहे थे/रही थी। | अबड़ा लगिया। |

'हिकना' और 'तईंलना' क्रियाओं का अर्थ भी 'होना' ही है और यही अर्थ 'लगना' क्रिया का भी है। 'हिकदस' और 'तईलदस' प्रयोग आजकल ज्यादा व्यावहारिक बन गया है बनिस्पत् कि 'लगदस' की अपेक्षा।

## 6. अनास्तित्व का भाव

'न होना' 'Not to be'- 'मईंलना'। 'मईंलना' क्रिया ठीक 'हिकना' तथा 'तईंलना' क्रियाओं का विपरीतार्थक शब्द है। इसकी रूपावली सिर्फ सामान्य वर्त्तमान और सामान्य भूत कालों में होती है[41] अन्य कालों के लिए 'माल रअना' इसका स्थान ले लेता है।

### 1. सामान्य वर्त्तमान कालिक रूप : (अनास्तित्व का भाव)

**पुरूष-पुरूष या स्त्री-पुरूष की बातचीत में**

**एकवचन**

| पुरूष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | मैं नहीं हूँ। | एन मईंलदन। |
| | स्त्री० | मैं नहीं हूँ। | एन मईंलकन। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तू नहीं है। | नीन मईंलदय। |
| | स्त्री० | तू नहीं है। | नीन मइलदिन। |
| अन्य पुरूष | पु० | वह नहीं है। | आस मइेलदस। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | स्त्री० | वह नहीं है। | आद मल्ली। |
| | प्रा० | वह नहीं है। | अबड़ा मल्ली। |

बहुवचन

| पुरूष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | हमलोग नहीं हैं। | एम मईंलदम। |
| | स्त्री० | हमलोग नहीं हैं। | एम मईंलदम। |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) | | हमलोग नहीं हैं। | नाम मईंलदत। |
| मध्यम पुरूष | पु० | तुमलोग नहीं हो। | नीम मईंलदर। |
| | स्त्री० | तुमलोग नहीं हो। | नीम मईंलदर। |
| अन्य पुरूष | पु० | वे नहीं हैं। | आर मईंलनर। |
| | स्त्री० | वे नहीं है। | आर मईंलनर। |
| | प्रा० | वे नहीं है। | अबड़ा मल्ली। |

**स्त्रियों की बातचीत में**

एकवचन

| पुरूष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | मैं नहीं हूँ। | ऍन मईंल्लेन। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | तू नहीं है। | नीन मईंलदिन। |
| अन्य पुरूष | पु० | वह नहीं है। | आस मईंलदस। |
| | स्त्री० | वह नहीं है। | आद मल्ली। |
| | प्रा० | वह नहीं है। | आद मल्ली। |

बहुवचन

| पुरूष | | हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | हमलोग नहीं हैं। | ऍम मईंलदम। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | तुमलोग नहीं है। | नीम मईंलदर। |
| अन्य पुरूष | पु० | वे लोग नहीं हैं। | आर (अबड़य) मईंलदय। |
| | स्त्री० | वे नहीं है। | |
| | प्रा० | वे नहीं है। | अबड़ा मल्ली। |

## 7. संयुक्त क्रिया (जुदुरका अर्जआना)

कुड़ुख़ में कुछ ऐसी स्वतंत्र क्रियाएँ, जैसे- 'बे'एना(बि'इना)' ख़च्चना, लिंघना एरना आदि जो अन्य क्रियाओं की धातु या भूतकालिक रूप को अपने साथ लेती और संयुक्त क्रियाओं का गठन करती है। ऐसी क्रियाओं को संयुक्त क्रियाएँ कहते हैं।[42] जैसे-

| कुड़ुख़ | हिन्दी |
|---|---|
| ओण्ड ख़च्चना | खा डालना |
| ओन्दोर ख़च्चना | लेते आना |
| बरच लिंग्घना | आ लेना |
| किर्र एरना | लौटकर देखना, लौटने की कोशिश करना |

चेड्ड एरना ढोने की कोशिश करना आदि।

ध्यातव्य है कि इस प्रकार की क्रियाओं (संयुक्त क्रियाओं) में सिर्फ द्वितीय भाग की रूपावली होती है, पहले भाग की नहीं। जैसे-

| | |
|---|---|
| एन ओण्ड ख़च्चदन | मैं खा लेता (डालता) हूँ। |
| एन ओण्ड ख़च्चकन | मैंने खा लिया। |
| एन ओण्ड ख़च्चोन | मैं खा लूँगा। |

हिन्दी व्याकरण में संयुक्त क्रिया की परिभाषा निम्नवत् है-'जो क्रिया दो या दो से अधिक धातुओं के मेल से बनती है, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं। जैसे- घनश्याम रो चुका, किशोर रोने लगा, वह घर पहुँच गया' आदि।[43] नीचे 'बेएना' क्रिया की संयुक्त क्रिया के रूप में उपयोग द्रष्टव्य है-

| | |
|---|---|
| किर्रिम बे'एना (बि'इना) | चला जाना (जाते रहना) |
| बरचिम बे'एना (बि'इना)। | चला आना |
| एन किर्रिम (बि'इदन)। | मैं चला जाता हूँ। |
| नीन किर्रिम (बिइदय) | तू चला जाता है। |
| आस किर्रिम (बिइदस) | वह चला जाता है। |
| आद किर्रिम (बिई) | वह चली जाती है। |
| एम कालम लगदम | हमलोग चले जा रहे हैं। |
| नाम किर्रिम बिई'आ लगदत | हमलोग चले जा रहे हैं। |
| नीम किर्रिम बिई'आ लगदर | तुमलोग चले जा रहे हो। |
| आर किर्रिम बिई'आ लगनर | वे चले जा रहे हैं। |
| एन किर्रिम बिच्चका र'अदन | मैं चला गया हूँ। |
| नीन किर्रिम बिच्च्का र'अदय | तू चला गया है। |
| आस किर्रिम बिच्चका र'अदस। | वह चला गया है। |
| आद किर्रिम बिच्चकी र'ई। | वह चली गयी है। |
| एम किर्रिम बिच्चकम | हमलोग चले गये। |
| नाम किर्रिम बिच्चकत | हमलोग चले गये। |
| नीम किर्रिम बिच्चकर | तुमलोग चले गये। |
| आर (अबड़र) किर्रिम बिच्चयर | वे चले गये। |
| एम किर्रिम बिई'ओम | हमलोग चले जाएंगे। |
| नाम किर्रिम बिई'ओत | हमलोग चले जाएंगे। |
| आर किर्रिम बिई'ओर | वे चले जाएंगे। |
| नीम बरचिम बि'ईके | तुमलोग चले आना। |
| नीम किर्रिम बि'ईके | तुमलोग चले जाना। |
| नीम बरचिम बिई'आ | तुमलोग चले आओ। |
| नीम किर्रिम बिई'आ | तुमलोग चले जाओ। आदि |

## 8. यौगिक क्रिया (जोड़ा अर्जआना)

दो या दो से अधिक धातुओं और दूसरे शब्दों के संयोग से या धातुओं में प्रत्यय लगाने से जो क्रिया बनती है, उसे 'यौगिक क्रिया' कहा जाता है। जैसे- चलना-चलाना, हँसना-हँसाना आदि।[44]

कुड़ुख़ कत्था में दो स्वतंत्र क्रियाओं का एक साथ भी प्रयोग होता है जिन्हें यौगिक क्रियायें कहते हैं। ऐसी संयुक्त क्रियाओं के दोनों भागों की एक साथ रूपावलियाँ होती है। जैसे-

| | |
|---|---|
| (क) काना-बरना | आना-जाना |
| एन कादन-बरदन | मैं जाता-आता हूँ। |
| एन केरकन-बरचकन | मैं गया-आया। |
| एन काओन (कालोन)-बर'ओन | मैं आऊँगा-जाऊँगा।[45] |

**और उदाहरण :**

| | |
|---|---|
| चो'अना-ओक्कना | उठना-बैठना |
| बरना चप्पना | जल्दी आना |
| एरना-ख़ोजना | देखभाल करना आदि। |

## 9. प्रेरणार्थक क्रिया (पेसतआना अर्जआना)

प्रेरणार्थक क्रिया वह है जिससे प्रेरणा के द्वारा क्रिया का होना पाया जाय। जैसे- 'होक्कना' से 'ओकोत'अना' प्रथम और 'ओकोतत'अना' द्वितीय प्रेरणार्थक क्रियायें हैं। जहाँ अपने से काम न कर दूसरे के द्वारा काम करना या काम का होना पाया जाय उसे प्रथम प्रेरणार्थक और दूसरे व्यक्ति के द्वारा तीसरे से काम कराना या काम का होना पाया जाय, उसे द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।[46]

हिन्दी में प्रेरणार्थक क्रिया की परिभाषा इस प्रकार दी गयी है- 'जिन क्रियाओं से इस बात का बोध होता है कि कर्त्ता स्वयं कार्य न कर किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, वे 'प्रेरणार्थक क्रियायें' कहलाती है।' जैसे- काटना से कटवाना, करना से कराना आदि।[47] एक उदाहरण लें- मोहन मुझसे किताब लिखाता है। इस वाक्य में मोहन (कर्त्ता) स्वयं किताब न लिखकर 'मुझे' दूसरे को लिखने की प्रेरणा देता है। हिन्दी में भी कुड़ुख़ की द्वितीय प्रेरणार्थक जैसे- 'गिरना' क्रिया से 'गिराना' और 'गिरवाना' आदि प्रेरणार्थक होने पर अकर्मक क्रियायें भी सकर्मक बन जाती है।निम्नांकित कुछ प्रेरणार्थक क्रियाओं की रूपावली इस प्रकार की क्रिया की रूपगत विशेषता को दर्शाती है।

| मूल क्रिया | प्रे. क्रिया का साधारण रूप | धातु | विधिरूप | भूतकालिक रूप | हिन्दी अर्थ |
|---|---|---|---|---|---|
| अलखना | अलखत'अना | अलख | अलखत'आ | अलखताचा | हँसाना |
| | अलखतत'अना | अलख | अलखतत'आ | अलखततचा | दूसरे से हँसवाना |
| उरखना | उदखत'अना | उरुख | उरखत'आ | उरुखताचा | निकलवाना |
| | उरखतत'अना | उरुख | उरखतत'आ | उरुखतताचा | दूसरे से निकलवाना |
| एमना | एमत'अना | एमत | एमत'आ | एमताचा | नहलवाना |
| | एमतत'अना | एमत | एमत'आ | एमतताचा | दूसरे से नहलवाना |
| ओगना | ओंगत'अना | ओंग | ओंगतत'आ | ओगताचा | तैरवाना |
| | ओंगतत'अना | ओंग | ओगत'आ | ओंगतताचा | दूसरे से तैरवाना |
| ओक्कना | ओक्कत'अना | ओक्क | ओक्कत'आ | ओक्कताचा | बैठवाना |
| | ओक्कत'अना | ओक्क | ओक्कत'आ | ओक्कतताचा | दूसरे से बैठवाना |
| उइना | उइत'अना | उइत | उइतत'आ | उइतताचा | रखवाना |
| | उइतत'अना | उइत | उइतत'आ | उइतताचा | दूसरे से रखवाना |
| एजना | एजत'अना | एजत | एजत'आ | एजताचा | जगवाना |
| | एजतत'अना | एजत | एजतत'आ | एजतताचा | दूसरे से जगवाना |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कमना | कमत'अना | कमत | कमतत'आ | कमताचा | बनवाना |
| | कमतत'अना | कमत | कमतत'आ | कमतताचा | दूसरे से बनवाना |
| केबना | केबत'अना | केबत | केबत'आ | केबताचा | गाली दिलवाना |
| | केबतत'अना | केबत | केबतत'आ | केबतताचा | दूसरे से गाली दिलवाना |
| चिइना | चीत'अना | चीत | चीत'आ | चीताचा | दिलवाना |
| | चीतत'अना | चीत | चीतत'आ | चीतताचा | दूसरे से दिलवाना |

**10. वाच्य की क्रियायें 'फुर्चाचका' अर्जआना**

क्रिया के उस परिवर्तन को 'वाच्य' कहते हैं जिसके द्वारा इस बात का बोध होता है कि वाक्य के अन्तर्गत कर्त्ता, कर्म अथवा भाव- इनमें से किसकी प्रधानता है; इनमें किसके अनुसार क्रिया के पुरूष, वचन आदि आए हैं।[48] हिन्दी की भाँति कुड़ुख़ कत्था में भी वाच्य के तीन प्रकार होते हैं।

1. ननु फुर्चाचका (कर्तृ वाच्य) 2. ननरऊ फुर्चाचका (कर्म वाच्य) 3. मनहे फुर्चाचका (भाव वाच्य)

**1. ननु फुर्चाचका (कर्तृ वाच्य) :** जिस वाक्य में कर्त्ता की प्रधानता हो, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं।[49] जैसे-

| | |
|---|---|
| एन टटख़ा मोख़ा लगदन। | मैं आम खा रहा हूँ। |
| नीन अम्म ओना लगदय। | तू/तुम पानी पी रहे हो। |
| झरियो एड़पा किरकी रहचा। | झरियो घर गयी थी। |

**2. ननरऊ फुर्चाचका (कर्म वाच्य) :** जिस वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन और पुरूष किये जाने वाले कर्म के लिंग वचन के अनुसार होते हैं उसे कर्मवाच्य कहते हैं। जैसे-

| | |
|---|---|
| एन पौलुसती ल'ओरदन। | मैं पौलुस द्वारा मारा जाता हूँ। |
| नीन ल'ओरदय। | तू मारे जाते हो। |
| आस ल'ओरदस। | वह मारा जाता है। |

**3. मनहे फुर्चाचका (भाव वाच्य) :** जब वाक्य की क्रिया के लिंग, वचन और पुरूष कर्त्ता अथवा कर्म के लिंग, वचन और पुरूष के अनुसार न होकर एकवचन, पुलिंग तथा अन्य पुरूष हो तब भावे प्रयोग होता है। जैसे-

| | |
|---|---|
| मुझसे चला नहीं जाता। | एंगन ती मल एकता र'ई। |
| उससे पढ़ा नहीं जाता। | आस ति मल बचता र'ई। |
| तुमसे हँसा नहीं जाता। | निगहय ति मल अलखतर'ई। |

नीचे क्रिया की कुछ रूपावली प्रस्तुत की जा रही है, जो वाच्य स्तर पर क्रिया की रूपगत विशेषता की परिचायक है :-

| **मूल क्रिया** | **कर्मवाच्य के लिए क्रिया का साधारण रूप** | **धातु** | **विधिरूप** | **भूतकालिक रूप** | **पूर्णकालिक रूप** | **अर्थ** |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बीसना | बीसिरना | बीसर | बीसर'आ | बीसरा | बीसरका | बेचा जाना |
| बीसितारना | बीसर | बीसतार'आ | बीसतारा | बीसतारका | | |
| पोसना | पोसरना | पोस | पोसतार'आ | पोसरा | पोसोरका | पाला जाना |
| पोसतारना | पोस | पोसतार'आ | पोसतारा | पोसतारका | पाला जाना | |
| मेख़ना | मेख़रना | मेख़ | मेख़र'आ | मेख़रा | मेख़रका | बुलाया जाना |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मेख़तारना | मेख़ | मेख़तार'आ | मेख़तारा | मेख़तारका | बुलाया जाना | |
| मोख़ना | मोख़रना | मोख़ | मोख़र'आ | मोख़रा | मोख़रका | खाया जाना |
| मोख़तारना | मोख़ | मोख़तार'आ | मोख़तारा | मोख़तारका | खाया जाना | |
| नोड़ना | नोड़रना | नोड़ | नोड़र'आ | नोड़रा | नोड़रका | |
| नोड़तारना | नोड़ | नोड़तार'आ | नोड़तारा | नोड़तारका | | धोया जाना |

**भाववाच्य के लिए क्रियाओं के उदाहरण**

| मूल क्रिया | कर्मवाच्य के लिए क्रिया का साधारण रूप | धातु | विधिरूप | भूतकालिक रूप | पूर्णकालिक रूप | अर्थ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अलखना | अलखरना | अलख | अलखर'आ | अलखरा | अलखरका | हँसाया जाना |
| अलखतारना | अलख | अलखतार'आ | अलखतारा | अलखतारका | | |
| उज्जना | उज्जरना | उज्ज | उज्जतार'आ | उज्जतारा | उज्जरका | जिलाया जाना |
| उज्जतारना | उज्ज | उज्जतार'आ | उज्जतारा | उज्जतारका | | |
| अंड़सना | अंड़सरना | अंड़स | अंड़सर'आ | अंड़सरा | अंड़सरका | पहुँचाया जाना |
| अंड़सतारना | अंड़स | अंड़सतार'आ | अंड़सतारा | अंड़सतारका | | |
| एथेरना | एथेररना | एथेर | एथेरर'आ | एथेररा | एथेरका | दीखना जाना |
| एथेरतारना | एथेर | एथेरतार'आ | एथेररा | एथेररका | | |
| ख़न्दरना | ख़न्दरना | ख़न्दर | ख़न्दरर'आ | ख़न्दररा | ख़न्दरका | सुलाया जाना |
| ख़न्दरतारना | ख़न्दर | ख़न्दरतार'आ | ख़न्दरतारा | ख़न्दरतारका | सुलाया जाना | |
| बरना | बररना | बर | बरर'आ | बर्रा | बरचका | आया जाना |
| बरतारना | बर | बरतार'आ | बरतारा | बरतारका | | |

विभिन्न प्रकार की क्रियाओं की सूची अपार है। जिन सबकी रूपावली प्रस्तुत करना सम्भव नहीं है। उदाहरण और नमूने के रूप में कुछ रूपावली प्रस्तुत की गयी है जो इस पुस्तक के लिए यथेष्ट है। उपर्युक्त उदाहरणों और नमूनों में हमने पाया है कि क्रिया की रूपावली में जितनी सारी भिन्नताएँ हैं, उससे कहीं अधिक क्रिया की विशिष्टताएँ हैं और ये विशिष्टताएँ ही क्रिया के महत्व को संकेतित करती है। क्रियाओं के बहुरूप इसकी महत्ता को बढ़ा देते हैं और व्याकरणिक कोटियों के अन्दर क्रिया को सर्वोत्कृष्ट दर्जा प्रदान करते हैं।

अब तक हमने क्रिया की रूपगत विशेषताओं पर प्रकाश डाला है। अनन्तर हम क्रिया की अर्थगत विशेषताओं पर प्रकाश डालने जा रहे हैं। क्रिया के प्रयोग वैभिन्न ही क्रिया की अर्थगत विशेषताओं को उजागर कर देते हैं। एक ही क्रिया के विभिन्न अर्थ; एक ही क्रिया के विभिन्न व्याकरणिक कोटियों में प्रयोग क्रिया के अर्थ की विशेषताएँ बताते हैं।

## 2. क्रिया की अर्थगत विशेषताएँ

क्रिया का सर्वप्रमुख प्रकार्य (कार्य) विधेय- स्थान की आपूर्ति है। व्याकरणिक स्थानों की पूति के आधार पर क्रिया का नामकरण किया जाता है तथा वाक्य या उपवाक्य में कौन-कौन स्थान पर क्रियायें आ सकती है। वह भी स्पष्ट होता है। हिन्दी के उपवाक्यों में, विस्तार-क्षेत्र की दृष्टि से कम से कम दो और अधिक से अधिक पाँच अनिवार्य स्थान हो सकते हैं। जिन्हें इस प्रकार व्यवस्थित कर सकते हैं-

1. कर्त्ता
2. विधेय
3. कर्म (विधेय स्थान पर यदि सकर्मक क्रिया है)
4. कर्तृपूरक (कर्त्ता के विषय में यदि आवश्यक जानकारी देना है।)
5. कर्मपूरक (कर्म के विषय में यदि आवश्यक जानकारी देना है।)

इसके अतिरिक्त वैकल्पिक स्थान निम्न हो सकते हैं-

**1. विशेषक** – कर्ता, कर्म और पूरक के विषय में अतिरिक्त सूचना देने के लिए।

**2. क्रिया-विशेषक** – विशेष स्थान पर प्रयुक्त क्रिया के सम्बन्ध में अतिरिक्त सूचना देने के लिए।[50]

विधेय-स्थान पर क्रिया अनिवार्य संरचक के रूप में प्राप्त होती है। वाक्य-उपवाक्य में प्रयोग के आधार पर क्रियायें दो वर्गों में विभक्त होती है- समापिका और असमापिका। जब क्रियायें वाक्य-उपवाक्य में विधेय स्थान की पूरक बनकर आती है, तो समापिका प्रकार की होती है और जब क्रिया-स्थान से हटकर संज्ञा या विशेषण या क्रिया विशेषण के स्थान पर आकर तादृश्य प्रकार्य (कार्य) करने लगती है तो असमापिका प्रकार बन जाती है।

हिन्दी की शब्द-साधक व्यवस्था में प्रकार्य के आधार पर क्रिया-रूपों को संज्ञा, विशेषण और क्रिया-विशेषण शब्द-वर्गों के अन्तर्गत विभाजित किया जा सकता है। रूप-साधक व्यवस्था में प्राप्त क्रिया-रूप उपवाक्य में विधेय-स्थान पर आते हैं और कुछ विशेष प्रकार की रचनात्मक प्रवृत्तियों से प्रभावित है जबकि संज्ञा, विशेषण और क्रिया-विशेषण शब्दों की भाँति प्रकार्य करने वाले क्रिया-रूप कुछ दूसरे प्रकार की रचनात्मक प्रवृत्तियों से प्रभावित हैं।[51]

वाक्य/उपवाक्य में प्रयुक्त क्रिया अपने स्थान के आधार पर भिन्न-भिन्न प्रकार्य करती है। क्रिया के इसी गुण को इसकी अर्थगत विशेषता मानी जा सकती है। प्रत्येक हिन्दी और कुड़ुख़ दोनों की क्रियाओं के अन्त में 'ना' प्रत्यय जुड़ा होता है। यह क्रिया का रूप है। लेकिन जब अपने 'ना' प्रत्यय के साथ क्रिया उपवाक्य के कर्त्ता-स्थान पर प्रयुक्त होती है, तो वह संज्ञा वन जाती है। इसी प्रकार वाक्य/उपवाक्य में अन्य जगहों पर प्रयुक्त होकर कभी विशेषण तो कभी क्रिया-विशेषण भी बन जाती है। बाह्य रूप तो क्रिया का ही रहता है किन्तु उसका अर्थ क्रिया से भिन्न या तो संज्ञा, विशेषण या क्रिया-विशेषण का हो जाता है। अब वाक्य/उपवाक्य के निश्चित स्थानों के आधार पर क्रियाओं का प्रकार्य सोदाहरण स्पष्ट किया जा रहा है।

**1. क्रिया कर्त्ता-स्थान पर संज्ञा के रूप में रह सकती है** – क्रिया की धातु में जब 'ना' प्रत्यय जुट जाता है और क्रिया संज्ञा के रूप में प्रकार्य करने लगती है, तो वह कृदन्ती संज्ञा हो जाती है। इस कृदन्ती संज्ञा का प्रयोग जब कर्त्ता के रूप में होता है तो उस क्रिया का प्रकार्य संज्ञा का हो जाता है और प्रकार्य ही क्रिया की अर्थगत विशेषता का कारण बनता है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है-

| | |
|---|---|
| 1. **टहलना** स्वास्थ्यबर्द्धक है। | **कुद्दना** काया गे दव तली। |
| 2. दिन में **सोना** लाभकारी नहीं है। | उल्ला बीरि **ख़न्दरना** दव मल्ली। |
| 3. ऐसा **सोचना** उचित नहीं है। | एन्ने **घोखना** कोड़े मल्ली। |
| 4. उसका **पढ़ना** सार्थक हो गया। | आस गहि **बचना** कोड़े मन्जा केरा। |

उपर्युक्त वाक्यों में 'टहलना, सोना, सोचना तथा पढ़ना' कृदन्ती संज्ञा है और वाक्य में कर्त्ता के स्थान पर प्रयुक्त है।

**2. क्रिया विधेय- स्थान पर क्रिया के रूप में** – वास्तव में विधेय-स्थान पर प्रयुक्त होनेवाली क्रियायें ही समापिका क्रियायें हैं। वाक्य/उपवाक्य में मात्र विधेय स्थान ही है जहाँ केवल क्रियायें ही आ सकती है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है-

| | |
|---|---|
| 1. सीता गीत गाये। | सीता डण्डी पांड़न। |
| 2. सुधा पत्र लिखती है। | सुधद चिठी टूड़ी। |
| 3. उसने पुस्तक पढ़ी। | आस पुथिन बचचस। |
| 4. मुग्धा बाजार जायेगी। | मुग्धा पेठ कालो। |
| 5. चोर भाग गया। | ख़लबस वोंगस। |
| 6. मैं गीत गाता रहा। | एन डण्डीन पांड़तेम रहचकन। |
| 7. पेड़ काटा जा रहा है। | मन्न खंडतार'आ लगी। |
| 8. गीता रो रही है। | गीतद चींख़ा लगी। |

उपर्युक्त रेखांकित क्रियायें समापिका प्रकार की है जो विधेय स्थान पर प्रयुक्त हुई है। क्रिया का असली रूप यहाँ होता है।

**3. क्रिया कर्म- स्थान पर संज्ञा-रूप में भी आ सकती है**-क्रिया का यह रूप और प्रकार्य भी कृदन्ती संज्ञा का है। प्रायः 'करना' तथा 'चाहना' सकर्मक क्रियाओं के साथ ही कर्म स्थान पर क्रियायें कृदन्ती संज्ञा के रूप में प्राप्त होती है। यहाँ भी क्रिया का मूल रूप ही रहता है। यथा-

| | |
|---|---|
| मधु ने नाचना शुरू किया। | **मधुद** नलना ओरे नन्जा। |
| रीता घूमना बन्द करेगी। | **रीता** कुद्दना अम्बो। |
| मैं जीना चाहता हूँ | **एन** उज्जा बेद्दन/एंगा उज्जा तुक्की। |
| उसने उठना चाहा। | **आस** चो'आ बीद्दियस। |

स्पष्ट है कि कर्म स्थान पर केवल क्रियाओं का कृदन्ती संज्ञा-रूप ही प्रयुक्त होता है। उपर्युक्त उदाहरणों में शुरू/'बन्द+कर' के योग से संरचित मिश्र क्रिया-पदवन्धों के कर्म के रूप में असमापिका प्रकार की क्रियायें कृदन्ती संज्ञा बनकर आ सकती है।

**4. कर्तृपूरक स्थान पर विशेषण - रूप में क्रिया का आगम** - क्रियाओं के कृदन्ती रूप विशेषणवत् प्रकार्य करते हुए भी देखे जाते हैं। यथा-

| | |
|---|---|
| विल्ली **मरी** (हुई) पड़ी है। | केच्चका बेरख़ा मड़रकी र'ई। |
| झरना **बहता** (हुआ) दिखाई पड़ता है। | सुती बहनुम एथर'आ लगी। |
| विमल **भागता** (हुआ) आता है। | विमलस वोंगनुम बरदस। |
| पुलिस **गलियाते** (हुए) चले गए। | पुलिसर केबेरते चइल केरर। |
| लड़का **पढ़ा** (हुआ) है। | कुक्कोस बचचका र'अदस। |

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि असमापिका प्रकार की क्रियायें विशेषणों की भाँति प्रकार्य करती हुई कर्तृपूरक का स्थान ग्रहण कर रही है। यहाँ इन कृदन्ती विशेषणों का विधेयात्मक प्रयोग है जो पूरक स्थान रूप में है।

**5. कर्म-पूरक स्थान पर क्रिया का प्रयोग विशेषणवत्**-कर्मपूरक स्थान पर भी क्रियाओं का विशेषणवत् प्रकार्य देखा जा सकता है। उदाहरण द्रष्टव्यः-

| | |
|---|---|
| उसने रूपया गिरा देखा। | **आस** ढिबा खतरका ईरयस। |
| माधुरी ने अठन्नी पड़ी देखी। | **माधुरी** अठन्निन मड़ारका ईरया। |
| जिलाधीश ने भवन बना देखा। | **जिलाधीसस** एड़पा कमरका ईरयस। |
| व्याधा ने चिड़िया मरी पायी। | **व्याधस** ओड़न केच्चका ख़खियस। |
| हमलोगों ने साँप मरा पाया। | **एम नेर्रन** केच्चका ख़क्खिकम। |

इन उदाहरणों में असमापिका क्रियाओं का विधेयात्मक विशेषणों की भाँति प्रकार्य है। ये कर्म-पूरक बनकर कर्म के बाद में आ रही है।

**6.विशेषक-स्थान पर क्रिया विशेषण के रूप में अपना अर्थग्रहण करती है। उदाहरण द्रष्टव्य-**

**1. कर्त्ता के पूर्व :**

| | |
|---|---|
| **सोता** लड़का जाग पड़ा। | **ख़न्दर'ऊ** कुक्कोस एजेर ख़च्चियस। |
| **भागी** लड़की लौट आयी। | **बोंका** पेल्लो किर्र बरचा। |
| सोते छात्र जाग पड़े। | ख़न्दर'ऊ बचतुड़ियर एजेर ख़च्चियर। |

**2. कर्म के पूर्व :**

| | |
|---|---|
| उसने **भागते** घोड़े को पकड़ा। | आस **बोंग्गना** घोड़ोन धरचस। |
| मैंने **मरा** साँप देखा। | एन **केच्चका** नेर्रन ईरकन। |
| उसने **मरी** चिड़िया देखी। | आस **केच्चका** ओ-ड़न ईरियस। |
| मैंने **सोता** लड़का देखा। | एन **ख़न्दर'ऊ** कुक्कोसिन ईरकन। |

**7. क्रिया का प्रयोग क्रिया** – विशेषक स्थान पर क्रिया विशेषण रूप में किसी वाक्य या उपवाक्य में क्रिया, क्रिया विशेषक-स्थान पर क्रिया-विशेषण रूप में भी समापिका क्रिया के पूर्व आ सकती है। इस स्थान पर आनेवाली क्रिया के निरपेक्ष रूप (लिंग, वचन, कारक से अप्रभावित) मिलते हैं। इन निरपेक्ष रूपों को कार्य/क्रिया के कालत्व तथा पूर्णत्व/अपूर्णत्व के आधार पर निम्न वर्गों में विभक्त किया जा सकता है-

**1. पूर्णकालत्वबोधक :-**

| | |
|---|---|
| उसने **पत्र लिखकर** भेजा। | आस चिठी **टूड़र** तइय्यस। |
| तुम **दौड़कर** आये। | नीन **बोंगते** बरचकय। |
| मैं **सोकर** जागा। | एन **ख़न्दर'अर** एजेरकन। |
| मैंने पत्र **फाड़कर** फेंका। | एन चिठीन **चर्रर** हेबिड़कन। |
| विभा खाना **खा** आयी। | विभा मण्डी **ओनर** बरचा। |
| अभिषेक बाजार **जाकर** आया। | अभिषेकस पेठ **कालर** बरचस। |

इन वाक्यों में 'लिखकर, दोड़कर, सोकर, फाड़कर, खा, जाकर' पूर्वकालिक क्रियायें हैं। ये पूर्वकालिक क्रियायें क्रिया विशेषक स्थान पर आयी है, अतः इन्हें क्रिया-विशेषण के रूप में स्वीकार किया जाता है। पूर्वकालिक होने के चलते यह पूर्णकालत्वबोधक हैं।

**2. तत्काल बोधक-यथा**

| | |
|---|---|
| मैं **सुनते ही** चौंक गया। | एन **मेनतेम** अकचकरकन। |
| वह **आते ही** बैठ गया। | आस **बरतेम** ओक्का ख़च्चियस। |
| माधवी **बैठते ही** बोली। | माधवी **ओक्कतेम** बाचा। |
| बूढ़ा **उठते ही** गिर पड़ा। | पचगिस **चो'अतेम** खतर ख़चियस। |

इन उदाहरणों में 'सुनते ही, आते ही, बैठते ही तथा उठते ही' से क्रिया की तात्कालिकता का बोध होता है।

**3. अपूर्ण कार्यत्वबोधक**-कार्य पूरा होते-होते रह गया, पूर्ण न हो सका- क्रिया से संरचित क्रिया विशेषण ही अपूर्ण कार्यत्वबोधक है। उदाहरण :-

| | |
|---|---|
| मैं **पढ़ते-पढ़ते** उठ पड़ा। | एन **बचते-बचते** चोच ख़च्चिकन। |

| | |
|---|---|
| वह **सोते-सोते** जग गया। | आस **खंदरते-खंदरते** एजेर ख़च्चियस। |
| मिताली **बैठते-बैठते** रूक गयी। | मिताली **ओक्कते-ओक्कते** मल ओक्किया। |
| वह **लिखते-लिखते** चौंक पड़े। | आस **टूड़ते-टूड़ते** अकचकरस केरस। |

**4. पूर्णकार्यत्व बोधक** :- क्रिया से निर्मित क्रिया-विशेषण जो कार्य के पूरा हो जाने का बोध कराये। उदाहरण -

| | |
|---|---|
| वह **बैठे-बैठे** सो गया। | आस **उक्कम-उक्कम** ख़ंदरस केरस। |
| वह **खोये-खोये** चलते रहे। | आस **घोखते-घोखते** एकते रहचस। |
| हम **पड़े-पड़े** देखते रहे। | एन **बेड़िरका-बेड़िरकम** एरते रहचकन। |
| पौदान से **लटके-लटके** हम स्टेशन पहुँच गए। | खेड्ड मड़ाबअना नु **लटिख़का-लटिख़कम** स्टेशन अंड़िसकन। |

अब तक के प्रस्तुत सारे उदाहरणों से पता चलता है कि क्रिया की व्याप्ति/उपवाक्य में अनिवार्य और वैकल्पिक दोनों प्रकार के स्थानों तक है। क्रियाओं की इस व्याप्ति को निम्न सूत्र से स्पष्ट किया जा सकता है- ±वि०+कर्त्ता±वि०+कर्म+वि०/क्रि०वि०+क्रिया[52]

## 2. उपवाक्य प्ररूप

वाक्यों और उपवाक्यों की संरचना क्रियाओं पर निर्भर है। उपवाक्य किस प्रकार का होगा, यह क्रिया ही निश्चित करती है। उपवाक्य में समापिका क्रियाओं के नियमन के अनुरूप आंतरिक संरचना मिलती है। क्रिया ही उपवाक्य या वाक्य को अकर्मक और सकर्मक प्ररूप प्रदान करती है।

**1. अकर्मक प्ररूप**-इस प्ररूप के दो भेद हैं-

**क. कर्तृ निरपेक्ष**-इस प्रकार के उपवाक्यों में यथार्थ कर्त्ता न आकर कर्म-कर्तृ कर्त्ता आता है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है-[53]

| | |
|---|---|
| पेड़ कटता **है**। | मन्न खंडरिई। |
| बिस्तर बँध **रहा है**। | पिटकिचरी हेरआ लगी। |
| खाई पटेगी। | ढोढ़ा भठरओ। |
| पत्ते गिरते **हैं**। | अतख़ा खतरई। |
| पानी बरसा **था**। | चेंप पुंइकी रहचा। |
| घास उग **आई**। | घासी कुन्द बरचा। |

**ख. कर्त्तृ सापेक्ष**-

| | |
|---|---|
| **लड़का भागता** है। | कुक्कोस बोंगदस। |
| **मोहन खेला**। | मोहनस बिच्चियस। |
| **किशन चला** था। | किशनस चलरका रहचस। |
| **रीता बैठेगी**। | रीता ओक्को। |
| **बच्चा सोया**। | ख़द्दस ख़ंदरओस। |
| **लड़के हँस पड़े**। | ख़द्दर अलखा हेल्लरर। |
| **गोविन्द रो दिया**। | गोविन्दस चींख़यस चिच्चस। |

**उपर्युक्त** कर्तृ निरपेक्ष और कर्तृ सापेक्ष प्ररूपों के अन्तर्गत कर्त्ता और क्रिया- दो संरचक आये **हैं जो अकर्मक** प्ररूप के लक्षण हैं। किन्तु गत्यर्थक क्रियाओं के साथ जब गन्तव्य कर्म आ जाता है तो संरचकों की संख्या अकर्मक-प्ररूप में भी तीन हो जाती है। उदाहरण-

| | |
|---|---|
| दिनेश घर जाता है। | दिनेसस एड़पा कादस। |
| रमेश विद्यालय आता है। | रमेशस लुरकुड़िया बरदस। |
| किशन बाजार चलेगा। | किसनस पेठ कालोस। |

**2. सकर्मक प्ररूप**–इस प्रकार के उपवाक्य में सकर्मक क्रियाओं का प्रयोग अनिवार्य है और उपवाक्य संरचकों की संख्या तीन- कर्त्ता, कर्म और क्रिया- होती है। उदाहरण –

| | |
|---|---|
| **श्याम** ने लड़के को **पीटा**। | **श्यामस** कुक्कोसिन **पस्सस**। |
| **गोविन्द** घोड़े को **बाँधता** है। | **गोबिन्दस घोड़ोन खुटदस।** |
| **रीता** ने रमेश को देखा। | **रीतद रमेशसिन ईरया।** |
| **घोड़ा** घास **खाता** है। | **घोड़ो घासी मूख़ी।** |

**3. द्विकर्मक प्ररूप** – द्विकर्मक क्रियाओं से युक्त उपवाक्य में चार संरचक (कर्त्ता, कर्म गौण कर्म मुख्य और क्रिया) होते हैं।

| | |
|---|---|
| **मोहन दिनेश** को **पुस्तक देता** है। | **मोहनस दिनेशस** गे **पुथिन चि'अदस।** |
| लड़के ने **मित्र को रूपये भेजे।** | **कुक्कोस संगियासगे ढिबा तइय्यस।** |

**4. प्रेरणार्थक प्ररूप–**

**क. प्रथम प्रेरणार्थक–**

| | |
|---|---|
| रमेश ने पत्थर गिराया। | रमेशस पखन टिड्डस। |
| गोविन्द चक्की चलाता है। | गोविन्दस चक्की चलाव'अस। |
| रमेश सुरेश से पत्र लिखायेगा। | रमेश सुरेशती चिठी टुड़तो'ओस। |
| मैंने गोविन्द से बिस्तर बँधाया। | एन गोविन्दसती पिटकिचरी हेताचकन। |
| वह नौकर से पेड़ कटाता है। | आस जोंख़स ती मन्न खंडत'अदस। |

**ख. द्वितीय प्रेरणार्थक–**

| | |
|---|---|
| राम प्रकाश से विस्तर बँधवाता है। | रामस प्रकाशसती पिटकिचरी हेत'अदस। |
| किशन नौकर से पेड़ कटवायेगा। | किशनस जोंख़स ती मन्न खंडतोअस। |

**5. वाच्चीय प्ररूप–**

**क. कर्म वाच्चीय प्ररूप–**

| | |
|---|---|
| **मसाला कूटा जाता है।** | **मसाला ख़ोंसतार'ई।** |
| **साँप मारा जाता है।** | **नेर्र लवतार'ई।** |
| पेड़ उखाड़ा गया। | मन्न चड़तारा। |

**ख. भाव वाच्चीय प्ररूप–**

| | |
|---|---|
| मुझसे चला नहीं जाता है। | एंगहय ती मल एकतार'ई |
| किशन से चलते नहीं बनता है। | किसनसति एकते मल बन'ई। |
| रीता से चला जाता है। | रीताति एकतार'ई। |
| लड़कों से उठते नहीं बनेगा। | कुक्कोर ति चो'अते मल बन'ओ। |

**6. विधि प्ररूप–**

| | |
|---|---|
| लड़के को सोना है/सोना चाहिए। | कुक्कोसगे ख़न्दरना र'ई/ख़न्दरना चाड़ र'अई। |
| तुमको बिस्तर बाँधना है/बाँधना चाहिए। | नीन्गागे पिटकिचरी हे'अना र'ई/हे'अना चाड़ र'ई। |
| मुझको पुस्तक पढ़ना है/पढ़ना चाहिए। | एन्गागे पुथि बचना र'ई/बचना चाड र'ई। |

**7. प्रवृत्ति प्ररूप-**

| | |
|---|---|
| वह जाया करता है। | आस ति कालतार'ई। |
| हम चला करते हैं। | एंगनति एकतार'ई। |
| वच्चे दूध पिया करते थे। | ख़द्दरती दूधि ओनतार'ई। |
| मैं व्यवस्था देखा करूँगा। | एन सराजमा नलख़ एरा कुद्दोन। |
| तुम पेड़ काटा करते थे। | नीन मन्नन खंडना नलख नना लइकय। |

इस प्रकार हम देखते हैं कि क्रिया अर्थगत विशषताओं से परिपूर्ण है और वाक्य/उपवाक्य संरचना में उसके अर्थ वैभिन्य रूप वैभिन्य का ही योगदान है।

बहुत सारी ऐसी भी क्रियायें हैं जिनके अर्थ में भी बहुरूपता है अर्थात् एक ही क्रिया के एक से अधिक अर्थ होते हैं। जैसे-'सोना' इसका अर्थ 'सुतना' भी है और सोना (द्रव्य) भी है; (पानी) का अर्थ 'जल, चमक और इज्जत' भी है।

## सन्दर्भ-सूची


1. हिन्दी प्रयोग : श्री रामचन्द्र वर्मा, पृ०-47, (डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, पृ-14)
2. भाषण का अंश : क्षेत्रेशचन्द्र चट्टोपाध्याय, 6-7, अगस्त, 1949, (दिल्ली में अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा व्यवस्था परिषद्)
3. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-11
4. कुडुख़ कत्था बिल्ली-टूडुस-पी०सी० बेकूस, प्रकाशक-सत्य भारती, पोस्ट बॉक्स-2, राँची-834001 द्वितीय संस्करण 1983, पृ०-131
5. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-128
6. वही, पृ०-129
7. कुडुख़ कत्था बिल्ली-टूडुस-पी०सी० बेकूस, प्रकाशक-सत्य भारती, पोस्ट बॉक्स-2, राँची-834००1 द्वितीय संस्करण 1983, पृ०-132-133
8. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-129
9. कुडुख़ कत्था बिल्ली-टूडुस-पी०सी० बेकूस, प्रकाशक-सत्य भारती, पोस्ट बॉक्स-2, राँची-834001 द्वितीय संस्करण 1983, पृ०-133
10. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-128
11. कुडुख़ कत्था बिल्ली-टूडुस-पी०सी० बेकूस, प्रकाशक-सत्य भारती, पोस्ट बॉक्स-2, राँची-834001 द्वितीय संस्करण 1983, पृ०-134
12. वही, पृ०-139
13. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-128

14. कुड़ुख़ कत्था विल्ली-टूडुस-पी०सी० बेकूस, प्रकाशक-सत्य भारती, पोस्ट बॉक्स-2, राँची-834001 द्वितीय संस्करण 1983, पृ०-143
15. वही, पृ०-143-144
16. वही, पृ०-144
17. वही, पृ०-145
18. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-128
19. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-128
20. वही, पृ०-128
21. कुड़ुख़ कत्था बिल्ली-टूडुस-पी०सी० वेकूस, प्रकाशक-सत्य भारती, पोस्ट बॉक्स-2, राँची-834001 द्वितीय संस्करण 1983, पृ०-132
22. वही, पृ०-151
23. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-129
24. वही, पृ०-129
25. वही
26. कुड़ुख़ कत्था बिल्ली-टूडुसं - पी०सी० बेकूस, प्रकाशक-सत्य भारती, पोस्ट बॉक्स-2, राँची-834001 द्वितीय संस्करण 1983, पृ०-157
27. वही, पृ०-154
28. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-129
29. कुड़ुख़ कत्था विल्ली-टूडुस-पी०सी० बेकूस, प्रकाशक-सत्य भारती, पोस्ट बॉक्स-2, राँची-834001 द्वितीय संस्करण 1983, पृ०-162
30. वही, पृ०-133
31. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-129
32. वही
33. कुड़ुख़ कत्था विल्ली-टूडुस-पी०सी० बेकूस, प्रकाशक-सत्य भारती, पोस्ट बॉक्स-2, राँची-834001 द्वितीय संस्करण 1983, पृ०-132-133
34. वही, पृ०-166
35. वही, पृ०-167
36. वही, पृ०-171
37. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-129
38. वही
39. कुड़ुख़ कत्था बिल्ली-टूडुस-पी०सी० बेकूस, प्रकाशक-सत्य भारती, पोस्ट बॉक्स-2, राँची-834001 द्वितीय संस्करण 1983, पृ०-194-195

40. वही, पृ०-195
41. वही, पृ०-204
42. वही, पृ०-213
43. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-129
44. वही, पृ०-123
45. कुड़ुख़ कत्था बिल्ली-टूड्डुस-पी०सी० बेकूस, प्रकाशक-सत्य भारती, पोस्ट बॉक्स-2, राँची-834००1 द्वितीय संस्करण 1983, पृ०-214
46. वही, पृ०-218
47. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-123
48. वही, पृ०- 127
49. कुड़ुख़ कत्था बिल्ली-टूड्डुस-पी०सी० बेकूस, प्रकाशक-सत्य भारती, पोस्ट बॉक्स-2, राँची-834001 द्वितीय संस्करण 1983, पृ०-232
50. हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना-डॉ० भोलानाथ तिवारी, साहित्य सहकार, दिल्ली 110051 प्रथम संस्करण-1986, पृ०-43-44
51. वही, पृ०-4
52. वही, पृ०-48
53. वही, पृ०-49

❖❖

## अध्याय : पाँच

# संरचना तथा स्वरूप

**सामान्य संरचना** : संयुक्त क्रिया की रचना दो क्रियाओं के योग से होती है जिनमें से पहली क्रिया धातु रूप में होती है और दूसरी में पक्ष, वृत्ति तथा काल-रूप प्रत्यय जुड़ते हैं। पहली क्रिया कोशीय अर्थ व्यक्त करती है और कोशीय क्रिया कहलाती है। दूसरी क्रिया, जिसे रंजक कहते हैं कोई स्वतंत्र अर्थ नहीं व्यक्त करती, बल्कि पहली क्रिया के ही अर्थ को मात्र विकसित- सीमित या रंजित करती है।[1] जैसे-

| | |
|---|---|
| कर लेना, भाग जाना, फेंक देना, | नन्ज लिघना, बोंगना काना, हेबेड़ना चि'अना, |
| रो पड़ना, उतर जाना, आदि। | चींख़ा ख़च्चना, एत्त बरना, एन्नेम। |

इन उदाहरणों में प्रयुक्त 'लेना, जाना, देना, पड़ना, आना' का अन्यत्र अपना स्वतंत्र कोशीय अर्थ होता है, लेकिन संयुक्त क्रियाओं में रंजक क्रियाओं के रूप में प्रयुक्त होने पर ये अपने मूल कोशीय अर्थ से विहीन हो जाती है जिसे 'कोशीय रिक्तता' या व्याकरणी करण कहा जाता है।

डॉ० पी०सी० वेकस ने अपनी पुस्तक 'कुड़ुख़-कत्था बिल्ली' में संयुक्त क्रिया (जुटुरका अर्जआना) की परिभाषा निम्न प्रकार से दी है-"कुड़ुख़ में कुछ ऐसी स्वतंत्र क्रियाएँ, जैसे : बे'एना (बिइना) ख़च्चना, लिंघना, एरना आदि जो अन्य क्रियाओं की धातु या भूतकालिक रूप को अपने साथ लेती और संयुक्त क्रियाओं का गठन करती है। ऐसी क्रियाओं को संयुक्त क्रियाएँ कहते हैं।" जैसे-

| | |
|---|---|
| बरचिम बि'इना | चला जाना |
| ओण्ड ख़च्चना | खा डालना |
| बरच लिंघना | आ लेना |
| किर्र एरना | लौटकर देखना, लौटने की कोशिश करना |
| चेड्ड एरना[2] | ढोने की कोशिश करना |

डॉ० वेकस ने आगे कहा है : इस प्रकार की संयुक्त क्रियाओं में सिर्फ द्वितीय भाग की रूपावली होती है, पहले भाग की नहीं। जैसे-

| | |
|---|---|
| एन ओण्ड ख़च्चदन | मैं खा लेता (डालता) हूँ। |
| एन ओण्ड ख़ईच्चकन | मैंने खा लिया। |
| एन ओण्ड ख़च्चोन[3] | मैं खा लूँगा। |

डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद ने संयुक्त क्रिया की निम्न परिभाषा दी है- "जो क्रिया दो या दो से अधिक धातुओं के मेल से बनती है, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।"[4] जैसे-

| | |
|---|---|
| घनश्याम रो चुका। | धनश्यामस चींख़ा मुंजियस। |
| किशोर रोने लगा। | किशोरस चींख़ा हेल्लरस। |
| वह घर पहुँच गया। | आस एड़पा अड़िसियस केरस। |

उक्त उदाहरणों में रेखांकित क्रियाएँ संयुक्त क्रियाएँ हैं। विधि और आज्ञा को छोड़कर सभी क्रियापद दो या अधिक क्रियाओं के योग से बनते हैं, किन्त संयुक्त क्रियाएँ इनसे भिन्न है, क्योंकि जहाँ एक ओर साधारण क्रियापद 'हो, रो, सो, खा' इत्यादि धातुओं से बनते हैं, वहाँ दूसरी ओर संयुक्त क्रियाएँ 'होना, आना, जाना, रहना, रखना, उठाना, लेना, पाना, पड़ना, डालना, सकना, चुकना, लगना, करना, भेजना, चाहना' इत्यादि क्रियाओं के योग से बनती है।[5]

डॉ० मातावदल जायसवाल ने अपने 'मानक हिन्दी का ऐतिहासिक व्याकरण' में संयुक्त क्रिया की परिभाषा निम्न प्रकार से दी है- जब दो प्रधान क्रियाएँ मिलकर एक क्रिया का निर्माण करती है तब इस प्रकार निर्मित क्रिया को संयुक्त क्रिया की संज्ञा दी जाती है। संयुक्त क्रिया में प्रधान क्रिया प्रथम कृदन्तीय क्रिया होती है। दूसरी क्रिया गौण हो जाती है। प्रथम कृदन्तीय क्रिया का अर्थ ही प्रधान होता है। जब प्रथम कृदन्तीय क्रिया की प्रधानता न होकर दूसरी क्रिया की प्रधानता हो जाए तो वहाँ संयुक्त क्रिया का निर्माण नहीं होता। जैसे-'दौड़ गया, भाग आया' में 'गया और आया' का प्रधान अर्थ है। अतएव 'दौड़ गया' में 'दौड़कर गया' इस प्रकार 'जाना' क्रिया प्रधान हो गयी, दौड़ना नहीं।

संयुक्त क्रियायें अकर्मक और सकर्मक- दोनों होती है।[6] उदाहरणार्थ-

**अकर्मक**

| | | | |
|---|---|---|---|
| लेट जाना | बेड़रिम बि'इना | गिर पड़ना | खतर ख़च्चना |

**सकर्मक**

| | | | |
|---|---|---|---|
| बेच लेना | बीसकन चिच्चकन | काम करना | नलख नन्ना |
| वुला लेना | एड़ेच्च लिंघना | मार देना आदि | पिटा ख़च्चना। |

ऊपर संयुक्त क्रिया की जितनी परिभाषाएँ दी गयी हैं, उनसे संयुक्त क्रिया की यह विशेषता स्पष्ट परिलक्षित होती है कि उसकी पहली क्रिया प्रायः प्रधान होती है और दूसरी उसके अर्थ में विशेषता उत्पन्न करती है, उसे रंजित करती है। जैसे- मैं पढ़ सकता हूँ।

इसमें 'सकना' (ओंगना) क्रिया 'पढ़ना' (बचना) क्रिया के अर्थ में विशेषता उत्पन्न करती है।

उपर्युक्त सारी परिभाषाओं से ध्वनि निकलती है कि संयुक्त क्रिया उद्भव और अस्तित्व कोशीय क्रिया तथा रंजक 'विशेषक' क्रिया के संयोग और सहयोग से होता है भले ही कोशीय क्रिया ही मूल क्रिया रहती हो।

कोशीय क्रियाओं की संख्या तो अनगिनत है किन्तु रंजक क्रियाओं की संख्या अधिकतम 23-24 हैं (हिन्दी भाषा व्याकरण में)। कुड़ुख़ भाषा में तो इससे भी कम रंजक क्रियायें हैं। मेरी मान्यता है कि कुड़ुख़ में भी हिन्दी भाषा में रंजक क्रियाओं की संख्या जैसी ही रंजक क्रियाओं की संख्या हो सकती है। हिन्दी में जिन रंजक क्रियाओं की आवृत्ति सबसे ज्यादा होती है, वे निम्नवत् है और कुड़ुख़ में भी उनके समक्ष अंकित रंजक क्रियायें हैं।

| | |
|---|---|
| जाना (भाग जाना)[7] | काना (वोंगना काना) |
| लेना (कर लेना) | हो'अना (नंज हो'अना) |
| देना (फेंक देना) | चि'अना (हेबेड़ना चिइ'अना) |
| आना (उतर आना) | बरना (एत्त बरना) |
| पड़ना (रो पड़ना) | ख़च्चना (चींख़ा ख़च्वना) |
| उठना (काँप उठना) | चो'अना (असर चो'अना) |
| बैठना (कर बैठना) | ओक्कना (नंज ओक्कना) |
| डालना (कर डालना) | लिंघना (नंज लिंघना) |

इनके अतिरिक्त अपेक्षाकृत अधिक सीमित प्रयोगों में प्रचलित कुछ अन्य रंजक क्रियायें भी हैं, जिनमें प्रमुख है-

| | |
|---|---|
| निकलना (बढ़ निकलना) | उरूखना (मुंधारे उरूखना) |
| मारना (छान मारना) | वेद्दना (बेद्दा कुद्दना) |
| मरना (जा मरना) | खे़'अना (खे़'आ काना) |
| छोड़ना (बना छोड़ा) | अम्बना (कम'अर अम्बना) |

संयुक्त क्रिया का एक प्रमुख लक्षण है रंजक क्रिया के साथ इसकी सह प्रयोगात्मकता अर्थात् कोशीय क्रिया की धातु के साथ रंजक क्रियाओं का साथ-साथ प्रयोग खासकर सकर्मक क्रियाओं के साथ।

## विशिष्ट संरचना

सामान्य संयुक्त क्रियाओं के अलावा कुछ विशिष्ट संयुक्त क्रियायें भी हैं जनकी संरचना कुछ भिन्न है। इन विशिष्ट संयुक्त क्रियाओं के अन्तर्गत (1) अतिवाची संयुक्त क्रियायें (2) सातत्य पक्षयुक्त संयुक्त क्रियायें तथा क्रम विपर्यय-युक्त संयुक्त क्रियायें आती हैं।

**1. अतिवाची संयुक्त क्रियायें**-तात्कालिकता या तीव्रता का भाव व्यक्त करने के लिए संयुक्त क्रिया के प्रथम घटक में 'या,ये' जोड़कर अतिवादी संयुक्त क्रियायें बनती है तथा द्वितीय घटक (रंजक क्रियाओं) में नित्यता का पक्ष 'ता' या सातत्य पक्ष 'रहा' तथा वर्तमान कालिक चिन्हक है जुड़ते हैं।[8] जैसे-

| | |
|---|---|
| मैं अभी फोन किये देता हूँ/किया देता हूँ (सकर्मक) | एन अक्कुन फोन ननिम/ननम चि'अदन। |
| मैं खुद देखे लेता हूँ/देख लेता हूँ (सकर्मक) | एन एनिम ए-र लिंघदन। |
| उसका दिल बैठा जाता है/बैठे जाता है (अकर्मक) | आसगहि जिया उक्कनिम काली। |
| दुश्मन चढ़ा आ रहा है/चढ़े आ रहा है (अकर्मक) | दोकहर अरगनुम बर'आ लगनर। |

**2. सातत्य पक्षयुक्त संयुक्त क्रियायें**-संयुक्त क्रिया के प्रथम घटक 'कोशीय क्रिया की धातु' के बाद सातत्य पक्ष 'रहा' तथा उसके बाद त्रिकालिक चिन्हक ('यथा है' था तथा गा अपने किसी रूप में) का प्रयोग होता है। उदाहरणार्थ-

| | |
|---|---|
| वह सभी सामान फेंक रहा है (फेंक दे रहा है)। | आस हुरमी आलोन हेबड़ा लगदस(हेबड़ा चि'आ लगदस)। |
| वह सब सामान फेंक दे रहा है(सकर्मक) | आस जमा आलोन हिबड़िम चि'आ लगदस (सकर्मक) |
| लड़की पानी पिये जा रही है(सकर्मक) | कुके अम्म उन्नुम काला लगी (सकर्मक) |
| बच्ची भूख से मरी जा रही है/मरे जा रही है। (अकर्मक) | ख़द्द कीड़ा ति खे'आ काला लगी। (अकर्मक) |
| उसका दिल बैठा जा रहा है/बैठे जा रहा है। (अकर्मक) | आस गहि जिया ओक्का का लगी/ ओक्कते काला लगी। (अकर्मक) |

**3. क्रम-विपर्यय**-आक्रोश या वेग का भाव व्यक्त करने में संयुक्त क्रिया के दोनों घटकों में क्रम विपर्यय सम्भव होता है। यथा-

| | | | |
|---|---|---|---|
| पटक देना | दे पटकना | पटक'आ चि'अना | चि'आ पटक'आ |
| खींच देना | दे खींचना | नतगना चि'अना | चि'आ नतगा |
| उड़ चलना | चल उड़ना | उढ़ियर काना | काल उढ़ियारना |
| मार देना | दे मारना | पसना चि'अना | चि'आ पस'ऊा। |

संयुक्त क्रियाओं में पहली क्रिया ही अपना कोशीय अर्थ व्यक्त करती है, दूसरी क्रिया 'रंजक क्रिया' अपना स्वतंत्र कोशीय अर्थ खो देती है, जैसे 'आ जाना' 'रो पड़ना' में 'आना' तथा 'पड़ना' क्रियाओं के स्वतंत्र कोशीय अर्थों का लोप हो जाता है।[9]

संयुक्त क्रिया के दूसरे घटक यानी रंजक क्रिया में नकारात्मकता का अभाव होता है किन्तु इसके दो अपवाद हैं-

1. अप्रत्यक्ष आज्ञार्थक '-ना', 'इएगा' के साथ-ऐसे वाक्यों में 'मत' या 'न' का प्रयोग प्रायः संयुक्त क्रिया के दोनों घटकों के बीच या पूर्व में होता है।[10] जैसे-

| | |
|---|---|
| किताब खो मत देना। | पुथिन एबस'आ अमके चि'आ। |
| बीच में न चले जाना। | मजही नुम अमके चइल का'ला। |
| हमें भूल मत/न जाइएगा। | एंगन मोधर'आ अमके का'ला। |

2. 'कहीं', 'जब तक न' 'क्यों नहीं' अगर ..... न लिया तथा दुहरी नकारात्मकता आदि से युक्त भावों में-

**उदाहरण-**

| | |
|---|---|
| कहीं वे हमें देख न ले। | एकसऽ्आनुम आर नमन अम्वन ए-रन। |
| तुम क्यों नहीं सो जाते। | नीन एन्देरगे मल ख़ँदरदय कादय। |
| जब तक पुलिस न आ जाए। | ए गुटी पुलिस मल बर'ओ। |
| तब तक हम यहाँ से नहीं हटेंगे। | आ गुटी एन इसतेक मल गुच्छर'ओन। |
| अगर तुम्हें पकड़ न लिया तो मेरा नाम जग्गू नहीं। | अगर निंगन मल धरच ख़च्चकन होले एंगहय नामे जग्गु मल्ली। |
| कोई कारण नहीं कि तुम पकड़े न जाओ। | इन्दरिइम कत्था मल्ला का नीन मल धरारओय। |

नकारात्मकता का अभाव संयुक्त क्रियाओं का एक वर्गगत लक्षण है।

संयुक्त क्रिया के कर्त्ता के साथ 'ने' का प्रयोग तभी संभव है, जब संयुक्त क्रिया के दोनों घटक सकर्मक हों। जैसे-

| | |
|---|---|
| उसने कागज फेंक दिया। | आस कागदन हिबिड़ियस चिच्चस। |
| उसने हिसाब ले लिया। | आस हिसाब ले होच्चस। |
| वह चल दिया। | आस चलरस चिच्चस। |
| उसने हँस दिया। | आस अलखियस चिच्चस। |

पहले और दूसरे वाक्यों की संयुक्त क्रियायें- 'फेंकना-देना' तथा 'लेना-देना' सकर्मक क्रियायें हैं, इसलिए उनके कर्त्ता के साथ कारक की ने विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

तीसरे वाक्य में 'चलना' अकर्मक है यद्यपि 'देना' सकर्मक है फिर भी 'ने' का प्रयोग नहीं हुआ है क्योंकि दोनों सकर्मक नहीं है।

चौथे वाक्य में 'हँसना-देना' भी (अकर्मक-सकर्मक) ऐसा ही है किन्तु यहाँ अपवाद-स्वरूप 'में' का प्रयोग हुआ है।

## संयुक्त काल और संयुक्त क्रिया में अन्तर

संयुक्त काल में एक प्रधान कृदन्ती क्रिया और 'होना' सहायक क्रिया के संयोग से काल रचना होती है। संयुक्त काल आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं की आधुनिक अवस्था की प्रमुख विशेषता है- आ० भा० आ० के आदिकाल (पृथ्वीराज रासो) में ये प्रयोग नाम मात्र का ही मिलते हैं। कबीर ग्रंथावली

में संयुक्त काल के पर्याप्त प्रयोग प्राप्त होते हैं। संयुक्त काल दो वर्गों में विभाजित किये जा सकते हैं-1. वर्तमान कालिक कृदन्त - सहायक क्रिया और भूतकालिक कृदन्त + सहायक क्रिया।[11]

कृदन्ती काल होने के कारण कारक के लिंग परिवर्तन से क्रिया रूपों में भी लिंग परिवर्तन हो जाता है। संयुक्त काल के अन्तर्गत- 1. अपूर्ण वर्तमान निश्चयार्थ 2. अपूर्ण भूत निश्चयार्थ 3. अपूर्ण भूत संभावनार्थ 4. अपूर्ण भविष्य निश्चयार्थ 5. पूर्ण वर्तमान निश्चयार्थ 6. पूर्ण भूत निश्चयार्थ 7. पूर्ण वर्तमान सम्भवनार्थ 8. पूर्ण भूत संभावनार्थ भेद आते हैं।

प्राचीन मानक (हिन्दी देहलवी) मध्यकालीन मानक, हिन्दी 'हिन्दवी' से जैसे-जैसे हम आधुनिकता की ओर आते हैं, वैसे-वैसे संयुक्त कालों का प्रयोग बढ़ता जाता है। संयुक्त क्रिया का आरम्भ अपभ्रंश काल से ही हो गया था। जैसे-जैसे हम प्राचीनता से आधुनिकता की ओर आते हैं, वैसे-वैसे संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग बढ़ता जाता है। आज संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग मानक हिन्दी क्रिया रचना की प्रमुख विशेषता है। संयुक्त काल वर्णन के पूर्व संयुक्त क्रिया के सम्बन्ध में काफी कुछ कहा जा चुका है।यहाँ हम संयुक्त काल के उपर्युक्त आठो रूपों-भेदों से उदाहरण प्रस्तुत करेंगे।

**1. अपूर्ण वर्तमान निश्चयार्थ**[12]

| | |
|---|---|
| कुछ भी मैं नहीं जानता हूँ। | एन्दरन हूँ एन बलदन। |
| हम छाल छिलके चूसते हैं। | एम चोपला बोकलन चीपदम। |
| अल्पज्ञ और असहाय मनुष्य को डर लगता है। | जोक्क अखऊ अरा बेसहड़ा आलर गे इलिचका लग्गी। |

**2. अपूर्ण भूत निश्चयार्थ**[13]

| | |
|---|---|
| मैं भी उसे अलौकिक समझता था। | एन हूं अदिन मेर्खा कत्था बुझुर'आ लइक्कन। |
| वे मुझसे अच्छी अंग्रेजी समझते थे। | आस एंगनति बढ़िया अंग्रेजी बुझर'आ लगियस। |
| उसे वह घर दिया जहाँ सूअर बाँधते थे। | आसगे आ एड़पन चिच्वस एक्काइया किस्सन मंखा लगियर। |

**3. अपूर्णभूत संभावनार्थ**

| | |
|---|---|
| यदि तू भगवान को इस मंदिर में बिठाया। | अगर नीन धर्मेसिन इ मंदिर नु ओकत्ताचका र'अना होले। |
| होता तो फिर वह अशुद्ध क्यों रहता | मन्ना होले आद मलकोड़े एन्देरगे र'ओ पहें। |

**4. अपूर्ण भविष्य निश्चयार्थ**

| | |
|---|---|
| आप शायद जानते होंगे। | मना ऊँग्गी नीन अख़दय होतन। |
| इसलिए गृहस्थाश्रम का सारा सुख जाता रहेगा। | ओंगे एड़पा पली ता हुरमी सुक्खे कालत र'ओ। |

**5. पूर्ण वर्त्तमान निश्चयार्थ**

| | |
|---|---|
| हमलोगों ने उसे अपनी आँखों से देखा है। | एम आसिन तंगआ ख़न्नति इरका र'अदम। |
| अमृत जब पिया है, विष भी पियूँगा। | अमृतन अगर ओण्डका र'अदन बिक्खन हूँ ओनोन। |

**6. पूर्णभूत निश्चयार्थ**

| | |
|---|---|
| उन्होंने जिस रात बिजली को देखा था। | आस एका माखा विजलिन इरका रहचस। |
| जिसको मैं ने समझा था। | नेकन एन बुझरका रहचकन। |
| मैंने निज वचन अन्त तक पाला था। | एन तंगआ लेक्खा मुंजा गूटि कत्थन पोसका रहचकन। |

**7. पूर्ण वर्त्तमान संभावनार्थ**

पार्वती उस पर अवश्य प्रसन्न हुई होगी। पारबत्ती आस मंइय्या मानिम खुसमारा होत'ई।
मुश्किल से मेरे मुँह से ये शब्द निकलेंगे। अकय चिंहुट ति एंग्हय बई ति इ बक्क उरखो।

**8. पूर्ण भूत संभावनार्थ :-**

घटा घिर आई होती। बदाली घेर'ओ चि'ओ पहें।
बैठी होती। उक्की रहचा होले।

उपर्युक्त आठों संयुक्त काल-भेदों के उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि सामान्य (साधारण) काल भेद से ये संयुक्त काल और संयुक्तकाल भेद भिन्न हैं। इन उदाहरणों से यह भी स्पष्ट होता है कि संयुक्त क्रिया और संयुक्त काल दोनों भिन्न चीजें हैं। इन्हें अभिन्न समझना एक महत् व्याकरणिक भूल होगी।

## संयुक्त क्रियाओं की विविधता

संयुक्त क्रियायें वैविध्यपूर्ण है। मोटा-मोटी इनकी विविधता के 11 (ग्यारह) प्रकार हैं,[14] जो निम्नवत है-

**1. आरम्भ बोधक :-** जिस संयुक्त क्रिया से क्रिया के आरम्भ होने का बोध होता है उसे आरम्भ बोधक संयुक्त क्रिया कहते हैं। जैसे-

वह पढ़ने लगा। आस बच'आ हेल्लरस।
पानी बरसने लगा। चेंप पुंइया हेल्लरा।
राम खेलने लगा। रामस बे-चा हेल्लरस।

**2. समाप्ति बोधक :-** जिस संयुक्त क्रिया से मुख्य क्रिया की पूर्णता, व्यापार की समाप्ति का बोध हो, वह समाप्ति बोधक संयुक्त क्रिया है। जैसे-

वह खा चुका है। आस ओन्ड लिंघचका र'अस।
वह पढ़ चुका है। आस बचच लिंघचका र'अस।

धातु के आगे 'चुकना' जोड़ने से समाप्ति बोधक संयुक्त क्रियायें बनती है।

**3. अवकाश बोधक**-जिससे क्रिया को निष्पन्न करने के लिए अवकाश का बोध हो, वह 'अवकाश बोधक संयुक्त क्रिया' है। जैसे-

वह मुश्किल से सोने पाया। आस चिहुंट ति खंदर'आ उंगियस।
मैं जाने न पाया। एन काला पोलकन।

**4. अनुमतिबोधक**-जिससे कार्य की अनुमति दिए जाने का बोध हो वह 'अनुमति बोधक संयुक्त क्रिया' है। जैसे-

मुझे जाने दो। एंगन काला चि'आ।
मुझे बोलने दो। एंगन ब'आ चि'आ।

यह क्रिया 'देना' धातु के योग से बनते हैं।

**5. नित्यता बोधक**-जिससे कार्य की नित्यता, उसके बन्द न होने का भाव प्रकट हो, वह 'नित्यता बोधक संयुक्त क्रिया' है। जैसे-

हवा चल रही है। ताका तागर'आ लगी।
पेड़ बढ़ता गया। मन्न परदनुम केरा।

मुख्य क्रिया के आगे 'जाना' या 'रहना' जोड़ने से नित्यता बोधक संयुक्त क्रिया बनती है।

**6. आवश्यकता बोधक**-जिससे कार्य की आवश्यकता या कर्त्तव्य का बोध हो, वह 'आवश्यकता बोधक संयुक्त क्रिया' है। जैसे-

| | |
|---|---|
| यह काम मुझे करना पड़ता है। | ई नलख एंगा नंन्ना मनी। |
| तुम्हें यह काम करना चाहिए। | निंगा ई नलखन नन्ना चाही। |

साधारण क्रिया के साथ 'पड़ना होना या चाहिए' क्रियाओं को जोड़ने से आवश्यकता बोधक संयुक्त क्रियायें बनती है।

**7. निश्चय बोधक** : जिस संयुक्त क्रिया से मुख्य क्रिया के व्यापार की निश्चयता का बोध हो, उसे 'निश्चय बोधक संयुक्त क्रिया' कहते हैं। जैसे-

| | |
|---|---|
| उसने कहा मैं मार बैठूँगा। | आस बाचस एन ल'ओन चि'ओन। |
| वह गिर पड़ा। | आस खतर ख़च्चियस। |
| अब दे ही डालो। | अक्कु चिच्चिम ख़च्चा। |

इस प्रकार की क्रिया में 'नित्यता' और 'पूर्णता' का भाव वर्त्तमान रहता है।

**8. इच्छाबोधक** :- इससे क्रिया के करने की इच्छा प्रकट होती है। जैसे-

| | |
|---|---|
| वह घर आना चाहता है। | आस एड़पा बर'आ बेद्दस। |
| मैं खाना चाहता हूँ। | एन ओना बेद्दन। |

क्रिया के साधारण रूप में 'चाहना' क्रिया जोड़ने से इच्छा बोधक संयुक्त क्रियायें बनती है।

**9. अभ्यासबोधक** :- इससे क्रिया के करने के अभ्यास का बोध होता है। सामान्य भूतकाल की क्रिया में 'करना' क्रिया लगाने से अभ्यासबोधक संयुक्त क्रिया बनती है। जैसे-

| | |
|---|---|
| वह पढ़ा करता है। | आस बच'आ नन्दस। |
| तुम लिखा करते हो। | नीन टूड़ा नन्दय। |
| मैं खेला करता हूँ। | एन बेचा नन्दन। |

**10. शक्ति बोधक** :- इससे कार्य करने की शक्ति का बोध होता है। जैसे-

| | |
|---|---|
| मैं चल सकता हूँ। | एन ए-का ओंगदन। |
| वह बोल सकता है। | आस कच्छनखर'आ ओंगदस। |

शक्तिबोधक के लिए 'सकना' क्रिया जोड़ी जाती है।

**11. पुनरूक्त संयुक्त क्रिया** :- जब दो समानार्थक अथवा समान ध्वनिवाली क्रियाओं का संयोग होता है, तब उन्हें 'पुनरूक्त संयुक्त क्रिया' कहते हैं। जैसे-

| | |
|---|---|
| वह पढ़ा-लिखा करता है। | आस बचतेम र'अस। |
| वह यहाँ प्रायः आया-जाया करता है। | आस इसन बराबइर कानुम-बरनुम र'अस। |
| पड़ोसियों से बराबर मिलते-जुलते रहो। | चाली बली ता आलर गने कालते-बरते र'आ। |

## सहायक क्रिया

सहायक क्रिया मुख्य क्रिया के अर्थ को स्पष्ट और पूरा करने में सहायक होती है। सहायक क्रियाओं के हेर-फेर से क्रिया का काल बदल जाता है। जैसे-

| | |
|---|---|
| वह खाता है। | आस मोख़दस। |
| मैंने पढ़ा था। | ए-न बचचका रहचकन। |
| तुम जगे हुए थे। | नीन एजेरकम रहचकय। |
| वे सुन रहे थे। | आर मेना लगियर। |

इन उदाहरणों में खाना, पढ़ना, जगना तथा सुनना (ओन्ना, बचना, एजेरना, अरा मेन्ना) मुख्य

त-रह -

चुक-रख -

ता+ (रह-, चल-, जा-, आ-, चला-, आ-, चला-, जा)

या+ 'रह', कर, चाह

ने+ ('लग-' वाला (है) को (है), जा रह-

## प्रमुख सहायक पक्ष चिन्हकों का मूल्य विश्लेषण

**सहायक पद चिन्हक उदाहरण**

| | | |
|---|---|---|
| **1. या-रह-** | मोहन दिनभर लेटा रहा। | मोहनस भइर उल्ला बिडिरका रहचस। |
| **(अवस्थान्त)** | दुकानें बहुत देर तक खुली रहीं। | दोकान अनहत गहड़ी कोलरकिम रहचा। |
| | सीता हमेशा लाल साड़ी पहने रहती है। | सीतद हुरमी बीरी ख़ेंसो सड़ी कूरकिम र'ई। |
| | वह सोया रहता है। | आस ख़ंदरतेम र'अदस। |
| | वह सोया (हुआ) रहता है। | आस ख़ंदरकम र'अदस। |
| **2. ता-रह-** | वह दिनभर लिखता रहता है। | आस भइर उल्ला टूड़नूम र'अदस। |
| **(प्रक्रियान्त)** | मैं आधे घंटे तक दौड़ता रहा। | एन अधा घंटा गूटि बोंगनुम रहचकन। |
| **अवस्था** | वह दिन भर बैठा रहता है। | आस भइर उल्ला उक्कम र'अदस। |
| | जग्गू हमेशा पिए रहता है। | जग्गुस हुरमी बीरी ओण्डकम र'अदस। |
| | वह बार-बार बैठता रहता है। | आस घड़ी-घड़ी ओक्कते र'अदस। |
| **आवृत्ति** | जग्गू हमेशा पीता रहता है। | जग्गुस हुरमी बीरी ओन्तेम र'अदस। |
| | आपका नाम सूची में लिखा हुआ रहेगा। | निंगहय नामे तरपाँति नु टूड़का र'ओ। |
| **3. या-कर-** | मैं पैदल स्कूल जाया करता था। | एन एकनुम लुरकुड़िया काला लइक्कन। |
| **(अवृतिका** | यहाँ एक मंदिर हुआ करता था। | इसन ओन्टा मंदिर र'आ लगिया। |
| **विस्तार)** | वह अपनी पत्नी को बहुत चाहता था। | आस तंगहय आलिन पक्का पइतार'आ लगियस। |
| | यहाँ एक मंदिर हुआ करेगा। | इसन ओन्टा मंदिर र'ओ। |
| | काली स्याही से लिखा कीजिए। | मोख़ारो सियाहीति टूड़के। |
| **4. ता-आ-/जा-** | | |
| (अवधिपरक) | वह पढ़ता आ रहा है। | आस बचनुम बर'आ लगदस। |
| | वह कई सालों से पढ़ता जा रहा है। | आस लेरा बच्छरति बचनुम कालगदस। |
| स्वाभाविक- | तुम कब तक पढ़ते जाओगे? | नीन ए गूटि बचनुम कालोय। |
| | तुम कब तक पढ़ते आओगे? | नीन ए गूटि बचते बर'ओय। |
| **5. -ता चल-ता चला आ-/जा- :-** | | |
| | वह पढ़ता चला आ रहा है। | आस बचनुम चइल बर'आ लगदस। |
| | ऐसा होता चला आया है। | एन्ने मनते चइल बरचकी र'ई। |
| | लोग यहाँ फूल चढ़ाते आ रहे हैं। | आलर इसन पूँप अरगअते बर'आ लगनर। |
| | वह बढ़ता चला आएगा। | आस मुन्धारे चइल बर'ओस। |
| | वह पढ़ता चला जा रहा है। | आस बचते चइल काला लगदस। |

**6. चुक**

| | |
|---|---|
| वह खाना खा चुका है। | आस मण्डी ओण्ड लिंघचका र'अस। |
| वह खाना खा चुका तब मैं पहुँचा। | आस मण्डी ओण्ड लिंघचस ख़ने एन अड़िसकन। |

'चुक' का प्रयोग नकारात्मक, आज्ञार्थक तथा सातत्य परक वाक्यों में सम्भव नहीं। यदि वाक्य संदर्भीकृत हो तो नकारात्मक आदि परिवेशों में इसका प्रयोग संभव है। इसी प्रकार संयुक्त क्रियाओं के साथ भी 'चुक' का प्रयोग संगत नहीं।''[18] देखिए-

| | |
|---|---|
| मैं खाना नहीं खा चुका (नकारात्मक) | एन मण्डी मल ओण्ड लिंघिचकन। |
| खाना खा चुको (आज्ञार्थक) | मण्डी ओण्ड लिंघ'आ। |
| मैं खाना खा चुक रहा हूँ (सातत्य) | एन मण्डी ओण्ड लिघ'आ लगदन। |
| अगर वह जा न चुकी हो तो उसे रूकवा लेना। | अगर आद अरगी काल लिघ'आ होले र'आ चि'आ। |
| मैं आपकी बात भूल जा चुका हूँ। | एन निंगहय कत्थन मोघोर ख़इच्चका र'अदन। |

उदाहरण चार को छोड़ किसी वाक्य का नकारात्मक रूप स्वीकार्य नहीं है।

**'रख'-**

| | |
|---|---|
| मैं ने यह फिल्म देख रखी है। | एन इ फिलमन एर लिंघचका र'अदन। |
| मैं दिन में लेट चुका हूँ। | एन उल्ला बीरिम बिडिर ख़इच्चका र'अदन। |

रख का प्रयोग सामान्यतः सकर्मक क्रियाओं के साथ ही संभव है, अकर्मक क्रियाओं के साथ नहीं। जैसे-

| | |
|---|---|
| मैंने दिन में लेट रखा है। | एन उल्ला बीरिम बेडेर ख़इच्चकादन। |

**8. ने लग-**

| | |
|---|---|
| वह खाने लगा। | आस ओना हेल्लरस। |

अगर वह रोने न लगे तो मुझे कहना (सन्दभीकृत) अगर आस चींखा मल हेल्लरस होले एंगन बअके। सामान्य नकारात्मक तथा आज्ञार्थक परिवेश में 'न लग' का प्रयोग संभव नहीं। उदाहरण-1. वह नहीं खाने लगा, 2. वह नहीं खाना खाने लगा- ऐसे वाक्य नहीं होते :

**9. ने वाला (है) /-ने को (है)**

| | |
|---|---|
| गाड़ी छूटने वाली है। | गड़ी अम्बर'आ बेद्दा लगी। |
| गाड़ी छूटने को है। | गड़ी अम्बरना बेसे र'ई। |

**10. ने जा रहा है-**

वह मेरा नाम काटने ही जा रहा था क मैं वहाँ पहुँच गया।

इस प्रकार की रचना को - 'मैं खाने के लिए जा रहा हूँ' वर्ग की रचना से भिन्न समझना चाहिए।

**11. या चाहता (है)**

| | | |
|---|---|---|
| अचेतन में प्रयोग | चार बजा चाहते हैं। | नाख़ बज'आ बेद्दी। |
| | बारिश हुआ चाहती है। | चेंप पुंइया बेद्दी। |
| चेतन में प्रयोग | मोहन खाया चाहता है। | मोहनस ओना बेद्दस। |
| सम्भव नहीं | डॉक्टर बोला चाहते थे। | डाक्टरस ब'आ बेद्दस। |

सहायक क्रियाओं के निम्नांकित प्रकार हो सकते हैं।

1. **वर्त्तमान निश्चयार्थ–**[19]

**उदाहरण :**

| | |
|---|---|
| मैं जाता हूँ। | एन कादन। |
| हम राज्य के लिए मरते हैं। | नाम राजी गे खे'अदत। |
| आज क्या सुनते 'हैं' ये कान। | इन्ना एन्दरा 'मिनी' इ ख़ेबदा। |

हे राजा हम यज्ञ के लिए समिधा (हवन सामग्री) लेने जाते हैं।

2. **भूत निश्चयार्थ–**

| | |
|---|---|
| प्रिय को मैंने उपहार दिया था। | एंगहय पेल्लोगे एन पइत्तसारना आलो चिच्चका रहचकन। |
| इनकी हम पुत्रियाँ वहाँ थीं। | ईस घी एम तंगदा ख़द्दम असन रहचकम। |

3. **भविष्य निश्चयार्थ–**

| | |
|---|---|
| होगा, होगें, होगी, होंगी | मनो, मनोर |

4. **वर्तमान संभावनार्थ–**

| | |
|---|---|
| यदि वह भी साथ जाने को तैयार होती। | अगर आद हूँ संगे काला बेद्दना होले। |
| वह होता चाहे नहीं किन्तु हम होते। | आस र'अना महते मल र'अना अन्नु हुं एम र'ओम पहें। |

5. **भूत संभावनार्थ–**

| | |
|---|---|
| जो तू न होता। | जे नीन मल र'अना। |
| फल आ आगे धरते। | खँजपा ओन्दर'अर मुन्ध बरके। |

6. **वर्तमान आज्ञार्थ–**

| | |
|---|---|
| यदि स्त्री दूसरे से खाली बात भी करती हो[20] | अगर मुक्का नन्नर संगे खली कचनखर'आ हूँ। |
| स्वामी किसी का आदर करता हो। | उरबस नेखअयदिम मइन ननदस। |

## काल और पक्ष–दोनों–को मिलाकर

**सहायक वृत्तिक क्रियायें**[21]

1. **सकना पाना :**

**'सक' के निम्नांकित तीन प्रकार्य हैं–**

**क. सामर्थ्य–**

| | |
|---|---|
| वह हिन्दी बोल सकता है। | आस हिन्दी कच्छनखरआ ओंगदस। |
| वह नहीं चल सकता है। | आस एका पोलदस। |

**ख. अनुमति–**

| | |
|---|---|
| अब आप जा सकते हैं। | अक्कु नीन काला ओंगदय। |
| आप अन्दर आ सकते हैं। | नीन उला बर'आ ओंगदय। |

**ग. संभावना–**

| | |
|---|---|
| आज बारिश हो सकती है। | इन्ना चेंप पुंइया उँगी। |
| हो सकता है वह न आए। | मना उंगी आस मल बर'ओस। |

'पाना' से केवल 'सामर्थ्य' का बोध होता है। जैसे–

| | |
|---|---|
| मैं हिन्दी नहीं बोल पाता। | एन हिन्दी कचनखर'आ पोलदन। |

| | |
|---|---|
| मैं आपका काम नहीं कर पाया। | एन निंग्हय नलखन नना पोलकन। |

पाना केवल नकारात्मक तथा अपूर्ण सकारात्मक परिवेशों में ही प्रयुक्त हो सकता है, पूर्ण सकारात्मक परिवेश में नहीं। जैसे-

| | |
|---|---|
| वह नहीं चल पाया/सका।(नकारात्मक) | आस एका पोल्लस। |
| वह चल सकता है वह चल पाता है। | आस एका ओंगदस। |
| क्या तुम साहब से मिल पाये/सके। | एन्दरा निन सहेबस गने ख़खर'आ उँकय? |
| काश! मैं भी आपके साथ चल पाता/सकता। | मानिम, एन हूँ निंग्हय संगे एका ओंगना। |

**2. या जा असामर्थ्यबोधक :-**

| | |
|---|---|
| नौकर से दरवाजा नहीं खोला जाता। | जोंख़स ति बली मल तिसगार'ई। |
| क्या तुमसे दरवाजा खोला गया? | एन्दरा निगन ति बली तिसगरा? |

**3. -ते बन :-**

| | |
|---|---|
| मुझसे कहते नहीं बना। | एंगन ति ब'आ मल बनचा। |
| उसकी हालत देखते बनती थी। | आस घी मुही एरना बेसे रहचा। |

**4. ना है (-ना पड़, -ना चाहिए)**

| | |
|---|---|
| उसे जल्दी जाना है। | आस गे चाँड़े काना र'ई। |
| राधा को बैंक से पैसे निकालने हैं। | राधागे बैंक ति ढिबा ओथोरना र'ई। |
| मुझे कई काम करने होंगे। | एंगा लेरम नलख नन्ना मनो। |
| राधा को बैंक से पैसे निकालने थे। | राधागे बैंक ति ढिबा ओथोरना रहचा। |
| राधा को बैंक से पैसे नहीं निकालने थे। | राधागे बैंक ति ढिबा मल ओथोरना रहचा। |
| मुझे आज जल्दी जाना था। | एन्गा इन्ना चाँड़े काना रहचा। |
| मुझे रजिस्ट्रार से नहीं मिलना था। | एन्गा रजिस्ट्रारस गने मल ख़खरना रहचा। |

**5. -ना पड़, -ना होगा**

| | |
|---|---|
| उसे जल्दी जाना पड़ा। | आसगे चाँड़े काना मंजा। |
| हमें बिना दूध के चाय पीनी पड़ रही है। | एंगा बिन दूदही घी चाह ओन्ना मना लगी। |
| कल मुझे देर तक दफ्तर में रूकना पड़ा। | चेरो एंगा गड़ही गूटि आफिस नु र'अना मंजा |
| मुझे चौंकना पड़ा। | एंगा अकचकरना मंजा। |
| उन्हें झिझकना पड़ा। | आसिन जंजकारना मंजा। |

**6. -ना चाहिए**

| | |
|---|---|
| आपको गरीबों की सेवा करनी चाहिए। | निंगा गरिबर गहि सेवा नन्ना चाड़ र'ई। |
| तुम्हें पुलिस को खबर कर देनी चाहिए। | निंगा पुलिसन तेंगना चिइ'अना चाड़ र'ई। |
| आपको इतनी जल्दी नहीं चिढ़ना चाहिए। | निंगा इँवदा चाँड़े मल खिजरारना चाड़ र'ई |
| ऐसे मौकों पर हमें नहीं घबराना चाहिए। | एन्ने बेड़ा नु नमा मल एलचना चाड़ र'ई। |
| आपको इस तरह नहीं डरना चाहए। | निंगा इ लेक्खा मल एलेचना चाड़ र'ई। |
| बहुत ठंढ हो गई है। अब तो धूप निकलनी चाहिए। | अनइत पँइया मंजा केरा। अक्कु गा बिड़ना उरखना चाड़ र'ई। |
| आपको पहले नहीं कहना चाहिए था। | निंगा मूधिम मल ब'अना चाड़ रहचा। |
| हमें चाहिए कि हम गरीबों की सेवा करें। | नमा चाड़ र'ई का नाम गरिबर गहि सेवा ननोत |

आपको चाहिए था कि आप मुझसे पूछकर। जाते(जाएँ) — निंगा चाड़ रहचा का नीन एंगन मेनर दरा काले पहें।

आपको चिट्ठी पढ़ लेनी चाहिए। — निंगा चिट्ठिन बचच निंघना चाड़ र'ई।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर बाध्यतामूलक सहायक वृत्तिक क्रियाओं के प्रमुख लक्षण इस प्रकार दर्शाये जा सकते हैं।[22]

ना चाहिए — चेतन कर्त्ता — बाध्यता — औचित्य

आपको गरीबों की सेवा करनी चाहिए। — निंगा गरीबर गहि सेवा नन्ना चाही।

अव पेट्रोल का चूना बन्द हो जाना चाहिए। — अक्कु पेट्रोल घी चुरूखना बन्द मन्ना काना चाही।

अब तो धूप निकलनी चाहिए। — अक्कु गा बिड़ना उरखना चाही।

न चाहिए था  अचेतन कर्त्ता + अवंछित : कार्य सम्पन्नता

आपको पहले कह देना चाहिए था। निंगा मुंधिम ब'अना चि'अना चाड़ रहचा।

**ना है    चेतना कर्ता**

राधा को बैंक से पैसे निकालने हैं। — राधागे बैंक ति ढिबा ओथोरना र'ई।

**काल चिन्हक तथा वृत्ति चिन्हक**[23]

पक्ष प्रत्ययों के बाद प्रयुक्त होने वाले काल चिन्हक तथा वृत्ति चिन्हक इस प्रकार है।

काल है : चलता है (एकदस) — चला है (इक'का र'अस)

था चलता था (एका लगियस) — चला था (इक्का रहचस)

वृत्ति हो : चलता हो (एकदस हँ'अन) — चला हो (इक्कियस हँ'अन)

होता चलता होता (एकोस पहेंस) — चला होता(इक्का होले)

होगा चलता होगा (एकदस होतन) — चला होगा(इक्कियस होतन)

अपूर्ण क्रिया (मल पूरचका नन्ना)

हिन्दी क्रिया पदबन्धों को पक्ष की दृष्टि से दो भागों में बाँटा जा सकता है-

1. पूर्ण क्रिया खाया है और अपूर्ण क्रिया खाता है। उपवाक्य संघटन की मद्येनजर पूर्ण क्रिया के दो खण्ड होते हैं।

**1. ने रहित तथा 2. ने सहित**

राम ने कहा। — रामस बाचस।

राम बोला। — रामस बाचस।

स्वरूप की दृष्टि से बोला और कहा पूर्ण क्रियायें हैं परन्तु कहा ने सहित तथा बोला ने रहित पूर्ण क्रियायें हैं।

अपूर्ण क्रिया वंह है जिससे क्रिया की समाप्ति का बोध न हो सके अर्थात् पता चले कि क्रिया अधूरी है।

पूर्ण क्रियाओं की तरह अपूर्ण क्रियाओं को भी दो उपवर्गों में बाँटा जा सकता है।

1. सातत्य बोधक और

2. सामान्य अपूर्ण

**उदाहरण**

वह पढ़ता है। — आस बचदस।

वह पढ़ रहा है। — आस बच'आ लगदस।

**संकेतार्थक अपूर्ण क्रिया सामान्य**

| वर्तमान | भूत | भविष्यत | कंडिशनल |
|---|---|---|---|
| वह खाता है। | वह खाता था<br>वह खाता हो। | वह खाता होगा। | वह खाता होता। |

**क्रियार्थक अपूर्ण क्रिया (सामान्य)**

| वर्तमान | भूत | भविष्यत | कंडिशनल |
|---|---|---|---|
| उसे खाना पड़ता है। | उसे खाना पड़ता था। | उसे खाना पड़ रहा हो। | उसे खाना पड़ रहा होगा। |

ध्यातव्य है कि चाहिए क्रिया भी अपूर्ण क्रिया के अन्तर्गत आती है। उदाहरण :

| | |
|---|---|
| उसे खाना चाहिए। | आस गे ओन्ना चाही। |
| उसे खाना चाहिए था। | आसगे ओन्ना चाड़ रहचा। |

पक्ष और काल को मिलाकर अपूर्ण क्रिया के विभिन्न वर्ग हो सकते हैं। पक्ष के आधार पर अपूर्ण क्रिया के वर्ग ऊपर पहले चित्रित हो चुके हैं। काल के आधार पर अपूर्ण क्रिया के निम्नांकित वर्ग हो सकते हैं।[24]

**उदाहरणार्थ**

| | | |
|---|---|---|
| 1. अपूर्ण सामान्य वर्तमान | वह खाता है। | आस ओन्दस। |
| 2. अपूर्ण सातत्य वर्तमान | वह खा रहा है। | आस ओना लगदस। |
| 3. अपूर्ण सामान्य भूत | वह खाता था। | आस ओना लगियस। |
| 4. अपूर्ण सामान्य भूतः | वह खा रहा था। | आस ओन्तेम रहचस। |
| 5. अपूर्ण सामान्य कंडिशनल | यदि वह खाता होता। | अगर आस ओन्ना होले। |
| 6. अपूर्ण सातत्य कंडिशनल | यदि वह खा रहा होगा। | अगर आस ओनते र'अना होले। |
| 7. अपूर्ण सामान्य भविष्य | शायद वह खाता हो। | मना उँगी आस ओन्दस होतन। |
| 8. अपूर्ण सामान्य भविष्य | वह खाता होगा। | आस ओन्दस होतन। |
| 9. अपूर्ण सामान्य भविष्य संभाव्य | संभव है वह खाए। | मना उँगी आस ओनोस। |
| 10. अपूर्ण सामान्य भविष्यत् सामान्य | वह खायेगा। | आस ओनोस। |
| 11. अपूर्ण सातत्य भविष्य | शायद वह खा रहा हो। | मना उँगी आस ओना लगदस होतन। |
| 12. अपूर्ण सातत्य भविष्यत : | वह खा रहा होगा। | आस ओना लगदस होतन। |

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि अपूर्णतावाची क्रियायें 1. वर्तमान काल 2. भूतकाल 3. भविष्यतकाल तीनों में व्याप्त हैं।

## 1. वर्तमान अपूर्णतावाची क्रिया

यह काल का रूप प्रथम कृदन्त के लैंगिक विकारी रूपों और क्रिया है के तिड्त्ती तथा स्त्रीलिंग के एक लैंगिक रूप द्वारा व्यक्त होता है जो कि है क्रिया के चार तिङ्ती रूपों के साथ मिल जाते हैं।[25]

| | |
|---|---|
| मैं लिख ता/ती हूँ। | एन टूड़-दन(-एन) |
| हम लिख ते/ती हैं। | एम टूड़-दम(-एम) |
| तू लिख ता/ती है। | नीन टूड़-दय(दी) |
| तुम लिख ते/ती है। | नीन टूड़-दय(दी) |
| आप लिख ते/ती हो। | नीन टूड़-दय(दी) |

| | |
|---|---|
| वह लिख ता/ती है। | आस टूड़-दस(ड़ी) |
| वे लिख ते/ती हैं। | आर टूड़-नर(नय) |

निषाधात्मक वाक्यों में हैं क्रिया को छोड़ा जा सकता है और लगाया भी जा सकता है। जैसे-

| | |
|---|---|
| मैं नहीं लिख ता/ती | एन मल टूड़दन(टूड़ेन) |
| हम नहीं लिख ते/ती | एम मल टूड़दम(टूड़ेम) |
| तू नहीं लिख ता/ती | नीन मल टूड़दय(टूड़दी) |
| तुम नहीं लिख ते/ती | नीन मल टूड़दय(टूड़दिन) |
| आप नहीं लिख ते/ती | नीन मल टूड़दय (टूड़दिन) |
| वह नहीं लिख ता/ती | आस मल टूड़दस(टूड़ी) |
| वे नहीं लिख ते/तीं | आर मल टूड़नर (टूड़नय) |
| तो तुम लिखते क्यों नहीं हो। | अन्ती नीन एन्देरगे मल टूड़दय। |
| वह जादू तो नहीं जानती है। | आद जदु गा मल अख़ई। |
| वह ग्यारह दिन टैक्सी नहीं चला सकता था। | आस दोय ओन्द उल्ला टिकसी चलाब'आ पोल्ला लगियस। |
| बच्चे का स्कूल नहीं चलता है। | ख़द्दर गहि लुरकुड़िया मल चलर'ई। |

अपूर्णतावाची वर्त्तमान को उक्ति के क्षण के अनुसार अवास्तविक वर्तमान में बाँट सकते हैं, जो कि अमूर्त आवर्ती व्यापार द्वारा व्यक्त होता है जो कि समय में असीमित होता है तथा वास्तविक वर्तमान में बाँट सकते हैं जो कि मूर्त संतत व्यापार द्वारा व्यक्त है जो कि समय में सीमित होता है।[26]

**1. अवास्तविक अपूर्णतावाची वर्तमान के छोटे अवच्छेद**-अमूर्त अवास्तविक वर्तमान -मुहावरे कहावतें स्थिर सच्चाई सूक्तियों आदि को व्यक्त करता है। जैसे-

| | |
|---|---|
| एक मछली सारे तालाब को गंदा करती है। | ओन्टा इन्जो गोट्टा पोखरन हेड़'ई चि'ई। |
| एक हाथ से ताली नहीं बजती। | ओन्टा खेखा ति थपड़ी मल ख़रख़ी। |
| बनियां भी दादा कहने से गुड़ देता है। | बनियास हुँ ददा बचकाती गुल्ले चि'अदस। |
| निराशा सम्भव को असम्भव बना देती है। | हारचका जिया मन्नन हूँ मलमन्ना कम'ई चि'ई। |
| जो गरजते हैं, वे बरसते नहीं। | एकदा मुर्री आद मल पुँइय्यी। |
| हर चीज का वक्त आता है। | हुरमी आलो गहि बेड़ा बर'ई। |

**2. नियमित अवास्तविक वर्तमान :** यह अवच्छेद नियमित आवर्ती व्यापार को व्यक्त करता है। जैसे-

| | |
|---|---|
| मिसेज दास के पत्र कभी-कभी आते हैं। | ख़ई दास गहि चिट्ठी ओंगहोन ओंगहोन बर'ई। |
| कम से कम पाँच आदमी मेरे यहाँ रोज आते हैं। | जुक्की ती जुक्की पंचे आलर एंगहय गुत्ता रोज बरनर। |
| पुलिस बड़े आदमियों की ही मदद क्यों करती है? | पुलिस कोहा आलारिनुम एन्देरगे मदइत ननी? |
| आजकल कोई लड़की किराये के मकान में नहीं रहती। | इन्नलके एक'अम कुके भड़ा एड़पा नु मल र'ई। |

**3. वृत्तिवाचक अवास्तविक :** अमूर्त्त व्यापार को व्यक्त करने में। जैसे-

| | |
|---|---|
| क्या करते हो? वीणा बजाता हूँ। | एन्देर नन्दय? बीना अस्सदन। |
| खड़े क्यों हो, आओ न! | एन्देरगे इज्जका र'अदय? बरा नी! |
| जरा देखूँ, कैसे नाचते हो! | तनिक एरदन, एकासे नलदय। |
| मान लीजिये कि आदिवासी केवल तीन ही गिनती करना जानते हैं। | माइन हो'आ का आदिबसिर मून्द एकला गनया अख़नर। |

**4. अपूर्णतावाची वास्तविक वर्त्तमान :**

1. उक्ति के क्षण के साथ मेल वाली क्रिया : जैसे-

| | |
|---|---|
| क्यों घबराते हो? | एन्देर गे एलेचदय? |
| जल्दी पानी ला, मैं गर्मी से जली जाती हूँ। | चाँड़े अम्म ओन्दर'अय, एन गरम ति ओला का लगेन। |
| मैं बोलता हूँ .....अपने मुल्क को लौट आओ। | एन ब'अदन तंग'आ राजी गे किर्रा बरा। |
| मैं तुम्हें गिरफ्तार करता हूँ। | एन निंगन जेहेल हो'अदन। |

2. वास्तविक विस्तारित व्यापार, जो उक्ति के क्षण के साथ मेल खाता है। जैसे-
मैट्रिक में पढ़ता है और आठवीं श्रेणी का प्रश्न नहीं आता।
उस दिन से अब मैं आठों पहर अपनी बदनसीबी पर आँसू बहाता हूँ।
उनके बुडढे वालिद खेती का काम करते करते मरते हैं।

3. वास्तविक नित्यता सूचक व्यापार : जैसे-

| | |
|---|---|
| शंकरगढ़ का थाना विंध्याचल की पवर्तमाला की गोद में इस जिले के सुदूर भाग की रक्षा करता है। | शंकरगढ़ ता थाना विन्ध्याचल घी परतापूनन पाकररकी ई जिला गेच्छा गूटि ता अड्डन ख़ापी। |
| दुर्ग काजोपरकोट समुद्र की ओर पड़ता है। | दुर्ग गहि आजो परकोटा समुद्र तरा मड़रकी र'ई। |
| आगे कुछ दूर वह नाला था जो इस्माईलपुर ग्राम के पास से बहता है। | मुन्धारे जोक्क गेच्छा आ पँड़ड़ी रहचा एकदा इसमाइलपुर पद्दा हेद्देति बह'ई। |

**5. अपूर्णतावाची भूत कालिक क्रिया**–यह काल रूप प्रथम कृदन्त के विकारी रूप तथा था सहायक क्रिया के विकारी रूपों के मिलन से बनता है। इस तरह अपूर्णतावाची भूतकाल पुलिंग के दो विकारी रूपों स्त्रीलिंग के एक विकारी रूप और था क्रिया के चार विकारी रूपों द्वारा व्यक्त होता है।[27]

| हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|
| मैं लिख ता/ती था/था | एन टूड़ा लइक्कन(लगिय'अन) |
| हम लिख ते/ती थे/थी | एम टूड़ा लइक्कन (लगिय'अम) |
| तू लिख ता/ती था/थी | नीन टूड़ा लइक्कय(लक्की) |
| तुम लिख ते/ती थे/थी | नीन टूड़ा लइक्कर (लक्किन) |
| वह लिख ता/ती/था/थी। | आस/आद टूड़ा लगियस(लगिया) |
| वे लिख ते/ती थे/थीं | आर/अबड़र टूड़ा लगियर। |

## अपूर्णतावाची भूतकाल के दो रूप

| अपूर्णतावाची वास्तविक भूतकाल | अपूर्णतावाची अवास्तविक भूतकाल |
|---|---|

**1. अपूर्णतावाची वास्तविक भूतकाल।[28] उदाहरण**

| | |
|---|---|
| 1. पाँचों रंगरूट एक दूसरे से लिपटते थे, उछलते थे, चीखते थे। | पंचे रंगरूटर तम गने तेरेमर'आ उछलार'आ लगियर |
| 2. किसी के मुँह से बात न निकलती थी। | नेख'अय बईति कत्था मल उरखा लगिया। |

| | |
|---|---|
| 3. नोइरी के पाँव जमीन पर न पड़ते थे। | नोइरी गहि ख़ेड्ड ख़ेख़ेल नु मल थमर'आ लगिया। |
| 4. उनके पुरखे पुराने जमाने से ही गाँव में रहते थे। | आर गहि पुरखर पच्चा परिया तिम पद्दा नु र'आ लगियर। |
| 5. एक हरा भरा समतल मैदान था, | ओन्टा हरियरका समथर टोंका रहचा एकसन तीनना |
| जहाँ मीठे पाने की एक छोटी-सी नदी बहती थी। | अम्म गहि ओन्टा सन्नी एकन ख़ाड़ बह'आ लगिया। |
| 6. वह किसान न थे, पर जमींदारी करते थे। | आस किसानस मल रहचस पहें खेती नना लगियस। |
| जमींदार न थे, पर जमींदारी करते थे। | गोलन मा रहचकन पहें गोलगिरि नना लइक्कन। |
| थानेदार न थे, पर थानेदारी करते थे। | थानेदार मल रहचकन पहें थानेदारी नना लइक्कन। |
| 7. जब कमरे में आती, लोग खडे हो जाते थे। | एक्रा बीरी उला बर'ई आलर इज'आ का लगियर। |
| 8. सुभद्रा कोई काम करती होती तो, सुमन स्वयं उसे करने लगती। | सुभद्रा एक'अम नलख ननते र'ई होले सुमन तान तानिम अदिन नना हिलर'ई। |

**2. अपूर्णतावाची भविष्यत काल**–काल का यह रूप प्रथम कृदन्त के पुल्लिंग के दो लैंगिक रूपों एकवचन तथा बहुवचन और स्त्रीलिंग के एक लैंगिक रूप तथा होना क्रिया के पुल्लिंग के चार तिङन्त विकारी रूपों एवं स्त्रीलिंग के चार समान रूपों द्वारा व्यक्त होता है।[29]

**उदाहरण**

| | |
|---|---|
| मैं लिख ता ती हूँगा गी | ए-न टूड़दन/टूड़ेन होतंग। |
| हम लिख ते ती होंगे गी | ए-म टूड़दम/टूड़ेम होतंग। |
| तू लिख ता ती हो गा गी | नीन टूड़दय/टूड़दी होतंग। |
| तुम लिख ते ती हो गा गी | नीम टूड़दय/टूड़दर होतंग। |
| आप लिख ते ती होंगे गी | नीम टूड़दय/टूड़दर होतंग। |
| वह लिख ता ती होगी गी | आर टूड़नर/टूड़नय होतंग। |
| वे लिख ते ती हों गे गी | आर टूड़नर/टूड़नय होतंग। |

अवश्य जरूर जैसे वृत्तिवाचक क्रिया शब्दों अपूर्णतावाची भविष्य का रूप देखने को मिलता है। जैसे-

| | |
|---|---|
| वे आपको जरूर जानते होंगे। | आर ठउकम निंगन अख़नर होतन। |
| अवश्य ही फाटक पर उसके पत्तों का मेहराव लगाया जाता होगा। | ठउकम फाटक नु आस गहि अतख़ा हि मिण्डरी लगब'अनर होतन। |

इसके अलावा अपूर्णतावाची क्रिया के प्रयोग वर्तमान में कल्पना भूत में कल्पना तथा भविष्य में कल्पना के बोध में होता है। जैसे-

| | |
|---|---|
| दुनिया में सब सोते होंगे। | दुनिया नु होरमर ख़ंदरनर होतन। |
| वहाँ तो तनख्वाह भी ज्यादा मिलती होगी। | असन गा तनखा हूँ बग्गे ख़खर'ई होतई। |
| वह आती होगी। | आद बर'ई होतई। |

**3. संभावनार्थ अपूर्णतावाची क्रिया**–संभावनार्थ का अपूर्ण रूप पुल्लिंग के दो लैंगिक रूपों एकवचन तथा बहुवचन और स्त्रीलिंग के एक लैंगिक रूप एवं संभावनार्थ में होना क्रिया के चार तिङन्ती रूपों के मिलन से बनता है।[30]

| | |
|---|---|
| मैं लिख ता ती होऊँ। | एन टूड़दन/टूड़ेन होतई। |
| हम लिख ते ती हों। | एम टूड़दम/टूड़ेम होतई। |
| तू लिख ता ती हो। | नीन टूड़दय/टूड़दी होतई। |

| | |
|---|---|
| तुम लिख ता ती हो। | नीम टूड़दर/टूड़दय होतई। |
| आप लिख ता ती हों। | नीम टूड़दर/टूड़दय होतई। |
| वह लिख ता ती हो। | आर टूड़नर/टूड़नय होतई। |
| वे लिख ता ती हों। | आर/अबड़न टूड़नर/टूड़नय होतई। |

1. भूतकाल में संभावनार्थ अपूर्णतावाची क्रिया
2. वर्त्तमान काल में संभावनार्थ अपूर्णतावाची क्रिया
3. भविष्यत् काल में संभावनार्थ अपूर्णतावाची क्रिया

**उदाहरण :**

| | |
|---|---|
| 1. उसका मन ऐसा प्रसन्न था मानो वह किसी बड़े रमणीक स्थान का सैर करके आता हो। | आस गहि जिया एन्ने खुसमारका रहचा माइन होआ का आस पुंप बटगी ती कुद्दा बरदस। |
| 2. यदि उसे भय ही लगता हो तो भी कहने की क्या आवश्यकता है। | अगर आसगे इलिचकम लगी अन्नु हुँ. ब'अना गहि एन्देर चाड़ र'ई। |
| 3. जनता का प्रत्यक्ष योगदान तभी मिल सकेगा जब जनता पढ़ी लिखी हो। | आलर गहि सोजहेम मदइत तबेम ख़खर'आ उंगी एकाबीरी आलर बचचका टूड़का र'ओर। |

**4. अपूर्णतावाची संकेतार्थक क्रिया**–संकेतार्थ की अपूर्ण रूप संभाव्य संतत अपूर्ण व्यापार को व्यक्त करता है जो आम तौर पर वर्तमान काल के अर्थ में आता है।[31]

| | |
|---|---|
| 1. यदि आज यह पुरूष जीता होता तो पचास या पचपन वर्ष का होता। | अगर ई आलस इन्ना उज्जते र'अना होले पन्दोय पन्दी बछर ता र'ओस पहें। |
| 2. आपने न बचाया होता तो आज शराब या ताड़ी की जगह हल्दी गुड़ पीते होते। | नीन मल बछाबाचका होले अरखी मलतो तड़ी अड्डा नू बालका-गुल्ले ओनोर पहें। |

**भूतकाल के अर्थ में यह रूप कम आता है। उदाहरणार्थ :**

| | |
|---|---|
| 1. अगर वह जानती होती कि आनन्द के पास रहने में यह हालत हो जायेगी तो वह यहाँ कभी नहीं आती। | अगर आद अख़ना पहें का आनन्दस गुसन रहचका ति ई दशा मनो कालो ओले आद इसन इकला हूँ मल बर'ओ पहें। |

अपूर्णतावाची संकेतार्थक क्रिया अक्सर संभाव्य एकल व्यापार को व्यक्त करती है। जैसे-

**हिन्दी :** 1. तु मुझे मन से न चाहता होता तो तू मुझे मारता क्यों?

**कुड़ुख :** 1. नीन एँगन जियाति मल पइत्तरना होले नीन एँगन एन्देरगे पस'ओय पहें।

अपूर्ण या अपूर्णतावाची क्रिया का प्रयोग व्यापक स्तर पर होता है जैसे कि उपर्युक्त उदाहरणों से प्रतीत होता है।

## सन्दर्भ-सूची

1. हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण : सूरजभान सिंह साहित्य, सहकार, दिल्ली 110051, प्रथम संस्करण, पृ०-61
2. कुड़ुख़ कत्था विल्ली-टूडुस - पी०सी० बेक्स, प्रकाशक सत्य भारती, पोस्ट बॉक्स-2, राँची-834001 द्वितीय संस्करण 1983, पृ०-213
3. वही, पृ०-214

4. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-125
5. वही।
6. मानक हिन्दी का ऐतिहासिक व्याकरण : माताबदल जायसवाल-महामति प्रकाशन, इलाहाबाद प्रथम संस्करण, मई 1979, प०-541
7. हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण : सूरजभान सिंह, साहित्य सहकार, दिल्ली 110051, प्रथम संस्करण, पृ०-62
8. वही, पृ०-62
9. वही, पृ०-63
10. वही, पृ०-65
11. मानक हिन्दी का ऐतिहासिक व्याकरण : माताबदल जायसवाल-महामति प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, मई 1979, पृ०-520
12. वही, पृ०-521-527
13. वही, पृ०-527-535
14. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-125
15. हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना : डॉ० भोलानाथ तिवारी-साहित्य सहकार, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1986, पृ०-237
16. हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण : सूरजभान सिंह-साहित्य सहकार, दिल्ली 11००51, प्रथम संस्करण, पृ०-98
17. वही।
18. वही, पृ०-104
19. मानक हिन्दी का ऐतिहासिक व्याकरण : माताबदल जायसवाल-महामति प्रकाशन, इलाहाबाद-प्रथम संस्करण, मई 1979, पृ०-480
20. वही, पृ०-518
21. हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण : सूरजभान सिंह-साहित्य सहकार, दिल्ली 11००51, प्रथम संस्करण, पृ०-113
22. वही, पृ०-117
23. वही, पृ०-120
24. हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना : डॉ० भोलानाथ तिवारी, साहित्य सहकार, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1986, पृ०-237-238
25. हिन्दी में क्रिया : डॉ० ओ० गे० उलत्सिफेरोव; विषय-प्रवेश, पृ०-160
26. वही, प०-161
27. वही, प०-183
28. वही, पृ०-184-187
29. वही, पृ०-206
30. वही, पृ०-215
31. वही, पृ०-231

❖❖

## अध्याय : छ:

# वाच्य फुर्चाचका

क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि वाक्य में क्रिया द्वारा किये गये कार्य का प्रधान विषय कर्त्ता, कर्म या भाव है, उसे वाच्य कहते हैं।

कुड़ुख़ कत्था में तीन वाच्य हैं -[1] 1. कर्तृवाच्य (ननु फर्चाचका) ; 2. कर्मवाच्य (ननर'ऊ फुर्चाचका) एवं 3. भाववाच्य (मनहे फुर्चाचका)।

**1. कर्तृवाच्य**-क्रिया के जिस रूप ये पता चले कि वाक्य में कर्ता प्रधान है उसे कर्तृवाच्य कहते हैं। जैसे : राम पढ़ता है। रामस बचदसं। यहाँ पढ़ता है क्रिया कर्ता के अनुसार है, क्योंकि यहाँ कर्ता की प्रधानता है। कर्तृवाच्य में क्रिया अकर्मक और सकर्मक दोनों हो सकती है।

**2. कर्मवाच्य**-क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि वाक्य में कर्म की प्रधानता है, उसे कर्मवाच्य कहते हैं।

जैसे : राम ने रोटी खायी। रामस असमा मोक्खस।

यहाँ 'खायी' क्रिया कर्ता (राम ने) के अनुसार न होकर कर्म 'रोटी' के अनुसार बदली है।

कर्मवाच्य में केवल सकर्मक क्रिया ही आती है।

**3. भाववाच्य** :- क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि वाक्य में न कर्त्ता प्रधान है न कर्म प्रधान है, बल्कि क्रिया का भाव ही प्रधान है उसे भाववाच्य कहते हैं।

जैसे- मुझसे चला नहीं जाता। एंगन ति मल एकतार'ई।

अब चला जाय। अक्कु गुचा अन्ति।

इन वाक्यों में क्रिया का भाव ही प्रधान है। सभी क्रियायें अकर्मक हैं जो पुल्लिंग एकवचन तथा अन्य पुरूष में है। इस प्रकार-

क. भाववाच्य में क्रिया का भाव प्रधान होता है।

ख. क्रिया सदा पुल्लिंग एक वचन तथा अन्य पुरूष में होती है।

ग. क्रिया सदा अकर्मक होती है।

घ. भाववाच्य का प्रयोग असमर्थता निषध तथा आवश्यकता के निमित्त होता है।[2]

डा० वासुदेव नन्दन प्रसाद के अनुसार-क्रिया के उस परिवर्तन को वाच्य कहते हैं जिसके द्वारा इस बात का बोध होता है कि वाक्य के अन्तर्गत कर्त्ता, कर्म अथवा भाव- इनमें से किसकी प्रधानता है; इनमें किसके अनुसार क्रिया के पुरूष वचन आदि आए हैं। इस परिभाषा के अनुसार वाक्य में क्रिया के लिंग वचन चाहे तो कर्त्ता के अनुसार होंगे अथवा कर्म के अनुसार अथवा भाव के अनुसार।[3] इनके अनुसार भी 'क्रिया' के तीन ही प्रकार के प्रयोग होते हैं और इसी आधार पर वाच्य भी तीन ही होते

हैं। क्रिया के तीन प्रकार के प्रयोग हैं-1. कर्तारि प्रयोग 2. कर्मणि प्रयोग तथा 3. भाव प्रयोग

**(ननु फुर्चाचका) श्री पी० सी० बेकूस के अनुसार-**[4]

1. **कर्त्तृवाच्य**-जिस वाक्य में कर्त्ता की प्रधानता हो, उसे कर्त्तृवाच्य कहते हैं; क्रिया के लिंग वचन और पुरूष कर्त्ता के लिंग, वचन और पुरूष के अनुसार होंगे। अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं के कर्त्तृवाच्य होते हैं। जैसे-

| | |
|---|---|
| एन टटख़ा मोख़ा लगदन। | मैं आम खा रहा हूँ। |
| नीन अम्म ओना लगदय। | तुम (ए०व०) पानी पी रहे हो। |
| झरियो एड़पा केरकी रहचा। | झरियो घर गयी थी। |
| आर मण्डी ओना लगियर। | वे भात खा रहे थे। |

2. **कर्मवाच्य (ननरऊ फुर्चाचका)**-सिर्फ सकर्मक क्रियाओं के कर्म वाच्य होंगे। जिस वाक्य में क्रिया के लिंग, वचन और पुरूष किये जाने वाले कर्म के लिंग, वचन के अनुसार होते हैं। उसे कर्म वाच्य कहते हैं। जैसे-

| | |
|---|---|
| एन पौलुसती ल'ओरदन। | मैं पौलुस से मारा जाता हूँ। |
| नीन ल'ओरदय। | तुम (ए०व०) मारे जाते हो। |
| आस ल'ओरदस। | वह मारा जाता है। |
| टटख़ा चोख़तारा। | आम तोड़ा गया। |
| ख़ल्ल उयितार'ओ। | खेत जोता जायेगा। |

3. **भाववाच्य (मनहे फुर्चाचका)** – अकर्मक क्रियाओं से भाववाच्य बनता है। क्रिया का कर्त्ता याने करने वाला करण कारक में रखा जाता है और क्रिया सदा एकवचन प्राकृत लिंग अन्य पुरूष में रहती है। सभी कालों में भाववाच्य क्रियायें बनती है भाववाच्य में कर्त्ता सदा करण कारक के रूप में प्रत्यक्ष रहेगा। जैसे-

| | |
|---|---|
| एंगती ओक्कतारा। | मुझसे बैठा गया। |
| निंगती ख़न्दरतार'ओ। | तुम से सोया जायगा। |
| रामस ती अलखतार'ई। | राम से हँसा जाता है। |

वाच्य मूलतः एक सर्वभाषिक वाक्यात्मक व्यवस्था है। परम्परागत व्याकरणों में रूपात्मक स्तर पर इसकी व्याख्या हुई है जिसमें दो दृष्टियों से विचार किया गया है।

1. क्रिया के रूप पर आधारित दृष्टि से तथा 2. संज्ञापद के प्रकार्य पर आधारित दृष्टि।

रूपात्मक स्तर पर वाच्य को क्रिया का एक रूपान्तर कहा गया है जो यह बताता है कि वाच्य में कर्त्ता के विषय में विधान किया गया है वा कर्म के विषय में अथवा केवल भाव के विषय में।[5] पारम्परिक हिन्दी व्याकरण में क्रिया को वाच्य का केन्द्रीय तत्व माना गया है। क्रिया के रूप पर आधारित दृष्टि के अनुसार तो वाच्य केवल क्रिया पद से सम्बद्ध है ही, संज्ञापद के प्रकार्य पर आधारित दृष्टि के अन्तर्गत भी वाच्य को मूलतः क्रिया का 'रूपान्तर' माना गया है। जिससे जाना जाता है कि वाक्य में कर्त्ता के विषय में विधान किया गया है या कर्म के विषय में अथवा भाव के विषय में।[6]

"संस्कृत व्याकरण में क्रिया को वाक्य का मूल तत्व माना गया है। क्योंकि वाक्य में क्रिया में कोई भी संज्ञापद सार्थक नहीं होता।"[7]

एथरिंगटन औ केलॉग से लेकर वाजपेयी तक अनेक वैयाकरणों ने क्रिया के रूप को व्यवस्था का आधार माना है। इसी मत के अनुसार विशिष्ट संज्ञापद से क्रियापद की अन्विति के आधार पर ही वाच्य का निर्णय होता है। वाक्य में क्रिया का अन्वय या तो कर्त्ता से होता है या कर्म से। क्रिया के लिंग वचन

तथा पुरूष यदि कर्त्ता के अनुसार हों तो वाक्य कर्तृ वाच्य में माना जायगा और यदि ये कर्म के अनुसार हों तो वाक्य कर्म वाच्य में होगा। जिन स्थितियों में न कर्त्ता से अन्वित होती है न कर्म से, बल्कि पुल्लिंग एक वचन, अन्य पुरूष में होती है वहाँ वाक्य भाव वाच्य में माना जाता है तथा इन्हें ही कर्तृरिप्रयोग कर्मणि प्रयोग तथा भावे प्रयोग माना गया है। उदाहरणार्थ :-

| | | |
|---|---|---|
| **कर्तरिप्रयोग :** | लडका सो रहा है। | कुक्कोस ख़ंदर'आ लगदस। |
| | विपिन एक साईकिल खरीदेगा। | विपिनस ओन्टा सइकल ख़ेंदोस। |
| **कर्मणि प्रयोग :** | लड़के ने पुस्तक पढ़ी। | कुक्कोस पुथिन बचचस। |
| | लड़की से किताबें पढ़ी नहीं जाती। | कुकोय ति पुथि मल बचतार'ई। |
| **भावे प्रयोग :** | मुझसे उठा नहीं जाता। | एंगन ति मल चोतार'ई। |
| | रानी ने सहेलियों को बुलाया। | रानिद तंग सइहा बगारिन मीख़िया। |

संज्ञापद के प्रकार्य पर आधारित मत के अनुसार वाक्य में उद्देश्य का प्रकार्य सिद्ध करने वाला संज्ञापद अर्थ की दृष्टि से यदि क्रिया का कर्त्ता हो तो वाक्य कर्तृवाच्य में और क्रिया का कर्म हो तो वाक्य कर्मवाच्य में होगा। जहाँ क्रिया कर्त्ता या कर्म के विषय में विधान न करके केवल किसी भाव से सम्बद्ध होती है, वहाँ भाववाच्य होता है।

उपर्युक्त मत के अनुसार वाच्य तथा प्रयोग में भिन्नता है। 'प्रयोग' की अवधारणा से मतलब है 'रूप'। किन्तु 'वाच्य' का आधार रूप नहीं है प्रत्युत संज्ञापद का प्रकार्य है। प्रयोग मात्र क्रिया के रूप से सम्बद्ध होता है, अत' एक वाच्य में विभिन्न प्रयोग हो सकते हैं। जैसे-

**कर्तृवाच्य–**

| | |
|---|---|
| विपिन टहल रहा है (कर्तरिप्रयोग) | विपिनस कुद्दा लगदस। |
| विपिन ने किताब खरीदी (कर्मणि प्रयोग) | विपिनस पुथि ख़ेदियस। |
| रानी ने सहेलियों को बुलाया (भावे प्रयोग) | रानिद तंग सइयहा बगारिन मीख़िया। |

**कर्मवाच्य–**

| | |
|---|---|
| विपिन से पतंग नहीं उड़ाई जाती है (कर्मणि प्रयोग) | विपिनस ति गुड्डी मल उढ़ियातर'ई। |
| चोर को पकड़ा गया। (भावे प्रयोग) | चोरस धररस। |

**भाववाच्य–**

| | |
|---|---|
| धूप में बैठा नहीं जा रहा है (भावे प्रयोग) | बिड़ना नु मल ओकतार'आ लगी। |
| मुझसे रातभर जागा नहीं जाता (भावे प्रयोग) | एँगन ति सगर माख़ा मल एजेरतार'ई। |

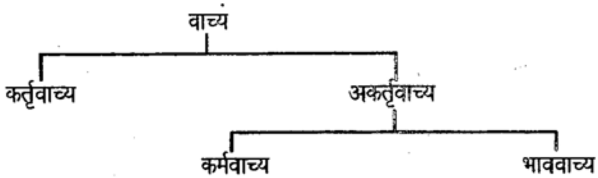
आधुनिक भाषा विज्ञान में वाच्य पर आर्थी प्रकार्यात्मक दृष्टि से विचार किया गया है, जिसमें संज्ञापद के प्रकार्य को ही वाच्य विवेचन का आधार बनाया गया है। इस विचारधारा के अनुसार वाच्य को मूलतः दो भागों में बाँटा गया है-

1. कर्तृवाच्य तथा
2. अकर्तृवाच्य।

अकर्तृवाच्य के भी दो भेद हैं-

1. कर्मवाच्य (सकर्मक क्रिया युक्त वाक्य) तथा
2. भाववाच्य (अकर्मक क्रियायुक्त वाक्य)

इस विभाजन को निम्नांकित आरेख के माध्यम से समझा जा सकता है[8]-




क्रिया की सकर्मकता और अकर्मकता के आधार पर अकर्तृवाच्य के पुनः दो भेद-क्रमशः कर्मवाच्य तथा भाववाच्य किये गये हैं।

कर्तृवाच्य वाक्यों में क्रिया कर्त्ता के विषय में विधान करती है अतः कर्त्ता ही वाक्य का उद्देश्य होता है। इस दशा में उद्देश्य या तो 'शून्य' परसर्ग युक्त होता है या 'ने' परसर्गयुक्त। सकर्मक क्रियायुक्त कर्तृवाच्य वाक्य में कर्म या तो शून्य परसर्गयुक्त होता है या उसके साथ 'को' पर सर्ग का प्रयोग होता है। कर्तृवाच्य में सकर्मक तथा अकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं का प्रयोग होता है तथा वे संदर्भनुसार कर्तृवाच्य, कर्मणिप्रयोग और भावेप्रयोग में हो सकती है। उदाहरण :-

| | |
|---|---|
| ऊषा सो रही है। | उसद ख़ँदर'आ लगी। |
| विपिन चाय बनायेगा। | विपिनस चाह कम'ओस। |
| विपिन ने चाय बनाई। | विपिनस चाह कमचस। |
| माँ ने बेटी को दुलराया। | तंगियो तंगदन चोन्हा नंजा। |

अकर्तृवाच्य वाक्यों में भी कर्त्ता होते ही हैं किन्तु क्रिया उनके विषय में कुछ विधान नहीं करती अर्थात् वह वाक्य का उद्देश्य बनकर नहीं आता।

**अकर्तृवाच्य के दो भेद हैं**– 1. कर्मवाच्य और 2. भाव वाच्य।

**1. कर्मवाच्य :** सकर्मक क्रियायुक्त वाक्यों का अकर्तृवाच्य रूप, जिसमें कर्ता के स्थान पर कर्म उद्देश्य बनकर आता है।

**2. भाववाच्य :** अकर्मक क्रियायुक्त वाक्यों का अकर्तृवाच्य रूप कर्मवाच्य तथा भाववाच्य में समानता के कई बिन्दु हैं।[9]

(अ) दोनों ही संरचनाओं में वाक्य का अन्तनिर्हित कर्ता उद्देश्य रूप में नहीं आता।

(आ) दोनों संरचनाओं में बाह्य स्तर पर कर्त्ता या तो लुप्त रहता है या कुछ विशिष्ट परसर्गों से युक्त होकर आता है।

(इ) दोनों सरंचनाओं में क्रिया अकर्तृरूपियों पूर्ण (-पक्ष+जा) से युक्त होकर आती है।

| **उदाहरणार्थ** | **कर्मवाच्य** |
|---|---|
| पन्द्रह अगस्त को पतंगे उड़ाई जायेंगी (कर्ता+से) | दोय पंचे अगस्त अउला गुड्डी उढ़ियोओर। |
| विपिन से खाना नहीं बनाया जाता। | विपिनस ति मण्डी मल बितितार'ई। |
| इस घाट पर नहाया जाता है (कर्ता+०) | ई घाट नु एमतार'ई। |
| ऊषा से तेज नहीं दौड़ा जाता। (कर्ता+से) | उसा ति जोड़ से मल बोंगतार'ई। |

कर्मवाच्य तथा भाववाच्य में प्रकृति तथा संरचनागत कुछ अन्तर भी है-

(अ) कर्मवाच्य संरचना केवल सकर्मक क्रिया के साथ सम्भव है और भाववाच्य संरचना केवल अकर्मक क्रिया के साथ।

(आ) कर्त्ता के उद्देश्यपद से हट जाने के कारण कर्मवाच्य में कर्म उद्देश्य बनकर आता है, जबकि भाववाच्य में ऐसा संभव नहीं है।

(इ) कर्मवाच्य में कर्त्ता के व्यक्त रहने की दशा में उसके साथ 'से' के अतिरिक्त 'के द्वारा' 'के हाथों' आदि परसर्गों का प्रयोग भी संभव है किन्तु भाववाच्य में इनका प्रयोग वाक्य को असहज बना देता है। उदाहरण दर्शनीय हैं-

**हिन्दी** : राज्यपाल के द्वारा सत्र का उद्‌घाटन किया गया।
विपिन द्वारा छत पर सोया गया।

**कुड़ुख़** : राज्यपालस ति बइसकी केरमे गहि दवले ओर ननतारा।
विपिनस ति मेसगा मइय्या ख़ंदरतारा।

(ई) कर्मवाच्य में क्रिया की रूप रचना इसके व्युत्पन्न अकर्मक रूप के प्रयोग द्वारा भी हो सकती है। जैसे-

| | |
|---|---|
| आज नास्ते के लिए समोसे बन रहे हैं। (बनाये जा रहे हैं) | इन्ना लण्डी लोहाड़ी ननागे सिंघाड़ा कमर'आ लगी। |
| मुझसे कपड़े नहीं धुलेंगे (धोये जायेंगे) | एंगनति किचरी मल नोड़तार'ओ। |

चूँकि भाववाच्य में अकर्मक क्रिया का ही प्रयोग होता है इसलिए इसमें उपर्युक्त प्रकार की रूप रचना असम्भव है। इन्हीं विभिन्नताओं के कारण कर्मवाच्य और भाववाच्य को अकर्तृवाच्य के अन्तर्गत दो श्रेणियों में रखा गया है।

वाच्य के अन्दर तीन महत्वपूर्ण घटक है-1. कर्त्ता 2. कर्म 3. क्रिया।

कर्ता और क्रिया वाच्य के प्रत्येक वाक्य के लिए अनिवार्य घटक है किन्तु कर्म सिर्फ कर्मवाच्य का अनिवार्य घटक है।

**1. कर्ता (उद्देश्य)**- 'कारक' का एक भेद है कर्त्ता। इस रूप में कर्ता की परिधि बहुत व्यापक है। जो भी वस्तुएँ या बातें क्रिया के अभिनिष्पादन में योगदान करती है या योगदान करने में समर्थ हैं, उन्हें कर्त्ता माना गया है।[10]

क्रिया के द्रष्टा, अनुभावक, भोक्ता आदि के अतिरिक्त प्राकृतिक प्रक्रियाएँ और हेतु आदि भी कर्त्ता के अन्तर्गत आते हैं। यहा कर्त्ता (+सजीव) भी हो सकता है और (-सजीव) भी।[11] उदाहरणार्थ-

| | |
|---|---|
| विपिन यह बात जानता है। (द्रष्टा) | विपिनस ई कत्थन अख़दस। (एरू) |
| अजय अंधेरे से डरता है। (अनुभावक) | अजयस ऊख़ाति एलेचदस। (बुझरूऊ) |
| विपिन काई पर फिसल गया। | विपिनस कंइय्या नु नुरदियस केरस। |
| नदी बहती है। (प्राकृतिक प्रक्रिया) | ख़ाड़ बह'ई। (तानिम मन्ना) |
| ओले फसल को चौपट कर देंगे। | आली खेतिन पिटो चि'ओ। |

प्रसंगवश कर्त्ता और क्रिया का थोड़ा उल्लेख भर किया जा रहा है। हमारा मुख्य लक्ष्य कर्म के विस्तृत उल्लेख से सम्बन्ध है।

**2. कर्म**-परम्परागत व्याकरण के अनुसार कर्म की परिभाषा इस रूप में हैं-

''जिस वस्तु पर क्रिया के व्यापार का फल पड़ता है उसे सूचित करने वाले संज्ञा के रूप को कर्म कारक कहते हैं।" यह कर्म कहीं क्रिया के परिणामस्वरूप अस्तित्व में आता है।[12]

| | |
|---|---|
| हुसेन ने एक चित्र बनाया। | हुसेनस ओण्टा छपा कमचस। |

कहीं यह पूर्वस्थित होता है किन्तु क्रिया से प्रभावित होकर इसके स्वरूप में परिवर्तन आ जाता है।

| | |
|---|---|
| लीना सेव छील रही है। | लीनद सेवन छोल'आ लगी। |

कहीं 'कर्म' क्रिया से अप्रभावित रहता है।

| | |
|---|---|
| दमयन्ती ने एक हंस देखा। | दमयन्तीद ओण्टा हंसा ईरिया। |

"कर्म को उस 'वस्तु या उद्देश्य' के रूप में भी परिभाषित किया गया है जिसकी प्राप्ति या पूर्ति के लिए कर्त्ता शरीर व मन से सक्रिय होता है।"[13]

इस प्रकार कर्म अपने आप में अत्यन्त व्यापक अर्थ में व्यवहृत होता है। कर्मकारक के अन्तर्गत आनेवाले अभिधेयों में से केवल वे ही कर्मवाच्य के प्रसंग में हैं जिनकी कुछ विशिष्ट आर्थी भूमिका 'कर्म, भोक्ता, पीड़ित, लब्धा' हो। केवल ये ही आभ्यंतर कारक कर्मवाच्य में उद्देश्य के रूप में आ सकते हैं।[14]

1. विपिन ने अजय को पुस्तक दी। — विपिनस अजयसगे पुथि चिच्चस।
   (अभिकर्ता$_1$+प्राप्तकर्ता$_2$+कर्म$_3$)(+उद्देश्य) — (अभिकर्ता$_1$+प्राप्तकर्ता$_2$+कर्म$_3$)(+उद्देश्य)
2. अजय को पुस्तक दी गई। (+उद्देश्य) — अजयसगे पुथि चितारा।
3. पुलिस चोर को पीट रही है। — (अभिकर्ता$_1$+पीड़ित$_2$) (+उद्देश्य)
   चोर (को) पीटा जा रहा है। — (+उद्देश्य)

**कुड़ुख़ :** पुलिस चोरासिन पस'आ लगी। चोरस पसर'आ लगदस।

4. माँ$_1$ बच्चे को$_2$ प्यार से समझाती है। (अभिकर्ता$_1$+लब्ध$_2$)(+उद्देश्य)
   बच्चे को प्यार से समझाया जता है। (+उद्देश्य)

**कुड़ुख़ :** अयंग ख़द्दासिन चोन्हा तुले बुझाब'ई। ख़द्दासिन चोन्हा तुले बुझाबातार'ई।

5. विपिन ताला खोलेगा। (अभिकर्ता$_1$+कर्म$_2$)(+उद्देश्य) विपिनस ताला तिसगो'ओस।
   ताला खोला जायगा। (+उद्देश्य) ताला तिसगतार'ओ।
6. ऊषा$_1$ बच्चे को$_2$ (गोद में) उठा रही है। (अभिकर्ता$_1$+भोक्ता$_2$)(+उद्देश्य)
   ऊषा ख़द्दसिन पाका लगी।

बच्चे को गोद में उठाया जा रहा है। (+उद्देश्य) ख़द्दसिन पाकागे चोदतार'आ लगी।

स्पष्ट है कि पीड़ित, लब्धा, कर्म तथा भोक्ता हिन्दी में कर्मवाच्य के उद्देश्य बनकर आ सकते हैं, किन्तु प्राप्तकर्ता या गौण कर्म नही। हिन्दी कर्मवाच्य के अन्तर्गत सभी उद्देश्य संज्ञापद कर्म होते हैं किन्तु सभी कार्य संज्ञापदों में कर्मवाच्य का उद्देश्य होने की योग्यता नहीं लेती।

**3. क्रिया :** क्रिया को वाक्य का मूल तत्व माना जाता है। क्रिया केन्द्रिक है। क्रिया की प्रकृति ही वाक्य के प्रकार निर्धारित करती है। क्रिया चार प्रकार की होती है-1. स्थितिपरक (स्टेट) 2. प्रक्रिया परक (प्रॉसेस) 3. कार्यपरक (ऐक्शन) 4. कार्य प्रक्रियापरक (ऐक्शन प्रॉसेस)

**1. स्थितिपरक क्रिया :**

| | |
|---|---|
| 1. यह एक घर है। | इद ओन्टा एड़पा तली। |
| 2. विपिन को शायद जुकाम होगा। | विपिनसगे मना उंगी सरदी मनो। |
| 3. अजय उदास है। | अजयस हदियारका र'अस। |

**2. प्रक्रियापरक क्रिया :**

| | |
|---|---|
| कपड़े सूख रहे हैं। | किचरी ख़ाया लगी। |
| अजय अन्धेरे से डरता है। | अजयस ऊख़ाति एलेचदस। |

**3. कार्यपूरक क्रिया :**

| | |
|---|---|
| विपिन दौड़ रहा था। (+अभिकर्ता) | विपिनस बोंगा लगियस। (+अभिकर्ता) |
| ऊषा वहुत हँसती है। (+अभिकर्ता) | ऊषा अनैत अलखी। (+अभिकर्ता) |
| वह काँप गया। (+अभिकर्ता) | आस असरियस केरस। (+अभिकर्ता) |
| विपिन बार बार छींक रहा है। (+अभिकर्ता) | विपिनस घड़ी घड़ी तुम्मा लगदस। (+अभिकर्ता) |

**4. कार्य प्रक्रिया पूरक क्रिया :**

| | |
|---|---|
| कैदी चटाइयाँ बुन रहे हैं। | कैदिर पिटरी एस्सा लगनर। |
| विपिन ने रद्दी कागज जलाए। | विपिनस चर्रका कगजन ओलताचस। |

वाच्य वक्ता द्वारा अपने कथन को प्रस्तुत करने की वह प्रणाली है, जिससे पदों के विशिष्ट व्याकरणिक संयोजन के द्वारा कथ्य में महत्व के केन्द्र या ध्यान बिन्दु को निर्दिष्ट किया जाता है।

कर्तृवाच्य वक्ता द्वारा अपने कथ्य को प्रस्तुत करने की एक ऐसी प्रणाली है जिसमें क्रिया के कर्त्ता (अर्थात लौकिक कर्ता/अभिकर्ता) पर बल देना अभीष्ट होने के कारण उसे ही वाक्य का उद्देश्य बनाकर कथन की अग्रभूमि में रखा जाता है।

कर्मवाच्य वह संरचना है जिसमें अभिकर्ता को महत्व देना अभीष्ट न होने के कारण उसे पश्चप्रस्तुत (बैकग्राउण्ड) कर दिया जाता है और कर्म को ध्यान बिन्दु के रूप में अग्रप्रस्तुत (फोरग्राउण्ड) किया जाता है।

भाववाच्य अकर्मक क्रियायुक्त वाक्यों की वह संरचना है जिसमें अभिकर्ता पर बल देना अभीष्ट न होने के कारण उसे पश्चप्रस्तुत कर दिया जाता है और कथ्य का बल भावरूप क्रिया पर होने के कारण उसे ध्यान बिन्दु बनाया जाता है।

उपर्युक्त तथ्यों को स्पष्ट करने के लिए निम्नांकित उदाहरण द्रष्टव्य है।

| | |
|---|---|
| 1. ऊषा खाना बना रही है। (कर्तृवाच्य) | ऊषा मण्डी बित'आ लगी। (कर्तृवाच्य) |
| 2. खाना ऊषा बना रही है। | मण्डी ऊषा बित'आ लगी। |
| 3. ऊषा द्वारा खाना बनाया जा रहा है। (कर्मवाच्य) | ऊषा ति मण्डी बितता'आ लगी। (कर्मवाच्य) |
| 4. खाना ऊषा द्वारा बनाया जा रहा है। | मण्डी ऊषा ति बितता'आ लगी। |
| 5. अब विपिन से चला नहीं जा रहा है। (भाववाच्य) | अक्कु विपिनस ति मल एकतार'आ लगी। (भाववाच्य) |

ये है पश्चग्राउण्डेड और फोरग्राउण्डेड के उदाहरण। इन्हें व्याकरणेतर युक्ति का प्रतिफल कहा जा सकता है।

संयुक्त काल के अन्तर्गत क्रिया संयोगात्मक (संश्लेषणात्मक) तथा वियोगात्मक (विश्लेषणात्मक) हो सकती है। जब प्रत्यय के संयोग से क्रिया कर्मवाच्य में व्यवहृत होती है, तो वह क्रिया 'प्रत्य संयोगी' है। जैसे-

'लगना' क्रिया की धातु 'लग' में इये इए से लगाइये/लगाइए।

'नन्दना' क्रिया की धातु में 'इये/इए' लगाने से कहिये/कहिए।

| | |
|---|---|
| 'पाना' में 'इये' | - पाइये/पाइए। |
| 'लाना' में 'इये' | - लाइये/लाइए। |
| 'डरना' में 'इये/इए' | - डरिये/डरिए। |

ये सारे उदाहरण प्रत्य संयोगी कर्मवाच्य की क्रिया के हैं तथा ये संयोगात्मक कर्मवाच्य (संश्लेषणात्मक कर्मवाच्य) के अन्तर्गत आयेंगी।

वियोगात्मक (विश्लेषणात्मक) कर्म वाच्य के अन्तर्गत संयुक्त काल की क्रिया का अन्तिम अंश जाना या जाना का भूत भविष्यकालीन रूप जुड़ा रहता है।[15] जैसे-

| | |
|---|---|
| भागा जाता हूँ। | बोंग कादन। |
| चला जाता है। | चइल कादन। |

| | |
|---|---|
| किया जाता है। | ननतार'ई। |
| गिना जाता है। | गिनतार'ई। |
| चला गया है। | चइल केरका र'अस। |
| मारा गया, आदि। | लवतारस केरस, एन्नेम। |

इस प्रकार के और ढेर सारे उदाहरण हिन्दी में और कुड़ुख़ में भी प्रयोग के आधार पर क्रिया के विश्लेषणात्मक रूप :-

कुड़ुख़ कत्था में हरेक वाक्य की ऐसी सुगठित क्रियायें हैं कि उनके अपने अलग-अलग साधारण रूप धातु विधिरूप भूतकालिक रूप और पूर्णकालिक रूप है तथा सभी कालों में उनकी रूपावलियाँ होती हैं।

आगे साधारण क्रियाओं से कर्म तथा भाववाच्य के लिए क्रियायें दी जा रही है। प्रत्येक क्रिया से प्रायः दो प्रकार की क्रियाएँ उत्पन्न होती है जिनका अर्थ एक-सा है, वे सूचियों में दी जा रही है।[16]

कर्मवाच्य के लिए प्रस्तुत क्रियाओं की सूची-

| मूल सं० क्रिया | कर्मवाच्य के लिये क्रिया का सा० रूप | धातु | विधि रूप | भूतकालिक रूप | पूर्णकालिक रूप | अर्थ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अख़ना | अख़रना | अख़ | अख़र'आ | अक्ख़रा | अख़रका | जाना जाना |
| | अख़तारना | अख़ | अख़तार'आ | अख़तारा | अख़तारका | जानना |
| अत्तना | अत्तरना | अत्त | अत्तर'आ | अत्तरा (अत्तरका) | अत्तरका | पहिना जाना |
| | अत्ततारना | अत्त | अत्ततारा | अत्ततारका | अत्तारका | |
| अम्बना | अम्बरना | अम्ब | अम्बर'आ | अम्बरा | अम्बरका | छोड़ा जाना |
| | अम्बतारना | अम्ब | अम्बतार'आ | अम्बतारा | अम्बतारका | |
| अरख़ना | अरख़रना | अरख़ | अरख़र'आ | अरख़रा | अरख़रका | कोड़ा जाना |
| | अरख़तारना | अरख़ | अरख़तार'आ | अरख़तारा | अरख़तारका | |
| अस्सना | अस्सरना | अस्स | अस्सर'आ | अस्सरा | अस्सरका | बजाया जाना |
| | अस्सतारना | अस्स | अस्सतार'आ | अस्सतारा | अस्सतारका | |
| अड़ना | अड़रना | अड़ | अड़र'आ | अड़र्रा | अड़रका | बाजे का छारा |
| | अड़तारना | अड़ | अड़तार'आ | अड़रतारा | अड़तारका | |
| इचना | इचरना | इच | इचर'आ | इच्चरा | इचिरका | रोपना |
| | इचतारना | इच | इचतार'आ | इचतारा | इचतारका | |
| इदना | इदरना | इद | इदतार'आ | इद्दरा | इदरका | |
| | इदतारना | इद | इदतार'आ | इदतारा | इदतारका | |
| इड़ना | इड़रना | इड़ | इड़र'आ | इड़रा | इड़िरका | भूनना |
| | इड़तारना | इड़ | इड़तार'आ | इड़तारा | इड़तारका | |
| इंजना | इंजरना | इंज | इंजर'आ | इंजरा | इंजरका | स्वीकार करना |
| | इंजतारना | इंज | इंजतार'आ | इंजतारा | इंजतारका | |
| उइना | उइरना | उइ | उइर'आ | उइरा | उइरका | |
| | उइतारना | उइ | उइतार'आ | उइरा | उइतारका | |

| मूल सं० क्रिया | कर्मवाच्य के लिये क्रिया का सा० रूप | धातु | विधि रूप रूप | भूतकालिक रूप | पूर्णकालिक रूप | अर्थ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उयिना | उयिरना | उयि | उयिर'आ | उयिरा | उयिरका | |
| | उयितारना | उयि | उयितार'आ | उयितारा | उयितारका | |
| उठाब'अना | उठाबारना | उठा | उठाबार'आ | उठरा | उठुरका | |
| | उठाबातारना | उठा | उठाबातार'आ | उठतारा | उठतारका | |
| एजना | एजरना | एज | एजर'आ | एज्जरा | एजेरका | |
| | एजतारना | एज | एजतार'आ | एजतारा | एजतारका | |
| एसना | एसरना | एस | एस्सर'आ | एस्सरा | एसेरका | |
| | एसतारना | एस | एसतार'आ | एसतारा | एसेतारका | |
| एस्सना | एसेरना | एस्स | एसर'आ | एस्सरा | एसेरका | |
| | एस्सतारना | एस्स | एसतार'आ | एसतारा | एसतारका | |
| एगना | ए-गेरना | ए-ग | ए-गर'आ | ए-गरा | ए-गेरका | |
| | ए-गतारना | ए-ग | ए-गतार'आ | ए-गतारा | ए-गतारका | |
| एदना | ए-देरना | ए-द | ए-दर'आ | ए-दरा | ए-देरका | |
| | ए-दतारना | ए-द | ए-दतार'आ | ए-दतारा | ए-दतारका | |
| एरना | एररना | एर | एरर'आ | एररा | एथेरका | |
| | एरतारना | एर | एरतार'आ | एदतारा | एदतारका | |
| एर्रना | एर्ररना | एर्र | एर्रर'आ | एर्ररा | एर्ररका | |
| | एर्रतारना | एर्र | एर्रतार'आ | एर्रतारा | एर्रतारका | |
| ओज्जना | ओजोरना | ओज्ज | ओजोर'आ | ओज्जरा | ओजोरका | |
| | ओज्जतारना | ओज्ज | ओज्जतार'आ | ओज्जतारा | ओज्जतारका | |
| ओथोरना | ओथोरना | ओथ | ओथोरतार'आ | ओत्थरा | ओथोरका | |
| | ओथोरतारना | ओथ | ओथोरतार'आ | ओथोरतारा | ओथोरतारका | |
| ओदना | ओदरना | ओद | ओदर'आ | ओद्दरा | ओदोरका | |
| | ओदतारना | ओद | ओदतार'आ | ओदतारा | ओदतारका | |
| ओन्ना | ओनोरना | ओन | ओनर'आ | ओन्नरा | ओनोरका | |
| | ओनतारना | ओन | ओनतार'आ | ओनतारा | ओनतारका | |
| कज्जना | कजरना | कज्ज या | कजर'आ | कज्जरा | कजरका | |
| | कजरना | कज्ज | कजर'आ | कज्जरा | कजरका | |
| | कजतारना | कज्ज | कजतार'आ | कजतारा | कजतारका | |
| कप्पना | कपरना | कप्प | कपर'आ | कप्परा | कपरका | |
| | कप्पतारना | कप्प | कप्पतार'आ | कप्पतारा | कप्पतारका | |
| कमना | कमरना | कम | कमर'आ | कम्मरा | कमरका | |
| | कमतारना | कम | कमतार'आ | कमतारा | कमतारका | |

| मूल सं० क्रिया | कर्मवाच्य के लिये क्रिया का सा० रूप | धातु | विधि रूप | भूतकालिक रूप | पूर्णकालिक रूप | अर्थ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कीदना | कीदिरना | कीद | कीदर'आ | कीदरा | कीदिरका | |
| | कीदतारना | कीद | कीदतार'आ | कीदतारा | कीदतारका | |
| केबना | केबेररना | केब | केबर'आ | केब्बरा | केबेरका | |
| | केबतारना | केब | केबतार'आ | केबतारा | केबतारका | |
| केबेरना | केबेर मोख़ना | केब मोख़ | केबेर मोख़ा | केबेर मोक्का | केबेर मोख़ोरका | |
| कुम्मना | कुमुरना | कुम्म | कुम्मर'आ | कुम्मरा | कुमुरका | |
| | कुम्मतारना | कुम्म | कुम्मतार'आ | कुम्मतारा | कुम्मतारका | |
| खटना | खटरना | खट | खटर'आ | खट्टरा | खटरका | |
| | खटतारना | खट | खटतार'आ | खटतारा | खटतारका | |
| ख़ोजना | ख़ोजोरना | ख़ोज | ख़ोजर'आ | ख़ोजरा | ख़ोजोरका | |
| | ख़ोजतारना | ख़ोज | ख़ोजतार'आ | ख़ोजतारा | ख़ोजतारका | |
| ख़ोयना | ख़ोयरना | ख़ोय | ख़ोयर'आ | ख़ोयरा | ख़ोयरका | |
| | ख़ोयतारना | ख़ोय | ख़ोयतार'आ | ख़ोयतारा | ख़ोयतारका | |
| ख़ोल्लना | ख़ोल्लरना | ख़ोल्ल | ख़ोल्लर'आ | ख़ोल्लरा | ख़ोलोरका | |
| | ख़ोल्लतारना | ख़ोल्ल | ख़ोल्लतार'आ | ख़ोल्लतारा | ख़ोल्लतारका | |
| घोरना | घोररना | घोर | घोरर'आ | घोर्रा | घोरोरका | |
| | घोरतारना | घोर | घोरतार'आ | घोरतारा | घोरतारका | |
| चर्रना | चर्ररना | चर्र | चर्रर'आ | चर्ररा | चर्ररका | |
| | चर्रतारना | चर्र | चर्रतार'आ | चर्रतारा | चर्रतारका | |
| चलाबअना | चलाबरना | चला | चलर'आ | चल्लरा | चलरका | |
| | चलाबतारना | चला | चलतार'आ | चलतारा | चलतारका | |
| चबना | चबरना | चब | चबर'आ | चब्बरा | चबरका | |
| | चबतारना | चब | चबतार'आ | चबतारा | चबतारका | |
| चाँख़ना | चाँख़रना | चाँख़ | चाँख़र'आ | चाँख़रा | चाँख़रका | |
| | चाँख़तारना | चाँख़ | चाँख़तार'आ | चाँख़तारा | चाँख़तारका | |
| चाजना | चाजरना | चाज | चाजर'आ | चाजरा | चाजरका | |
| | चज्जरना | चज्ज | चज्जर'आ | चज्जरा | चज्जरका | |
| | चाजतारना | चाज | चाजतार'आ | चाजतारा | चाजतारका | |
| चि'इना | चि'इरना | चि'इ | चि'इर'आ | ची-रा | ची-रका | |
| | चितारना | चि | चीतार'आ | चीतारा | चितारका | |
| चिपना | चिपिरना | चिप | चिपर'आ | चिप्परा | चिपिरका | |
| | चीपतारना | चिप | चिपतार'आ | चिपतारा | चिपतारका | |
| चूगना | चूगुरना | चूग | चूगर'आ | चूगरा | चूगुरका | |
| | चूगतारना | चूग | चूगतार'आ | चूगतारा | चूगतारका | |

| मूल सं० क्रिया | कर्मवाच्य के लिये क्रिया का सा० रूप | धातु | विधि रूप रूप | भूतकालिक रूप | पूर्णकालिक रूप | अर्थ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| चेड़ना | चेड़ेरना | चेड़ | चेड़र'आ | चेड्डरा | चेडेरका | |
| | चेड़तारना | चेड़ | चेड़तार'आ | चेड़तारा | चेड़तारका | |
| चैंदना | चैंदरना | चैंद | चैंदर'आ | चैंदरा | चैंयदरका | |
| चंएदना | चंएददतारना | चंएद | चंएददतार'आ | चैंदतारा | चैंदतारका | |
| चोख़ना | चोख़रना | चोख़ | चोख़र'आ | चोक्खरा | चोखोरका | |
| | चोख़तारना | चोख़ | चोख़तार'आ | चोख़तारा | चोख़तारका | |
| चो-दना | चो-दरना | चो-द | चो-दर'आ | चो-दरा | चो-दरका | |
| | चो-दतारना | चो-द | चो-दतार'आ | चो-दतारा | चो-दतारका | |
| तइना | तइरना | तइ | तइर'आ | तइरा | तइरका | |
| | तइतारना | तइ | तइतार'आ | तइतारा | तइतारका | |
| तुक्कना | तुकुरना | तुक्क | तुकर'आ | तुक्करा | तुकुरका | |
| | तुकतारना | तुक | तुकुर'आ | तुक्कतारा | तुक्कतारका | |
| तोक्खना | तोखोरना | तोक्ख | तोक्खर'आ | तोक्खरा | तोखोरका | |
| | तोक्खतारना | तोक्ख | तोक्खतार'आ | तोक्खतारा | तोक्खतारका | |
| दगना | दगरना | दग | दगर'आ | दग्गरा | दगरका | |
| | दगतारना | दग | दगतार'आ | दगतारा | दगतारका | |
| ननना | ननरना | नन | ननर'आ | नन्नरा | ननरका | |
| | ननतारना | नन | ननतार'आ | ननतारा | ननतारका | |
| नपना | नपरना | नप | नपर'आ | नप्परा | नपरका | |
| | नपतारना | नप | नपतार'आ | नपतारा | नपतारका | |
| नसना | नसरना | नस | नसर'आ | नस्सरा | नसरका | |
| | नसतारना | नस | नसतार'आ | नसतारा | नसतारका | |
| नाड़ना | नाड़रना | नाड़ | नाड़र'आ | नाड़रा | नाड़रका | |
| | नाड़तारना | नाड़ | नाड़तार'आ | नाड़तारा | नाड़तारका | |
| नुकना | नुकुरना | नुक | नुकर'आ | नुक्करा | नुकुरका | |
| | नुकुतारना | नुक | नुकुतार'आ | नुकतारा | नुकतारका | |
| नुड़ना | नुड्डुरना | नुड़ | नुड़र'आ | नुड्डरा | नुड्डुरका | |
| | नुड़तारना | नुड़ | नुड़तार'आ | नुड़तारा | नुड़तारका | |
| नूख़ना | नूखुरना | नूख़ | नूख़र'आ | नूख़रा | नूखुरका | |
| | नूख़तारना | नूख़ | नूख़तार'आ | नूख़तारा | नूख़तारका | |
| नूतना | नूतुरना | नूत | नूतुर'आ | नूतरा | नूतुरका | |
| | नूततारना | नूत | नूततार'आ | नूततारा | नूततारका | |
| ने'एना | ने-रना | ने'ए | ने-र'आ | नेतरा | नेतेरका | |
| | ने-तारना | ने'ए | ने-तार'आ | नेतारा | नेततारका | |

| मूल सं० क्रिया | कर्मवाच्य के लिये क्रिया का सा० रूप | धातु | विधि रूप रूप | भूतकालिक रूप | पूर्णकालिक रूप | अर्थ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पसना | पसरना | पस | पसर'आ | पस्सरा | पसरका | |
| | पसतारना | पस | पसतार'आ | पसतारा | पसतारका | |
| बचना | बचरनो | बच | बचर'आ | बच्चरा | बचरका | |
| पढ़ना | पढ़रना | पढ़ | पढ़र'आ | पढरा | पढ़रका | |
| | बचतारना | बच | बचतार'आ | बचतारा | बचतारका | |
| | पढ़तारना | पढ़ | पढ़तार'आ | पढ़ारा | पढ़तारका | |
| पढ़ाबअना | पढ़ाबारना | पढ़ा | पढ़ावार'आ | पढ़ाबारा | पढ़ाबाररका | |
| | पढ़ाबातरना | पढ़ा | पढ़ाबातर'आ | पढ़ाबातारा | पढ़ाबातारका | |
| पाकना | पाकरना | पाक | पाकर'आ | पाकरा | पाकारका | |
| | पकरना | पक | पकर'आ | पक्करा | पकरका | |
| | पाकतारना | पाक | पाकतार'आ | पाकतारा | पाकतारका | |
| पींख़ना | पींख़िरना | पींख़ | पींख़र'आ | पींख़रा | पींख़िरका | |
| | पींख़तारना | पींख़ | पींख़तार'आ | पींख़तारा | पींख़तारका | |
| पीसना | पीसिरना | पीस | पीसर'आ | पीसरा | पीसिरका | |
| | पीसतारना | पीस | पीसतार'आ | पीसतारा | पीसतारका | |
| पूख़ना | पूख़ुरना | पूख़ | पूख़र'आ | पूख़रा | पूख़ुरका | |
| | पूख़तारना | पूख़ | पूख़तार'आ | पूख़तारा | पूख़तारका | |
| पेसना | पेसरना | पेस | पेसर'आ | पेस्सरा | पेसेरका | |
| | पेसतारना | पेस | पेसतार'आ | पेसतारा | पेसतारका | |
| पोसना | पोसोरना | पोस | पोसर'आ | पोसरा | पोसोरका | |
| | पोसतारना | पोस | पोसतार'आ | पोसतारा | पोसतारका | |
| बीसना | बीसिरना | बीस | बीसर'आ | बीसरा | बीसिरका | |
| | बीसतारना | बीस | बीसतार'आ | बीसतारा | बीसतारका | |
| बछाबअना | बछाबारना | बछाबा | बछाबार'आ | बछाबारा | बछाबारका | |
| | बछाबातरना | बछाबा | बछाबातर'आ | बछाबातारा | बछाबातारका | |
| मंखना | मंखरना | मंख | मंखर'आ | मंखरा | मंखरका | |
| | मंखतारना | मंख | मंखतार'आ | मंखतारा | मंखतारका | |
| मंजना | मंजरना | मंज | मंजर'आ | मंजरा | मंजरका | |
| | मंजतारना | मंज | मंजतार'आ | मंजतारा | मंजतारका | |
| मुच्चना | मुचुरना | मुच्च | मुचर'आ | मुच्चरा | मुचुरका | |
| | मुचुरना | मुच | मुचर'आ | मुचतारा | मुचतारका | |
| | मुच्चतारना | मुच्च | मुच्चतार'आ | मुच्चतारा | मुच्चतारका | |
| मुंजना | मुंजुरना | मुंज | मुंजर'आ | मुंजरा | मुंजरका | |
| | मुंजतारना | मुंज | मुंजतार'आ | मुंजतारा | मुंजतारका | |

| मूल सं० क्रिया | कर्मवाच्य के लिये क्रिया का सा० रूप | धातु | विधि रूप रूप | भूतकालिक रूप | पूर्णकालिक रूप | अर्थ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मेक्खना | मेक्खरना | मेक्ख | मेक्खर'आ | मेक्खरा | मेखेरका | |
| | मेक्खतारना | मेक्ख | मेक्खतार'आ | मेक्खतारा | मेक्खतारका | |
| मेख़ना | मेख़ेरना | मेख़ | मेख़र'आ | मेख़रा | मेख़ेरका | |
| | मेख़तारना | मेख़ | मेख़तार'आ | मेख़तारा | मेख़तारका | |
| मेटना | मेटरना | मेट | मेटर'आ | मेट्टरा | मेटेरका | |
| | मेटतारना | मेट | मेटतार'आ | मेटतारा | मेटतारका | |
| मेनना | मेनेरना | मेन | मेनर'आ | मेन्नरा | मेनेरका | |
| | मेनतारना | मेन | मेनतार'आ | मेनतारा | मेनतारका | |
| मेसना | मेसेरना | मेस | मेसर'आ | मेसरा | मेसरका | |
| | मेसतारना | मेस | मेसतार'आ | मेसतारा | मेसतारका | |
| मोख़ना | मोख़ोरना | मोख़ | मोख़र'आ | मोक्ख़रा | मोख़ोरका | |
| | मोख़तारना | मोख़ | मोख़तार'आ | मोख़तारा | मोख़तारका | |
| मोचना | मोचरना | मोच | मोचर'आ | मोचरा | मोचोरका | |
| | मोचतारना | मोच | मोचतार'आ | मोचतारा | मोचतारका | |
| लथना | लथरना | लथ | लथर'आ | लत्थरा | लथरका | |
| | लथतारना | लथ | लथतार'आ | लथतारा | लथतारका | |
| लवओना | लओरना | ल'अ | लओर'आ | लवरा | लवरका | |
| | लओतारना | ल'अ | लओतार'आ | लवतारा | लवतारका | |
| लस्सना | लसरना | लस्स | लसर'आ | लस्सरा | लसरका | |
| | लसतारना | लस्स | लसतार'आ | लसतारा | लसतारका | |
| लिखना | लिखिरना | लिखि | लिखिर'आ | लिखरा | लिखिरका | |
| टूड़ना | टूडुरना | टूड़ | टूड़र'आ | टूड़रा | टूडुरका | |
| | टूड़तारना | टूड़ | टूड़तार'आ | टूड़तारा | टूड़तारका | |
| | लिखितारना | लिख | लिखतार'आ | लिखतारा | लिखतारका | |
| सेकना | सेकेरना | सेक | सेकर'आ | सेक्करा | सेकेरका | |
| | सेकतारना | सेक | सेकतार'आ | सेकतारा | सेकतारका | |
| सोचना | सोचोरना | सोच | सोचर'आ | सोच्चरा | सोचोरका | |
| | सोचतारना | सोच | सोचतार'आ | सोचतारा | सोचतारका | |
| हो'ओना | होरना | हो'अ | होर'आ | हो-रा | हो-रका | |
| | होतारना | हो'अ | होतार'आ | होतारा | होतारका | |
| हे'एना | हेरना | हे'अ | हेर'आ | हे-रा | हे-रका | |
| | हेतारना | हे'अ | हेतार'आ | हेतारा | हेतारका | |
| हेबेड़ना | हेबेड़रना | हेबड़ | हेबड़र'आ | हेबेड़रा | हेबेड़रका | |
| | हेबड़तारना | हेबड़ | हेबड़तार'आ | हेबेड़तारा | हेबेड़तारका | |

| मूल सं० क्रिया | कर्मवाच्य के लिये क्रिया का सा० रूप | धातु | विधि रूप रूप | भूतकालिक रूप | पूर्णकालिक रूप | अर्थ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| निन्दना | निन्दिरना | निन्द | निन्दर'आ | निन्दरा | निन्दिरका | |
| | निन्दतारना | निन्द | निन्दतार'आ | निन्दतारा | निन्दतारका | |
| नोड़ना | नोड़रना | नोड़ | नोड़र'आ | नोड़रा | नोड़ोरका | |
| | नोड़तारना | नोड़ | नोड़तार'आ | नोड़तारा | नोड़तारका | |

**कर्मवाच्य की क्रिया रूपावली :**

**तीनों कालों** – वर्तमान काल, भूतकाल तथा भविष्यत काल तथा उनके विभिन्न भेदों के अनुरूप क्रिया के रूप तथा वाक्य के ढाँचे प्रस्तुत हैं। ढाँचे के अन्तर्गत 'पुरूष-पुरूष या स्त्री-पुरूष' की बातचीत को एक वचन तथा बहुवचन तीनों पुरूषों उत्तम पुरूष, मध्यम पुरूष, अन्य पुरूष तथा पुल्लिंग-स्त्रीलिंग एवं प्राकृत लिंग में प्रस्तुत किया जा रहा है। विधि क्रिया की रूपावली भी इसके साथ सम्मिलित है। इन ढाँचों के अन्तर्गत (बेचना, बीसना) क्रिया के रूप उपर्युक्त संदर्भों में प्रस्तुत है-

**बीसना, बेचना**[17]

**1. वर्तमान काल : सामान्य वर्तमान काल**

पुरूष-पुरूष या स्त्री-पुरूष की बातचीत में

एक वचन

कर्मवाच्य क्रिया की रूपावली

**(क) वर्त्तमान काल :**

**1. सामान्य वर्त्तमान काल :**

**पुरूष-पुरूष या स्त्री-पुरूष की बातचीत में**

**एक वचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | एन बीसिरदन। | मैं बेचा जाता हूँ। |
| | स्त्री० | एन वीसितार'एन | मैं बेची जाती हूँ। |
| मध्यम पुरूष | पु० | नीन बीसिरदय। | तुम बेचे जाते हो। |
| | | नीन बीसितारदय। | |
| | स्त्री० | नीन बीसिरदिन। | तुम वेची जाती हो। |
| | | बीसितारदिन। | |
| अन्य पुरूष | पु० | आस बीसिरदस। | वह बेचा जाता है। |
| | | बीसितारदस। | |
| | स्त्री० | आद बीसर'ई। | वह बेची जाती है। |
| | | बीसतार'ई। | |
| | प्रा० | अबड़ा बीसर'ई। | वह बेचा जाता है। |

**बहु वचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | एम बीसिरदम। | हमलोग बेचे जाते हैं। |
| | स्त्री० | बीसिर'एम। | हमलोग बेची जाती हैं। |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) | | नाम बीसिरदत। | हमलोग बेचे जाते हैं। |
| | | बीसितारदत। | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| मध्यम पुरूष | पु० | नीम बीसिरदर। | तुमलोग बेचे जाते हो। |
| | स्त्री० | नीम बीसितारदय। | तुम बेची जाती हो। |
| अन्य पुरूष | पु० | आर (अबड़र)बीसिरनर। | वह बेचा जाता है। |
| | स्त्री० | आर बीसितारनर। | वह बेची जाती है। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिर'ई। | वह बेचा जाता है |
| | | बीसितार'ई। | बेची जाती है। |

**स्त्रियों की बातचीत में :**

**एक वचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | एन बीसिर'एन। | मैं बेची जाती हूँ। |
| | | बीसितार'एन। | |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | नीन बीसिरदिन। | तुम बेची जाती हो। |
| | | बीसितारदिन। | |
| अन्य पुरूष | पु० | आस बीसिरदस। | वह बेचा जाता है। |
| | | आस बीसितारदस। | |
| | स्त्री० | आद बीसिर'ई। | वह बेची जाती है। |
| | | आद बीसितार'ई। | |
| | प्रा० | आद बीसिर'ई। | वह बेचा जाता है। |
| | | आद बीसितार'ई। | बेची जाती है। |

**बहुवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | एम बीसिर'एम। | हमलोग बेची जाती हैं। |
| | | एम बीसतार'एम। | |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) | | नाम बीसिरदत। | हमलोग बेचे जाते हैं। |
| | | नाम बीसितारदत। | |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | नीम बीसिरदय। | तुमलोग बेची जाती हो। |
| | | नीम बीसितारदय। | |
| अन्य पुरूष | पु० | आर (अबड़य)बीसिरनर। | वह बेचा जाता है। |
| | स्त्री० | बीसितारदय। | वह बेची जाती है। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिर'ई। | वह बेचा जाता है। |
| | | बीसितार'ई। | बेची जाती है। |

**2. तात्कालिक वर्त्तमान काल :**

**पुरूष-पुरूष या स्त्री-पुरूष की बातचीत में**

**एकवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | एन बीसिर'आ लगदन। | मैं बेचा जा रहा हूँ। |
| | स्त्री० | एन बीसितार'आ लगेन। | मैं बेची जा रही हूँ। |
| मध्यम पुरूष | पु० | नीन बीसिर'आ लगदय। | तुम बेचे जा रहे हो। |
| | | बीसितार'आ लगदय। | |
| | स्त्री० | नीन बीसिर'आ लगदिन। | तुम बेची जा रही हो। |
| | | बीसितार'आ लगदिन। | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| अन्य पुरूष | पु० | आस बीसिर'आ लगदस। बीसितार'आ लगदस। | वह बेचा ज़ा रहा है। |
| | स्त्री० | आद बीसिर'आ लगी। बीसितार'आ लगी। | वह वेची जा रही है। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिर'आ लगी। वीसितार'आ लगी। | वह बेचा जा रहा है। बेची |

**बहु वचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | एम बीसिर'आ लगदम। | हमलोग बेचे जा रहे हैं। |
| | स्त्री० | बीसितार'आ लगेम। | हमलोग बेची जा रही हैं। |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) | | नाम बीसिर'आ लगदत। बीसितार'आ लगदत। | हमलोग बेचे जा रहे हैं। |
| मध्यम पुरूष | पु० | नीम बीसिर'आ लगदर। | तुमलोग बेचे जा रहे हो। |
| | स्त्री० | नीन बीसितार'आ लगदी। | तुम बेची जा रही हो। |
| अन्य पुरूष | पु० | आर (अबड़र)बीसिर'आ लगनर। | वह बेचा जा रहा है। |
| | स्त्री० | आद बीसितार'आ लगी। | वह बेची जा रही है। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिर'आ लगी। बीसितार'आ लगी। | वह बेचे जा रहे हैं। बेची जा रही है। |

**स्त्रियों की बातचीत में :**

**एक वचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | एन बीसितार'आ लगेन। बीसितार'आ लगेन। | मैं बेची जा रही हूँ। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | नीन बीसिर'आ लगदिन। बीसितार'आ लगदिन। | तुम बेची जा रही हो। |
| अन्य पुरूष | पु० | आस बीसिर'आ लगदस। बीसितार'आ लगदस। | वह बेचा जा रहा है। |
| | स्त्री० | आद बीसिर'आ लगी। बीसितार'आ लगी। | वह बेची जा रही है। |
| | प्रा० | आद(अबड़ा) बीसिर'आ लगी। अबड़ा बीसितार'आ लगी। | वह बेचा जा रहा है। बेची जा रही है। |

**बहुवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | एम बीसितार'आ लगेम। | हमलोग बेची जा रही हैं। बीसितार'आ लगेम। |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) | | नाम बीसिर'आ लगदत। बीसितार'आ लगदत। | हमलोग बेचे जा रहे हैं। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | नीम बीसितार'आ लगदय। बीसितार'आ लगदय। | तुमलोग बेची जा रही हो। |
| अन्य पुरूष | पु० | आर (अबड़र)बीसिर'आ लगनर। | वे बेचे जा रहे हैं। |
| | स्त्री० | बीसितार'आ लगनय। | वे बेची जा रही है। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | प्रा० | अबड़ा बीसिर'आ लगी। | वे बेचे जा रहे हैं। |
| | | बीसितार'आ लगी। | वेची जा रही है। |

**3. सामान्य तात्कालिक वर्त्तमान काल :**

**पुरूष-पुरूष या स्त्री-पुरूष की बातचीत में :**

**एकवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | एन बीसिर'अत र'अदन। | मैं बेचाते रहता हूँ। |
| | स्त्री० | एन बीसितारतेम र'अदन। | मैं बेचाते रहती हूँ। |
| मध्यम पुरूष | पु० | नीन बीसिर'अत र'अदय। | तुम बेचाते रहते हो। |
| | | बीसितार'आत र'अदय। | |
| | स्त्री० | नीन बीसिर'अत र'अदिन। | तुम बेचाती रहती हो। |
| | | बीसितार'अत र'अदिन। | |
| अन्य पुरूष | पु० | आस बीसिर'अत र'अदस। | वह बेचाते रहता है। |
| | | बीसितार'अत रअदस। | |
| | स्त्री० | आद् बीसिर'अत र'ई। | वह बेचाते रहती है। |
| | | बीसितार'अत र'ई। | |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिर'अत र'ई। | वह बेचाते रहता है। |
| | | बीसितार'अत र'ई। | बेचाती रहती है। |

**बहु वचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | एम बीसिर'अत र'अदम। | हमलोग बेचाते रहते है। |
| | स्त्री० | बीसितार'अत र'अदम। | हमलोग बेचाते रहते हैं। |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) | | नाम बीसिरदत। | |
| | | बीसितार'अत र'अदत। | हमलोग बेचाते रहते हैं। |
| मध्यम पुरूष | पु० | नीम बीसिर'अत र'अदर। | तुमलोग बेचाते रहते हो। |
| | | बीसितार'अत र'अदर। | |
| | स्त्री० | बीसितार'अत र'अदर। | तुम बेचाती रहती हो। |
| अन्य पुरूष | पु० | आर (अबड़र)बीसिर'अत र'ई। | वे बेचाते रहते हैं। |
| | स्त्री० | बीसितार'अत र'ई। | वे बेचाती रहती है। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिर'अत र'ई। | वे बेचाते रहता है। |
| | | बीसितार'अत र'ई। | बेचाती रहतीं है। |

**स्त्रियों की बातचीत में :**

**एकवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | एन बीसितार'अत | मैं बेचाते रहती हूँ। |
| | | (बीसितार'अत)र'एन। | |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | नीन बीसिर'अत र'अदी। | तुम बेचाती रहती हो। |
| | | बीसितार'अत र'अदी। | |
| अन्य पुरूष | पु० | आस बीसिर'अत र'अदस। | वह बेचाते रहता है। |
| | | बीसितार'अत र'अदस। | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | स्त्री० | आद बीसिर'अत र'ई। बीसितार'अत र'ई। | वह बेचाते रहती है। |
| | प्रा० | आद बीसिर'अत | वह बेचाते रहता है। |
| | | बीसितार'अत र'ई। | बेचाती रहती है। |

**बहुवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | एम बीसितार'अत र'एम। | हमलोग बेचाते रहती हैं। |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) | | नाम बीसिर'अत र'अदत। | |
| | | बीसितार'अत र'अदत। | हमलोग बेचाते रहती हैं। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | नीम बीसितार'अत र'अदय। | तुमलोग बेचाती रहती हो। |
| अन्य पुरूष | पु० | आर (अबड़र)बीसिर'अत र'अनर। | वे बेचाते रहते हैं। |
| | स्त्री० | बीसितार'अत र'अनय। | वे बेचाती रहती हैं। |
| | प्रा० | अबड़द बीसिर'अत र'ई। | वे बेचाते रहते हैं। |
| | | बीसितार'अत र'ई। | बेचाती रहतीं है। |

**पूर्णकालिक वर्त्तमान काल :**

**पुरूष-पुरूष या स्त्री-पुरूष की बातचीत में :**

**एकवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | एन बीसिरका(बीसितारका) र'अदन | मैं बेचा गया हूँ। |
| | स्त्री० | एन बीसिरका(बीसितारका) र'अदन | मैं बेची गयी हूँ। |
| मध्यम पुरूष | पु० | नीन बीसिरका (बीसितारका)र'अदय | तुम बेचे गये हो। |
| | स्त्री० | नीन बीसिरकी (बीसितारकी) र'अदिन | तुम बेची गयी हो। |
| अन्य पुरूष | पु० | आस बीसिरका( बीसितारका) र'अदस | वह बेचा गया है। |
| | स्त्री० | आद बीसिरकी (बीसितारकी) र'ई | वह बेची गयी है। |
| | प्रा० | आद बीसिर'अत र'अदस। | वह बेचाते रहता है। |
| | | बीसितारका र'अदस। | वह बेचा गया है। |
| | | | वह बेची गयी है। |

**बहुवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | एम बीसिरका (बीसितारका) र'अदम। | हमलोग बेचे गये हैं। |
| | स्त्री० | एम बीसिरका (बीसितारका)र'अदम। | हमलोग बेची गयी हैं। |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) | | नाम बीसिरका र'अदत। | हमलोग बेचे गये हैं। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| मध्यम पुरूष | पु० | नीम बीसिरका (बीसितारका) र'अदर | तुमलोग बेचे गये हो। |
| | स्त्री० | नीम बीसिरका र'अदर। | तुमलोग बेचे गये हो। |
| अन्य पुरूष | पु० | आर बीसिरका(बीसितारका) र'अनर। | वे बेचे गये हैं। |
| | स्त्री० | बीसिरका(बीसितारकी) र'अनर। | वे बेची गयी हैं। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिरका बीसितारकी) र'ई। | वे बेचे गये/बेची गयी हैं। |

**स्त्रियों की बातचीत में :**

**एकवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | एन बीसिरकी (बीसितारका) र'एन। | मैं बेची गयी हूँ। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | नीन बीसिरकी (बीसितारकी) र'अदिन। | तुम बेची गयी हो। |
| अन्य पुरूष | पु० | आस बीसिरका (बीसितारका) र'अदस। | वह बेचा गया है। |
| | स्त्री० | बीसिरकी(बीसितारकी) र'ई। | वह बेची गयी है। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिरकी (बीसितारकी) र'ई। | वे बेचा गया/बेची गयी है। |

**बहुवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | एम बीसिरकी (बीसितारका) र'अएम। | हमलोग बेची गयी हूँ। |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) | | नाम बीसिरका (बीसितारका) र'अदत। | हमलोग बेची गयी हैं। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | नीम बीसिरका (बीसितारका) र'अदय। | तुम बेची गयी हो। |
| अन्य पुरूष | पु० | आर (अबड़य) बीसिरकी (बीसितारकी) र'अनय। | वे बेची गये हैं। |
| | स्त्री० | आर (अबड़य) बीसिरकी (बीसितारकी) र'अनय। | वे बेची गयी हैं। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिरकी (बीसितारकी) र'ई। | वे बेचे गये/बेची गयी हैं। |

+ एक विशेषता है कि अन्य सभी कालों में स्त्रियों की बातचीत का अन्य पुरूष, पुल्लिंग-स्त्रीलिंग बहुवचन के लिए एक ही रूप रहता है पर पूर्णकालिक वर्त्तमान काल, पूर्ण भूत काल तथा पूर्ण भविष्यत् काल के लिये स्त्रियों की बातचीत में अन्य पुरूष पुल्लिंग स्त्रीलिंग बहुवचन में अलग-अलग रूप होते हैं, फिर भी पुल्लिंग रूप का ही व्यवहार विशेष है।

## ख. भूतकाल

**सामान्य भूतकाल**

**पुरूष-पुरूष या स्त्री-पुरूष की बातचीत में :**

**एकवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | एन बीसिरकन (बीसितारकन) | मैं बेचा गया। |
| | स्त्री० | एन बीसिर'अन (बीसितारकन) | मैं बेची गयी। |
| मध्यम पुरूष | पु० | नीन बीसिरकय (बीसितारकय) | तुम बेचे गये। |
| | स्त्री० | नीन बीसिरकिन (बीसितारकिन) | तुम बेची गयी। |
| अन्य पुरूष | पु० | आस बीसिरस(बीसितारस) | वह बेचा गया। |
| | स्त्री० | आद बीसिरा(बीसितारा) | वह बेची गयी। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिरा(बीसितारा) | वह बेचा गया।<br>बेची गयी। |

**बहुवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | एम बीसिरकम (बीसितारकम)<br>र'अदम। | हमलोग बेचे गये। |
| | स्त्री० | एम बीसिरकम (बीसितारकम)<br>र'अदम। | हमलोग बेची गये। |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) | | नाम बीसिरकत (बीसितारकत)<br>र'अदत। | हमलोग बेचे गये। |
| मध्यम पुरूष | पु० | नीम बीसिरकर (बीसितारकर)। | तुमलोग बेचे गये। |
| | स्त्री० | नीम बीसिरकर (बीसितारर) | तुमलोग बेची गयी। |
| अन्य पुरूष | पु० | आर (अबड़र) बीसिरर<br>(बीसितारर) | वे बेचे गये। |
| | स्त्री० | आर बीसिरर (बीसितारर) | वे बेची गयी। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिरा(बीसितारा) | वे बेची गयी बेची गयी। |

**स्त्रियों की बातचीत में :**

**एकवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | एन बीसिर'अन (बीसितार'अन) | मैं बेची गयी। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | नीन बीसिरकिन (बीसितारकिन) | तुम बेची गयी। |
| अन्य पुरूष | पु० | आस बीसिरस(बीसितारस) | वह बेचा गया। |
| | स्त्री० | आद बीसिरा(बीसितारा) | वह बेची गयी। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिरा(बीसितारा) | वह बेचा गया बेची गयी |

**बहुवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | एम बीसिरकम (बीसितारकम)<br>(बीसितारकम/बीसितार'अम) | हमलोग बेची गयीं। |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) | | नाम बीसिरकत (बीसितारकत) | हमलोग बेची गयी। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | नीम बीसिरकय (बीसितारकय) | तुमलोग बेची गयी। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| अन्य पुरूष | पु० | आर बीसिरय (बीसितारय) | वे बेचे गये। |
| | स्त्री० | आर बीसिरय (बीसितारय) | वे बेची गयी। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिरा(बीसितारा) | वे बेची गयी बेची गयीं। |

**2. अपूर्ण भूत काल :**

**पुरूष-पुरूष या स्त्री-पुरूष की बातचीत में :**

**एकवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | एन बीसिर'आ (बीसितार'आ) लइक्कन | मैं बेचा जा रहा था। |
| | स्त्री० | एन बीसिर'आ (बीसितार'आ) लइक्कन | मैं बेची जा रही थी। |
| मध्यम पुरूष | पु० | नीन बीसिर'आ (बीसितार'आ) लइक्कय | तू बेचे जा रहे थे। |
| | स्त्री० | (बीसितार'आ) लइक्किन | तुम बेची जा रही थी। |
| अन्य पुरूष | पु० | आस बीसिर'आ(बीसितार'आ) लगियस | वह बेचा जा रहा था। |
| | स्त्री० | आद बीसिर'आ(बीसितार'आ) लगिया | वह बेची जा रही थी। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिर'आ(बीसितार'आ) लगिया | वह बेचा जा रहा था बेची जा रही थी। |

**बहुवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | एम बीसिर'आ (बीसितार'आ) लइक्कम। | हमलोग बेचे जा रहे थे। |
| | स्त्री० | एम बीसिर'आ (बीसितार'आ) लगिय'अम। | हमलोग बेची जा रही थी। |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) | | नाम बीसिर'आ (बीसितार'आ) लइक्कत | हमलोग बेचे जा रहे थे। |
| मध्यम पुरूष | पु० | नीम बीसिर'आ (बीसितार'आ) लइक्कर। | तुमलोग बेचे जा रहे थे। |
| | स्त्री० | नीम बीसिर'आ (बीसितार'आ) लइक्कर। | तुमलोग बेची जा रही थी। |
| अन्य पुरूष | पु० | आर (अबड़र) बीसिर'आ (बीसितार'आ)लगियर। | वे बेचे जा रहे थे। |
| | स्त्री० | आर (अबड़र) बीसिर'आ (बीसितार'आ)लगियर। | वे बेची जा रही थी। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिर'आ (बीसितारआ) लगिया। | वे बेचे जा रहे थे। बेची जा रही थी। |

**स्त्रियों की बातचीत में :**

**एकवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | एन बीसिर'आ (बीसितार'आ) लगियि'अन। | मैं बेची जा रही थी। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | नीन बीसिर'आ (बीसितार'आ) लइक्किन। | तुम बेची जा रही थी। |
| अन्य पुरूष | पु० | आस बीसर'आ(बीसतार'आ) लगियस। | वह बेचा जा रहा था। |
| | स्त्री० | आद बीसिर'आ(बीसितार'आ) लगिया। | वह बेची जा रहा थी। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिर'आ(बीसितार'आ) लगिया। | वह बेचा जा रहा था बेची जा रही थी। |

**बहुवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | एम बीसिर'आ (बीसितारआ) लगि'अम। | हमलोग बेची जा रही थी। |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) | | नाम बीसिर'आ (बीसितार'आ) लइक्कत। | हमलोग बेची जा रही थी। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | नीम बीसिर'आ (बीसितार'आ) लइक्कय | तुमलोग बेची जा रही थी। |
| अन्य पुरूष | पु० | आर (अवड़य)बीसिर'आ (बीसितार'आ) लगियर। | वे बेचे जा रहे थे। |
| | स्त्री० | आर (अबड़य)बीसिर'आ (बीसितार'आ) लगियर। | वे बेची जा रही थी। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिर'आ (बीसितार'आ) लगिया | वे बेचे जा रहे थे बेची जा रही थी। |

**3. पूर्ण भूतकाल :**

**पुरूष-पुरूष या स्त्री पुरूष की बातचीत में :**

एकवचन

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | एन बीसिरका (बीसितारका) रहचकन। | मैं वेचा गया था। |
| | स्त्री० | एन बीसिरकी (बीसितारकी) रहच'अन। | मैं बेची गयी थी। |
| मध्यम पुरूष | पु० | नीन बीसिरका (बीसितारका) रहचकय। | तू बेचे गये थे। |
| | स्त्री० | बीसिरकी (बीसितारकिन) रहचकिन। | तुम वेची गयी थी। |
| अन्य पुरूष | पु० | आस बीसिरका (बीसितारका) रहचस। | वह वेचा गया था। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | स्त्री० | आद बीसिरकी (बीसितारकी) रहचा। | वह बेची गयी थी। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिरकी (बीसितारकी) रहचा। | वह बेचा गया था बेची गयी थी। |
| **बहुवचन** | | | |
| उत्तम पुरूष | पु० | एम बीसिरका (बीसिरकम) रहचकम। | हमलोग बेचे गये थे। |
| | स्त्री० | एम बीसितारका (बीसितारकम) रहचकम। | हमलोग बेची गयी थी। |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) नाम | | बीसिरका (बीसितारकत) रहचकत। | हमलोग बेचे गये थे। |
| मध्यम पुरूष | पु० | नीम बीसिरका (बीसितारकर) रहचकर। | तुमलोग बेचे गये थे। |
| | स्त्री० | बीसितारका (बीसितारकर) रहचकर। | तुमलोग बेची गयी थी। |
| अन्य पुरूष | पु० | आर बीसिर'आ लगियर। | वे बेचे जा रहे थे। |
| | स्त्री० | बीसितार'आ लगियर। | वे बेची जा रही थी। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिरकी या बीसितारकी रहचा। | वे बेचे गये थे बेची गयी थी। |

**स्त्रियों की बातचीत में :**

| | | | |
|---|---|---|---|
| **एकवचन** | | | |
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | एन बीसिरकी (बीसिरकिन)या बीसितारकी रहच'अन। | मैं बेची गयी थी। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | नीन बीसिरकी (बीसितारकिन) रहचकिन। | तुम बेची गयी थी। |
| अन्य पुरूष | पु० | आस बीसिरका(बीसितारका) रहचस। | वह बेचा गया थी। |
| | स्त्री० | आद बीसिरकी(बीसितारकी) रहचा। | वह बेची गयी थी। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिरकी(बीसितारकी) रहचा। | वह बेचा गया था बेची गयी थी। |
| **बहुवचन** | | | |
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | एम बीसिरका (बीसिरकिम) रहचकम। बीसितारका (बीसितारकिम) रहचकम | हमलोग बेची गयी थी। |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) नाम | | बीसिरका (बीसितारकत)रहचकत। बीसितारका रहचकत। | हमलोग बेची गयी थी। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | नीम बीसिरका (बीसितारकय) रहचकर। | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | बीसितारका (बीसितारकय) रहचकर। | तुमलोग बेची गयी थी। |
| अन्य पुरूष | पु० | आर बीसिरका (बीसितारकय) रहचर। | वे बेचे गये थे। |
| | स्त्री० | बीसितारका (बीसितारकय) रहचकर। | वे बेची गयी थी। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिरकी या बीसितार की रहचा। | वे बेचे गये थे बेची गयी थी। |

**4. हेतु–हेतु मदभूत काल :**

**पुरूष-पुरूष या स्त्री पुरूष की बातचीत में :**

**एकवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | एन बीसिर'ओन (बीसितार'ओन) पहें। | मैं बेचा जाता। |
| | स्त्री० | एन बीसिर'ओन (बीसितार'ओन) पहें। | मैं बेची जाती। |
| मध्यम पुरूष | पु० | नीन बीसिर'ओय (बीसितार'ओय) पहें। | तुम बेचे जाते। |
| | स्त्री० | बीसिर'ओय (बीसितार'ओय) पहें। | तुम बेची जाती। |
| अन्य पुरूष | पु० | आस बीसिर'ओस (बीसितार 'ओस) पहें। | वह बेचा जाता। |
| | स्त्री० | आद बीसिर'ओ(बीसितार'ओ) पहें। | वह बेची जाती। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिर'ओ (बीसतार'ओ) पहें। | वह बेचा जाता बेची जाती। |

**बहुवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | एम बीसिर'ओम (बीसितार 'ओम)पहें। | हमलोग बेचे जाते। |
| | स्त्री० | एम बीसिर'ओम (बीसितार'ओम) पहें। | हमलोग बेची जाती। |
| मध्यम पुरूष | पु० | नीम बीसिर'ओर (बीसितार'ओर) पहें। | तुमलोग बेचे जाते। |
| | स्त्री० | नीम बीसिर'ओर (बीसितार'ओय) पहें। | तुमलोग बेची जाती। |
| अन्य पुरूष | पु० | आर बीसिर'ओर (बीसितार'ओर)पहें। | वे बेचे जाते। |
| | स्त्री० | आर बीसिर'ओर (बीसितार'ओर)पहें। | वे बेची जाती। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसरओ(बीसतारओ) पहें | वे बेचे जाते बेची जाती। |

स्त्रियों की बातचीत में भी पुरूषों की बातचीत के समान ही रूपावली होगी, सिर्फ अन्य पुरूष पुल्लिंग-स्त्रीलिंग बहुवचन में आर अबड़र के बदले में आर अबड़य होगा।

## ग. भविष्यत् काल

**1. सामान्य भविष्यत् काल :**

**पुरूष-पुरूष या स्त्री पुरूष की बातचीत में :**

**एकवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | एन बीसिर'ओन (बीसितार'ओन) | मैं बेचा जाऊँगा। |
| | स्त्री० | एन बीसिर'ओन (बीसितार'ओन) | मैं बेची जाऊँगी। |
| मध्यम पुरूष | पु० | नीन बीसर'ओय (बीसितार'ओय) | तुम बेचे जाओगे। |
| | स्त्री० | नीन बीसिर'ओय (बीसितार'ओय) | तुम बेची जाओगी। |
| अन्य पुरूष | पु० | आस बीसिर'ओस (बीसितार'ओस) | वह बेचा जाएगा। |
| | स्त्री० | आद बीसिर'ओ(बीसिता'रओ) | वह बेची जाएगी। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिर'ओ (बीसितार'ओ) | वह बेचा जाएगा बेची जाएगी। |

**बहुवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | एम बीसिर'ओम (बीसितार'ओम) | हमलोग बेचे जाएँगे। |
| | स्त्री० | एम बीसिर'ओम (बीसितार'ओम) | हमलोग बेची जाएँगी। |
| मध्यम पुरूष | पु० | नीम बीसिर'ओर (बीसितार'ओर) | तुमलोग बेचे जाओगे। |
| | स्त्री० | नीम बीसिर'ओर (बीसितार'ओर) | तुमलोग बेची जाओगी। |
| अन्य पुरूष | पु० | आर बीसिर'ओर (बीसितार'ओर) | वे बेचे जाएँगे। |
| | स्त्री० | आद बीसिर'ओ (बीसितार'ओ) | वे बेची जाएँगी। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिर'ओ(बीसितार'ओ) | वे बेचे जाएँगे बेची जाएँगी। |

स्त्रियों की बातचीत में भी पुरूषों की बातचीत के समान ही रूपावली होगी सिर्फ अन्य पुरूष पुल्लिंग-स्त्रीलिंग बहुवचन में आर अबड़र के बदले में आर अबड़य होगा।

**2. अपूर्ण भविष्यत काल**

**पुरूष-पुरूष या स्त्री पुरूष की बातचीत में :**

**एकवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | एन बीसिर'आत (बीसितार'आत) र'ओन | मैं बेचाते रहूँगा। |
| | स्त्री० | एन बीसिर'आत (बीसितार'आत) र'ओन | मैं बेचाते रहूँगी। |
| मध्यम पुरूष | पु० | नीन बीसिर'आत (बीसितार'आत) रओय | तुम बेचाते रहोगे। |
| | स्त्री० | बीसिर'आत (बीसितार'आत) र'ओय | तुम बेचाती रहोगी। |
| अन्य पुरूष | पु० | आस बीसिर'आत (बीसितार'आत) र'ओस | वह बेचाते रहेगा। |
| | स्त्री० | आद बीसिर'आत (बीसितार'आत) र'ओ | वह बेचाती रहेगी। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | प्रा० | अबड़ा बीसिर'आत (बीसितार'आत) र'ओ | वह बेचाते रहेगा बेचाती रहेगी। |
| **बहुवचन** | | | |
| उत्तम पुरूष | पु० | एम बीसिर'आत (बीसितार'आत) र'ओम | हमलोग बेचाते रहेंगे। |
| | स्त्री० | एम बीसिर'आत (बीसितार'आत) र'ओम | हमलोग बेचाती रहेंगी। |
| मध्यम पुरूष | पु० | नीम बीसिर'आत (बीसितारअ'ात) र'ओर | तुमलोग बेचाते रहोगे। |
| | स्त्री० | नीम बीसिर'आत (बीसितार'आत) र'ओर | तुमलोग बेचाती रहोगी। |
| अन्य पुरूष | पु० | आर बीसिर'आद (बीसितारआत) र'ओर | वे बेचाते रहेगा। |
| | स्त्री० | आद बीसिर'आत (बीसितार'आत) र'ओ | वे बेचाती रहेगी। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिर'आत(बीसितार'आत) र'ओ | वे बेचाते रहेंगे बेचाती रहेंगी। |

स्त्रियों की बातचीत में भी पुरूषों की बातचीत के समान ही रूपावली होगी, सिर्फ अन्य पुरूष, पुल्लिंग स्त्रीलिंग, बहुवचन में आर (अबड़र) के बदले में आर अबड़य होगा।

**3. पूर्ण भविष्यत काल**

**पुरूष-पुरूष या स्त्री पुरूष की बातचीत में :**

| | | | |
|---|---|---|---|
| **एकवचन** | | | |
| उत्तम पुरूष | पु० | एन बीसिरका (बीसिरकम)र'ओन। | मैं बेचाया हुआ रहूँगा। |
| | स्त्री० | एन बीसिरकिम (बीसितारकिम) र'ओन। | मैं बेचायी हुई रहूँगी। |
| मध्यम पुरूष | पु० | नीन बीसिरका (बीसिरकम) रओय। | तुम बेचाये हुए रहोगे। |
| | स्त्री० | बीसिरकी (बीसितारकी) र'ओय। | तुम बेचायी हुई रहोगी। |
| अन्य पुरूष | पु० | आस बीसिरका (बीसितारका) र'ओस। | वह बेचाया हुआ रहेगा। |
| | स्त्री० | आद बीसिरकी (बीसितारकी) र'ओ। | वह बेचायी हुई रहेगी। |
| | प्रा० | आद बीसिरकी (बीसितारकी) र'ओ। | वह बेचाया हुआ रहेगा बेचायी हुई रहेगी। |
| **बहुवचन** | | | |
| उत्तम पुरूष | पु० | एम बीसिरका (बीसिरकम) र'ओम। | हमलोग बेचाये हुए रहेंगे। |
| | स्त्री० | बीसितारका (बीसितारका) र'ओम। | हमलोग बेचायी हुई रहेंगी। |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) | नाम | बीसिरका (बीसिरकत) या बीसितारका (बीसितारकत) र'ओत | हमलोग बेचाये रहेंगे। |
| मध्यम पुरूष | पु० | नीम बीसिरका (बीसिरकम)र'ओर। | तुमलोग बेचाये हुए रहोगे। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | स्त्री० | नीम बीसितारका (बीसितारकम) र'ओर। | तुमलोग बेचायी हुई रहोगी। |
| अन्य पुरूष | पु० | आर बीसिरका (बीसितारकम) र'ओर। | वे बेचाये हुए रहेंगे। |
| | स्त्री० | बीसितारका (बीसितारकर) र'ओर। | वे बेचायी हुई रहेंगी। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिरकी (बीसितारकी) र'ओ। | वे बेचाये हुए रहेंगे बेचायी हुई रहेंगी। |

**4. सम्भाव्य भविष्यत काल**

**पुरूष-पुरूष या स्त्री पुरूष की बातचीत में :**

**एकवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | एन बीसिरदन (बीसितारदन) नेक'आ। | इच्छा है मैं बेचाऊँ। |
| | स्त्री० | एन बीसिर'आ बेद्देन। | इच्छा है मैं बेचाऊँ। |
| मध्यम पुरूष | पु० | नीन बीसिरदय (बीसितारदय) नेक'आ। | इच्छा है तुम बेचाओ। |
| | स्त्री० | बीसिरदिन (बीसितारदिन) नेक'आ। | इच्छा है तुम बेचाओ। |
| अन्य पुरूष | पु० | आस बीसिरदस (बीसितारद्रस) नेक'आ। | इच्छा है वह बेचावे। |
| | स्त्री० | आद बीसिरई (बीसितार'ई) नेक'आ। | इच्छा है वह बेचावे। |
| | प्रा० | आद बीसिर'ई (बीसितार'ई) नेक'आ। | इच्छा है वह बेचावे। |

**बहुवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | पु० | एम बीसिरदम (बीसितारदम) नेक'आ। | इच्छा है हमलोग बेचावें। |
| | स्त्री० | " | " |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) | नाम | बीसिरदत (बीसितारदत) नेक'आ | इच्छा है हमलोग बेचावें। |
| मध्यम पुरूष | पु० | नीम बीसिरदर (बीसितारदर) नेक'आ। | इच्छा है तुमलोग बेचाओ। |
| | स्त्री० | नीम बीसिरदर (बीसितारदर) नेक'आ। | इच्छा है तुमलोग बेचाओ। |
| अन्य पुरूष | पु० | आर बीसिरनर (बीसितारनर) नेक'आ। | इच्छा है वे बेचावें। |
| | स्त्री० | आर बीसिरनर (बीसितारनर) नेक'आ। | इच्छा है वे बेचावें। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिर'ई(बीसितार'ई) नेक'आ | इच्छा है वे बेचावें। |

**स्त्रियों की बातचीत में :**

**एकवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | एन बीसिर'एन (बीसितारएन) नेक'आ। | इच्छा है मैं बेचाऊँ। |
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | नीन बीसिरदिन (बीसितारदिन) नेक'आ। | इच्छा है तुम बेचाओ। |
| अन्य पुरूष | पु० | आस बीसिरदस (बीसितारदस) नेक'आ। | इच्छा है वह बेचावे। |
| | स्त्री० | आद बीसिर'ई (बीसितार'ई) नेक'आ। | इच्छा है वह बेचावे। |
| | प्रा० | आद बीसिर'ई (बीसितार'ई) नेक'आ। | इच्छा है वह बेचावे। |

**बहुवचन**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | स्त्री० | एम बीसिर'एम (बीसितारएम) नेक'आ। | इच्छा है हमलोग बेचावें। |
| (वक्ता श्रोता सम्मिलित) | नाम | बीसिरदत (बीसितारदत) नेक'आ। | इच्छा है हमलोग बेचावें। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| मध्यम पुरूष | स्त्री० | नीम बीसिरदय (बीसितारदय) नेक'आ। | इच्छा है तुमलोग बेचाओ। |
| अन्य पुरूष | पु० | आर बीसिरनय ने'कआ। | इच्छा है वे बेचावें। |
| | स्त्री० | बिसिरनय (बीसितारनय)नेक'आ। | इच्छा है वे बेचावें। |
| | प्रा० | अबड़ा बीसिर'ई(बीसितार'ई) नेक'आ | इच्छा है वे बेचावें। |

**नोट** : अन्य पुरूष तीनों लिंगों के दोनों वचनों के लिये पुरूषों या स्त्रियों की बातचीत में क्रिया का एक ही रूप 'बीसरअन (बीसतारअन) नेकआ' भी हो सकता है।

## विधि क्रिया

**पुरूष वर्ग के द्वारा आज्ञा देना :**

1. पुल्लिंग स्त्रीलिंग, एकवचन बहुवचन सबों को बीसिरके (बीसितारके) बेचाना।
2. एकवचन स्त्रीलिंग को छोड़कर सबों को (बीसिर'आ या बीसितार'आ) बेचाओ, बेचाइये।
3. एकवचन स्त्रीलिंग को (बीसिरअय या बीसितार'अय) बेचाओ, बेचाइये।

**स्त्री वर्ग द्वारा आज्ञा देना :**

1. पुल्लिंग स्त्रीलिंग एकवचन, बहुवचन सबों को बीसिरके या बीसितारके बेचाना।
2. एकवचन बहुवचन पुरूष वर्ग को बीसिर'आ या बीसितारआ बेचाओ, बेचाइये।
3. एकवचन स्त्रीलिंग को बीसिर'अय या बीसितार'अय बेचाओ, बेचाइये।
4. बहुवचन स्त्रीलिंग को बीसिर'ए या बीसितार'ए बेचाओ, बेचाइये।

नमूने के तौर पर हिन्दी की 'देखना' क्रिया से कर्मवाच्य के कुछ रूप तीनों कालों में दिये जा रहे हैं।[18]

**एकवचन**

| पुरूष | लिंग | सामान्य वर्तमान | सामान्य भूत | सामान्य भविष्यत |
|---|---|---|---|---|
| 1. उत्तम पुरूष | पु० | देखा जाता हूँ | देखा गया | देखा जाऊँगा। |
| मैं | स्त्री० | देखी जाती हूँ | देखी गयी | देखी जाऊँगी। |
| 2. मध्यम पुरूष | पु० | देखा जाता है | देखा गया | देखा जायेगा। |
| तू | स्त्री० | देखी जाती है | देखी गयी | देखी जायेगी। |
| 3. अन्य पुरूष | पु० | देखा जाता है | देखा गया | देखा जायेगा। |
| वह | स्त्री० | देखी जाती है | देखी गयी | देखी जायेगी। |

**बहुवचन**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. उत्तम पुरूष | पु० | देखे जाते हैं | देखे गये | देखे जायेंगे। |
| मैं | स्त्री० | देखी जाती है | देखी गयी | देखी जायेंगी। |
| 2. मध्यम पुरूष | पु० | देखे जाते हो | देखे गये | देखे जायेंगे। |
| तू | स्त्री० | देखी जाती हो | देखी गयी | देखी जाओगी। |
| 3. अन्य पुरूष | पु० | देखे जाते हैं | देखे गये | देखा जायेंगे। |
| वह | स्त्री० | देखी जाती है | देखी गयी | देखी जायेगी। |

**तीनों कालों के अन्य कुछ भेदों के रूप निम्नवत हैं[19] :-**

संदिग्ध वर्तमान - देखा जाता होगा, देखी जाती होगी, देखे जाते होंगे।

| | | |
|---|---|---|
| सम्भाव्य वर्तमान | - | देखा जाता हो, देखी जाती हो, देखे जाते हो। |
| आसन्न भूत | - | देखा गया है, देखी गयी है, देखे गये हैं। |
| पूर्ण भूत | - | देखा गया था, देखी गयी थी, देखे गये थे। |
| सम्भाव्य भूत | - | देखा गया हो, देखी गयी हो, देखे गये हों। |
| संदिग्ध भूत | - | देखा गया होगा, देखी गयी होगी, देखे गये होंगे। |
| सम्भाव्य भविष्यत | - | देखा जाऊँगा, देखी जाऊँगी, देखे जायेंगे। |

नमूने के उपर्युक्त क्रिया रूपों और वाक्य ढाँचों के आधार पर क्रिया (कर्मवाच्य में) के रूप काल, वचन, पुरूष और लिंग के सभी भेदों में बनाये जा सकते हैं।

## सन्दर्भ-सूची


1. कुड़ुख़ कत्था बिल्ली-टूडुस-पी०सी० बेकूस, प्रकाशक सत्य भारती, पोस्ट बॉक्स-2, राँची-834001 द्वितीय संस्करण 1983, पृ०-232
2. हिन्दी व्याकरण : डॉ० देवीलाल प्रसाद एवं मार्टिन टूटी; पृ०-88-89
3. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-127
4. कुड़ुख़ कत्था बिल्ली-टूडुस-पी०सी० बेकूस, प्रकाशक सत्य भारती, पोस्ट बॉक्स-2, राँची-834001 द्वितीय संस्करण 1983, पृ०-232
5. हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण : सूरजभान सिंह, साहित्य सहकार, दिल्ली 110051, प्रथम संस्करण, पृ०-81
6. हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना; डॉ० भोलानाथ तिवारी, साहित्य सहकार, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1986, पृ०-315
7. वही, पृ०-311
8. वही, पृ०-306
9. वही, पृ०-307
10. वही, पृ०-308-309
11. वही, पृ०-309
12. वही, पृ०-310
13. वही,
14. वही,
15. मानक हिन्दी का ऐतिहासिक व्याकरण : माताबदल जायसवाल, महामति प्रकाशन, इलाहाबाद प्रथम संस्करण, मई 1979, पृ०-541
16. कुड़ुख़ कत्था बिल्ली-टूडुस-पी०सी० बेकूस, प्रकाशक सत्य भारती, पोस्ट बॉक्स-2, राँची-834001 द्वितीय संस्करण 1983, पृ०-247
17. वही, पृ०-269
18. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद, भारती भवन, पटना 23वाँ संस्करण, पृ०-13०
19. वही।


❖❖

## अध्याय : सात

# अर्थ और काल के परिवेश में क्रियाओं का विश्लेषण

काल की श्रेणी वक्ता व्यापार की उक्ति के क्षण के साथ सम्बन्ध बनाती है जो कि वर्त्तमान, भूत तथा भविष्यत् काल के रूपों से व्यक्त होती है। शुद्धकाल रूप संश्लेषणात्मक तिङन्ती और तिङन्ती विकारी रूपों में बाँटे जा सकते हैं। शुद्ध काल रूपों में 'था' का विकारी रूप भी आता है।[1]

1. शुद्ध काल (प्रकारहीन) रूप
   संश्लेषणात्मक तिङन्ती तिङन्ती विकारी
2. प्राकारिक काल रूप
   संश्लेषणात्मक विकारी
   विश्लेषणात्मक विकारी ('है' स० क्रि० समेत कृदन्तपरक रूप)
   विकारी-विकारी रूप ('था' स० क्रि० समेत कृदन्तपरक रूप)
   विकारी-विकारी तिङन्ती रूप (सा०भवि०काल में 'होना' स० क्रि० समेत कृदन्तपरक रूप)
   विकारी-विकारी तिङन्ती रूप (स०क्रि० 'होना' के वर्त्तमान तथा पूर्णतावाची रूप 'होता है, हुआ है')
   विकारी-विकारी-विकारी रूप जिनमें स० क्रिया ('होना' के अपूर्णतावाची तथा पूर्णाभूतवाची रूप आते हैं- 'होता था,'हुआ था')

**काल रूप**

**1. आज्ञार्थ के रूप :** यह रूप अपने प्रत्यक्ष काल रूप काल सापेक्षता का सामान्य अर्थ व्यक्त करते हैं। सापेक्षता व्यक्त करता है। उदाहरणार्थ -

| हिन्दी | कुड़ुख़ |
|---|---|
| 1. सरनो जरा अन्दर आओ। | सरनो तनि उला बरय। |
| 2. तुमलोग हट जाओ वरना मैं फायर कर दूँगा। | नीम गुच्छरआ कला मलतो एन फायर ननोन चि'ओन। |
| 3. आप ऑथोरिटीज से शिकायत कीजियेगा। | नीन ऑथोरिटिर गुसन सिकायत ननके। |
| **आज्ञार्थ का शिष्ट रूप इएगा द्वारा व्यक्त** | |
| 4. वह विवाह कर रही होती तो हम पूरी सहायता देते। | आद बेंजेरना होलेगा एन सौंसे सहड़ा चि'ओन पहें। |
| **संभावनार्थ तथा संकेतार्थ रूप की अभिव्यक्ति** | |

**2. संभावनार्थ और संकेतार्थ के रूप**–ये दोनों रूप भी काल सापेक्षता व्यक्त कर सकते हैं।

**क. वर्तमान काल के स्तर पर काल सापेक्षता–उदाहरण**

| | |
|---|---|
| 1. लेकिन अब इस वर्तमान का क्या करूँ। | पहें अक्कु ई र'अना बेड़ा गहि एन्देर ननोन। |
| 2. यदि आज वह पुरूष जीवित होता, | इन्ना आ आलस उज्जना होले पन्दोय मलतो |
| तो पचास या पचपन वर्ष का होता। | पन्दोय पंचे बछर घी र'ओस पहें। |

**ख. भूतकाल स्तर पर काल सापेक्षता–उदाहरण**

**हिन्दी :**

1. फिर सोचा, कहीं यह कोई दुर्घटना तो नहीं हो गयी।
2. आग लग गयी हो या किसी ने किसी का खून कर दिया हो।
3. जान बूझकर सरकार ने आपको अधिक नम्बर दिये हैं, नहीं तो आप क्या कम्पीट करती?

**कुड़ुख़ :**

1. अउर घोखचस, इंदर'इम ईद बजड़ारना गा मल मंजा केरा।
2. चिच्च्व लगिया होतन मलतो नीकि'इम नेक'आनिम पिटयर चिच्चर होतन।
3. अख़'आरकिम सरकार निंगागे बग्गु नंबर चिच्चकी र'ई, मला होले नीन एन्देर पास ननोय पहें?

## अर्थ के परिवेश में क्रिया का विश्लेषण

अर्थ की व्याकरणिक श्रेणी वास्तविकता और व्यापार के बीच संबंध व्यक्त करती है। वास्तविकता और व्यापार के बीच का सम्बन्ध वक्ताओं द्वारा निर्धारित होता है। वक्ता व्यापार को वास्तविक समझता है या अवास्तविक- अर्थ इसे ही व्यक्त करता है। व्यापार की वास्तविकता का अर्थ होता है उसके वस्तुगत तौर पर मौजूदा तीन काल स्तरों पर किसी एक के साथ सम्बन्ध तथा अवास्तविकता का अर्थ है इस सम्बन्ध की अनुपस्थिति। चूँकि व्यापार सम्भाव्य, वांछित, संदिग्ध, प्रतिबन्धित या आवश्यक समझा जाता है। व्यापार की वास्तविकता निश्चयार्थ रूपों द्वारा व्यक्त होती है, अवास्तविक व्यापार के विरोध में होती है तथा आज्ञार्थ सम्भावनार्थ और संकेतार्थ के रूपों द्वारा व्यक्त होता है।

निश्चयार्थ वास्तविक व्यापार को व्यक्त करता है जो कि वास्तविकता का प्रत्यक्ष प्रतिबिम्ब होता है। निश्चयार्थ की काल क्रियार्थक रूपों की प्रणाली के वर्तमान काल, भूतकाल और भविष्यत काल के व्यापार और वास्तविक घटनाओं के बीच परस्पर सम्बन्ध बनाती है। निश्चयार्थ में समस्त कृदन्त-परक काल रूप प्राकारिक वर्णनों द्वारा जटिल बनते हैं, जो कि प्राकारिक काल रूपों की जटिल प्रणाली को बनाते हैं।[2]

'है' क्रिया के तिङन्ती रूप

'था' क्रिया के विकारी रूप

सामान्य भविष्यत काल के तिङन्ती विकारी रूप

प्रथम कृदन्तपरक विकारी रूप

द्वितीय कृदन्त परक विकारी रूप

विश्लेषणात्मक प्राकारिक काल रूप

| | |
|---|---|
| प्रथम एवं द्वितीय कृदन्त (द्विघटकीय) | संतत कृदन्त (तृघटकीय) |

**निश्चयार्थ के प्राकारिक-काल रूप**–यह रूप-पक्ष सम्बन्धी वर्णनों द्वारा जटिल बन सकते हैं और तब एक जटिल समापक विश्लेषणात्मक रचना बनाते हैं जो अपने अन्दर पाँच घटकों को शामिल कर सकती है।

**संभावनार्थ**– यह अवास्तविक व्यापार व्यक्त करता है जो संभाव्य, वांछनीय, काल्पनिक या अनुज्ञेय हो सकता है। सम्भावनार्थ का अर्थ एक अप्रकारिक तिङन्ती संश्लेषणात्मक रूप और तीन प्राकारिक विकारी-तिङन्ती रूपों द्वारा व्यक्त हो सकता है। जो कि पक्ष सम्बन्धी वर्णनों द्वारा जटिल हो सकता है और तब वे (रूप) एक जटिल बहुघटकीय समापक रचना बनाते हैं।

**संकेतार्थ**– संकेतार्थ भी अवास्तविक व्यापार को ही व्यक्त करता है जो कि काल्पनिक संदिग्ध या सप्रतिबन्ध सम्भाव्य हो सकता है। तब व्यापार की अवास्तविकता प्रतिबंधित हो सकती है अर्थात् व्यापार किन्ही विशेष स्थितियों में ही हो सकता है।[3] संकेतार्थ का अर्थ एक प्राकारिक संश्लेषणात्मक विकारी रूप तथा तीन विश्लेषणात्मक प्राकारिक विकारी रूपों द्वारा व्यक्त होता है, जो कि- पक्ष सम्बन्धी वर्णनों द्वारा जटिल हो सकते हैं और तब वे जटिल बहुघटकीय समापक रचना बनाते हैं।

**आज्ञार्थ**–आज्ञार्थ किसी एक व्यक्ति का संकल्प व्यक्त करता है और दूसरे व्यक्ति को व्यापार के लिए उद्बोधन करता है। यह भी हो सकता है कि संकल्प एक स्पष्ट आज्ञा हो, स्पष्ट या शिष्ट प्रार्थना हो। आज्ञार्थ का अर्थ- मध्यम पुरूष के एकवचन तथा बहुवचन के रूपों की प्रणाली द्वारा व्यक्त हो सकता है। स्पष्ट आज्ञा अगर मध्यम पुरूष में एकवचन को दी गयी हो और स्पष्ट प्रार्थना अगर मध्यम पुरूष में बहुवचन को दी गयी हो, शिष्ट प्रार्थना जब मध्यम पुरूष में बहुवचन के शिष्ट रूप होते हैं। अन्य पुरूष में एकवचन तथा बहुवचन के रूप व्यापार के लिए उद्बोध व्यक्त करते हैं। मध्यम पुरूष में एकवचन और बहुवचन के रूप पाँच संश्लेषणात्मक रूपों द्वारा व्यक्त होते हैं जिनमें से तीन तो नियमित होते हैं और दो शैली की दृष्टि से रंजित होते हैं। ये रूप प्रासंगिक प्रत्ययों के क्रिया की धातु के साथ मिलने से बनते है। अन्य पुरूष में एक वचन तथा बहुवचन के रूपों में सम्भावनार्थ का सरल तिङन्ती रूप प्रयोग होता है। आज्ञार्थ के रूप बहुत ही कम स्थितियों में पक्ष सम्बन्धी वर्णनों द्वारा जटिल बन सकते हैं।[4]

**वाच्यार्थ**

| **रूपात्मक श्रेणी** | **वाक्यात्मक श्रेणी** |
|---|---|
| (क्रिया के रूपों द्वारा व्यक्त) | (शब्दों के अन्दर विशेष सम्बन्धों में प्रकट) |

वाच्य क्रिया के व्याकरणिक रूपों की एक प्रणाली है जो उद्देश्य के साथ क्रियार्थक व्यापार का सम्बन्ध बताती है।

**वाच्य**

| | | |
|---|---|---|
| कर्तृवाच्य | - | (क्रियार्थक रूप उद्देश्य को व्यापार के कर्ता की हैसियत से व्यक्त करता है।) क्रियायें कर्तृवाच्य धातु से बनती है। |
| कर्मवाच्य | - | (क्रियार्थक रूप उद्देश्य को व्यापार के कर्म की हैसियत से व्यक्त करता है।) क्रियायें कर्मवाच्य धातु से बनती है। |
| भाववाच्य | - | (व्यापार के कर्त्ता या कर्म की तरफ सम्बन्ध अव्यक्त रहता है-कर्ता-कर्महीन वाच्य) क्रियायें सिर्फ समापक रूपों से ही व्यक्त होती है। |

विधेय क्रियाओं में वाच्य जाना सहायक क्रिया समेत सरल द्वितीय कृदन्तों के सकर्मक और अकर्मक रूपों के और समस्त बचे हुए तिङन्ती और विकारी क्रियार्थक रूपों के विरोध में प्रकट होता है। तब कर्मवाच्य की समापक क्रियायें कभी भी कर्तृसम्बन्धी रचना में नहीं आती और भाववाच्य की समापक क्रियायें सिर्फ अवैयक्तिक भाववाच्य रचना में आती है। बनावट की दृष्टि से सब वाच्य रचनाओं की

विशेषता यह है कि उनका क्रियार्थक विधेम अवश्य होता है और उद्देश्य और कर्म की उपस्थिति जरूरी नहीं है। कर्तृ रचना का विधेय मेल खाता है- कर्मणि सम्बन्धी और अवैयक्तिक भाववाचक रचनाओं से तथा कर्तृरचना का उद्देश्य मेल खाता है- कर्मवाच्य और अवैयक्तिक भाववाच्य रचना के साधक कर्म से। कर्तृवाच्य और अवैयक्तिक भाववाच्य रचना के साधक कर्म से। कर्तृरचना का प्रधान कर्मवाच्य रचना के उद्देश्य या प्रधान कर्म से मेल खाता है और अवैयक्तिक भाववाचक रचना में संगत संरचनात्मक तत्व नहीं रखता।

**वाच्य रचना**

| **तिनांगी** | **दो आंगी** | **एकांगी** |
|---|---|---|
| (उद्देश्य, विधेय और प्रधान कर्म) | (विधेय और उद्देश्य) | (सिर्फ विधेय) |
| | (शोभा बोली) | (कहते हैं कि......) |

**2.** कर्मवाच्य रचना तिनांगी हो सकती है। उसमें उद्देश्य, साधक कर्म और विधेय हो सकते हैं। उदाहरण --

वे एक स्वर्णकार के द्वारा पाले पोसे गए थे। आस ओन्टे सोनरसति पोसोरका परिदका रहचस।

कर्मवाच्य की रचना दो अंगी भी हो सकती है अर्थात् उसमें विधेय और उद्देश्य हो सकते हैं।

मैं पकड़ा जाऊँगा। एन धरार'ओन कालोन।

उसमें विधेय और प्रधान कर्म हो सकते हैं। जैसे-

लड़की को टॉर्चर करके मारा गया है। कुकोयन सताब'अर पिटका र'ई।

उसमें विधेय तथा साधक कर्म हो सकते हैं। जैसे-

मुझसे न कहा जायेगा। एँगन ति मल बातार'ओ।

कर्मवाच्य रचना एकांगी भी हो सकती है।

कहा जाता है कि ........ ब'अनर का ......

(सिर्फ विधेय)

**3.** अवैयक्तिक भाव वाचक रचना प्रायः दो-अंगी होती है। अर्थात विधेय और साधक कर्म हो सकते हैं। जैसे-

मुझसे चला नहीं जाता था। एँगन ति मल एकतार'आ लगिया।

उस स्त्री से न रहा गया। आ मुक्का ति मल रातारा।

नहीं रोया जायेगा मुझसे। मल चींख़तार'ओ एंगनति।

इस अध्याय में अब तक हमने अर्थ और काल के संदर्भ में क्रिया का विश्लेषण (विभिन्न प्रकार के अर्थी वाक्यों के संदर्भ में) अति संक्षेप में किया। अब हम सोदाहरण विभिन्न प्रकार के क्रियार्थक वाक्यों को बारी-बारी से देखेंगे-

## निश्चयार्थ

निश्चयार्थक क्रिया के काल रूपों का एक समूह है जो तीनों कालों- वर्तमान, भूत और भविष्यत से सम्बन्ध रखता है। ये तीनों काल मौजूदा वास्तविक काल होते हैं।

1. निश्चयार्थ वर्त्तमान काल के रूप उस व्यापार को व्यक्त करते हैं जो उक्ति के क्षण के साथ मेल खाता है और जिसमें उक्ति का क्षण शामिल होता है और जो उक्ति के क्षण के लिए वास्तविक होता है।

2. निश्चयार्थ भूतकाल के उस व्यापार को व्यक्त करते हैं जो कि उक्ति के क्षण का पूर्ववर्ती होता है या भूतकाल में किसी विशेष काल के क्षण तक सम्पन्न होता है।

3. निश्चयार्थ भविष्यत काल के रूप उस व्यापार को व्यक्त करते हैं जो कि उक्ति के क्षण के प्रति अनुवर्ती होता है या भविष्य में किसी विशेष क्षण तक सम्पन्न होता है।

1. वर्त्तमान काल 'है' क्रिया के संश्लेषणात्मक तिङन्ती रूपों तथा उन विश्लेषणात्मक रूपों द्वारा व्यक्त होता है जो कि प्रथम कृदन्त द्वितीय कृदन्त और संतत कृदन्त तथा 'है' क्रिया के तिङन्ती रूपों के संयोग से बनते हैं।

2. भूतकाल 'था' क्रिया के संश्लेषणात्मक विकारी रूपों तथा प्रथम और द्वितीय कृदन्त के विकारी रूपों एवं उन विश्लेषणात्मक रूपों द्वारा व्यक्त होता है जो कि प्रथम कृदन्त, द्वितीय कृदन्त और संतत कृदन्त तथा 'था' क्रिया के विकारी रूपों के सम्मिलन से बनते हैं।

3. भविष्यत काल किसी भी क्रिया के सामान्य भविष्यत काल के संश्लेषणात्मक तिङन्ती विकारी रूप एवं उन विश्लेषणात्मक रूपों से बनता है जो कि प्रथम कृदन्त द्वितीय कृदन्त और संतत कृदन्त और 'होना' क्रिया के सरल भविष्यतकाल के तिङन्ती-विकारी रूपों के संयोग से बनते हैं।

**निश्चयार्थ के कालरूप**[5]

| **रूप/काल वर्तमान** | **भूत** | **भविष्यत्** | **रूप/काल** | **वर्तमान** | **भूत** | **भविष्यत्** |
|---|---|---|---|---|---|---|
| संश्लेषणात्मक | अप्रकारिक है | था | लिखेगा | र'ई | रहचा | टूड़ोस |
| संश्लेषणात्मक | अपूर्ण लिखता | लिखता | टूड़ोस | टूड़ना | टूड़का | |
| संश्लेषणात्मक | पूर्ण | - | लिखा | टूड़ियस | - | |
| संश्लेषणात्मक | अपूर्ण लिखता है | लिखता होगा | टूड़दस | टूड़ा लगियस | टूड़यस होतंग | |
| विश्लेषणात्मक | पूर्ण लिखा है | लिखा था | लिखा होगा | टूड़का र'अस | टूड़का रहचस | टूड़ोस |
| विश्लेषणात्मक | संतत लिख रहा है | लिख रहा था | लिख रहा होगा टूड़ा लगदस | टूड़ा लगियस | टूड़ोस होतन | |

## कालरूपों के प्रत्यक्ष और लाक्षणिक अर्थ

### वर्तमान काल के रूप

वर्त्तमान काल में निम्नलिखित काल रूप होते हैं -

**1. वर्त्तमान स्थिर सत्य वाचक : उदाहरण : है क्रिया के चार तिङन्ती रूप।**

| **पुरूष** | **एक वचन** | **बहु वचन** | **एक वचन** | **बहु वचन** |
|---|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | मैं हूँ | हम हैं। | एन तलदन | एम तलदम |
| मध्यम पुरूष | तू है | तुम हो, | आप हैं नीन तलदय | नीम तलदर |
| अन्य पुरूष | वह है | वे हैं | आस तलदस | आर तलनर |

**2. वर्त्तमान अपूर्णवाची :** प्रथम कृदन्त के लैंगिक विकारी रूपों और 'है' क्रिया के तिङन्ती रूपों के संयोग से बनने वाली क्रिया :-

| **पुरूष** | **एक वचन** | **बहु वचन** | **एक वचन** | **बहु वचन** |
|---|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | मैं लिख ता/ती हूँ | हम लिख ते/ती हैं। | एन टूड़ दन/ड़ेन | एम टूड़ दम/ड़ेम |
| मध्यम पुरूष | तू लिख ता/ती है | तुम आप लिख ते/ती है | नीन टूड़ | नीम टुड दर/दय |
| अन्य पुरूष | वह लिख ता /ती है | वे लिख ता /ती हैं | आस टूड़दस | आर टूड़नर। |

निषेधात्मक वाक्यों में उद्देश्य के बाद 'नहीं' अथवा 'न' जोड़ा जाता है तथा सहायक क्रिया 'है' या उसके अन्य तिङन्ती रूपों को या तो लिखा ही नहीं जाता है या लिखा भी जा सकता है।

जैसे-

| **पुरूष** | **एक वचन** | **बहु वचन** | **एक वचन** | **बहु वचन** |
| --- | --- | --- | --- | --- |
| उत्तम पुरूष | मैं नहीं लिख ता/ती हूँ | हम नहीं लिख ते/ती हैं। | एन मल टूड़ दन/ड़ेन | एम मल टूड़ दम/ड़ेम |
| मध्यम पुरूष | तू नहीं लिख ता/ती है | तुम आप नहीं लिख ते/ती हैं | नीन मल टूड़ मल दय/दीनीम | टूड़ दर/दय |
| अन्य पुरूष | वह नहीं लिख ता/ती है | वे नहीं लिख ता/ती हैं | आस मल टूड़दस | आर मल टूड़नर। |

वर्तमान अपूर्णतावाची के लाक्षणिक समय-निरपेक्ष प्रयोग भी होते हों, वैसे प्रयोग है-

**1. ऐतिहासिक वर्त्तमान । जैसे-**

| | |
| --- | --- |
| कुछ दूर जाकर देखता क्या है कि एक खूबसूरत नौजवान रो रहा है। | जोक्क गेच्छा कालर एन्दरा एरदस का ओन्टा सुन्दराहा जोंख़स चींख़ा लगदस। |

**2. वर्त्तमान भविष्यत काल के रूप में-**

| | |
| --- | --- |
| जाओ, सीधे नहीं तो मैं शोर मचाती हूँ। | कला सोझे, मला होले एन गूल नना लगेन। |
| अब हटता है कि और लेगा? | अक्कु गुच्छरदय का आउर हो'ओय? |
| मैं आधे घंटे में आता हूँ, फिर खाके कीर्त्तन में जाऊँगा। | एन आधा घंटा नु किर्रदन, तले ओनर की किर्त्तन गे कालोन। |

**3. वर्त्तमान अपूर्णतावाची आभ्यासिक**-यह पुल्लिंग के दो लैंगिक रूपों (मुख्य और सहायक क्रिया) स्त्रीलिंग के एक लैंगिक रूप (मुख्य और सहायक क्रिया) और 'है' क्रिया के चार तिङन्ती रूपों द्वारा व्यक्त होता है। जैसे-

| **पुरूष** | **एक वचन** | **बहु वचन** | **एक वचन** | **बहु वचन** |
| --- | --- | --- | --- | --- |
| उत्तम पुरूष | मैं लिख ता ती हो-ता-ती हूँ | हम लिख ते ती हो-ते-ती हैं। | एन टूड़ोन पहें मन्ना/मनी/मनो | एम टूड़ोम पहें मनोन/मनोम |
| मध्यम पुरूष | तू लिख ता ती | तुम आप लिख ते ती | नीन टूड़े पहें | नीम टूड़ोर पहें |
| | हो ता ती है। आप लिख ते | हो ते ती हो ती हो ते ती है। | | |
| अन्य पुरूष | वह लिख ता ती | वे लिख ता ती | आस/आद आर टूड़दस पहें। | टूड़नर पहें। |
| | हो ता ती है | हो ते ती है। | | |

**4. वर्त्तमान पूर्णतावाची :** यह काल रूप द्वितीय कृदन्त के विकारी रूपों या द्वितीय कृदन्त के एक रूप में तथा 'है' क्रिया के तिङन्ती रूपों या 'है' क्रिया के एक रूप के मेल से बनता है।

**उदाहरण -**

| पुरूष | एक वचन | बहु वचन | एक वचन | बहु वचन |
|---|---|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | मैं आया/आयी हूँ। | हम आये/ आयी हैं। | एन बरचका र'अदन/र'एन। | एम बरचका र'अदम/र'एम। |
| मध्यम पुरूष | तू आया/आयी है। | तुम आये/ आयी हैं। | नीन बरचका र'अदय/र'अदी। | नीम बरचका र'अदर/र'अदी। |
| अन्य पुरूष | वह आया/आयी है। | वे आये/आयी हैं। | आस/आद बरचका र'अदस/र'ई। | आर बरचका र'अनर। |

**I. शुद्ध पूर्णतावाची अर्थ-उदाहरण-**

| | |
|---|---|
| मैं समझता हूँ कि सस्ते में छूट गये हैं। | एन बुझुरदन का सेब्बम अम्बरकन केरकन। |
| उसने एक शहर बसाया है। | आस ओन्टा शहर ओकताचका र'अदस। |
| मुझे तो सख्त चोट आयी है। | एँगा गा अनइत जोड़ से लइक्की र'ई। |
| मैंने एक डरावना सपना देखा है। | एन ओन्टा एलेचना तुंगुल इरका र'अदन। |

**II. समावेशी अर्थ-उदाहरण-**

| | |
|---|---|
| सुखराम घायल लेटा है। | सुखरामस टुंगारका ति बिडिरका र'अस। |
| अब मैं भी थक गया हूँ। | अक्कु एन हुं ख़ड़िदका केरका र'अदन। |
| मैं सारी रात जागा हूँ। | एन सगर माख़ा एजेरकन र'अदन। |

**II. पूर्वकालिक अर्थ-उदाहरण**

| | |
|---|---|
| इसे कल ही स्कूल में डाला है। | ईसिन चेरोम लुरकुड़िया नु सज्जका र'अदन। |
| कल माँ और बाबा में बातचीत हुई है। | चेरो अयंग अरा बबस नु कत्था मंजकी र'ई। |
| अभी परसों घी आया है। | अक्कुन होरभेरेम घींव बरचकी र'ई। |
| ग्यारह लोग जख्मी हुए हैं। | दोय ओन्द आलर खादी मंजका र'अनर। |

**5. पूर्णतावाची आभ्यासिक वर्त्तमान :-** यह कालरूप द्वितीय कृदन्तों के विकारी रूप तथा संयुक्त वर्त्तमान सहायक क्रिया के विकारी-तिडन्ती रूपों के मेल से बनता है।[6] उदाहरण-

| पुरूष | एक वचन | बहु वचन | एक वचन | बहु वचन |
|---|---|---|---|---|
| उत्तम | मैं बैठा ठी हो ता ती हूँ। | हम बैठे ठी हो ते ती हैं। | एन उक्कन र'अदन। | एम उक्कम र'अदम। |
| मध्यम | तू बैठा ठी हो ता ती है। | तुम बैठे ठी हो ते ती हो। आप बैठे ठी हो ते ती है। | नीन उक्कय र'अदय। | नीम उक्कर र'अदर। |
| अन्य | वह बैठा ठी हो ता ती है। | वे बैठे ठी हो ते ती हैं। | आस उक्कस र'अस। | आर उक्कर र'अनर। |

**6. पूर्णतावाची स्थैतिक वर्त्तमान :-** यह काल रूप द्वितीय कृदन्त के विकारी रूपों तथा संयुक्त पूर्णतावाची सहायक क्रिया के विकारी-तिडन्ती रूपों के मिलन से बनता है। उदाहरण-

| पुरूष | एक वचन | बहु वचन | एक वचन | बहु वचन |
|---|---|---|---|---|
| उत्तम | मैं आया आयी हुआ/हुई हूँ। | हम आये आयी हुए/हुई हैं। | एन बरचका/ बरचकी र'अदन। | एम बरचका र'अदम। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मध्यम | तू आया आयी हु आ/ई है। | तुम आप आये आयी हुए/हुई हो। | नीन बरचका र'अदय। | नीम बरचका र'अदर। |
| अन्य | वह आया आयी हुआ हुई है। | वे आये आयीं हुए हुई हैं। | आस बरचका र'अदस। | आर बरचका र'अनर। |

**7. संतत वर्त्तमान** :- यह काल रूप संतत कृदन्त के लैंगिक विकारी रूप तथा 'है' क्रिया के तिङन्ती रूपों के मेल से बनता है। उदाहरण -

| **पुरूष** | **एक वचन** | **बहु वचन** | **एक वचन** | **बहु वचन** |
|---|---|---|---|---|
| उत्तम | मैं लिख रहा/ रही हूँ। | हम लिख रहे/रही हैं। | एन टूड़ा लगदन/गेन। | एम टूड़ा लगदम/गेम |
| मध्यम | तू लिख रहा/ रही हो | तुम लिख रहे/रही हो। | नीन टूड़ा लगदय /दी | नीम टूड़ा लगदर/य |
| अन्य पु. | वह लिख रहा/ रही है | वे लिख रहे/ रही हैं। | आस/द टूड़ा लगदस/गी | आर टूड़ा लगनर। |

निषेधात्मक संतत वर्त्तमान के वाक्यों की सहायक क्रिया हैं को नहीं भी लिखा जा सकता है।

**संतत वर्त्तमान**

उक्ति के प्रत्यक्ष क्षण का वास्तविक संतत वर्तमान — विस्तारित व्यापार का वास्तविक संतत वर्तमान

**उदाहरण**

दूर कहीं घंटे बज रहे हैं। — गेच्छम एकसआनिम घंटी ख़रख़ा लगी।

मैं अर्से से करांची में रह रहा हूँ। — एन लेरा बछर ति करांची नु र'आ लगदन।

**रूप बद्ध संतत वर्त्तमान**

नारक सम्बन्धी संतत वर्त्तमान — उक्ति सम्बन्धी संतत वर्त्तमान

**उदाहरण**

**हिन्दी** : रावण वाण छोड़ता है। सर्पो की तरह वाण जा रहे हैं।

दूसरे अध्याय में गीता की शिक्षा का आरम्भ होता है और शुरू में ही भगवान जीवन के महासिद्धांत वता रहे हैं।

**हिन्दी** : नागरिकों की एक भीड़ एकत्र है और शोरगुल हो रहा है।

**कुड़ुख़** : रावणस बान अम्बदस। नेर्र लेक्खा बान काला लगी। एड़ो टीप नु गीता गहि लुर कत्था ओरे मना लगी, ओरे तिम आलर गहि ओन्टा गोहड़ा जुमुरकी र'ई। अरा ओरेनुम धर्मेस उज्जना पत्त घी कोहा लूर कत्थन तेंगा लगदस।

## संतत वर्त्तमान के लाक्षणिक प्रयोग के प्रकार

1. ऐतिहासिक संतत वर्त्तमान 2. भविष्यत काल के अर्थ में संतत वर्त्तमान 3. भूतकाल के अर्थ में संतत वर्त्तमान। **उदाहरण**-

**1. ऐतिहासिक संतत वर्त्तमान**-

**हिन्दी** : मैंने देखा कि मैं जंगल में चली जा रही हूँ।

**कुड़ुख़** : एन ईरइ'अन का एन टोड़ंग नु चइल काला लगेन।

**हिन्दी :** मुझे मालूम हुआ कि कोई स्त्री धीरे-धीरे मेरी ओर बढ़ रही है।

**कुड़ुख़ :** एन अक्कन का एक'अम मुक्का कले कले एंगतारा अड़सा लगी।

2. **भविष्यत् काल के अर्थ में संतत वर्त्तमान :-**

**हिन्दी :** मैंने सुना है कि तुम करीम से शादी कर रही हो।

**कुड़ुख़ :** एन मेन्जका र'अदन का नीन करीमस गने बेंजर'आ लगदी।

**हिन्दी :** हम धर्म संग्राम में जा रहे हैं।

**कुड़ुख़ :** ए-न धरम हुही नु काला लगदन।

3. **भूतकाल के अर्थ में संतत वर्त्तमान :-**

उदाहरण

**हिन्दी :** मैं रोटी नहीं खाऊँगा। - क्यो ? - खाकर आ रहा हूँ।

**कुड़ुख़ :** एन असमा मल मोख़ोन। एन्देरगे ? मोख़र बर'आ लगदन।

**8. आभ्यासिक संतत वर्त्तमान :-** यह काल रूप संतत कृदन्त के विकारी रूप तथा संयुक्त वर्त्तमान सहायक क्रिया के विकारी तिङन्ती रूपों के मिलन से बनता है।[7] उदाहरण-

**हिन्दी**

| **पुरूष** | **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|
| उ०पु० | मैं लिख रहा/रही होता/ती हूँ। | हम लिख रहे/रही होते/ती हैं। |
| म०पु० | तु लिख रहा/रही होता/ती है। | तुम/आप लिख रहे/रही होते/ती हैं। |
| अ०पु० | वह लिख रहा/रही होता/ती है। | वे लिख रहे/रही होते/ती हैं। |

**कुड़ुख़**

| **पुरूष** | **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|
| उ०पु० | एन टूड़त र'अदन/र'एन। | एम टूड़त र'अदन/र'एन। |
| म०पु० | नीन टूड़त र'अदय/र'अदी। | नीम टूड़त र'अदर/र'अदी। |
| अ०पु० | आस/द टूड़त र'अनर/र'अनय। | आर टूड़त र'अनर। |

अर्थ और काल के संदर्भ में क्रिया रूपों का विश्लेषण वर्त्तमान काल की तरह भूतकाल में भी होता है जिसका विवरण निम्नवत है-

## 2. भूत काल के रूप

भूतकाल में क्रिया के निम्नलिखित विश्लेषणात्मक रूप होते हैं।

1. स्थिर सत्यवाचक भूतकाल
2. अपूर्णतावाची नियमित आवर्ती भूतकाल
3. अपूर्णतावाचक भूतकाल।
4. अपूर्णतावाचक आभ्यासिक भूतकाल
5. सामान्य भूतकाल (पूर्णकालिक अनिश्चित भूत)
6. पूर्णतावाची भूतकाल
7. पूर्णतावाची आभ्यासिक भूतकाल
8. पूर्णतावाची स्थैतिक भूतकाल
9. संतत भूतकाल
10. संतत आभ्यासिक भूतकाल।[8]

**1. स्थिर सत्यवाचक भूतकाल** – यह काल रूप एकवचन और बहुवचन में पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग के चार विकारी रूपों द्वारा व्यक्त होता है। उदाहरण-

**हिन्दी**

| **एक वचन** | **बहुवचन** |
|---|---|
| मैं, तू, वह था थी | हम, तुम आप वे थे थीं |
| एन, नीन, आस/आद रहचस/रहचा | एम, नाम, नीम, आर र'अचर |
| शाम का वक्त था। | बी-ड़ी पुत्तना गहि बेड़ा रहचा। |
| कफन के लिए पैसे नहीं थे। | कफन गे ढिबा मल रहचा। |
| रावी के तटपर एक छोटा-सा नगर था। | रावि ही कूटी नु ओन्टा सन्नी नगर रहचा। |
| बाँके शेर की तरह खड़ा था। | बाँकेस लकड़ा ले-खा इज्जका रहचस। |

**2. अपूर्णतावाची भूतकाल :- उदाहरण-**

**कुड़ुख़**

| **पुरूष** | **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | मैं लिख ता/ती था/थी | हम लिख ते/ती थे/थीं |
| मध्यम पुरूष | तू लिख ता/ती था/थी | तुम लिख ते/ती थे/थीं |
| अन्य पुरूष | वह लिख ता/ती था/थी | वे लिख ते/ती थे/थीं |

**कुड़ुख़**

| **पुरूष** | **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | एन टूड़ा लइक्कन | एम टूड़ा लइक्कम। |
| मध्यम पुरूष | नीन टूड़ा लइक्कर/की | नीम टूड़ा लइक्कर। |
| अन्य पुरूष | आस टूड़ा लगियस/या | आर टूड़ा लगियर। |

**3. अपूर्णतावाची आभ्यासिक भूतकाल : उदाहरण**

**हिन्दी**

| **पुरूष** | **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|
| उत्तम : | मैं लिख ता/ती हो ता/ती था/थी। | हम लिख ते ती हो ते ती थे थीं |
| मध्यम : | तू लिख ता/ती हो ता/ती था/थी<br>आप लिख ते ती हो ते ती थे थीं | तुम लिख ते ती हो ते ती थे थीं |
| अन्य : | वह लिख ता ती हो ता ती था थी | वे लिख ते ती हो ते ती थे थीं। |

**कुड़ुख़**

| **पुरूष** | **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|
| उत्तम पुरूष | एन टूड़त र'आ लइक्कन। | एम टूड़त र'आ लइक्कम। |
| मध्यम पुरूष | नीन टूड़त र'आ लइककय। | नीम टूड़त र'आ लइक्कर। |
| अन्य पुरूष | आस टूड़त र'आ लगियस/या। | आर टूड़त र'आ लगियर। |

**4. सामान्य भूतकाल**-इस काल का क्रिया रूप कर्तृ, कर्म और भाववाचक रचना उपलब्ध होता है। उदाहरण-

**क. कर्तृसम्बन्धी रचना : उदाहरण**

| **पुरूष** | **एक वचन** | **बहु वचन** | **एक वचन** | **बहु वचन** |
|---|---|---|---|---|
| उत्तम : | मैं आया/आयी | हम आये/आयीं | एन बरचकन/ बरच'अन | नाम/एम बरचकत/बरच'अम |
| मध्यम : | तू आया/आयी | तुम आये/आयी। | नीन बरचकय/की | नीम बरचकर |
| अन्य : | वह आया/आयी। | वे आये/आयी। | आस/द बरचस/चा | आर/अबड़र बरचर। |

**ख. कर्मसम्बन्धी रचना : उदाहरण :-**

| **पुरूष** | **एक वचन** | **बहु वचन** | **एक वचन** | **बहु वचन** |
|---|---|---|---|---|
| उत्तम : | मैं | हम ने दो पत्र लिखेएन | एम | एंड़ चिठी टूड़कम। |
| मध्यम : | तू | तुम, आप | ·ीन | नीम |
| अन्य : | उस | उन्हो | आस/आद | आर/अबड़र |

**ग. भाववाचक रचना : उदाहरण –**

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरूष मैं | हमने पत्रों को लिखा। | एन चिठीन टूड़कन। |
| मध्यम पुरूष तू | | |
| अन्य पुरूष उस | | |

**5. पूर्णतावाची भूतकाल**–इस काल में भी क्रिया का काल रूप कर्तृ, कर्म तथा भाववाचक में अलग-अलग होती है। सामान्य भूतकाल के मूल क्रिया के रूप के बाद सहायक क्रिया 'या' का लैंगिक और वचन के रूप का प्रयोग होता है। कर्तृ सम्बन्धी रचना में मध्यम पुरूष, कर्म सम्बन्धी रचना में उत्तम पुरूष (दोनों वचनों) तथा भाववाचक रचना में भी उत्तम पुरूष के बहुवचन में अन्तर आता है। उदाहरण –

**क. कर्तृ सम्बन्धी रचना–**

| **पुरूष** | **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|
| मध्यम | तू आया/आयी था/थी। | तुम, आप आये/आयी **थे/थी।** |
| | नीन बरचकय/की रहचकी। | नीम बरचका/कय रहचकर/य। |

**ख. कर्म सम्बन्धी रचना–**

| | |
|---|---|
| मैंने पत्र लिखा/लिखी था थी | एन चिठी टूड़का रहचकन/'अन। |
| हमने दो पत्र लिखे लिखी थे थी | एम चिठी टूड़का रहचकम/'अम। |

**ग. भाववाचक रचना–**

| | |
|---|---|
| हमने पत्र/पत्रों को लिखा था | एम चिठी/न टूड़का रहचकम। |

शेष पुरूष और वचन तथा लिंग में एक ही रूप होते हैं।

**6. पूर्णतावाची आभ्यासिक भूतकाल : उदाहरण–**

**क. कर्तृसम्बन्धी रचना–**

हिन्दी

मैं

तू बैठा ठी हो ता ती था थी। नीन उक्का र'आ लइक्कय/की

| | |
|---|---|
| वह | नीन उक्का रहचकय। |
| हम | उक्का/उक्की/रहचकय/रहचकी। |
| तुम/आप बैठे बैठी हो ते ती था थी | नीम उक्का र'आ लइक्कर/कय। |

**ख. कर्मसम्बन्धी रचना :- उदाहरण-**

| | |
|---|---|
| मैं | उक्का/उक्की/रहचकन/रहचकी। |
| तू | नीन |
| उस | आद/आस |
| हमने पत्र लिखा लिखी हो ता/ती था/थी | एम चिठी/न टूड़का र'आ लइक्कन |
| तुम | नीन |
| आप | नीन |
| उन्हों | नीन |
| बहुवचन | |
| मैं | एन |
| तू | नीन |
| उस | आस् |
| हमने दो पत्र दो चिट्ठियाँ लिखे लिखी हो ते ती थे थी | एम एंड़ चिठी/न टूड़का र'आ लइक्कम। |

**ग. भाववाचक रचना : उदाहरण**

| | |
|---|---|
| मैं | एन |
| तू | नीन |
| उस | आस |
| हमने पत्र पत्रों को लिखा होता था। | एम चिठी/न टूड़का र'आ लइक्कम। |
| तुम | नीन |
| आप | नीन |
| उन्हों | आस |

**7. पूर्णतावाची स्थैतिक भूतकाल :- उदाहरण**

| | | |
|---|---|---|
| कर्तृ | तू बैठा बैठी हुआ हुई था थी। | नीन उक्का रहचकय/की |
| | तुम आप बैठे बैठी हुआ हुई था थी। | नीम उक्का रहचकर/की |
| कर्म | मैं ने पत्र लिखा लिखी हुआ हुई था थी। | एन चिठी टूड़कम रहचकन |
| | हम ने दो पत्र लिखे लिखी हुए हुई था थीं | एम चिठी टूड़कम रहचकम |
| भाववाचक | हमने पत्र पत्रों को लिखा हुआ था | एम चिठी टूड़का रहचकम। |

**8. संतत भूतकाल : उदाहरण**

| | |
|---|---|
| तु लिख रहा रही था थी। | नीन टूड़ा लइक्कय/लइक्की। |
| तुम, आप लिख रहे रही थे थीं। | नीम टूड़ा लइक्कर। |

**9. संतत आभ्यासिक भूतकाल : उदाहरण**

| | |
|---|---|
| तू लिख रहा होता था। | नीन टूड़नुम र'आ लइक्कय/लइक्की। |

| | |
|---|---|
| तू लिख रही होती थी। | नीन टूड़नुम र'आ लइक्की। |
| तुम, आप लिख रहे रही थे थीं। | नीम टूड़नुम र'आ लइक्कय/लइक्कर। |

**3. भविष्यत् काल के रूप**

भविष्यत् काल के निम्नलिखित रूपों में भेद होता है-[9]

1. सामान्य भविष्यत् काल (सरल भविष्यत काल)
2. अपूर्णतावाची भविष्यत् काल (द्वितीय भविष्यत काल)
3. पूर्णतावाची भविष्यत् काल (तृतीय भविष्यत काल)
4. संतत भविष्यत् काल

**1. सरल सामान्य भविष्यत काल**–काल का यह रूप पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग के चार तिङन्त विकारी रूपों द्वारा व्यक्त होता है। उदाहरण–

| **पुरूष** | **एकवचन** | **बहुवचन** | **एक वचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|---|---|
| उत्तम | मैं लिखूँगा गी | हम लिखे गे गी | एन टूड़ोन | एम टूड़ोम |
| मध्यम | तू लिखेगा गी | तुम लिखो गे गी<br>आप लिखेंगे गी | नीन टूड़ोय | नीम टूड़ोर |
| अन्य | वह लिखे गा गी | वे लिखेंगे गी | आस टूड़ोस | आर टूड़ोर |

**अन्य उदाहरण–**

| | |
|---|---|
| इस जुमेरात को जाऊँगी। | ई जुमा माख़म कालोन। |
| आज नहीं तो कल वह खुले ही गा | इन्न मला नेला आद कोल र'ओ दिम। |
| जो खर्च वह तुम्हें देते थे, मैं दूँगा। | एका खरचा आस निंगा चि'आ लगियस एन चि'ओन। |
| तुम्हारे आर्केस्ट्रा में वायलिन बजाऊँगा। | निंगहय अरकेस्ट्रा नु बयलिन अस्सोन। |

**हिन्दी–** किसी न किसी दिन उसे इस द्वीप को छोड़ना ही पड़ेगा।
वह दुनिया कितनी अच्छी होगी, जिसमें पुलिस नहीं होगी।
कैसी भी हो/होगा तो जवान ही?

**कुड़ुख़–** एक'अम मल एक'अम उल्ला आसगे ई टापुन अम्बनम मनो।
आराजी एंवदा दव लग्गो, इकिया पुलिसर मल र'ओर।
एक'आसेम मनो/मनोस गा जवानिम?

**2. अपूर्णतावाची भविष्यत काल (द्वितीय भविष्यत)**–काल का यह रूप व्यक्त होता है।

प्रथम कृदन्त के पुल्लिंग स्त्रीलिंग के एक होना क्रिया के पुल्लिंग स्त्रीलिंग के चार के दो लैंगिक रूपों द्वारा लैंगिक रूप द्वारा के चार तिङन्त विकारी रूपों द्वारा

समान रूपों द्वारा

**उदाहरण :** **हिन्दी**

| **पुरूषः** | **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|
| उत्तमः | मैं लिख ता ती हूँगा गी | हम लिख ते ती होंगे गी। |
| मध्यमः | तू लिख ता ती होगा गी | तुम लिख ते ती होगा होगी |
| अन्य : | वह लिख ता ती होगा गी | वे लिख ते ती होंगे गीं। |
| | एन टूड़दन होतन | नाम टूड़दत होतन। |

| | |
|---|---|
| नीन टूड़दय होतय | नीम टूड़दर होतय। |
| आस टूड़दस होतय | आर टूड़नर होतय। |

इस काल रूप को व्यक्त करने के क्रम में वर्त्तमान में कल्पना, भूतकाल में कल्पना तथा भविष्यत् काल में कल्पना को अभिव्यक्ति दी जाती है। जैसे–

**1. वर्त्तमान में कल्पना : उदाहरण**

| | |
|---|---|
| वे आपको जरूर जानते होंगे। | आर निन्गन मानिम अख़नर होतन। |

**2. भूतकाल में कल्पना**

| | |
|---|---|
| क. मैं अम्मा के पास गयी ही क्यों? | एन अयंग गुसन केर'अन एन्देरगे? |
| भाभी जरूर पहले से जानती होंगी। | नासगो अगेतिम अख़'ई होतन। |
| ख. वहाँ तो तनख्वाह भी ज्यादा मिलती होगी? | असन गा तनखा हुँ बग्गु ख़क्ख़री होतन। |
| जी हाँ, सवा दो सौ मिलते थे। | हई, सवा एंड़ दयदोय ख़खर'आ लगिया। |

**3. भविष्यत् काल में कल्पना : उदाहरण**

क. लच्छू बोला, "अरे आती होगी बारात भी।" लच्छूस बाचस, "अरे बर'ई होतय बरात हुँ।"

ख. मुझसे जो कुछ कहोगे, मैं करती जाऊँगी। एंगन्ति इन्दर'इम ब'ओय, एन नन्नुम कालोन।

**अन्य उदाहरण**

| | |
|---|---|
| 1. तो लड़कियाँ वहुत खराब होती होंगी। | होलेगा कुकोयर बग्गेम मलदव मन्नर होतन। |
| 2. वह कितनी उदास और निराश होती होगी। | आद एंवदा हदियरका मनी होतन। |

**3. पूर्णतावाची भविष्यत् काल**–इस काल रूप के भविष्यत् काल में किसी क्रिया के सम्पन्न होने की निश्चित संभावना व्यक्त की जाती हैं। यह निश्चितता तीनों वाच्यों के वाक्यों द्वारा व्यक्त की जाती है।

**हिन्दी**

| **पुरूष** | **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|
| उत्तम | मैं आया आई होऊँगा/गी | हम आये आई होंगे। |
| मध्यम | तू आया आयी होगा/गी | तुम आये आई होंगी। |
| अन्य | वह आया होगा/गी। | वे आये आयी होंगे/होंगी। |

**कुड़ुख़**

| **पुरूष** | **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|
| उत्तम | एन बरचका र'अदन/रएन | एम बरचका र'ओम |
| मध्यम | नीन बरचका र'ओए | नीम बरचका र'ओर |
| अन्य | आस बरचका र'ओस | आर बरचका र'ओर |

कर्मवाच्य के उत्तम पुरूष के एकवचन और बहुवचन में एक कर्म और एक से अधिक कर्म को व्यक्त किया जाता है। जैसे–

| | |
|---|---|
| हमने पत्र लिखा/लिखी होगा गी। | एन चिठी टूड़कन/'इयन होतन। |
| हमने दो पत्र लिखे/लिखी होगे गीं। | एम एंड़ चिठी टूड़कम/'इयम होतन। |

**(भाववाच्य में)**

| | |
|---|---|
| हमने दो पत्रों को लिखा होगा। | एम एंड़ चिठीन टूड़कम होतन। |

यह काल रूप भी भूतकाल, वर्त्तमान काल एवं भविष्यत् काल की कल्पना के अर्थ को व्यक्त करता है।

**1. भूतकाल में कल्पना–उदाहरण**

| | |
|---|---|
| 1. वैशाली का नाम आपने सुना ही होगा। | वैशाली ही नामे नीन मेन्जकम र'अदय होतन। |
| 2. कहार सो गये होंगे। | कँहरर खँदरर केरर होतन। |
| 3. शायद! मोर्चे से बहुत बुरी खबर आयी होगी। | मना उंगी सिंयाति अकय मलदव हाल बरचा होतन। |
| 4. अभी बीस-मिनट भी न गुजरे होंगे, कि एक व्यक्ति आकर खड़ा हो गया। | अक्कुन विसो मिनट अरगी कट्टा होतन अरा ओन्टा आलस बर'अर इज्जस चिच्चस। |

**2. वर्त्तमान में कल्पना–उदाहरण**

| | |
|---|---|
| लेकिन दूसरा आदमी भी तो भूखा बैठा होगा। | पहें एड़ता आलस हूँ गा कीड़म उक्का र'अस होतन। |
| मैं समझा सो गयी होगी और तो सब सो गए हैं। | एन अक्कन खँदरा केरा, अरा होरमर तो ख़ंदरईम ख़च्चियर। |

**3. भविष्यत् काल में कल्पना-**

| | |
|---|---|
| ऐसे वस्त्र तो शायद मुझे अपने विवाह में भी न मिले होंगे। | एन्ने किचरी गा एंगा बेन्जा नु हुं मल ख़क्खरकी रहचा होतन। |
| कौन जाने, उसे चलाने की जरूरत पड़ी होगी। | ने अख़ओ, आसगे चलाब'अना चाड़ मन्जा होतन। |
| हूँ.... हमने किया है! हुआ होगा। | ह'ई... एन नन्जका र'अदन। मन्जा होतन। |

**4. संतत भविष्यत् काल–उदाहरण**

| | |
|---|---|
| 1. मैं लिख रहा होऊँगा। | एन टूड़ते र'ओन होतई। |
| 2. मैं लिख रही होऊँगी। | एन टूड़ते र'ओन होतई। |
| 3. हम लिख रहे होंगे। | एम टूड़ते र'ओम होतई। |
| 4. तू लिख रहा होगा। | नीन टूड़त र'अदय होतन। |
| 5. तुम लिख रहे होगे। | नीम टूड़दय होतन। |
| 6. तुम लिख रही होगी। | नीम टूड़ते र'अदी होतन। |
| 7. वह लिख रहा होगा। | आस टूड़ते र'अस होतन। |
| 8. वह लिख रही होगी। | आद टूड़ते र'ई होतन। |
| 9. वे लिख रहे होंगे। | आर टूड़ते र'अनर होतन। |
| 10. वे लिख रही होंगी। | आर टूड़ते र'अनर होतन। |

संभावनार्थ चार रूपों का वर्ग है, उनमें से एक संश्लेषणात्मक तिङन्ती है और बाकी तीन विश्लेषणात्मक विकारी तिङन्ती रूप हैं। संभावनार्थ के सभी रूप कालवाचक नहीं होते, बल्कि काल सापेक्षता के अधिक सामान्य अर्थ को व्यक्त करते हैं।[10]

**संभावनार्थ**

| **प्राकारिक रूप** | **अप्रकारिक रूप** |
|---|---|
| **(कृदन्तपरक विश्लेषणात्मक रूपों द्वारा व्यक्त)** | **(तिङन्ती संश्लेषणात्मक रूप द्वारा व्यक्त)** |

उक्त विभाजन को इस प्रकार भी व्यक्त किया जा सकता है–

| रूप/प्रकार | अप्रकारिक | अपूर्ण | पूर्ण | संतत |
|---|---|---|---|---|
| 1. संश्लेषणात्मक | लिखे | - | - | |
| 2. विश्लेषणात्मक | - | लिखता हो | लिखा हो | लिख रहा हो |

**1. संश्लेषणात्मक सरल रूप :** यह रूप क्रिया के चार तिङन्ती रूपों द्वारा व्यक्त होता है, जो कि क्रिया की धातु के साथ पुरूष वाचक प्रत्यय जोड़ने से बनते हैं; 'ऊँ' एकवचन, उत्तम पुरूष 'ए'- मध्यम तथा अन्य पुरूष, एकवचन, 'एं' उत्तम तथा अन्य पुरूष, बहुवचन तथा मध्यम शिष्ट पुरूष, बहुवचन, 'ओ'- मध्यम पुरूष, बहुवचन।[11] उदाहरण-

| पुरूष | एक वचन | बहु वचन | एक वचन | बहु वचन |
|---|---|---|---|---|
| उत्तम | मैं लिख ऊँ/लिखूँ | हम लिख एँ/लिखें | एन टूड़ोन | एम टूड़ोम |
| मध्यम | तू लिख ए/लिखे | तुम लिखओ/लिखो | नीन टूड़ोय | नीम टूड़ोर |
| | | आप लिख एँ/लिखें | | नीम टूड़ोर |
| अन्य | वह लिख ए लिखे | वे लिख एँ लिखें। | आस टूड़ोन | आर टूड़ोर। |

'लेना, देना और होना' क्रियायें अनियमित तौर पर संभावनार्थ के संश्लेष्णात्मक रूप बनाती है। जैसे-

| पुरूष | एक वचन | बहु वचन | एक वचन | बहु वचन |
|---|---|---|---|---|
| उत्तम | मैं दूँ, लूँ होऊँ | हम दें, लें हों। | एन चि'ओन/ हो'ओन र'अदन | एम चि'ओम/हो 'ओम र'ओम |
| मध्यम | तू दे ले हो | तुम दो लो हो। | नीन चि'ओय/ हो'ओय र'अदन | नीम चि'ओर/हो 'ओर र'ओर |
| अन्य | वह दे ले हो | वे दे ले हों | आस चि'ओस/ हो'ओस र'ओस | आर चि'ओर/हो 'ओर र'ओर |

संभावनार्थ का संश्लेष्णात्मक रूप वर्त्तमान तथा भविष्यत् काल संभाव्य तथा वांछनीय व्यापार को व्यक्त करता है। जैसे-

**वर्त्तमान कालार्थ**

| | |
|---|---|
| आप लोग यहाँ भीड़ न लगायें। | नीम इसन झुमटा अम्बा मना। |
| और न किसी को भला बुरा कहें। | अउर न नेक'आनुम दव-मलदव ब'आ। |

**भविष्यत कालार्थ**

| | |
|---|---|
| मेरी समझ में सबेरे चलें। | एंगहय बुझुरनु पइरी गुचा। |
| अगर वह माया से विवाह करे तो | अगर आस माया ती बेन्जा |
| तुम्हें खुशी होगी। | ननोस होले नीन खुसमार'ओय। |

संभावनार्थ जो भूतकाल के अर्थ में आता है, वांछनीय या संभाव्य व्यापार को कम व्यक्त करता है। उदाहरण :

निश्चय न कर सके कि हाथ मिलाएँ या झुककर सलाम करें।

यह नहीं हो सकता था कि वे न आएँ।

संभावनार्थ संश्लेषणात्मक रूप एकल संभाव्य या वांछनीय व्यापार व्यक्त करते हैं। जैसे-

| | |
|---|---|
| नहीं, नहीं, ठहरिये मैं देख लूँ। | मला, मला, इज'आ एन एर लिंघदन। |

| | |
|---|---|
| अभी तो कोशिश थी उसे उसके घर ही भेज दूँ। | अकुन गा चिहुंट रहचा आसिन तंग्हय एड़पा तइय्योन चि'ओन। |
| यदि कोई मांस न खाये तो बकरे की गर्दन पर छुरी क्यों चले। | अगर नीकि'इम अहड़ा मल मोख़ोर होले एड़ा घी ख़ेसेरनुम कन्तो एन्देरगे चलर'ओ। |
| भोजन एक ही समय बने ...........। | मण्डी ओंघोनुम बित'आ........। |

संभावनार्थ का अपूर्ण रूप संभावनार्थ में प्रथम कृदन्त के लैंगिक विकारी रूपों तथा 'होना' क्रिया के तिङन्ती रूपों के मिलन से बनता है। उदाहरण-

| पुरूष | एक वचन | बहु वचन | एक वचन | बहु वचन |
|---|---|---|---|---|
| उत्तम | मैं लिख ता/ती होऊँ | हम लिख ते/ती हों। | एन टूड़दन/इयन | एम टूड़दम हँ'अन |
| मध्यम | तू लिख ता की हो। | तुम लिख ते की हो। | नीन टूड़दय/दी | नीम टूड़कर हँ'अन |
| | | आप लिख ते ती हों। | नीम टूड़दर हँ'अन | |
| अन्य | वह लिख ता ती हो। | वे लिख ते ती हों। | आस/द टूड़दस/ड़ी हँ'अन | आर टूड़नर हँ'अन |

संभावनार्थ का अपूर्ण रूप नित्यता बोधक अपूर्ण व्यापार का बोध कराता है। उदाहरण-

**भूतकाल के अर्थ में-**

| | |
|---|---|
| उसका मन ऐसा प्रसन्न था मानो वह किसी बड़े रमणीक स्थान की सैर करके आता हो। | आसी जिया एन्ने खुसमारका रहचा माइन हो'आ। आस अकय दव अड्डा कुद्दियस की बरचका र'अदस। |

**वर्तमान के अर्थ में-**

| | |
|---|---|
| यदि उसे भय ही लगता हो तो भी कहने की क्या आवश्यकता है। | अगर आसगे इलिचका लग्गी दिम अन्नु हुँ ब'अना ही एन्देर चाड़ र'ई। |

**भविष्यत काल के अर्थ में -**

| | |
|---|---|
| विधान निर्माण कार्य में जनता का प्रत्यक्ष योगदान | नियम कमना नलख नु आलर घी सोझेम सहड़ा |
| तभी मिल सकेगा जब जनता पढ़ी लिखी हो। | तबेम ख़क्खर'ओ एका बीरी आलर टूड़का बचचकर र'ओर। |

यह रूप संभाव्य एकल व्यापार को भी व्यक्त करता है। जैसे-

**हिन्दी :** मछलियाँ मालूम होती थीं मानो किसी सुन्दरी के चंचल नयन चमकते हों।

**कुडुख़ :** इंजो एन्ने एथर'आ लगिया माइन हो'आ एक'अम सुघड़ पेल्लो गहि ख़न्न बिलचा लगिया।

संभावनार्थ कायह रूप संभाव्य सामान्यकृत व्यापार को भी व्यक्त करता है। जैसे-

**हिन्दी :** संभव है, कभी-कभी बाजार की तरफ चला जाता हो।

**कुडुख़ :** मनाउंगी ओंघोन, ओंघोन पेठ चइल कादस होतन।

## संभावनार्थ का पूर्ण रूप

**उदाहरण**

**कर्तृ रचना-**

| पुरूष | एक वचन | बहु वचन | एक वचन | बहु वचन |
|---|---|---|---|---|
| उत्तम | मैं आया/आयी होंऊँ | हम आये आयी हों। | एन बरचका/ बरचकी र'ओन हँ'अन | एम बरचका र'ओम हँ'अन |
| मध्यम | तू आया आयी हो। | तुम आये आयी हो। | नीन बरचका/ बरचकी र'ओय हँ'अन | नीम बरचका/बरचकी र'ओर हँ'अन |
| अन्य | वह आया आयी हो। | वे आये आयी हों। | आस/आद बरचका/बरचकी र'ओस/र'ओ हँ' | अन आर बरचका र'ओर हँ'अन |

**कर्म रचना-**

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम | हमने पत्र लिखा लिखी हो। | एन चिठी टूड़का/की र'अदन/'एन होतन। |
| उत्तम | हमने दो पत्र लिखे लिखी हों। | एम एंड़ चिठी टूड़का र'अदम होतई। |

**भाववाच्य रचना–**

उत्तम पुरूष : हमने दो पत्रों को लिखा हो। एम एंड़ चिठी टूड़का र'अदम हँ'अन।

संभावनार्थ का यह रूप संभाव्य व्यापार को व्यक्त करता है। उदाहरण-

कौन जानता। शायद मर भी गए हों। ने अख़'ई। मानाउंगी केच्चस केरस होतन।

सोचा, गुप्ताजी के यहाँ न चली गयी हों। घोखचकन, गुपतस गुया मा चइल केरा होतन।

यह रूप संभाव्य व्यापार को भी व्यक्त करता है। जैसे-

**हिन्दी :** मेरी आँखें फूट जायें, अगर मैंने उनकी तरफ ताका भी हो।

**कुड़ुख़ :** एंगहय ख़न्न चोड़न नेक'आ, अगर एन आस तरा बतरे हुँ इरकन होले।

यह रूप पूर्णतावाची अर्थ का संभाव्य व्यापार कम ही व्यक्त करता है। जैसे-

**हिन्दी :** संभव है, अब उन्होंने घर बसा लिया हो।

**कुड़ुख़ :** मनाउंगी, अक्कु आस एड़पा पली नन्जस होतन।

एक संभाव्य व्यापर के साथ दूसरे संभाव्य व्यापार को भी यदि रूप व्यक्त करता है।

**उदाहरण–**

**हिन्दी :** जब वह जमीन पर गिर पड़ी तब उसे जैसे होश आ गया हो।

**कुड़ुख़ :** एका बीरी आद ख़ेख़ेल नु खतरा, ख़नेम अदीगे होस बरचा केरा बेसे।

## संभावनार्थ का संतत रूप

यह संभावनार्थ रूप संतत कृदन्त के लैंगिक रूपों से तथा संभावनार्थ में होना क्रिया के तिङन्त रूपों के मेल से बनता है। उदाहरण -

| पुरूष | एक वचन | बहु वचन | एक वचन | बहु वचन |
|---|---|---|---|---|
| उत्तम | मैं लिख रहा/ रही होऊँ। | हम लिख रहे/ रही हों। | एन टूड़नुम र'अदन हँ'अन | एम टूड़नुम र'अदम हँ'अन |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मध्यम | तू लिख रहा/ रही हो। | तुम लिख रहे/ रही हो। | नीन टूड़नुम र'अदय हँ'अन | नीम टूड़नुम र'अदर हँ'अन |
| | | आप लिख रहे/ रही हों। | नीम टूड़नुम र 'अदर हँ'अन | |
| अन्य | वह लिख रहा/ रही हों। | वे लिख रहे/ रही हों। | आस टूड़नुम र'अदस हँ'अन | आर टूड़नुम र'अनर हँ'अन। |

संभावनार्थ के संतत रूप का व्यापार वास्तविक व्यापार/पूर्ववर्ती प्रसंग की पृष्ठभूमि में होता है। **उदाहरण–**

| | |
|---|---|
| मुझे लगा जैसे वह निरन्तर मेरी ओर देख रहा हो। | एंगा लगिया का आस ओनसिरतम एंगतरा एरदस हँ'अन। |
| और जो कोई देख रहा हो। | अरा निकइम एरनर हँ'अन। |

मिश्र वाक्य में विधेय में निषेध की उपस्थिति संभावनार्थ के प्रयोग को अनिवार्य कर देती हैं। **उदाहरण–**

| | |
|---|---|
| इतना सब्र न था कि उन्हें ठंडा हो जाने दे। | इंवदा थीर मल रहचा का आसीन एख़ा चि'ओन। |
| हर किसान के पास इतनी भूमि नहीं होती कि वह ट्रैक्टर का पूरा उपयोग कर सके। | होरमा किसानर गुसन इंवदा ख़ल मल मनी का आर टेकटर ती हुरमी नलख ननोर। |

निश्चयात्मक वाक्यों में संभावनार्थ का प्रयोग वैकल्पिक होता है। **उदाहरण–**

**हिन्दी :** उन्हें ऐसा जान पड़ा कि सारी प्रकृति एक विराट् व्यापक नृत्य की गोद में खेल रही हो। ऐसा मालूम होता था मानो इस देश में पैदा ही नहीं हुए।

**कुड़ुख़ :** आसगे एन्ने अख़तारा का सौंसे ख़ेख़ेल मेर्ख़ा ओन्टे अनइत नलना कोरा नु बे-चा लगी; एन्ने लग्गा लगिया का ई राजी नु कुन्दुर'अम अरगन।

मिश्र वाक्यों के व्याख्यात्मक वाक्य प्रकार में संभावनार्थ के रूपों का प्रयोग शब्दार्थक प्रतिबन्धित होता है। उदाहरणार्थ–

| | |
|---|---|
| इसलिए यह भी आवश्यक है कि इस पर सरकारी नियंत्रण हो। | औंगे ईद हुँ चाड़ र'ई का इय्या सरकारी लगाम र'अन। |
| हमारा कर्त्तव्य है कि हम उन्हें सुमार्ग पर लायें। | नम्हय नलख र'ई का आसिन दव डहरे नु ओन्दरोओत। |
| तुम चाहती हो कि मैं मर जाऊँ? | नीन घोखदी का एन खे'ओन कालोन। |
| जी चाहता है कि विष खा लूँ। | जिया घोखई का जहरिम मोक्ख ख़च्चोन। |
| अभी तो कोशिश करूँगा कि उसे उसके घर ही भेज दूँ। | अक्कु गा चिहुँट ननोन का आसिन तंगहय एड़पा तइय्योन चि'ओन। |
| इससे कहीं अच्छा है कि आप मुझे यह काम सौंपे। | इदीन्ती कोड़े ईद र'ई का एंग्गागे ई नलखनं सोप'आ चि'अन। |
| मुझे डर था कि कोई दूसरा आदमी न रख लिया हो। | एंग्गागे इलिचका रहचा का एड़ता आल मल उइका र'अस। |
| डॉक्टर कहते हैं कि इतना परिश्रम न करूँ। | डाकटरस ब'अदस का इंवदा नलख मल ननोन। |
| अध्यक्ष ने सुझाव दिया कि अभी फिर बैठक हों। | कन्डो बेलस सुरताचस का अक्कुन फिन बैसकी मनन। |

| | |
|---|---|
| एकमात्र मकसद है कि मामले को खत्म कर दिया जायें। | ईदिम घोख र'ई का झंझटन मुन्जा चि'आ। |
| शंका हुई कि उसी ने हँसी में छिपाकर रखा हो। | शक मन्जा का आसिम अलखननुम नुड्डका र'अदस। |
| यह नहीं हो सकता था कि वे न आयें। | एन्ने मल मना ओंगा लगिया का आस मल बर'ओस। |
| माया को लगता था मानो समय का चक्र रूक गया हो। | माया गे लग्गा लगिया का बेड़ा चका ईज्जा केरा। |
| शर्त्त है, समस्याओं को यथार्थ दृष्टि से देखें। | कत्था र'ई का झंझटन सचे ख़न्न ति एरा। |

**उद्देश्यवाचक संभावनार्थ**

| | |
|---|---|
| मैंने कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया। | एन कुठरी ता बलिन मुच्चकन चिचकन। |
| ताकि बाहर किसी प्रकार की आवाज न जाए। | का बहरी ती एक'अम बेसे हुँ सड़ा अम्बन कालन। |

**अनुमतिवाचक संभावनार्थ : उदाहरण**

**हिन्दी** : दूसरों की मजदूरी करते उन्हें नहीं रूचता, भले ही भूखे रह जायें।

**कुड़ुख़** : नन्नर गहि मजुरा नन्ना आसगें तनिको दव मल लग्गी, भले कीड़म एन्देरगे मल रइह कालोस।

**संकेतावाचक संभावनार्थ : उदाहरण**

| | |
|---|---|
| मानो तो एक बात कहूँ। | मन'ओय होले ओन्टा कत्था ब'ओन। |
| जी, मेरा बस चले तो उन्हें टाउन में भी घुसने न दूँ। | का एंगहय बउसा चलरना होले आसिन शहर नु कोर'आ मल चि'ओन। |

**तुलनावाचक मिश्र संभावनार्थ वाक्य : उदाहरण**

| | |
|---|---|
| तांगो का कहीं पता न था, जैसे शहर लुट गया हो। | घोड़ोगड़ी ही पता मल रहचा, का शहर बच्चरा केरा। |
| मोहन सिंह चौंक पड़े जैसे किसी ने चुटकी काट ली हो। | मोहन सिंहस अकचकरस का नीकइम चिंगियर चिच्चर। |

**कालवाचक मिश्र संभावनार्थ वाक्य : उदाहरण**

| | |
|---|---|
| आप मत आना जब तक कि मैं न बुलाऊँ। | नीन अमके बरा जबले एन मल मेख़ोन। |
| इससे पहले कि कजरी कुछ कहे, वह बाहर निकल आया। | इदिन्ति मुन्ध का कजरी इंदरिइम ब'ओ आस बाहरी उरखस केरस। |
| आप जब तक चाहें, रहें। | नीन ए गूटी र'आ बेद्दय, र'आ। |

**विशेषण मिश्र संभावनार्थ वाक्य : उदाहरण**

| | |
|---|---|
| कोई आँख ऐसी न थी जो आँसू से लाल न हो। | एक'अम ख़न्न एन्ने मल रहचा का ख़न्जलख़ो ती ख़ेसो मल मनो। |
| जो मेरे साथ रह सके, वह रहे। | ने एंगहय गने र'आ ओंन्गोर, आर र'आ। |
| जो ये कहे सो करो। | आस जे ब'अदस अन्नेम नना। |
| आपकी जो आज्ञा हो, करूँ। | नीन एकासे ब'ओय, ननोन। |
| इस अपराध के लिए मुझे जो सजा चाहें, दें। | ई मलदव नलख गे एंगा जे सजा चि'आ बेद्दय, चि'आ।। |

**सम्बन्धवाचक संयोजक संभावनार्थ वाक्य : उदाहरण**

**हिन्दी :**

वह अपनी भाभी के इशारों पर दौड़ती थी जिसमें वह माता को कुछ कह न बैठे।
वह बहुत देर पहले से गाती रही हो, ऐसा तो नहीं लगा।
मन करता है, मैं भी एक कुत्ता पाल लूँ।
शायद! वह वहाँ घूमने गया हो।
क्यों न यह कंगन सुमन बाई की नजर करूँ ?
काश! वह कभी उसे अपने बाहों में ले सके .......।
ज जाने क्या कर बैठूँ।
मोहिनी में अपने को फँस जाने दूँ या कतराकर निकल जाऊँ ?
चलो, लौट चलें।
भाई साहब, तुम धन्य हो।
शायद मर भी गयी हो।

**कुड़ुख़ :**

आद तंग नासगो हि इशारानुम बोंगा लगिया, एकन्नुम आद तंगियोन इंदरइम अम्बन ब'अन।
आद ढेर अगेन्तिम पाड़ते रहचा, एन्ने गा मल लग्गिया।
एन्ने लग्गी, एन हुँ ओन्टा अल्ला पोस'ओन चि'ओन।
मनाउंगी! आस असन कुद्दा केरका रहचस।
एन्देरगे मल ई कंगनन सुमन ख़ई गे दाँड़े नन्दन।
मानिम आस ओंघोनकेम अदिन तंग'आ बँइह नु अत्ता ओंगना।
एन्देर अख़ोय एन्देर नन्ज ओक्कोस।
मोहिनी नु तंग'अन फँसर'आ चि'अदन का तरकूटी मनर उरूखदन कादन।
गुचा, किरोंत कालोत।
भइयो नीन धइन र'अदय।
मनाउंगी केच्चा हूँ केरा होतन।

## संकेतार्थ : काल रूप

संकेतार्थ चार रूपों का वर्ग है। इनमें से एक संश्लेषणात्मक विकारी है और शेष तीन विश्लेषणात्मक विकारी। संकेतार्थ काल सम्बन्धी कम और काल सापेक्ष ज्यादा है। इसके संकेतार्थ के रूप प्राकारिक तथा इसके विश्लेषणात्मक रूप बहुप्राकारिक है।

### संश्लेषणात्मक सरल रूप

उदाहरण–

| पुरूष | एक वचन | बहु वचन | एक वचन | बहु वचन |
|---|---|---|---|---|
| उत्तम | मैं | हम | एन | एम |
| मध्यम | तू लिखता | लिखती | तुम आप लिखते | नीन टूड़दय/दी<br>नीम टूड़दर |
| अन्य | वह | वे | आस | आर |

संकेतार्थ का संश्लेषणात्मक रूप छिपे हुए संभाव्य या वांछनीय व्यापार को व्यक्त करता है। उदाहरण :-

**1. भूतकाल के अर्थ में :**

**हिन्दी :** चाहता तो अब तक हजारों रूपये जमाकर लेता।
चाहिए तो यह था कि मैं लज्जा से वहीं गड़ जाती।

**कुड़ुख़ :** जिया तुक्कना होले अक्कुन गुटि लुढिम सुडिडम ढिबा जमा ननोन पहें।
चाड़ गा इंदा रहचा का एंगा लज्जे ति असानुम गडरना काना।

**2. वर्त्तमान काल के अर्थ में :**

**हिन्दी :** परन्तु चाहता हूँ कि वह अब न आते तो अच्छा होता।

**कुड़ुख़ :** पंहे एंगा लग्गी का आस अक्कु मल बरना होले दव मनो पंहकल।

**3. भविष्यत् काल के अर्थ में : उदाहरण**

**हिन्दी :** कहीं उसके नाम कोई लाटरी निकल आती।

**कुड़ुख़ :** एक'अम अन्ने आस गहि नामे ति लौटरी उरूखना काना।

संकेतार्थ का संश्लेषणात्मक रूप संकेतवाचक वाक्य के दोनों हिस्सों में आकर विभिन्न कालार्थों से सम्बन्धित व्यापार को व्यक्त करता है। जैसे-

**हिन्दी :** यदि मैं पाप से न डरता तो आज मुझे यों ठोकरें न खानी पड़ती।

**कुड़ुख़ :** अगर एन पाप ति मल एलेचना होले इन्ना एंगा एन्ने ठोकरारना मल मनो पंहे।

संकेतार्थ का संश्लेषणात्मक रूप एकल संभाव्य या वांछनीय व्यापार को व्यक्त करता है।

**उदाहरण–**

| | |
|---|---|
| चाहता तो **प्रधान** होता। | जिया तुक्कना होले एन देवान र'ओन पंहे। |
| अगर मेरी दाढ़ी होती तो आपको दे देती। | अगर एंगहय गोच्चो र'अना होले निंगा चि चि'ओन पंहे। |

यह संतत व्यापार को भी व्यक्त करता है। जैसे-

**हिन्दी :** और कौन ऐसा निठल्ला था जो रात रात भर उससे शतरंज खेलता। अगर वह मुझसे वीणा सीखती, तो मुझे तीन सौ रूपये महीना मिलते।

**कुड़ुख़ :** अउर ने एन्ने अहडण्ड रहचा जे सगर माख़ा आस संगे शतरंज बेचो। अगर आद एंगहय ती वीणा सिखिरना होले एंगा मूंद दयदोय ढिबा चन्दो गनिका ख़खर'ओ पहें।

## संकेतार्थ का अपूर्ण रूप

उदाहरण :-

**I. कर्तृसम्बन्धी रचना–**

**हिन्दी :**

| **पुरूष** | **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|
| उत्तम | मैं आया आयी हो ता ती | हम आये आयी होता होती |
| मध्यम | तू आया आयी हो ता ती | तुम आप आये होते आयी होती। |
| अन्य | वह आया आयी हो ता ती | वे आये आयी होते होती। |

**कुँड़ुख :**

| पुरूष | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| उत्तम | एन बरचका होले | एम बरचका होले |
| मध्यम | नीन बरचका होले | नीम बरचका होले |
| अन्य | आस बरचका होले | आर बरचका होले |

**II. कर्म सम्बन्धी रचना–**

**हिन्दी :** एकवचन मैं, तू, उस, हम, तुम, आप, उन्होंने पत्र लिखा लिखी हो ता ती।
बहुवचन मैं, तू, उस, हम, तुम, आप, उन्होंने दो पत्र लिखे लिखी।

**कुड़ुख :** एकवचन एन, नीन, आस, एम, नीम, नीम, आस चिठी टूड़ोस पहें।
बहुवचन एन, नीन, आस, एम, नीम, आर चिठी टूड़ोस पहें।

**III. भाववाचक रचना–**

**एक वचन तथा बहुवचन**

मैं, तू, उस, हम, तुम, आप, उन्होंने पत्र दो पत्रों को लिखा होता।

एन, नीन, आस, एम, नीम, आर एंड़ चिठीन टूड़का होले।

संकेतार्थ का संश्लेषणात्मक रूप संभाव्य व्यापार को व्यक्त करता है।

**उदाहरण**

**हिन्दी :** जुलूस निकलने से स्वराजय मिल जाता तो अब तक कब का मिल गया होता।

**कुड़ुख :** आल गोंहड़ा उरूखताति तंग राजी ख़खरना काना होले अक्कुन गूटी ख़खर'ओ कालो पहें।

संकेतार्थ का पूर्ण रूप निश्चयार्थ के साथ आनेवाली क्रिया की पूर्ववर्ती क्रिया को व्यक्त करता है। उदाहरण–

**हिन्दी :** मैं चला गया होता, मगर मुझे सवाल की प्रतीक्षा थी।

**कुड़ुख :** एन चइल कालोन पहें, मगर एंगा मेनता गहि असरा रहचा।

संकेतार्थ का पूर्ण रूप पूर्णतावाची प्रकृति का व्यापार कम ही व्यक्त करता है। उदाहरणार्थ–

| | |
|---|---|
| भगवान ने दिया होता तो तुम्हें कहना न पड़ता। | धर्मेश चिच्चका रहचका होले निंगा ब'अना मल पड़ार'ओ पंहे। |
| काश! वह इस घर में न पैदा हुई होती। | मानिम! आद ई एड़पा नु मल कुन्दरकी रहचका। |
| काश! उसकी माँ सचमुच माँ होती। | मानिम! आसी अयंग सचेम अयंग रहचका। |

## संकेतार्थ का संतत रूप

यह रूप संतत कृदन्त के लैंगिक विकारी रूपों तथा संभावनार्थ में होना क्रिया के विकारी संश्लेषणात्मक रूपों के मेल से बनता है। उदाहरण

| | |
|---|---|
| मैं | एन |
| तू लिख रहा रही हो ता ती। | नीन टूड़नुम र'आ र'अना होतन। |
| वह | आस |
| हम- | एम |
| तुम लिख रहे रही होते ती | नीन टूड़नुम र'अना र'ई होतन। |

आप नीम

वे लिख रहे हो ते होती आर टूड़नुम र'अना होतन।

संकेतार्थ का संतत रूप संभाव्य अपूर्ण व्यापार को व्यक्त करता है। उदाहरण-

**हिन्दी :** 1. अगर दूसरे ने यह हरकत की होती तो आज उसका खून पी जाता।

2. यदि प्राण देने से पापों का प्रायश्चित हो जाता तो मैं अब तक कभी का प्राण दे चुका होता।

3. तुम लोग बीच में न कूद पड़ते तो मैंने उन सबों को ठीक कर लिया होता।

4. आपने न बचाया होता तो आज शराब की जगह हल्दी गुड़ पीते होते।

**कुड़ुख़ :** 1. अगर नन्नर ई हेहाइड़ नन्जका होले इन्ना आस घी ख़ेसन ओण्डं ख़च्चोन पंहें।

2. अगर जिया चिच्चका ति पाप मेटेरना काना होले एन अक्कु गुटि तिनतहियम जिया चि चि'ओन पंहें।

3. नीम मझी बोंग मल बरना होले एन होरमारिन सुरत'आ ख़च्चोन पंहें।

4. नीन मल बछा बाचका होले इन्ना अरखी ही अड्डा नु बालका गुल्ले ओनोम पंहे।

संकेतार्थ संतत वर्त्तमान या निरपेक्ष काल अर्थ से कम ही सम्बन्ध रखता है। उदाहरण-

**हिन्दी :** अगर वही गाना महफिल में होता तो रूपये बरसते लेकिन सड़क पर अंधे गानेवाले की कौन परवार करता है।

**कुड़ुख़ :** अगर हू डण्डी दिम आल गोहड़ा मजही नू पाड़ना होले ढिबा किदगो पंहेस, पंहें सटक तक काना पाडूरिन ने हरा आरिन थिथाब'ई।

**वर्त्तमान काल के अर्थ में : उदाहरण**

**हिन्दी :** अगर दस बीस आदमी जमा हो जाते तो पुलिस कहती हमसे लड़ने आये हैं।

**कुड़ुख़:** अगर दोय इन्दी आलर जुमूरका होले पुलिस ब'ओ पंहे का ईर बिछा लग्गा बरचकानर।

**भविष्य काल के अर्थ में- उदाहरण**

अहमदाबाद चलते तो कैसा रहता। अहमदाबाद काना होले एकान्ने र'ओ पंहें।

**निरपेक्ष काल के अर्थ में :-** (अवास्तविक हेतुमद सम्बन्ध का व्यापार)- उदाहरण

**हिन्दी :** परन्तु चाहता हूँ कि वह अब न आते तो अच्छा होता।

क्या अच्छा होता, अगर यह फुलवारी हमेशा गुलजार रहती।

**कुड़ुख़ :** पंहे लग्गालि का आस अक्कुन मल बरना होले दव मनो पंहे।

एँवदा दव मनो पंहे अगर ई पूँप बटगी हुरमी बीरी शोभना होले।

**भूतकाल के अर्थ में-उदाहरण**

**हिन्दी :** कोई साधारण मकान पाँच रूपये किराये पर लेता, तो क्या काम न चलता ?

**कुड़ुख़ :** एक'अम बेसे एड़पा पंचे रूपये ढिबा भाड़ा हो'अना होले, नलख मल मनो पंहे ?

संकेतार्थ के रूप बहुधा भूतकाल के अर्थ में आते हैं जबकि संभावनार्थ के रूप भविष्यत् काल के अर्थ में आते हैं। संकेतार्थ के रूप संभाव्य व्यापार को व्यक्त करते हैं जो भविष्यत् काल में हो सकता था। यह मुख्य अन्तर ज्यादा सरल संश्लेषणात्मक रूपों में दिखायी पड़ता है, विश्लेषणात्मक रूपों में कम।

काल्पनिक उपाधि का परिणाम वाक्यों में संकेतवाचक वाक्य के बाहर भी हो सकता है। जैसे-

**हिन्दी :** मैं अकेली नहीं आऊँगी - तो पहले कह दिया होता।

**कुड़ुख़ :** एन उत्ख़ीन मल बर'ओन – आदिन मुन्धीम ब'अना चि'अना रहचा।

संकेतावाचक वाक्य का आश्रित हिस्सा स्वतंत्र रूप से आकर काल्पनिक उपाधि को व्यक्त कर सकता है। जैसे-

| | |
|---|---|
| अगर तुम मना कर देतीं। | अगर नीन मना नंजकी रहचकी। |
| काश! तुमने मुझे एक मौका दिया होता, केवल मौका! | मानिम! नीन एंगा ओण्टे ताक चिच्चका होले, खली ताक। |

**निश्चयार्थ में संकेतार्थ रूप–उदाहरण**

| | |
|---|---|
| तुझे मरना ही था तो घर पहुँचकर मरता। | निंगा खे'अनाम रहचा होले एड़पा अड़सोय की खे'ओय पंहे। |
| नहीं लगाने थे तो पहले ही कह दिया होता। | मल सजना रहचा होले मुन्धिम ब'अना चि'अना रहचा। |
| अगर वह इस वक्त अपनी जान बचाकर हट जाता, | अगर आस अक्कुनीम तंगहय जिया बछाब'आ कि गुच्छरना काना |
| तो शराबियों की खैरियत न थी। | होले अरखी उनुर गहि जिया अख़'ओ पंहे। |
| कंकाल मात्र होने के बावजूद, वह पूरी तरह सिंगार करती। | बइद पंजरा एकला रहचा, अन्नू हूं आद अनेत सिंगरार'आ लगिया। |
| मैं आज तेरे घर में रहने के लिए आयी थी। | इन्ना एन निंगहय एड़पा र'आगे बरचकी रहचअन। |
| मैं तुझसे विवाह करती और तेरी होकर रहती। | एन निंगहय संगे बेन्जर'ओन अरा निंगहय मनर र'ओन पंहे। |
| मैं चला गया होता, मगर मुझे सवाक की प्रतीक्षा थी। | एन चइल कालोन पंहे, मगर एंगा सवाक गहि असरा रहचा। |
| कजरी ने उसे पकड़ा वरना वह गिर गया होता। | कजरीद आसिन धरचा मला होले आस खतर'ओस पंहे। |
| न दिया तो अच्छा ही किया। नहीं तो यह भी चला जाता। | मल चिच्चा तो कोड़ेम नन्जा, मला तो आस हुँ चइल क'ओस पहें। |
| तुम जरा डॉ० चटर्जी को फोन करती। | नीन तनी डा० चटर्जीसिन फोन ननोय पंहक्ल। |
| कुन्ती भी क्या करती? बेटे को अकेले कैसे छोड़ती? | कुन्ती हुँ एन्देर ननो पंहे? तंगदसिन एकासे ओतख़म अम्बो। |
| मैं क्या करता उस वक्त ! | एन एन्देर ननोन पंहे, आ बीरी ! |
| काश ! उसकी माँ सचमुच माँ होती। | मानिम ! अदि तंगियो सचेम अयंग रहचका। |
| वह इस योग्य थी कि किसी बड़े घर की स्वामिनी बनती। | आद इंवदा चेटगर रहचा का एक'अम कोन्हा एड़पा ता उरबनी बन'ओ पंहे। |
| तुम्हें तो चाहिए था कि डूब मरते चुल्लू भर पानी में। | निंगा गा ईद रहचा का ओन पस्ती अम्म नू मूलख़र खे'अना काना। |
| जी चाहता है कि उन्हीं की भाँति मैं भी निःसंकोच हो जाती। | जिया तुक्की का आस लेक्खम एन हुँ मल लजरना। |

## मिश्र वाक्यों में संकेतार्थ के रूप

**1. सह सम्बन्धी सार्वनामिक वाक्य-उदाहरण**

**हिन्दी :** उनमें इतना साहस न था कि प्रस्ताव को स्पष्ट से व्यक्त कर सकते।

**कुड़ुख़:** आस ई बग्गे बड़ियर मल रहचस का मुन्धारी उइका कत्थान सफम ब'आ ओंगोस।

**2. अनुमतिवाचक वाक्य-उदाहरण**

**हिन्दी :** जवाब तो कुछ न कुछ जरूर ही देता चाहे, तुक मिलती या न मिलती।
वह ससुराल लौट आती, उसे चाहे घुट घुट कर मरना क्यों न पड़ता।

**कुड़ुख़ :** उतारा गा इन्दरइम मल इन्दरइम मानिम चि'ओस पंहे भले कत्थ जुमरना का मल जुमरना।
आद ससराईर किर्र बर'ओ पंहे, चहे अदि गे कुंहकर-कुंहकर खे'अनम एन्देरगे मल मनो पंहें।

**3. विशेषण वाक्य-उदाहरण**

| | |
|---|---|
| यह कौन था जो बीच में बोलता ? | इस ने रहचा जे मझी नुम ब'ओस पंहे ? |

**4. काल वाचक वाक्य-उदाहरण**

| | |
|---|---|
| इससे पहले कि कोई कुछ कहता .... देबू उछला। | इदीनति मुन्ध का निक'इम इन्दर'इम ब'अना ... देबुस उछलारस। |
| जब भी मौका मिलता। | एक'अम बारी बेड़ा ख़क्खरना ...। |
| दोनों उन्हें संभलकर चलने की सलाह देते थे। | एड़ोर आसिन सम्भड़र'अर एकागे सलहा चि'आ लगियर। |

**5. उद्देश्यवाचक वाक्य-उदाहरण**

| | |
|---|---|
| उनसे भी कोई बुरी हरकत न हुई। | आस ति हुँ इन्दर'इम मल दव नलख़ मल मन्जा। |
| जिससे मुझे कोई शिकायत होती। | अदिगे एंगा शिकायत र'अना। |

## संकेतार्थ के अन्य उदाहरण

**हिन्दी**

1. तोता कभी इस डाल पर जाता, कभी उस डाल पर कभी पेड़ पर आ बैठता।
2. कभी कभी सिर में दर्द हो जाता, कभी पाचन क्रिया में विघ्न पड़ जाता।
3. अगर कोई होते तो मुझे यूँ ही न छोड़ देते।
4. अगर उससे जाली नोट बनाना आ जाता तो वह बनाकर चला जाता।
5. अगर ईश्वर मुझे ऐसी ही एक झोपड़ी दे देता, तो मैं उसी पर संतोष करता।
6. यदि प्राण देने से प्रायश्चित हो जाता, तो मैं कब का प्राण दे चुका होता।

**कुड़ुख़**

1. सुगा ओन्घोन ई डाड़ी आ डाड़ी, ओंघोन मन मइय्या बरच उक्की।
2. ओंघोन ओंघोन कुक्क नुन्जुच ख़च्ची, ओंघोन पचना नलख गड़बड़र'ई काली।
3. अगर निकईम र'अना होले, एंगा एन्नेम मल अम्बोर चि'ओर पंहे।
4. अगर आसगे जाली नोट कम'आ अख़ना काना होले आस कम'अर चईल कालोस पंहे।
5. अगर धर्मेस एंगा एन्नेम ओण्टा कुम्बा ची चि'अना होले एन अत्तुकिम ससेम रइह कालोन पंहे।

## आज्ञार्थ

आज्ञार्थ छः संश्लेषणात्मक रूपों का एक समूह है, जिनमें से चार तो नियत होते हैं अर्थात् एक सर्वनाम के साथ सम्बन्धित होते हैं। वह रूप जो धातु का पर्याय होता है तू सर्वनाम से सम्बन्धित होता है, ओ वाला रूप तुम सर्वनाम से इये इयेगा वाले रूप आप सर्वनाम से सम्बन्धित होते हैं। इयो रूप तथा रूप जो कि तुमर्थ का समाहार है, तू और तुम सर्वनामों से सम्बोधित हैं। इस तरह तू सर्वनाम तीनों रूपों से परस्पर सम्बन्ध रखता है-1. धातु का समाकार 2. इयो रूप तथा 3. तुमर्थ का समाकार तुम सर्वनाम भी तीन रूपों से सम्बन्ध रखता है। 1. ओ रूप से 2. इयो से और 3. तुमर्थ का समाकार आप सर्वनाम दो रूपों से सम्बन्ध रखता है 1. इये और 2. इयेगा रूपों से।[13]

### 1. धातु का समाकार

क्रिया का यह काल रूप तू सर्वनाम से संबंधित होता है। वह आज्ञार्थ का रूप है जो सिर्फ एक पुरूष के साथ संबंध रखता है। निम्नांकित स्थितियों में इसका प्रयोग होता है।

**हिन्दी :** 1. बड़ा आदमी जब छोटे को सम्बोधित करता है। उदाहरण-
जा बेटी, भीतर से अचार ले आ भाई के लिए
चल बेटा! साज को तांगे में रख दे।

**कुड़ुख़ :** कलय बिटि, उला ति अचार ले ओन्दर'अय भइय्योस गे।
गुचा बेटा! सङ्खनन घोड़ो गड़ी नू उइय्या चि'आ।

2. घनिष्ट मित्र के निकट सम्बन्धियों छोटे को सम्बोधित करने में। उदाहरण -
I. प्यारी, तू जा! सो जा — चोन्हा नीन कलय! ख़न्दर'अय कलय।
आ इधर बैठ जा चारपाई पर। — बरा इजो ओक्का कला खटिया नू।

3. समाज के निम्न स्तर के लोगों के सम्बोधन में। उदाहरण-
'पहले यह बतला' सहज तीव्र स्वर से महाराजा बोले।
'मुन्ध इदिन तेंगा' सहजेम जोड़हस ति बेलस बाचस।
अरी, चल नटनी। — अनकोय, गुचय नटनी।
'भीतर चल' सिपाही ने कहा। — 'उला गुचा' सिपाहिस बाचस।

4. जानवरों को संबोधित करने में। उदाहरण-
घोड़े को संबोधित करते हुए; आ बेटा! बरय ख़द्द।

5. परिष्कृत सम्बोधन भगवान और भिक्षुओं को। उदाहरण-
हे भगवान, जैसे तू ने मेरी सुनी, वैसे ही सब की सुन।
अना धर्मे! एकान्ने नीन एंगहय मेन्जकय अन्नेम होरमरहिन मेना।
हे महादेव, प्यारी को अच्छा कर दे, उसे बचा ले।
ए महादेव, प्यारीन कोड़े नना चि'आ, अदिन बछाव'आ।

6. तिरस्कार बोधक सम्बोधन में। उदाहरण-
राजा! ..सन....राजा, सच मान। बेलय! .... मेना ... बेलय, सतेम पत्त'आ।
रख दे कड़ा! कमीने ! — उइय्या चि'आ बंहिकन ! बेरख़ा !
भाड़ में जा गिर। — अड़ी नू कला मुलख़ा।
आज्ञार्थ का यह रूप तू के साथ आ सकता है और उसके वगैर भी। उदाहरण-

| | |
|---|---|
| अरे! चुप रह तू ! | अनहो ! चुपे र'आ नीन। |
| प्यारी ! तू जा ! | प्यारी ! नीन कलय ! |

निषेध और मनाही में धातु समाकार का प्रयोग। उदाहरण–

| | |
|---|---|
| तू न डर। | नीन अम्बा एलचा। |
| रो नहीं कजरी ! | चिंख़य अम्बय कजरी। |
| ऐसा मत कर। | एन्ने अम्बा नना। |
| चलने दे, गरीब को मार मत। | काला चि'आ, गरीबरिन लव'आ अम्बा। |

जरा निपात के शिष्टतापूर्ण आज्ञार्थ सम्बोधन में। उदाहरण

| | |
|---|---|
| तू यही ठहरा रह जरा। | नीन इसानीम इज्जकम र'आ कटिक ! |
| अरे बहू ! जरा संभल कर मल। | अनय ख़ेड़ो! कटिक सम्भड़र'अय कि मन्जअय। |

धातु का समाकार रूप सामान्य पुरूष वाचक अर्थ में आ सकता है। जैसे–

| | |
|---|---|
| नेकी कर और दरिया में डाल। | दव नना अरा गड्डी नू कला। |
| सूरत न शक्ल, भार से निकल। | बई न मुँही, भरिया ति उरखा। |

## 2. ओ का रूप

आज्ञार्थ का यह रूप क्रिया की धातु के साथ परप्रत्यय ओ लगाने से बनता है। देना और लेना क्रियाओं के साथ यह परप्रत्यय अंत्यलुप्त धातु के साथ लगाते हैं : ओ पर प्रत्यय धातु के स्वर की जगह आता है (दे द + ओ दो, ले ल + ओ लो।) कई धातुओं में जो ओ पर समाप्त होती हैं, वहाँ ओ पर प्रत्यय को छोड़ सकते हैं लेकिन यह मानक नहीं हैं जो कि निम्नलिखित उदाहरणों से प्रमाणित होता है।[14]

| | |
|---|---|
| तुम न रोओ काका ! | नीन अम्बा चींख़ा कका! |
| तू रो नहीं कजरी ! | नीन चींख़ा अम्बय कजरी। |

सम्बोधित करने में आज्ञार्थ का प्रयोग–उदाहरण

| | |
|---|---|
| तुमलोग हट जाओ, वरन् मैं फायर कर दूँगा। | नीम हाड़ी कला, मला होले गोली दग'ओन चि'ओन। |
| जाओ, जल्दी जाओ किशन। | कला, चांड़े कला किसन। |

आज्ञार्थ का यह रूप शिष्टता का आम रूप है। निम्न स्थितियों में इसका प्रयोग सम्भव है।

**1. सामान्य शिष्ट संबोधन में**

**क. बड़ो को संबोधित करने में : उदाहरण**

| | |
|---|---|
| अम्मा ! थोड़ा-सा गुड़ दे दो। | यो ! तनि कुना गुल्ले चि'अय नी। |
| गुड़ मत खाओ भैय्या ! | गुल्ले अम्बा मोख़ा ददा ! |

**ख. छोटों को संबोधित करने में : उदाहरण**

| | |
|---|---|
| तुम आज ही पृथवीपाल के बाप से मिल आओ। | नीन इन्नम पृथवीपाल तम्बस गने ख़खर'अर बरय। |
| हाथ मुँह धोकर ठंडा लो, बेटा ! | ख़ेख मुँहि मुँझरर ख़न एख़ा बेटा ! |

**2. दोस्तों के बीच शिष्ट सम्बोधन में : उदाहरण**

| | |
|---|---|
| कहो भाई चेतन, कैसे हो? | ब'आ भइयो चेतन, एकासे र'अदय ? |
| गोविन्द ! तुम मेरी नाव में बैठ जाओ। | गोविन्द ! नीन एंगहय डोंगा नु ओक्का कला। |

**3. सामाजिक तौर पर निचले स्तर के लोगों को सम्बोधन :- उदाहरण**

| | |
|---|---|
| औरतों की सी बात न करो सुखराम। | मुक्कर लेक्खा अम्बा कचनखर'आ सुखराम। |
| दादू चलो, मेरे साथ चलो। | अज्जो गुचा, एंगहय संगे गुचा। |

**4. अध्यापक का छात्र के लिए शिष्ट सम्बोधन : उदाहरण**

| | |
|---|---|
| जुली, मुझे जरा लिफाफा दिखलाओ। | जुली, एंगन कटिक लिफाफा एद'अय। |

**5. ऊँचे तबके वालों के साथ दोस्तान सम्बन्ध होने पर संबोधन : उदाहरण**

| | |
|---|---|
| ठाकुर, जल्दी चलो। | ठकुर, चांड़े गुचा। |
| माफ करो उस्ताद ! | मोधर'आ कला ओस्ताद ! |
| बाबू भैया, मेरे संग घूमने चलो। | बबु बुचू, एंगहय संगे कुद्दा गुचा |

**6. भगवान को शिष्ट सम्बोधन में : उदाहरण**

| | |
|---|---|
| हे भगवान, बदला चुकाओ। | ए धर्म, पसरी किरत'आ। |

**7. तिरस्कार बोधक अशिष्ट सम्बोधन : उदाहरण**

| | |
|---|---|
| चुप रहो, दुष्ट ! | चुपे र'आ, मुदई ! |
| निकल जाओ मेरे घर से...जाओ जालिम ! | उरखा कला एंगहय एड़पा ति .. कला फसियड़। |
| आज तो अपनी आवाज बन्द रखो माँ ! | इन्ना गा निंगहय ब-इयन ससेम उइय्या यो ! |

**8. दो या दो से ज्यादा लोगों या जानवरों के सम्बोधन में :**

| | |
|---|---|
| सिपाहियों, तलवार दो पागलों को। | सिपाहा तड़री चि'आ, पुरूर गे। |
| तुम दोनों यहीं रहो। | नीम एड़ोर इसानिम र'आ। |
| तुमलोग उन्हीं से कहो। | नीम आसतिम ब'आ। |
| अरे, रहने दो तुम। | ए, र'आ चि'आ नीन। |
| डरो नहीं, बीबी जी! | एलचय अम्बय, मइया ख़द्द ! |
| बको मत ! | धुक'आ अम्बा ! |
| तुम जरा अपना जी बहला आओ। | नीन तनि निंगहय जियन सलसंत ननर बरा। |
| इन लड़कियों को खिलाओ पिलाओ। | इबड़ा पेल्लोरिन मोख़ोत'आ-ओन्त'आ। |
| रोटी वहाँ खाओ और पानी यहाँ पीओ। | असमा असन मोखा अरा अम्म इसन ओना। |

## इये (इए) रूप

आज्ञार्थ का यह रूप क्रिया की धातु के साथ परप्रत्यय इये इए लगाने से बनता है। देना लेना करना पीना होना सीना क्रियायें आज्ञार्थ के उस रूप को जिये जिए लगाने से बनाती है जो कि स्वर विसंधि के फलस्वरूप बहुत कम स्थितियों में जे रूप को अपना सकता है। दीजिये दीजिए दीजे लीजिये लीजिए लीजे; पीजिये पीजिए पीजे हो जिये हो जिए होजे सीजिये सीजिए सीजे जैसा कि आज्ञा के दिये गये रूपों से प्रकट होता है देना लेना करना क्रियायें परप्रत्यय को विकृकधातु के साथ लगती है। करना और होना क्रियायें अनियमित रूप के साथ नियमित रूप भी बना सकती है ; करिये करिए होइये होइए।[15]

**उदाहरण–**

| | |
|---|---|
| आप लोग इधर बैठिये। | नीम इत्तरा ओक्का। |
| अपना उपदेश आप अपने ही लिए रखिए। | निंगहय ब'अना कत्थन नीन निंग्गागेम उइय्या। |
| आप उन्हें सीधे मेरे पास भेज दीजिए। | नीन आसिन सोझेम एंगहय हेद्दे तइय्या। |

| | |
|---|---|
| सन्दूक की चाभी लीजिए, रूपये निकाल ले जाइए। | सन्दुक ही कुंजीन ओन्दा, ढिबन ओथर'अर ले हो'आ। |
| थोड़ा सा खाने-पीने का सामान ले चलिए। | तनिकुना ओन्ना-मोख़ना आलोन ले ले गुचा। |
| जीजाजी, आप रूक जाइए। | भट्ठु, नीन रइह कला। |
| आप घबराईये नहीं, पिताजी ! | नीन एलचा अमके, बा होय ! |
| आइए जनाब ! आइए कुछ दूर साथ ही चलिए। | बरा सहेब ! बरा जोक्क गेच्छा संगेम गुचा। |
| मिस लतिका लैम्प जरा और नीचे झुका दीजिए। | मई लतिका लैम्पन तनि किय्या जुर्रतय चि'अय। |
| लीजिए मेरा रूमाल, अपने आँसू पोछ डालिए। | ओन्दा एंगहय रूमालन, ख़न्जलख़ोन चींचा मुन्जा। |
| साफ-साफ बताइये, क्या काम है ? | सोझे-सोझे ब'आ, इन्देर नलख़ र'ई ? |
| आइए-आइए, बाबू रामनाथ साहब ! | बरा-बरा, बाबु रामनार्थ सहेब ! |
| बाबूजी देख तो लीजिए। | बा होय एर तो लिन्घआ। |
| आप लोग जाइए। | नीम कला। |
| हँसिये मत, दारोगाजी। | अलख़ा अम्बा, दरोगा साहेब। |
| खाइये मन भाता, पहनिये जग भाता। | ओना तंग'आ पसिन्द ती, अत्ता आलर ही पसिन्द ति। |
| जरा पता तो लगाइये। | तनि पता गा लगाब'आ। |

## इयो इओ वाले रूप

आज्ञार्थ का यह रूप क्रिया की धातु के साथ इयो इओ परप्रत्यय लगाने से बनता है। आज्ञार्थ का यह रूप देना लेना करना होना पीना सीना क्रियाओं के साथ जियो जिओ परप्रत्यय लगाने से बनता है जो कि स्वर विसंधि के परिणामस्वरूप जो का रूप अपना सकता है दीजियो दीजिओ दीजो लीजियो लीजिओ, लीजो इत्यादि।आधुनिक खड़ी बोली हिन्दी में इस रूप वाली क्रियाओं के प्रयोग नहीं होते हैं। कुड़ुख़ में भी लगभग यही दशा है।

### तुमर्थ क्रिया का समाकार

आज्ञार्थ का यह रूप तुम एव तू सर्वनामों से सम्बन्ध रखता है। तुम अब एकवचन और बहुवचन दोनों क्रियाओं के साथ प्रयुक्त होता है किन्तु तू एक पुरूष एकवचन के लिए ही प्रयुक्त होता है और क्रिया इसी को ग्रहण करती है।

| | |
|---|---|
| तुम आज जरा मिस्त्री से कह देना। | नीन इन्ना तनिक मिसतरी सिन ब'अके चि'अके। |
| तुम सब अन्दर घुस आना। | नीम होरमर उला कोरोच बरके। |
| तू ही जाना। | नीनिम कालके। |
| कल शाम को रूपये दे देना। | नेला पुतबारी ढिबा चि चि'अके। |

क्रिया का तुमर्थ रूप अनुवर्ती उद्‌बोध को काल के संगत क्रिया विशेषणों की उपस्थिति में अधिक प्रकट होता है। जैसे-

| | |
|---|---|
| कल शाम को रूपये दे आना। | नेला पुतबीरी ढिबा चि'अके बरके। |
| कल दादा को कहला भेजना। | नेला अज्जोसिन बाता'अर तइके। |

कालार्थ में आज्ञार्थ के 'ओ' रूप और तुमर्थ क्रिया के समाकार रूप के बीच अन्तर स्पष्टतः तब प्रकट होता है, जब दोनों रूप एक ही वाक्य में आते हैं।[16]

| | |
|---|---|
| जाओ, फिर कभी उधर आकर बात करना। | कला, फिन एक'अम अउला हुतरा बर'अर कत्था ननके। |
| तुम यहाँ रहकर अच्छी अच्छी चीजें बना लो। | नीन इसन र'अर दव दव आलो कमच लिंघआ। |
| फिर दिल्ली आकर अपनी प्रदर्शनी करना। | फिन दिल्ली बर'अर तंग्अय एदनन एदके। |

आज्ञार्थ का यह रूप 'तुम' और 'तू' सर्वनामों के साथ या बगैर भी आ सकता है। उदाहरण-

| | |
|---|---|
| तुम अपने बच्चों के पास जाना। | नीन निंगहय ख़द्दर गुसन कालके। |
| तू घर न जाना। | नीन एड़पा अमके काला। |

आज्ञार्थ का यह रूप निषेध व्यक्त करने पर 'न, नहीं एवं मत' निपातों के साथ आता है। जैसे-

| | |
|---|---|
| न पसन्द होगी, तो न करना। | मल पसीन्द लग्गो होले, मला ब'अके। |
| तुम रोना नहीं। | नीन चींख़ा अमके। |
| रास्ते में रोना मत। | डहरे नू चींख़ा अमके। |
| भगवान का भरोसा मत छोड़ना। | धर्मेस घी भरोसा अमके अम्बा। |
| अपनी भाभी को भूल मत जाना, लाला। | नीग नासगोन मोधर'आ अमके कला, ललू। |
| जरा इधर आना। | कटिक इजो बरके। |
| वह निकले तो जरा बता देना। | आस उरखोस होले कटिक **तेंग्गके चि'अके।** |

## 'इयेगा' (इएगा) रूप

आज्ञार्थ का यह क्रिया रूप आज्ञार्थ के 'इये' (इए) रूप के साथ 'गा' परप्रत्यय लगाने से बनता है। यह रूप उक्ति के क्षण का उर्दबोध व्यक्त करता है। उदाहरण

| | |
|---|---|
| कल जालपा को लाइयेगा। | नेला जलपासिन ओन्दोरके। |
| आप फिर आ जाइयेगा। | नीन फिन चइल बरके। |
| कल आप अपने सब रूपये ले जाइयेगा। | नेला नीन निंगहय हुरमी ढिबन ले हो'अके। |

कालार्थ में आज्ञार्थ के इस रूप तथा आज्ञार्थ के 'इये' (इए) रूप के बीची अन्तर भी उन स्थितियों में स्पष्टतः प्रकट होता है जब दोनों रूप एक ही वाक्य में आते हैं उदाहरणार्थ-

| | |
|---|---|
| बाबूजी देख तो लीजिए। | बबा एर तो लिंघआ। |
| पसन्द आये तो लीजियेगा, | पसिन्द लग्गो होले हो'अके, मला होले |
| नहीं तो न लीजिएगा। | अमके हो'आ। |
| अभी ठहरिये। | अक्कुन इज'आ। |

'इएगा' (इयेगा) का शुद्ध कालार्थ (भविष्यत् काल) के प्रश्न वाचक वाक्यों के लिए विशेष स्वाभाविक है। उदाहरण-

| | |
|---|---|
| यह लेकर आप क्या करियेगा ? | इदिन हो'अर नीन एन्देर ननोय ? |
| गीत जरूर ही सुनियेगा ? नहीं मानियेगा ? | डण्डीन ठउकाम मेनके ? अमके पइत'आ ? |

आज्ञार्थ के इस रूप का प्रयोग कथात्मक वाक्यों में भी हो सकता है। उदाहरण-

मगर इतना कहे देता हूँ कि ऐसा सौदा फिर न पाइयेगा। पहें इंवदा ब'अदन चि'अदन का एने सौदा फिन मल ख़क्खोय।

**अति सूक्ष्म शिष्टता व्यक्त करने में-**

| | |
|---|---|
| माफ कीजियेगा हुजूर ! | मोधोरके (माफ ननके) हजूर ! |

'आप' सर्वनाम के साथ उद्‌बोध की प्रकृति तेज करने में :

**उदाहरण : हिन्दी**

| | |
|---|---|
| आप दे दीजियेगा। | नीन चि चि'अके। |
| आप मालिक से शिकायत कीजिएगा। | नीन उरबस ति नालिस ननके। |

आज्ञार्थ का यह रूप मनाही (निषेध) व्यक्त करने में। उदाहरण-

| | |
|---|---|
| माफ कीजिएगा, बुरा न मानियेगा। | मोधरके कालके, मल दव अमके बुझर'आ। |
| अब आधा मिनट बिल्कुल हिलिएगा नहीं। | अक्कु आधा मिनट ओण्टा हुँ अमे नुकूर'आ। |
| मुझे ईनाम नहीं दीजिएगा। | एंगा ईनाम अमके चि'आ। |
| ऐसा मत कीजिएगा। | एन्ने अमके नना। |
| मेरे पीछे पीछे आये पर जरा दूर रहियेगा। | एंगहय ख़ोख़ा ख़ोख़ा बरा पहें तनिक गेच्छम र'अके। |

विभिन्न प्रकार से आज्ञार्थ में भावाभिव्यक्ति में : कुछ उदाहरण-

**सरल उदबोध :** मेरी ओर से बहुत विनय के साथ कहियेगा।

एंगहय तरती कि अनैत नेवख़रर ब'अके।

| | |
|---|---|
| अनुमति : आप लोग जाइये। | नीन दया ननरकी एड़पा कला। |
| हुक्म : निकल यहाँ से, चल। | उरखा इसते, गुचा। |
| चेतावनी : अब कभी यहाँ ऩ आइयेगा। | अक्कु ओंघोन हुँ इसन अमके बरा। |
| इच्छा : आप मुझे संभाले रहियेगा। | नीन एंगन सम्भड़ाचकम र'अके। |
| मनाही : ऐसा मत कर। | एन्ने अम्बा नना। |
| ऐसा मत कीजिएगा। | एन्ने अमके नना। |

## संयुक्त काल

अपने शोध प्रबन्ध के पंचम अध्याय में हमने संयुक्त काल के संदर्भ में उल्लेख किया है कि इसकी रचना एक प्रधान कृदन्ती क्रिया और 'होना' सहायक क्रिया के संयोग से होता है तथा आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की आधुनिक व्यवस्था की प्रमुख विशेषता के रूप में संयुक्त काल की गणना होती है।

संयुक्त काल दो वर्गों में विभक्त हो सकता है-

1. वर्तमान कालिक कृदन्त +सहायक क्रिया
2. भूतकालिक कृदन्त + सहायक क्रिया

संयुक्त काल की क्रिया का कृदन्ती होने के कारण कारक के लिंग परिवर्तन से क्रिया रूपों में भी लिंग परिवर्तन हो जाता है।

अर्थ काल के परिवेश में संयुक्त काल की क्रियाओं के निम्नांकित (नौ) 9 रूप हो सकते हैं।

1. अपूर्ण वर्तमान निश्चयार्थ
2. अपूर्ण भूत निश्चयार्थ
3. अपूर्ण भूत संभावनार्थ
4. अपूर्ण भविष्य निश्चयार्थ
5. पूर्ण वर्तमान निश्चयार्थ

6. पूर्ण भूत निश्चयार्थ
7. पूर्ण वर्तमान संभावनार्थ
8. पूर्ण भूत संभावनार्थ तथा
9. प्रेरणार्थक[17]

हमने सोदाहरण संयुक्त काल की उपर्युक्त स्थितियों की चर्चा की है। अतः पुनः उसकी चर्चा करना वांछनीय नहीं समझतें। संयुक्त कालों के संदर्भ में क्रिया का रूप विश्लेषण पंचम और इस सप्तम अध याय में व्यापक तौर पर हो गया है, इसलिए इस संदर्भ की चर्चा भी अवांछनीय है।

## सन्दर्भ-सूची

1. 'हिन्दी में क्रिया'- डॉ० ओ०गे० उलत्सिफेरोव, पृ०-142
2. वही, पृ०-145
3. वही, पृ०-144
4. वही,
5. वही, पृ०-154
6. वही, पृ०-173
7. वही, पृ०-181
8. वही, पृ०-182
9. वही, पृ०-2o4
10. वही, पृ०-212
11. वही, पृ०-212-213
12.
13. 'हिन्दी में क्रिया' - डॉ० ओ०गे०० उलत्सिफेरोव, पृ०-145
14. वही, प०-243
15. वही, पृ०-249
16. वही, पृ०-253
17. मानक हिन्दी का ऐतिहासिक व्याकरण-माताबदल जायसवाल, महामति प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, मई 1979, पृ०-520-241

## अध्याय : आठ
# उपसंहार

किसी निर्जन वन-प्रान्तर की निर्झरणी की तरह हिन्दी और कुड़ुख़ की धारा कभी और कहीं अबाध तो कभी और कहीं बाधित रूप से प्रवाहित ही रही किन्तु इनके उद्‌गत और आयाम पर आद्यान्त और व्यापक सूक्ष्म और गम्भीर दृष्टि डालने का प्रयास देश की आजादी के पूर्व तो किंचित ही रहा। आजादी के बाद अपने देश की भाषा और इसके साहित्य के विकास की दिशा में चौतरफा कदम बढ़ाये जाने लगे तथा अपनी भाषा और अपने साहित्य के परिष्कार के भरपूर प्रयत्न किये जाने लगे।

किसी भी बोली, भाषा और साहित्य को परिष्कृत, परिमार्जित और विकसित करने, उसे प्रांञ्जल बनाकर व्याकरण-सम्मत रूप देने मानव-मन के विभिन्न मनोविकारों को अभिव्यक्त करने में समर्थ बनाने तथा उन्हें काव्यशास्त्रीय बनाने में व्याकरण की भूमिका निर्विवाद रूप से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। कोई बोली जब व्याकरणिक नियमों में आबद्ध होकर रूढ़ हो जाती है, तो 'भाषा' को रूप में अपनी पहचान बना लेती है।[1] दीर्घकालीन अवधारणा है कि भाषा का व्याकरण उस भाषा को शुद्ध रूप में जानने-समझने, उसे पढ़ने-लिखने तथा बोलने-चालने में सहायक सिद्ध होता है। व्याकरण की व्युत्पत्ति है- 'वि+आकरण' अर्थात् विशिष्ट रूप या आकार। जब तक लोकभाषा केवल बोलने के लिए प्रयुक्त होती है, तबतक शब्दानुशासन, वाक्यानुशासन, ध्वन्यानुशासन तथा अर्थानुशासन के नियम नजरअन्दाज रहते हैं। लोकभाषा मानवजन की मौखिक अभिव्यक्ति के लिए वन-प्रान्तर में निर्बाध प्रवाहित निर्झरणी की तरह उन्मुक्त रूप से अग्रसर होती रहती है किन्तु व्याकरण के नियमों में आबद्ध होकर वही लोकभाषा अपने स्वरूप को बदल कर शास्त्रीय भाषा बन जाती है अर्थात व्याकरण के नियमों और अनुशासनों में बँधकर लोकभाषा ही परिनिष्ठित शास्त्रीय भाषा के रूप में अपनी पहचान बना लेती है। यह परिवर्तन लोकभाषा में मौखिक अभिव्यक्ति के अलावा लेखन-अभिव्यक्ति की शक्ति प्रदान करता है तथा साहित्यिक-सृजनात्मकता का मार्ग प्रशस्त करता है। भाषा की इस निर्झरणी को वर्ण, अक्षर, शब्द, पद, वाक्यादि के नियम-अवरोधों को पार करते हुए प्रवाहित होना पड़ता है जो उसकी मर्यादा ही है।

भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन और उसके क्रमिक विकास की जानकारी हेतु उस भाषा के व्याकरण का यथेष्ट ज्ञान आवश्यक होता है। व्याकरण परक शोधकार्य इन्हीं नियमों और अनुशासनों पर प्रकाश डालकर भाषा के विविध नियमों और आयामों को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं। डॉ० जॉनबीम्स ने भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के व्याकरण से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण लेखन-कार्य किया। उन्होंने 'कम्प्रेटिव ग्रामर ऑफ द मॉडर्न एरियन लैंग्वेजेज ऑफ इण्डिया' को तीन भागों में प्रकाशित किया। 1872 ई० में प्रथम भाग में भाषागत ध्वनियों पर प्रकाश डाला गया। 1815 ई० में दूसरे भाग का प्रकाशन हुआ जिसमें संज्ञा और सर्वनाम पर विचार किया गया। सन् 1879 ई० में तीसरा भाग प्रकाशित हुआ जिसमें 'क्रिया' पर विचार किया गया। इस प्रकार जॉनबीम्स ने क्षेत्रीय भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन की दिशा में एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक का काम किया।

कुड़ुख़ भाषा में मुख्यतः लोक साहित्य (मिथ, आख्यान, लोककथा, कहावत, गीत, कविता आदि) का ही लेखन एवं प्रकाशन किया गया है। इसके साहित्य के रूप में उपन्यास, नाटक, जीवनी, यात्रावृतान्त, भाषा विज्ञान, व्याकरण आदि के परिष्कृत लेखन और प्रकाशन का अभाव रहा है। इसके भाषिक पक्ष के रस, अलंकार, छंद आदि पर कोई विशेष कार्य नहीं किया जा सका है। देवनागरी लिपि में जो भी कुड़ुख़ साहित्य लिखा गया है, उसका हिन्दी-अनुवाद न होने के कारण गैर-कुड़ुख़ भाषा-भाषी के लिए वे अत्यन्त दुरूह प्रतीत होते हैं। अतः उन सभी रचनाओं का हिन्दी और अन्य भाषाओं में अनुवाद अपेक्षित है।

कुड़ुख़ भाषा के विकास के लिए परिष्कृत और परिमार्जित व्याकरण की आवश्यकता है। उसके साथ-साथ विभिन्न व्याकरणिक कोटियों के विकास के लिए नये-नये शब्द-समूहों के निर्माण की आवश्यकता है। आवश्यकता पड़ने पर हिन्दी के अलावा क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों के शब्दों को ग्रहण कर उसे अपने अन्दर पचा लेने की क्षमता का भी विकास आवश्यक है। हिन्दी के शब्दों को पचाने के क्रम में अरबी, फारसी, उर्दू, अंग्रेजी आदि भाषाओं के शब्द भी कुड़ुख़ के भण्डार को भर देंगे। हमारा यह शोध-प्रबन्ध व्याकरण की क्रिया-कोटि पर आधारित है। हमने प्रयत्न किया है कि हिन्दी और हिन्दी से सम्बद्ध भाषाओं और बोलियों के शब्दों को अपने इस शोध प्रबन्ध में स्थान दें और उन्हें पचा लेने की भरसक कोशिश हो। व्याकरणपरक हमारा यह शोध सिर्फ कुड़ुख़ व्याकरण को ही परिष्कार देने की कोशिश नहीं है प्रत्युत् यह समस्त कुड़ुख़ साहित्य-लेखन के मार्ग को भी प्रशस्त करने की कोशिश है। हमने अपने इस शोध कार्य के द्वारा कुड़ुख़ भाषा के प्रतिभावान चेता का आह्वान करने की कोशिश की है कि हम दूसरी भाषाओं के साहित्य के समानान्तर विकास के लिए लोक-कथाओं, लोग गीतों, कहानी, उपन्यास, नाटक, यात्रावृतान्त, वृत्तचित्र, शब्द चित्र, काव्यशास्त्र, भाषा विज्ञान, शोधपरक ऐतिहासिक कथा लेखन, पत्र-पत्रिकाओं के लेखन और प्रकाशन की ओर तेजी से अग्रसर होकर अपनी भाषा और अपने साहित्य को अन्यतम रूप दें। यद्यपि कुड़ुख़ की अपनी अलग लिपि नहीं है, फिर भी जिस देवनागरी लिपि को हमने अपनाया है वह संसार की श्रेष्ठतम लिपियों में से एक है।

जहाँ एक ओर कुड़ुख़ साहित्य के स्वरूप को मजबूत, शिष्ट, सुदृढ़ और सुदर्श बनाने के लिए सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, मनोवैज्ञानिक तथा दार्शनिक आदि विचारों पर आधारित कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, आलोचना, गीत तथा गद्य-साहित्य के जीवनी साहित्य, हास्य-व्यंग्य की रचनायें, संस्मरण, रेखाचित्र, एकांकी, आत्मकथा, यात्रावृतान्त, रिपोर्ताज, स्मृतिग्रंथ आदि विधाओं के लेखन और प्रकाशन की आवश्यकता है, वहीं दूसरी ओर कुड़ुख़ भाषा को प्रांजता और बहुकोणीय अभिव्यक्ति-समर्थता प्रदान करने के लिए इसके व्याकरण और इसके भाषा विज्ञान को भी विकसित करने की आवश्यकता है। भाषा के विकास के बिना साहित्य का चहुँमुखी विकास असम्भव है। इस शोध कार्य का निष्कर्ष हिन्दी भाषा एवं कुड़ुख़ भाषा में क्रियाओं के प्रकारात्मक अध्ययन द्वारा यह दिखाना रहा है कि इन उभय भाषाओं में क्रिया-पक्ष में क्या-क्या समानतायें हैं और क्या-क्या असमानतायें हैं। चूँकि कुड़ुख़ भाषा की अपने अलग लिपि नहीं है, अतः कुड़ुख़ भाषा ने मराठी, गुजराती, मैथिली, भोजपुरी, अंगिका, वज्जिका, मागधी आदि की तरह देवनागरी लिपि को ही अपनी लिपि स्वीकारी है। चूँकि अलग-अलग भाषाओं की अलग-अलग मुद्रायें होती हैं, इसलिए कुड़ुख़ और हिन्दी में भी व्याकरणिक दृष्टि से कुछ भिन्नतायें और कुछ समानतायें हैं।

कुड़ुख़ भाषा द्रविड़ियन नस्ल की भाषा है तथा हिन्दी इन्डोनेसियाई नस्ल की भाषा है। कुड़ुख़ भाषा के बहुत ऐसे शब्द हैं जो हिन्दी भाषी परिवार के घरानों में प्रचलित हैं और इसका विपरीत भी उतना ही सही है। दोनों भाषाओं की लिपि में समानता है। यही कारण है कि मैंने अपने शोध-प्रबन्ध का विषय इन्हीं दोनों भाषाओं की क्रियाओं का प्रकारात्मक और तुलनात्मक अध्ययन स्वीकार किया है। व्याकरण की क्रिया पर शोध करने का दूसरा और महत्वपूर्ण कारण है कि समस्त व्याकरण के अन्तर्गत

क्रिया का पक्ष सर्वाधिक शक्ति-सम्पन्न है। क्रिया का ही नियंत्रण है वाक्य पर और भाषा। पर क्रिया बिना संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषणादि की सहायता के भी वाक्य का बोध करा सकती है और वाक्य का निर्माण भी कर सकती है। जैसे- 'आइये बैठिये' आदि। उपर्युक्त दोनों क्रियाओं से जो वाक्य-बोध होता है वह है- 'आप आइये, आप बैठिये' आदि। इसके विपरीत संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषणादि शब्द बिना संदर्भ के किसी वाक्य निर्माण और बोध की क्षमता नहीं रखते हैं। इसके अलावा क्रिया के विकास की संभावनायें अपार हैं, रोज-रोज, नई-नई क्रियाओं के सृजन हो रहे हैं और होते रहेंगे। जैसे-जैसे एक भाषा का दूसरी भाषा का आपसी सम्मिलन होता रहेगा।

अस्तु! इसी परिप्रेक्ष्य में मैं अपने शोध-विषय के चयन की सार्थकता और इसका औचित्य प्रस्तुत कर रहा हूँ। हिन्दी व्याकरण और कुड़ुख़ व्याकरण के वैसे कुछ शब्द की सूची प्रस्तुत है जो दोनों भाषाओं- कुड़ुख़ और हिन्दी में समान हैं अर्थात् कुड़ुख़ के उन शब्दों का हिन्दी परिवार में भी प्रयोग किया जाता है।

**कुड़ुख़ की क्रियायें जो लगभग हू-बहू हिन्दी परिवार में प्रयुक्त हैं-**

| **कुड़ुख़** | **हिन्दी परिवार की भाषायें** | **अर्थ** |
|---|---|---|
| खुपना | खुपना | गड़ जाना |
| छटना | छाँटना | |
| गड़बड़रना | गड़बड़ाना | |
| चींख़ना | रोना | |
| चबना | चबाना | |
| रेकना | रेंकना | गदहे का रेंकना |
| लड़ना | लड़ना | |
| सोभना | शोभना | |
| उसका'अना | उसकाना, | उकसाना |
| कसना | सख्त करना | कठोर या कड़ा करना |
| खचना | खाँचना | गँसना, सटा-सटा देना |
| खटना | खटना | परिश्रम करना |
| खेदना | हाँकना | खदेड़ना |
| खेपना | व्यतीत करना | बिताना |
| खोसना | खोंसना | लगाना |
| गड़ना | गाड़ना | |
| गिनना | गिनना | गिनती करना |
| घोरना | बाड़ लगाना | घोरना, घेरा लगाना |
| चखना | चखना | स्वाद लेना |
| चिन्हना | पहचानना | पहचानना |
| चिपना | चिपना | दबा देना |
| चाजना | चुनना | |
| जोहना | जोहना | रास्ता देखना, घात में रहना |

| कुड़ुख़ | हिन्दी | अर्थ |
|---|---|---|
| टोकना | टोकना | बोलना |
| ठनना | ठानना | शुरू होना |
| डुरियि'अना | डोरियाना | डोरी से बाँधकर ले चलना |
| लूँड़ी तन'आ | लुँड़ियाना | धागा तानना, रस्सी तानना |
| पटाब'अना | पटना, पटाना | पानी से सींचना |
| तुबना खाना | तूबना | भकोसना, ठूँस-ठूँस कर |
| रटना | रटना | याद करना |
| धरना | धरना | पकड़ना |
| नपना | नापना | मापना |
| पढ़ना | पढ़ना | |
| पिटना | पीटना | मारना, मार देना |
| पोसना | पोसना | पालना |
| मंजना करना | माँजना | साफ करना, बर्तन साफ |
| मेटना | मिटाना | |
| रंगना | रंगना | |
| रेतना काटना | रेतना | काटना, छूरे से रगड़कर |
| लखना | लखनास | देखना, पहचानना |
| लिखना | लिखना | |
| सोचना | सोचना | |
| चबना | चबाना | |
| मेटना | मिटाना | लुप्त करना, नष्ट करना |

उपर्युक्त क्रिया- शब्दों में कुड़ुख़ और हिन्दी में कोई विशेष अन्तर नहीं है। जहाँ हिन्दी में 'आकार' की प्रवृत्ति है, वहाँ कुड़ुख़ में 'अकार' की। कहीं-कहीं 'अनुस्वार' का भेद है तथा कुछ कुड़ुख़ की ऐसी क्रियायें जो हिन्दी क्रियाओं से थोड़े अन्तर पर बनी है।

| कुड़ुख़ | हिन्दी | अर्थ |
|---|---|---|
| उबसना | उपवास करना | भूखा रहना (सोद्देश्य) |
| उढ़ियारना | उड़ियाना, उड़ना | उड़ जाना |
| खन्न | क्षण | पल |
| अएंठारना | ऐंठाना | टेड़ा-मेढ़ा बतियाना, देह खींचना |
| कुद्दना | कूदना | घूमता चलना |
| केचटारना | केचटना | कुचलना |
| खिजरारना | खिजलाना | गुस्सा करना |

| कुड़ुख़ | हिन्दी | अर्थ |
|---|---|---|
| खुसमारना | खुश होना | |
| गिजगिजारना | गिजगिजा करना | गंदा करना |
| घटरना | घटना | कम होना |
| चमचमरना | चमचमाना | चमचम करना |
| टटना | टटाना | दुखना, पीड़ा होना |
| तरनारना | तरियाना | लड़ने की मुद्रा बनाना |
| तीरना | | पीछे रह जाना |
| बदलारना | बदलना | परिवर्तित करना |
| बसरना | बसना | बस जाना |
| चलाब'अना | चलाना | |
| र'अना | रहना | |
| लग्गना | लगना | निशाने पर लगना |
| लजरना | लजाना | लजाना |
| लटखना | लटकना | झूलना, टंगा होना |
| सटरना | सटना, साटना | चिपकना, चिपकाना |
| उठाब'अना | उठाना | |
| उसक'अना | उसकाना | भड़काना |
| गेंजना | गिंजना | कुचलना |
| ठोहना | टेहना | पता लगाना |
| तड़ना | तड़ना, जड़ना | मारना |
| तूरना | तोड़ना | फाड़ना |
| नाड़ना | नारना | बैल को जोतने के लिए पगहा लगाना |
| पढ़ाब'अना | पढ़ाना | |
| पलट'अना | पलटना, पलटाना | मुकर जाना |
| बदल'अना | बदलना | |
| बुझुरना | बूझना | समझना-बूझना |
| मनना | मानना | आदर करना, मान लेना |
| रिझाब'अना | रिझाना | खुश करना, पक्ष में करना। |
| गरजारना | गरजना | चींख्ना, चिल्लाना |
| लगाब'अना | लगाना | |
| लेखना | लेखना | लेखा-जोखा करना, हिसाब करना |
| हीड़ना | हींड़ना, अहंड़ना | सताना, व्याकुल कर देना, गंदला करन |
| र'अना | रहना | |
| उसक'अना | उसकवाना | उकसाना का प्रेरणार्थक रूप |
| उठाब'अना | उठाना, उठाया जाना | उठवाना |
| चलाब'अना | चलाना, चलाया जाना | प्रेरणार्थक रूप आदि |

उपर्युक्त क्रियाओं को देखने से पता चलता है कि कहीं हिन्दी के 'प' का कुड़ुख़ में 'ब', 'ड़' का 'ढ़' शब्द के मध्य में 'र' का आगम; 'आ, अ' का आगम आदि परिवर्तन हुए हैं। इन नगण्य परिवर्तनों को नजरअन्दाज करने पर कुड़ुख़ और हिन्दी की उपर्युक्त क्रियायें एक रूप हैं।

उम्बुलना, चोड़ना, नुकरना, हिकना, टाटना, ब'अना, बचना, लथना, चर्रना आदि क्रियाओं की व्युत्पत्ति से इनके हिन्दी शब्द साम्य का स्पष्ट बोध हो जाता है।

| | | |
|---|---|---|
| उम्बुलना | - | अम्बु अर्थात जल, शरीर से पानी गिराना अर्थात पेशाब करना |
| चोड़ना | - | तोड़ना, सिर्फ कुड़ुख़ के 'च' का हिन्दी में 'त' हो जाना |
| नुकरना | - | हिलना |
| हिकना | - | होना, है, हैं, हो आदि। |
| टाटना | - | चाटना, कुड़ुख़ के 'ट' के स्थान पर हिन्दी में 'च' का आगम |
| बचना | - | बाँचना, पढ़ना, हिन्दी में आकार के स्थान- चन्द्रबिन्दु का आगम |
| लथना | - | लात, लतियाना, पैर से मारना, कुड़ुख़ के 'थ' का हिन्दी में 'त' आना। |
| चर्रना | - | चरचराना, फटना, कपड़े फाड़ने पर जो आवाज होती है। |

**संज्ञा शब्द**

| | | |
|---|---|---|
| घोड़ो | घोड़ा | 'ओ' का 'आ' |
| ऊँट | ऊँट | कोई परिवर्तन नहीं। |
| हँसा | हंस | चन्द्रबिन्दु का अनुस्वार हो जाना और 'अकार' ध्वनि 'आकार' हो जाना |
| सिंह | सिंह | कोई परिवर्तन नहीं |
| हुण्डरा | हुण्डार, हुंडार | अन्तिम वर्ण का (आकार) पूर्व के वर्ण में जुड़ जाना |
| हरिण | हिरण, हरिन | ह्रस्व इकार का स्थान परिवर्तन |
| हांथी | हाथी | कोई बदलाव नहीं |
| हनुमान | हनुमान | |
| पंड़की | पंडुकी, पण्डुकी | |
| मएना | मैना | 'ए' का लोप और पूर्व वर्ण पर ऐकार। |
| सुगा | सुग्गा, सूगा | |
| मिंजुर | मयूर, मोर | |
| भैंस | भैंस | |
| बोता | बोतू, बकरा | |
| भेड़ा | भेड़ा | |
| गदहा | गदहा | |
| लकड़ा | लाकड़, बाघ | |
| बन्दरा | बन्दरा | |
| पेरवाँ | परेवा (परेवा) | |
| कउवा | कौआ, कौवा | |
| पाइज | बाज | |

| | |
|---|---|
| वइकला | बगुला |
| पेच्वा | पेचा, उल्लू |
| कुहु | कोयल, स्वर निकाले जाने के आधार पर |
| मंगर | मगर |
| चील | चील |
| गरूड़ | गरूड़ |
| कठखोलवा | कठखोदवा |
| ककड़ो | केकड़ा |
| घुंघही | घोंघा |
| जम्बु | जामुन |
| पकरी | पर्करी, पीपल |
| बड़ा | बर, बड़का वृक्ष |
| कोरोंजो | करंज |
| कलछुर | कलछुल |
| अम्म | अम्बु, पानी |
| महरस | महीरस, गाय-भैंस का रस अर्थात् दूध-दूहने वाला ग्वाला |
| दाली | दाल |
| रहड़ी | रहड़, अरहर, राहड़ |
| परता | पर्वत, पहाड़ |
| चंद्दो | चाँद |
| तवा | तवा, तावा |
| इन्दरा | इनरा, इनारा, पक्का कुआँ |
| बूट | बूँट |
| टुंगरी | टोंगरी |
| नरक | नरक |
| पढ़'उस | पढ़नेवाला |
| मरदनस | मर्दाना, पुरूष, मरद अर्थात् 'न स' अतिरिक्त जुड़ गया |
| लोहरस | लोहार |
| बड़हिस | बढ़ई |
| तूरयस | तूरी |
| मास्टरस | मास्टर |
| बैदस | बैद्य |
| दरोगस | दरोगा |
| हिन्दुस | हिन्दू |
| बिहारिस | बिहारी |
| बबस | बाबा, पिता |

इन संज्ञाओं में जो कुड़ुख़-रूप है वह 'यस, इस और' का जुड़ना है।

| | |
|---|---|
| बेटस | बेटा |
| ददस | दादा |
| ककस | काका |
| भगिनस | भगिना |
| साड़स | साला |
| ममुस | मामू, मामा |
| नत्तिस | नाती |
| अज्जोस | आजा, दादा |
| मोसस | मौसा |
| ससुरस | ससुर |
| बड़स | बड़ा |

बऒंउस - बयना अर्थात बोली; बय बोलना 'उस' प्रत्यय लगने से बऒंउस बन गया। प्रकारान्तर से यह भी हिन्दी से मिलता-जुलता है।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आली | - | औरत | बिटी | - | बेटी |
| दई | - | दइया, दीदी, दाई | ककी | - | काकी |
| मुसी | - | मौसी, माँ की बहन | सईस | - | सास |
| पढ़उ | - | पढ़नेवाली | लोहराइन | - | लोहारिन |
| बढ़ाइन | - | बढ़ईन | दर्जियाइन | - | दर्जिनी |
| हिन्दु वाइन | - | हिन्दु स्त्री | कयथिन | - | कायस्थ स्त्री |
| चमारिन | - | चमार स्त्री | खीस्तानिन | - | खीस्तान स्त्री |
| सिक्खनी | - | सिक्ख स्त्री | चींकनी | - | चींक स्त्री |
| रंचियाइन | - | राँची की स्त्री | नगपुरियाइन | - | नागपुर की स्त्री |
| बिहारिन | - | बिहार की स्त्री | चुट्टी | - | चोटी, बाल |
| चुंदी | - | चुनि, चुन्नी, बाल | मुंहि | - | मुँह |
| पिंपनी | - | पपनी | गल्ले | - | गाल |
| दढ़ि | - | दाढ़ी | नरटि | - | नरेटी |
| अंगलि | - | अंगुली | छति | - | छाती |
| पंजरा | - | पंजर | धुकधुकिया | - | धड़कने वाला हृदय |
| कूल | - | कूल, वंश | रंग | - | रंग |
| आदिबासिर | - | आदिवासी लोग | पंचे | - | पाँच |
| नय | - | नौखु | रि | - | खुर |
| ठोर | - | ओठ, ठोर; चोंच | डेना | - | डैना |
| भौंवा | - | भौं | जोड़न | - | जोड़ |
| कत्था | - | कथा, भाषा, बोली | सांस | - | सांस, स्वांस |
| खपरहि | - | खप्पर | साढ़ | - | साँड़, साँढ़ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बछरू | - | बछड़ा | खच्चर | - | खच्चर |
| चिगलो | - | श्रृंगाल | छुच्छु | - | छुछुन्दर |
| हंसा | - | हंस | गिदहि | - | गिद्ध |
| कछुवा | - | कछुआ | भुंसड़ि | - | भुसड़ी |
| मकरा | - | मकड़ा | भगजुगनि | - | भगजोगनी |
| अयो | - | माता | बइनि | - | बहन |
| ममु | - | फूफा | रनि | - | रानी |
| भतिजा | - | भतीजा | कनियां | - | कन्या |
| रड़ि | - | रांड़ | विधवा | - | विधवा |
| पड़ुसया | - | पड़ोसी | सहिस | - | साईस |
| नौवस | - | नाई, नौआ | दोकन | - | दुकान |
| डोंगा | - | डोंगी | बयपरस | - | व्यापार |
| परजा | - | प्रजा | फौद | - | फौज |
| किरानिस | - | किरानी | मुनसिस | - | मुंशी |
| डकुस | - | डाकू | कोचवानस | - | कोचवान |
| डहरे | - | डगर, रास्ता | तिरिथ | - | तीर्थ |
| अनचिन्हार | - | अनजान | टुरा | - | टुवर |
| गछि | - | गाछ, वृक्ष का छोटा पौधा | घांसि | - | घास |
| मूलि | - | मूल, जड़ | डांट | - | डाँट |
| पूंप | - | पुहुप, फूल | गुलाब | - | गुलाब |
| गुद्दा | - | गूदा | रासि | - | रस |
| दना | - | दाना | गंभैर | - | गम्हार |
| ताड़ | - | ताड़ | लील | - | नील |
| पुरनि | - | कमल | अंटा मैंदा | - | आँटा मैदा |
| दालि | - | दाल | दुदहि | - | दूध |
| केड़ा | - | केला | चिनि | - | चीनी |
| मिठई | - | मिठाई | मसला | - | मसाला |
| नंरगि | - | नारंगी | अलुवा | - | आलू |
| गोहोम | - | गेहूँ | जव | - | जौ |
| जिन्होर | - | मकई | कोदय | - | कोदो |
| अनाज | - | अनाज | दना | - | दाना |
| टमरस | - | अमरूद | अंगुर | - | अंगूर |
| लिम्बु | - | नीबू | पेंयाज | - | प्याज |
| कंदा | - | कंदमूल | सिमबि | - | सेम |
| मिसरि | - | मिसरि | छेना | - | छेना |
| छल्लि | - | छाली | सरबत | - | शर्बत |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| बिसकुट | - | बिस्किट | पान | - | पान |
| कसैली | - | कसैली | तमकु | - | तम्बाकू |
| चाह | - | चाय | कफि | - | कॉफी |
| तड़ि | - | ताड़ी | अरखि | - | अर्क |
| दवई बिरो | - | दवा वीरो | सेव | - | सेव |
| नसपति | - | नासपाती | सतालु | - | सतालू |
| अखरोट | - | अखरोट | पविता | - | पपीता |
| अंजरि | - | अंजीर | तेतालि | - | तेतर |
| मुरइ | - | मूली | फुलकुबि | - | फूलगोभी |
| भिड़ि | - | भेंड़ | कबाब | - | कबाब |
| मुरब्बा | - | मुरब्बा | इलइचि | - | इलायची |
| लवंग | - | लौंग | दलचिनि | - | दालचीनी |
| जवित्री | - | जवित्री | केसर | - | केसर |
| कपुर | - | कपूर | अफिम | - | अफीम |
| कुइनइन | - | कुनैन | बिख | - | विष |
| महुरा | - | माहुर, जहर | सबुदना | - | साबूदाना |
| चेथड़ | - | चिथड़ा | कुठरि | - | कोठरी |
| जंगला | - | जंगला | ठाठ | - | ठाट |
| इट्टा | - | ईट | पथल | - | पत्थल |
| पखन | - | पाषाण | बोतोल | - | बोतल |
| पश्यिा | - | खचिया | पलंग | - | पलंग |
| तकिया | - | तकिया | मसहरि | - | मसहरी |
| रजई | - | रजाई | बकसा | - | बक्सा |
| चबहि | - | चाभी | तला | - | ताला |
| मोमबती | - | मोमबती | अ'एना | - | आईना |
| पंखा | - | पंखा | बेनया | - | बेना |
| गमछा | - | गमछा | तौलिया | - | तौलिया |
| सबुन | - | साबुन | जेबघड़ि | - | जेबघड़ी |
| ननमुंहि | - | नन्हा मुँहवाली | पगहा | - | रस्सी |
| गेंठ | - | गेंठ | घंटा | - | घंटा |
| कगद | - | कागज | कलम | - | कलम |
| सियाहि | - | स्याही | दोवत | - | दावात |
| पिनछल | - | पेंसिल | रूल | - | रूल |
| कंतो | - | छुरा, चाकू | पुथि | - | पोथी, पुस्तक |
| डीड़ | - | डंरीर. लकीर | नकसा | - | नक्शा |
| चौकि | - | चौंकी | मेंच | - | मंच |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पयखना | - | पैखाना | चिटकनि | - | छिटकनी |
| कबजा | - | कब्जा | खपरा | - | खपड़ा |
| कराहि | - | कराही | तवा | - | तवा |
| मसाल | - | मशाल | देवकुड़ि | - | देव स्थल |
| मंन्दिर | - | मंदिर | मसजिद | - | मस्जिद |
| कछैरी | - | कचहरी | जेहेल | - | जेल |
| कबुर | - | कब्र | लालटेन | - | लालटेन |
| सुटी | - | सट्टी | जुता | - | जूता |
| सलइ | - | दियासलाई | कुइला | - | कोयला |
| रूपा | - | रूपा | सोना | - | सोना |
| इसपात | - | इस्पात | तमबा | - | ताम्बा |
| टिन | - | टिन | जसता | - | जस्ता |
| पितर | - | पीतल | धतु | - | धातु |
| खड़ि | - | खल्ली | परा | - | पारा |
| जंग | - | जंग | गनधप | - | गंधक |
| हिरा | - | हीरा | पखवारि | - | पखवारा |
| एतवर | - | एतवार | सोम्मर | - | सोमवार |
| मंगर | - | मंगलवार | बुध | - | बुधवार |
| बिफे | - | वृहस्पतिवार | सुक | - | शुक्रवार |
| सनिचर | - | शनिवार | बसन्त | - | बसन्त |
| जेठे | - | जेठ | एʻख़ा | - | बरसात |
| तारिक | - | तारीख | पुनि | - | पुर्णिमा, पुर्णियाँ |
| रोगे | - | रोग | गुलिया | - | गोली (दवा की) |
| मलहम | - | मलहम | पट्टि | - | पट्टी |
| बयपरिया | - | व्यापारी | नमूद | - | नमूना |
| मुल्ली | - | कीमत | करजा | - | कर्ज |
| मदनी | - | आय | खरचा | - | खर्च |
| जरबना | - | जुर्माना | घुस | - | घूस |
| डकु | - | डकैत | बेगर | - | वगैर |
| विसवासघात | - | विश्वासघात | | | |

**रास (विशेषण) - शब्द**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| हरियर | - | हरा | निरंग | - | निरंग |
| निमन | - | निमन | सकत | - | सख्त |
| गोल | - | गोल | सोझ | - | सीधा |
| सय | - | श्री | ससता | - | सस्ता |
| पूरु | - | पागल | गरहजिर | - | गैरहाजिर |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| डिढ़ना | - | दृढ़ | चेंठ | - | चतुर |

**क्रिया विशेषण (ननरना रासि)**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| अक्कुन | - | अभी, अब | सदौ | - | सदा, हमेशा |
| छड़ेबेड़े | - | कभी कभी | कभि | - | कहियो, कभी |
| अचका | - | अचानक आदि | अव्यय | - | उरूतान |
| बहिर | - | बाहर | संगी | - | संग, साथ |
| लेखा | - | जैसा, समान | मझि | - | मध्य, मझधार |
| बिड़दो | - | विरूद्ध | | | |

**वचन (लेक्खा)**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| घोड़ो | - | घोड़ो गुट्ठि (घोड़े) | चेलस | - | चेलर (शिष्य लोग आदि) |

**लिंग (लज्जे)**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| भतीजस | - | भतीजिन (भतिजि) | ककस | - | ककि (काकी, चाची) |
| ओझस | - | ओझाइनिद (ओझाइन) | डाक्टरस | - | डाक्टरँद (स्त्री डाक्टर) |
| दरजिस | - | दरजिद (स्त्री दर्जी) | | - | कठबेटा क ठ बे टि (सौतेली बेटी) |
| महरा मेतस | - | महरा मुक्का (ग्वालिन) | | | |

उपर्युक्त शब्द-सूची से स्पष्ट है कि कुड़ुख़ और हिन्दी में अत्यधिक साम्य है। ऐसा प्रतीत होता है कुड़ुख़ों के मुख्यधारा क्षेत्र से अलग होने और जंगलों में बस जाने के कारण ध्वनियों, वर्णों, शब्दों और अन्ततः भाषा-स्तर पर कुछ भिन्नता आती गयी जो काल क्रम से बढ़ती गयी और दोनों के अलग-अलग रूप लक्षित होने लगे।

मैंने हिन्दी की तरह कुड़ुख़ (उराँव) भाषा को समृद्धि देने की मनसा से हिन्दी और कुड़ुख़ भाषा की क्रियाओं का तुलनात्मक/प्रकारात्मक अध्ययन किया है। हम अपनी भाषा के विकास के लिए सहयोगी-समान भाषाओं का सहारा लेने में विश्वास कर भाषा-विकास को एक मंजिल देना चाहते हैं।

"उराँवों की सभ्यता-संस्कृति पुराने-जमाने की सभ्य जातियों तथा तत्कालीन अन्य जातियों की सभ्यता और संस्कृति से अंशमात्र भी निम्न श्रेणी की नहीं है। उराँव जाति के बीच एकता, संगठन, नैतिक भावनायें, राजनैतिक और आध्यात्मिक धारणायें तथा सामूहिक जीवन की क्षमता उच्च कोटि की थी। उनकी भाषा कुड़ुख़ (उराँव) में जो हृदय के भाव प्रकट करने की क्षमता, मधुरता, सार्वभौमिकता, सर्वोपरिता आदि बातों का जो समावेश है, ये अन्य भाषाओं में कम ही है। इसी प्रकार कविताओं के सुर (रागों) में जो मिठास, सुरसता तथा हृदय के भावों का प्रदर्शन होता है, वैसा अन्य भाषा की कविताओं में कम ही होता है।

श्री शांतिप्रकाश प्रबल बाखला जी ने आगे चलकर संसार के कुछ नामवोधक शब्दों का विश्लेषण और उनकी व्युत्पत्ति प्रस्तुत करते हुए अमेरिका, बहरीन, कमचटका, मंचुरिया, मंगोलिया, मक्का-मदीना, अरबिया, जूरा तथा रसिया (रूस) तक में कुड़ुख़ों का विस्तार सिद्ध किया है। उदाहरणार्थ कुछ व्युत्पत्ति और विश्लेषण निम्नवत् है-

**अमेरिका**-अम्म+इरका अमेरिका अर्थात् पानी देखा हुआ देश जहाँ दूर-दूर तक पानी ही पानी (समुद्र ही समुद्र) हो और उसे पार करने पर ही स्थल के दर्शन हों।

**बेहरिंग (बहरीन)**-उराँव जाति के कैला राजा की पत्नी पर जब डाहिन-बिसाही का आरोप लगा तब वह अमेरिका के निकट के द्वीप बेहरिंग (बहरीन) में वैरागिन बनकर निवास करने चली गयी। उसी वैरागिन के नाम पर उस द्वीप का नाम बेहरिंग पड़ा।

**कमचका**-कमचस+कइट्टका अर्थात् पुल या नौका बनाकर जिसे पार किया गया हो।

**मनचुरिया**-मनची+उःइरा अर्थात् मचिया या बैठकी रखी गयी अर्थात् जहाँ सभा हुई थी।

**मंगोलिया**-मांगेः उल्लिया अर्थात् सिर की मांग का सिन्दुर धुल गया यानी विधवा हो गयी।

**मक्का-मदीना**-उराँव राजा की दो रानियाँ थी - मक्का और मदीना। उन्हें के नाम पर अरबिया के दोनों स्थानों का नामकरण हुआ।

**अरबिया**-यह उराँव भाषा का एक शब्द है जिसका अर्थ है- 'दबा दिया।' जब वह स्थान दब गया तो उराँव राजा लोग उस स्थान को छोड़कर वहाँ से भाग निकले।

**जूरा**-अमेरिका के उराँव राजा गन्दौर साय का बेटा जरा था। उसी जरा के नाम पर जूराप और जुराल का नामकरण हुआ।

**सीरिया**-आसिन+इरिया (पूर्व शब्द 'आसिन निरिया') 'इरिया' ही बोलचाल में 'निरिया' हुआ है।

**रूसिया**-रसिया अर्थात् रूस। रूस देश के काजन प्रदेश में बंक्की रानी बन गयी थी।

**काजन**-कादन का परिवर्तित रूप काजन है जिसका अर्थ है 'मैं भी जाता हूँ' उराँवों के लायक नहीं रहने वाली भूमि 'काजन' कहलाती है।

"कुड़ुख जाति के पूर्वजों का जन्म एशिया के सीरिया देश में हुआ था"

"कहाँ से उड़ा लेरे कौवा मोरा :
नगापुर खोता कर ले।
नगापुर अंडा परि देले अहाए :
अंड़ा जे फुटि गेला, छउवा जे गेला,
से छउवा नागपुर रजा।"

उपर्युक्त विवरणों से सिद्ध होता है कि कुड़ुख़ों का प्रादुर्भाव मध्य एशिया के सीरिया में हुआ था। इसका अर्थ यह हुआ कि मानव-सभ्यता का जन्म स्थल सीरिया मेसोपोटामियाँ की सभ्यता का केन्द्र था और सभ्यता के जन्म के बाद सभ्य उराँव जाति के लोग नौका या जहाज के द्वारा अमेरिका गये तथा वहाँ से उनका पारगमन होता रहा और रसिया, मंगोलिया, मंचुरिया आदि देशों में भी फैल गये। दक्षिण की ओर फैलते-फैलते कुड़ुख़ (उराँव) भारत आये और रोहतास-कैमूर होते-होते छोटानागपुर में स्थिर हुए।

इसका अर्थ यह हुआ कि काल के थपेड़े ने अति सभ्य जाति उराँवों को घुमक्कड़ बनाते हुए संसार के विभिन्न क्षेत्रों में इन्हें छितरा दिया। किन्तु इनका इतिहास, इनकी भाषा का इतिहास गौरवपूर्ण रहा है। मैंने अपनी इसी गौरवशाली जाति की महिमामण्डित भाषा कुड़ुख़ की क्रियाओं का हिन्दी की क्रियाओं के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया है।

मैंने अपने 'हिन्दी भाषा और कुड़ुख़ भाषा की क्रियाओं का प्रकारात्मक अध्ययन' विषयक अपने शोध प्रबन्ध को सात अध्यायों में विभक्त कर दोनों भाषाओं की क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया है। कारण चाहे जो हो, कुड़ुख़ का व्याकरण बहुत मामले में हिन्दी व्याकरण से कनिष्ठ हो गया है। हिन्दी व्याकरण-स्तर पर कई प्रकार के शोध होते रहे हैं और इसमें नयी-नयी स्थापनाएँ प्रस्तुत की जाती रही हैं। ऐसी ही कुछ स्थापनाएँ कुड़ुख़ व्याकरण में करने के विचार से हमने हिन्दी व्याकरण के शोध-ग्रंथों का विशष रूप से सहारा लिया है।

दुनिया की प्रायः सभी भाषाओं की तरह कुड़ुख़ और हिन्दी में भी क्रियाओं के दो स्वरूप होते हैं- तिङन्त और कृदन्त। तिङन्त क्रिया में कर्त्ता या कर्म के अनुसार पुल्लिंग-स्त्रीलिंग के रूपभेद नहीं होते, केवल कर्त्ता या कर्म के अनुसार पुरूष बदलते हैं। अंग्रेजी का 'टु. बी.' भर्व भी तिङन्त क्रिया के अन्तर्गत आती है। हिन्दी, कुड़ुख़ और अंग्रेजी आदि की अधिकांश क्रियायें कृदन्त हैं। कृदन्त क्रिया में कर्ता के अनुसार पुलिंग-स्त्रीलिंग के भेद से रूपभेद रहता है, किन्तु पुरूषभेद का इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उदाहरण द्रष्टव्य है-

| | कुड़ुख़ | | हिन्दी | | अंग्रेजी |
|---|---|---|---|---|---|
| तिङन्त | एकवचन | बहुवचन | | एकवचन | बहुवचन |
| | सीता सोझ र'ई। | क़ुकेर सोझ र'अनर। | सीता सरल है। | लड़कियाँ सरल हैं। | Sita is simple Girls are simple. |
| | सीता सोझ रहचा। | कुकेर सोझ रहचर। | सीता सरल थी। | लड़कियाँ सरल थी। | Sita was simple Girls were simple |
| | डण्डी तिन'ओ। | डण्डिद ती 'नओ। | गीत मधुर होगा। | गीत मधुर होंगे। | The song will be sweet Songs will be sweet |
| कृदन्त | नरेसस कादस। | कुक्को: कानर। | नरेश जाता है। | लड़के जाते हैं। | Naresh goes. Boys go. |
| | नरेसस केरस। | कुक्कोर केरर। | नरेश गया। | लड़के गये। | Naresh went. Boys went. |
| | नरेसस कालोस। | कुक्कोर कालोर। | नरेश जायगा। | लड़के जायेंगे। | Naresh will go. Boys will go. |

वाक्य रचना में संस्कृत और हिन्दी का शब्द क्रम एक ही है, इसलिए स्वाभाव के अभाव में संस्कृत के उदाहरण नहीं दिये जा सके।

अपनी इस मान्यता के सम्बन्ध में मैंने बार-बार उल्लेख किया है कि क्रिया के बिना कोई वाक्य होगा ही नहीं। अगर संज्ञा (व्यक्ति आदि) के नामों का प्रयोग सम्बोधन कारक में करें भी तो उससे अन्ततः मनोविकारों की अभिव्यक्ति तो हो न सकेगी। उदाहरण के लिए हम मोहन को सम्बोधित करें- मोहन ! तो मोहन, इस सम्बोधन से पास तो आ सकता है किन्तु उसे बुलाने का क्या उद्देश्य है, उसे क्या करना है, क्या करना चाहिए यह मोहन को कुछ पता नहीं चलेगा। अतः कार्य सम्पादन की उसकी चेतना को जागृत करने के लिए किसी क्रिया शब्द के उच्चारण की आवश्यकता है। फिर हम मोहन को सम्बोधित कर बुलावे और कहें- तुम मेरे समक्ष बैठो तो वह बैठने का कार्य सम्पादित करेगा। फिर वाक्य द्वारा अन्य क्रियाओं के प्रयोग कर उसे और कार्य के लिए आदेशित करते चले जा सकते हैं। यहीं क्रिया शब्द की महत्ता और उसकी सिद्धि स्पष्ट हो जाती है। मेरी तो ऐसी मान्यता है कि क्रिया के बिना न

कोई वाक्य हो सकता है, न भाषा हो सकती है और न ही कोई व्याकरण हो सकता। क्रिया धातु को मैंने क्रिया ही माना है परन्तु दोनों में वर्तमान अन्तर की ओर भी मैंने इंगित किया है। धातु क्रिया के बिना निष्क्रिय है। धातु में विकृति लाकर ही क्रिया का निर्माण होता है और यह विकृति ही क्रिया के कालों के अनुसार धातु को सक्रियता प्रदान करती है। बिना क्रियात्मक विकार/विकृति के धातु निस्पन्द रहती है भले ही वह क्रिया की माँ- सदृश्य ही क्यों न हो। 'अल्ला भुःकइ- कुत्ता भूँकता है' में कुड़ुख़ क्रिया शब्द की धातु 'भुः' और हिन्दी की क्रिया 'भूँक' धातु की सार्थकता इनमें आई विकृति के कारण है। अतः क्रिया का मूल होकर भी धातु उस लोथ की तरह है जो निर्जीव की तरह एक ही स्थान पर पड़ा रहता है। क्रिया ही उस लोथ सदृश्य धातु में जीवन्तता और गत्यात्मकता प्रदान करती है। परन्तु यदि धातु ही न रहे तो क्रिया शब्द का निर्माण ही नहीं हो सकता। अतः लाख भेद होते हुए भी धातु और क्रिया अभिन्न हैं।

क्रिया को विभिन्न वैयाकरणों ने अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया है। मैंने अपने इस शोध-प्रबन्ध में कई वैयाकरणों की अलग-अलग परिभाषाओं का उल्लेख किया है। यद्यपि परिभाषाओं के शब्द अलग-अलग रहे हैं परन्तु सभी परिभाषाओं की मूल एक ही है 'कार्य का होना।' भाषा हमारी मनोवृत्ति को अभिव्यक्ति देती है और व्याकरण भाषा मात्र को नियंत्रित और व्यवस्थित रखता है। चूँकि मनोविकार और मनोवृत्तियाँ अनेक हैं और उनकी अभिव्यक्ति की पद्धति भी भिन्न है, इसलिए क्रिया के भेद कई आधारों पर हो सकते हैं। मैंने कई प्रकार के क्रिया भेदों का सोदाहरण उल्लेख किया है। मैंने चाहा है कि हमारी कुड़ुख़ भाषा भी अभिव्यक्ति के वैविध्य की क्षमता करे। हिन्दी क्रिया-भेद के आधार पर कुड़ुख़ क्रिया -भेद की व्यापकता का अभिप्रेत भी इस शोध-प्रबन्ध की विशेषता होगी। कुड़ुख़ व्याकरण में समापिका और असमापिका क्रियाओं की प्रवृत्ति और प्रकृति का जिक्र नहीं मिलता परन्तु कुड़ुख़ की क्रियायें समापिका और असमापिका प्रकार की है। विधेय स्थान को छोड़कर संज्ञा, विशेषण और क्रिया विशेषण के स्थान पर पहुँचकर तादृश कार्य करने लगती है, असमापिका प्रकार की होती है। जैसे 'पढ़ना सार्थक हुआ' में पढ़ना कर्त्ता का स्थान प्राप्त कर संज्ञावत् कार्य करने लगती है; 'कमल भागता आया' में भागता हुआ विशेषणवत् कार्य करने के कारण असमापिका का प्रकार की हुई। इसी प्रकार 'हम सोकर जागे' और 'वह सुनते ही चौंका' में 'सोकर' और 'सुनते ही' क्रियायें क्रिया-विशेषण का कार्य करती है। ये क्रियायें भी असमापिका प्रकार की है। शेष सारी कृदन्तात्मक क्रियायें जो विधेयवत् कार्य करती है, समापिका प्रकार की कहलाती है।

आवश्यकता है कुड़ुख़-व्याकरण में ऐसी क्रियाओं को संग्रहित करने और कुड़ुख़ व्याकरण को समृद्ध करने की। इस प्रकार अपने शोध-प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में मैंने क्रिया के स्वरूप-विवेचन, इसके महत्व और इसका वर्गीकरण क्रिया शब्द की सिद्धि का विवेचन क्रिया की परिभाषा, धातु और क्रिया में अन्तर, क्रिया के भेदादि पर विस्तार से विवेचन प्रस्तुत किया है। क्रिया सभी विधेय और अविधेय रूपों को बनाने का मूल रूप क्रिया की धातु है। यह तथ्य कुड़ुख़ और हिन्दी क्या, दुनिया की प्रायः सभी भाषाओं के लिए सत्य है। क्रिया-शब्दों की रचनात्मकता का निर्वहन-कार्य इसी धातु पर निर्भर है। चाहे क्रियापरक धातु हो अथवा नामजात चाहे मूल धातु हो या साधित धातु, सभी उत्पादक प्रत्ययों के सहारे विकृत होकर क्रिया-शब्द का ही निर्माण करती है। मूल क्रियापरक धातु में प्रत्यय लगने से साधित धातु बनती है। जैसे-

| मूलधातु | | प्रत्यय | साधित धातु |
|---|---|---|---|
| हिन्दी | पी | ला | पिला |
| | पी | लवा | पिलवा |
| कुड़ुख़ | ओन | ना | ओनत'आ |
| | ओन | न्ता | ओनतत'आ |

इस प्रकार विभिन्न प्रकार की धातुओं में प्रत्यय लगाकर विविध प्रकार की धातुओं का निर्माण होता है जिनसे विभिन्न प्रकार के क्रिया-शब्द बनते हैं।

संश्लेषणात्मक और विश्लेषणात्मक धातुओं में सरल कृदन्त और 'जाना' सहायक क्रिया, रंजक क्रियाओं के साथ प्रथम तथा द्वितीय सरल कृदन्तों तथा संयुक्त नामिक शब्दांशों के मेल से धातु का कर्मणि, पक्ष सम्बन्धी तथा संयुक्त नामिक धातुएँ बनती है। यथा- 'लिख' धातु से कर्मणि, पक्ष सम्बन्धी तथा संयुक्त नामिक धातु के रूप इस प्रकार बनते हैं।

| | धातु | कर्मणि | पक्ष सम्बन्धी | संयुक्त नामिक |
|---|---|---|---|---|
| हिन्दी | लिख | लिखा जा | लिखा जा सक | शुरू किया जा |
| | शुरू कर | लिखा जा चुक | लिखता जा | शुरू किया कर |
| | शुरू किया जा | शुरू किया कर | शुरू कर | |
| कुड़ुख़ | टूड़ | | टूड़ ओंग | टूड़ काल ओंग ओरे नना कला |
| | ओरे नना | टूड़ काला ओंग | टूड़ ओंग | ओरे नना ओंग |
| | | ओरे नन ओंग | ओरे नन तब | ओरे नना |

कुछ क्रिया परक धातुओं से (परिवर्तन के द्वारा) भाववाचक संज्ञायें बनती है। यथा-

| धातु | | भाववाचक संज्ञा |
|---|---|---|
| (मारना से) | मार | मार (दो गुटों के बीच मार हो गई) |
| (रोकना से) | रोक | रोक (सड़क-निर्माण पर रोक लग गई) |
| (लूटना से) | लूट | लूट (लूट मची हुई थी) |
| (समझना से) | समझ | समझ (मेरी समझ से परे की बात है) |
| (मांगना से) | माँग | माँग (वस्तुओं की माँग घट गयी) |

इस प्रकार स्पष्ट है कि क्रिया को भिन्न-भिन्न रूप में व्यक्त करने की क्षमता भी धातु ही प्रदान करती है। क्रिया पर शोध धातु का बिना सहारा लिए सम्भव नहीं।

अतः मैंने अपने शोध-प्रबन्ध के द्वितीय अध्याय में धातु, धातु के विभिन्न भेद, धातु के विभिन्न कार्य और क्रिया को सम्पूर्णता देने वाले तत्त्व के रूप में चित्रित किया है।

क्रिया के भेद करने के कई आधारों में श्रेष्ठतम और बहुप्रचलित है रचना का आधार। इस आध ार पर क्रिया के मात्र दो भेद हैं- सकर्मक और अकर्मक। दोनों भेदों के नाम से ही पता चल जाती है इनकी प्रकृति, इनकी विशिष्टता। 'स' का 'साथ' तथा 'अ' का अर्थ 'बिना' अर्थात् क्रिया का कर्म के साथ होना और क्रिया का बिना कर्म को होना। दोनों प्रकार की क्रियाओं की पहचान के लिए वाक्य की क्रिया 'साथ' क्रिया 'किसे' या 'किसको' लगाकर प्रश्न करने पर उत्तर यदि मिलता है, तो वह क्रिया (जिसके साथ प्रश्न किया गया है) सकर्मक होगी और प्रश्नोत्तर नहीं मिलने की दशा में वह अकर्मक होगी। उदाहरण-

उसका सिर खुजलाता है। उसका जी ललचाता है।

हिन्दी के उदाहरणों की तरह कुड़ुख़ क्रिया के साथ भी क्या, किसे, किसको, लगाकर प्रश्न बनाने पर कोई उत्तर नहीं मिल पाता। अतः उपर्युक्त क्रियायें अकर्मक हैं। किन्तु उन्हीं क्रियाओं का प्रयोग वाक्य में यदि निम्नवत् हो, तो क्रियायें सकर्मक हो जायेगी। यथा-

वह अपना सिर खुजलाता है। रसगुल्ला तुम्हारा जी ललचाता है।

द्विकर्मक क्रिया में दो कर्म एक साथ प्रयुक्त होते हैं। जैसे-

राधा ने भात खाया।          राधा ने मोहन को पाठ पढ़ाया।

दूसरे उदाहरण में 'पढ़ाया' क्रिया के दो कर्म हैं-

1. मोहन को तथा 2. पाठ।

इस प्रकार 'पढ़ाया' क्रिया द्विकर्मक हो गयी। किन्तु प्रथम उदाहरण में 'खाया' क्रिया के साथ एक ही कर्म 'भात' आया है। अतः 'खाया' क्रिया द्विकर्मक नहीं हुई।

शोध-प्रबन्ध के चौथे अध्याय में क्रियाओं की रूपगत और अर्थगत विशेषताओं का विस्तृत उल्लेख किया है। इस उल्लेख को समर्थन देने के लिए क्रिया की रूपगत और अर्थगत शब्द-तालिका प्रस्तुत की गयी है जिसमें कुड़ुख़ भाषा और हिन्दी भाषा की क्रियाओं की अलग-अलग रूपगत और अर्थगत तालिका दी गयी है क्योंकि तुलनात्मक तरीके से ये तालिकायें प्रस्तुत है।

संयुक्त क्रिया और संयुक्त काल में कोई साम्य नहीं हैं। दोनों अलग-अलग चीजें हैं। संयुक्त क्रिया और संयुक्त काल की परिभाषायें देकर दोनों के बीच के फर्क को चित्रित करने के लिए, सहायक क्रियाओं की व्युत्पत्ति, अपूर्ण क्रिया का विधेयात्मक शब्दों के संदर्भ में अर्थ व्यक्त करने के लिए पंचम अध्याय चयनित है। कुड़ुख़ और हिन्दी की संयुक्त क्रिया आदि का प्रकारात्मक और तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत करना पंचम अध्याय में मेरा लक्ष्य रहा है।

वाच्य को भी मैंने क्रिया का ही रूप दिया है। कुड़ुख़ और हिन्दी भाषाओं में इसके विश्लेषण के संदर्भ में प्रत्य संयोगी कर्मवाच्य, संश्लेषणात्मक कर्मवाच्य, विश्लेषणात्मक कर्मवाच्य, पश्चरूप और विविक्षित क्रियाओं के रूपों का विश्लेषण, प्रयोग के आधार पर क्रिया रूपों का विश्लेषण प्रस्तुत करना शोध-प्रबन्ध के छठे अध्याय का अभिधेय रहा है।

अर्थ और काल -दोनों- क्रिया के महत्व को विशेषरूप से नियंत्रित करते हैं। अर्थ क्या है, काल क्या है, दोनों के पारस्परिक सम्बन्ध क्या हैं ? - क्रिया रूपों की व्युत्पत्ति के माध्यम से कुड़ुख़ और हिन्दी क्रियाओं का अध्ययन प्रस्तुत करना शोध-प्रबंध के सप्तम अध्याय का अभिधेय रहा है।

इस शोध-प्रबन्ध की स्थापनाओं में से एक स्थापना यह भी है कि उच्चारण की समानता, शब्द-रचना की समानता एवं वाक्य-रचना की समानता कुड़ुख़ और हिन्दी भाषा का उपजीव्य है। हालांकि कारक की विभक्तियों की भिन्नता दोनों भाषाओं के बीच स्पष्ट परिलक्षित होती है। हिन्दी की तुलना में कुड़ुख़ में लिंग-वचन-परिवर्तन नियम अपेक्षाकृत सरल हैं। हिन्दी व्याकरण की तरह कुड़ुख़ व्याकरण में सन्धि और समास प्रकरण नहीं है। भाषा-परिवार अलग-अलग होने के कारण भाषा में तो भेद होना स्वाभाविक है ही तथा भाषा के व्याकरण में भी भेद होना अस्वाभाविक नहीं है। अति प्राचीनकाल के इतिहास में इन भाषा-भाषियों की संस्कृति सभ्यता जनित परिस्थितियाँ उन्नत थीं तो इनकी भाषा भी उन्नत होंगी ही। इन कोल भाषा-भाषी लोगों की जो अब तक जंगली समझकर उपेक्षा की जाती रही थी, वह अत्यन्त अनुचित और निराधार थी। सत्य तो यह है कि इन गौरवशाली भाषाओं का संबंध आस्ट्रेलिया और एशिया में फैली हुई अनेक जन भाषाओं से आज भी स्थापित किया जा रहा है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ज़ी ने अपने निबंध 'धर्मस्य तत्वं निंहितं गुहायाम' में भाषा-परिवार और पुरानी सभ्यताओं की चर्चा के क्रम में उल्लेख किया है-

"द्रविड़ सभ्यता का संबंध सुदूर मिश्र और बैबिलोनियाँ तक स्थापित किया जा सका है और यद्यपि अब धीरे-धीरे पण्डितों को विश्वास होता जा रहा है कि द्रविड़ जाति 'रेस' की कल्पना मात्र ही नहीं है, पर एक समृद्ध आर्यपूर्व द्रविण सभ्यता की धारणा और भी पुष्ट हुई है। ऐसा जान पड़ता है कि इन कोल भाषा-भाषी लोगों की जो अबतक जंगली समझकर उपेक्षा की गयी थी, वह एकदम अनुचित और निराधार था। इन भाषाओं का संबंध आस्ट्रेलिया और एशिया में फैली अनेक जन भाषाओं का संबंध से स्थापित किया गया है।"

इस प्रकार निष्कर्ष यह निकाला जा सकता है कि जब हमारी भाषा कुड़ुख़ अपने द्रविड़ भाषा परिवार की है और आचार्य द्विवेदी के अनुसार यदि यह द्रविड़ सभ्यता बड़ी पुरानी और अति सभ्य रही होगी तो अवश्य ऐसी भाषा-भाषी जनता का जीवन उन्नत कोटि का होगा। इनकी भाषा का व्याकरण होगा, इनकी सम्भवतः लिपि होगी आदि। पुरानी भाषा का मूल रूप क्या था, इन भाषाओं में लिखित-अलिखित साहित्य कैसा था- यद्यपि यह सब जान पाने का साधन हमारे पास बहुत कम बचा रह गया है, तब भी आशा की किरण तो है ही।

मेरे इस शोध-कार्य की सीमा दोनों भाषाओं की क्रियाओं तक ही सीमित रखी गई है। इन दोनों भाषाओं का उद्गम-स्रोत भिन्न होने के बावजूद दोनों आर्य क्षेत्र की भाषाएँ हैं। संस्कृत भाषा का प्रभाव भी कुड़ुख़ भाषा पर देखा जाता है। हिन्दी तो पूर्णरूपेण संस्कृत की दुहिता तो है ही। फिर भी हिन्दी और कुड़ुख़- दोनों भाषाओं की क्रियाओं का विवरण शोध की दृष्टि से प्रकारात्मक (तुलनात्मक) स्तर पर प्रस्तुत किया गया है। पद की प्रकृति तथा प्रत्यय की समानता है। दोनों में कृदन्ती क्रियाओं के साथ-साथ तिङन्ती क्रियाओं का (दोनों भाषाओं में) अस्तित्व और समानता देखकर यह प्रबंध तैयार हुआ है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


1. हिन्दी में क्रिया : डॉ० ओ० गे० उलत्सिफेराब
2. हिन्दी भाषा की वाक्य संरचना : डॉ० भोलानाथ तिवारी
3. हिन्दी का व्याक्यात्मक व्याकरण : सूरजभान सिंह
4. मानक हिन्दी का ऐतिहासिक व्याकरण : माताबदल जायसवाल
5. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना : डॉ० वासुदेव वन्दन प्रसाद
6. कुड़ुख़ कत्था बिल्ली टुडुस : पी० सी० बेकस
7. हिन्दी प्रयोग : श्री रामचन्द्र वर्मा
8. भाषण का अंश : क्षेत्रेश चन्द्र चट्टोपाध्याय
9. हिन्दी व्याकरण : डॉ० देवीलाल प्रसाद एवं मार्टिन टूटी
10. कम्प्रेटिव ग्रामर ऑफ द मार्डन एरियन लैंग्वेजज ऑफ इण्डिया : डॉ० जानबीम्स
11. आधुनिक हिन्दी का प्रारम्भिक व्याकरण : आर्येन्द्र शर्मा


❖❖

## लेखक परिचय



हरि उराँव का जन्म 2 मार्च, 1959 गाँव पाकरटोली जिला गुमला (झारखण्ड) में हुआ। आपने परा-स्नातक की डिग्री 1984 में एवं पी.एच-डी उपाधि 2007 में ''हिन्दी भाषा और कुँडुख भाषा की क्रियाओं का प्रकारात्मक अध्ययन' शीषर्क शोध प्रबन्ध पर राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड) से प्राप्त किया। देश-विदेश की आयोजित संगोष्ठियों में भागीदारी एवं जनजातीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार हेतु आपके आलेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। सम्प्रति व्याख्याता, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड) में कार्यरत।

## पुस्तक परिचय

कुँडुख भाषा द्रविड़ भाषा परिवार की है। हिन्दी इन्डोनेशियाई परिवार की भाषा है। कुँडुख भाषा के बहुत ऐसे शब्द है जो हिन्दी भाषी परिवार के घरानों में प्रचलित है और उनका विपरीतार्थ भी उतना ही सही है। दोनों भाषाओं की लिपि में भी समानता है। प्रस्तुत पुस्तक इन्हीं दोनों भाषाओं की क्रियाओं का प्रकारात्मक और तुलनात्मक अध्ययन द्वारा यह बताती है कि जनजातीय भाषा-भाषी लोगों की जो अब तक जंगली समझकर, उपेक्षा की गई थी, वह अनुचित एवं निराधार थी। इनकी भाषाओं का सम्बन्ध आस्ट्रेलिया और एशिया में फैली अनेक जन-भाषाओं से स्थापित किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक कुँडुख भाषा के विद्वानों, जिज्ञासु छात्रों एवं शोधार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

*Published by :*

**K.K. Publications**
(Publishers of Indian Thinkers)
618, Katra, Allahabad-211 002 (U.P.) INDIA
Phone : 0532-6452973 Mobile : 9389485578

ISBN No. 978-81-87568-64-3
978-81-87568-64-3